राजकमल पेपरबैक्स

## एडिता मोरिस

# हिरोशिमा के फूल
# वियतनाम को प्यार



# हिरोशिमा के फूल
# वियतनाम को प्यार

## एदिता मोरिस

जन्म और राष्ट्रीयता के नाते स्वीडिश, नागरिकता के नाते अमेरिकी और लेखकीय ख्याति के नाते अन्तर्राष्ट्रीय। अमेरिकी लेखक इरा मोरिस की पत्नी।

स्वभाव से सरल, विनम्र और अत्यन्त संवेदनशील कथा-लेखिका। अमेरिकी जनता की अन्तरात्मा और सरकार के युद्धोन्माद—दोनों से गहरा परिचय। उपन्यासों के अतिरिक्त उनके कुछ कहानी-संग्रह भी प्रकाशित हुए हैं। प्रकाशित पुस्तकों की संख्या दस से ऊपर है। 'वर्ष की श्रेष्ठ कहानियाँ' संकलनों में उनकी छः कहानियाँ शामिल की गयी हैं। विश्वविख्यात और सर्वाधिक बिकनेवाला उनका उपन्यास 'द फ्लावर्स ऑफ हिरोशिमा' (हिरोशिमा के फूल) 24 भाषाओं में प्रकाशित हुआ है और विश्व भर में इसकी 20 लाख से अधिक प्रतियाँ बिक चुकी हैं।

## आवरणचित्र

फ्रांसिस न्यूटन सूज़ा (जन्म : 1924) की चित्रकृति 'वराह'। आधुनिक भारतीय कला आन्दोलन की अगुवाई करनेवालों में प्रमुख नाम। 1947 में बम्बई में हुसेन, रज़ा, आरा आदि के साथ मिलकर 'प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप' की स्थापना की। बम्बई में ही 1945 में पहली चित्र-प्रदर्शनी हुई। पचास के दशक में ब्रिटेन गये, जहाँ इनकी कला को अभूतपूर्व सफलता मिली। पिछले दो दशकों से अमेरिका में रहते हैं।

गोवा में जन्मे सूज़ा के आरम्भिक काम में गोवानी जीवन की ही छवियाँ हैं। गोवा के चर्च, मकान, स्त्री-पुरुष आकृतियाँ तपे हुए रंगों में हैं। रेखांकन पर सूज़ा का शुरू से असाधारण अधिकार रहा है।

सूज़ा तूलिका के जितने धनी हैं, उतने ही शब्दों के भी। 1959 में 'वर्ड्स एण्ड लाइंस' नाम से इनकी आत्मकथा प्रकाशित हुई थी। भारतीय चिन्तन और दर्शन-परम्परा में गहरी रुचि रखनेवाले सूज़ा ने कला-सम्बन्धी विचारोत्तेजक लेख लिखे हैं।

उनके काम में एक ओर पौराणिक चरित्रों की पुनर्व्याख्या है, तो दूसरी ओर आधुनिक शहरी जिन्दगी की चीर-फाड़। सूज़ा के लैण्डस्केप भी उल्लेखनीय हैं।

एंटिता मोरिस

# हिरोशिमा के फूल
# वियतनाम को प्यार

राजकमल पेपरबैक्स

पहला पुस्तकालय संस्करण
हिरोशिमा के फूल 1965 में
और
वियतनाम को प्यार 1971 में
राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.
से प्रकाशित


राजकमल पेपरबैक्स में
दोनों उपन्यासों का
पहला संयुक्त संस्करण : 1984


**राजकमल पेपरबैक्स** : उत्कृष्ट साहित्य के जनसुलभ संस्करण

राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.,
8 नेताजी सुभाष मार्ग,
नयी दिल्ली-110002
द्वारा प्रकाशित

पाठ्य भाग रुचिका प्रिण्टर्स,
शाहदरा, दिल्ली, द्वारा
तथा आवरण प्रभात ऑफसेट प्रेस,
नयी दिल्ली, द्वारा मुद्रित

मूल्य : रु. 11.00

आवरणचित्र : फ्रांसिस न्यूटन सूजा

HIROSHIMA KE PHOOL & VIETNAM KO PYAR
Novels by Edita Moris; Hiroshima Ke Phool translated by Mohan Rakesh and Vietnam Ko Pyar translated by Shivdan Singh Chauhan & Vijay Chauhan.

# हिरोशिमा के फूल

अनुवाद

**मोहन राकेश**

# एक

हे ईश्वर ! पाँच बज भी गये। वक्त बीतते पता चलता है? लगता है अपने नये किरायेदार के लौटने तक न तो मैं फ्यूसुमा (लकड़ी का सरकने वाला पर्दा) लगा सकूँगी, न ही बिस्तर की चादर सी सकूँगी। पर उस भले नवयुवक को मैं निराश नहीं करना चाहती। उसे यहाँ रहकर अच्छा लगा तो टोक्यो में अपने परिचितों से वह हमारी सिफारिश नहीं करेगा? लगता है···लगता है कि हमारे दिन अब फिरनेवाले हैं। (बी-बुलबुल, अपने पिंजरे में इस ऊँची आवाज में न गाओ। डार्लिंग, तुम मेरा ध्यान बँटाकर मुझे पागल बना देती हो।)

पता नहीं···हमारा अमरीकन मेहमान धानवाले तकिये से चिढ़ेगा तो नहीं? बिस्तर जमीन के बराबर पाकर नाराज तो नहीं होगा? नाराज हो भी, तो गुजारा उसे इसी से करना पड़ेगा। अब और देर न करूँ—चादर जल्दी से पूरी कर डालूँ। कपड़ा इसका काफी अच्छा है—पालक-जैसा हरा। ऊपर डिजाइन है नारंगी रंग की शाखाओं की। एकदम नये जमाने का। नहीं तो नारंगी रंग की शाखा भी कहीं होती है? इसी से तो यह इतना नया है, इतना अलग।

कितना अच्छा लगता है फर्श पर घुटनों के बल बैठकर इस तरह सीना, जबकि पास अँगीठी पर चाय का पानी बुलबुला रहा हो! मुझे अपने घर से प्यार है—अपने घर के लिए, अपने पति के लिए, अपने गदराये हुए हँसते बच्चों के लिए और अपनी दुबली-सी छोटी बहन के लिए मेहनत करने से प्यार है। अब साथ मुझे एक किरायेदार का भी खयाल रखना है, इसलिए सूरज निकलने से चाँद निकलने तक मुझे काम करना होगा। इससे बड़ी खुशी की बात क्या हो सकती है!

पर छोटी बहन ने तो यह अमोल मेहमान हाथ से गँवा ही दिया था। अब यह क्या हो रहा है, बी-बुलबुल? अभी तो तुम्हें सलाद का पत्ता दिया है। उसे पिंजरे से बाहर गिरा दिया? बुरी बात है, बी रानी! ठहरो,

अभी उठाकर देती हूँ। अच्छा ही है जो मेरे पैर इतने हल्के हैं। दिन में सौ-सौ बार उचककर खड़ी होती हूँ, और घुटनों के बल बैठती हूँ। फिर खड़ी होती हूँ, फिर बैठती हूँ। लो, यह रहा तुम्हारा पत्ता। अब तो मुझे शान्ति में सीने दोगी ?

मैं क्या सोच रही थी ? हाँ, अपने अमरीकन मेहमान और ओहात्सू के बारे में। मैं और छोटी बहन बाहर बाँस के फाटक के पास खड़ी बातें कर रही हैं और भूरे बिखरे बालोंवाला यह लम्बा लड़का हमारे पास रुककर हमसे रास्ता पूछता है। पुरानी जीन्ज़ और फीके नीले रंग की रुई की जरसी पहने है। उसकी आँखें अच्छी लगती हैं। जरसी जैसे ही हल्के रंग की। आवाज भी अच्छी है। अधिकांश विदेशियों की तरह चिल्लाकर नहीं बोलता। उलटे छोटी बहन उससे रूखे ढंग से पेश आती है।

"जी आपका जूता इस टिड्डे के बिलकुल पैरों पर है।"

साथ वह मुस्करा देती है, यही खुशी की बात है। गुस्से में काँपती हुई (ओहात्सू पश्चिम के लोगों से नफरत करती है) वह ज्यादा ही खिल-कर मुस्कराती है, और हरे कीड़े को झपटकर घर के अन्दर भाग जाती है। बहन अपने गुस्से पर काबू न पा सकी, इसका रंज मिटाने के लिए ही जैसे मैं विदेशी युवक की सहायता करने बढ़ आती हूँ।

"जी, शायद मैं आपको रास्ता बता सकूँ।"

पर उसकी आँखें केवल ओहात्सू पर टिकी हैं। वह ताड़ की तरह लम्बा तो है ही, गरदन भी उसकी जिराफ-जैसी है, जो कहना होगा कि उस समय काफी काम आती है। सुन्दर ओहात्सू बाग का छोटा-सा टुकड़ा पार करने के लिए अपने उड़ते लम्बे किमोनो में दौड़ी जा रही है, और वह अपनी लम्बी गरदन फैलाये उसे ताक रहा है।

"आप छोटी बहन की बात का बुरा न मानें। उसे...उसे टिड्डों से बहुत प्यार है।"

बात सुनने में सच नहीं लगती। मतलब, बिलकुल अटपटी जान पड़ती है। पर एक अजनबी को, खासतौर से एक अमरीकन को, मैं कैसे बताऊँ कि ओहात्सू को हर जिन्दा चीज से—जिसमें कि टिड्डे भी शामिल हैं—क्यों इतना प्यार है ?

"अरे ! वह सुन्दर लड़की आपकी बहन है ? बहुत ही सुन्दर लड़की है।" विदेशी ऊँची आवाज में कहता है।

साथ ही उसके गाल लाल हो उठते हैं—निःसन्देह, उसे लगता है उसने कुछ बुरी बात कह दी है। मैं हँस पड़ती हूँ, तो उसे आश्चर्य होता है। पर सारी घटना इतनी हास्यपूर्ण है—पैर पटकता हरा टिड्डा, शरमाता

विदेशी, गुस्से से बेकाबू ओहात्सू—पर शिष्टाचार का ध्यान आ जाने से मैं मुँह पर हाथ रखकर तुरन्त ही अपने को सँभाल लेती हूँ।

"देखिए, मैं अपना सूटकेस न्यू हिरोशिमा होटल में डाल आया था, पर कम्बख्ती की मार कि अब वहाँ का रास्ता ही मुझे नहीं मिल रहा," विदेशी खुलकर बात करता है। "होली टोलेडो ! लोग जापान में कोई भी जगह कैसे ढूँढ लेते हैं ?"

मैं फिर बड़ी मुश्किल से अपनी हँसी दबाती हूँ। सच कुदरत ने मुझे बनाया था हँसने के लिए ही। गोल चेहरा, ऊपर को उठता मुँह और गालों में पड़ते दो गड्ढे। मुझे कोई चीज हँसा सकती है—जैसे यह 'होली टोलेडो' (इसका मतलब क्या होगा ?) और विदेशियों का हमारे देश में आकर गुम हो जाना, जहाँ न गलियों के कोई नाम हैं, न घरों के नम्बर। वह विदेशी युवक भी मजा लेता जान पड़ता है।

"तोक्यो में मैंने काम करने में उतना वक्त नहीं बिताया जितना पते ढूँढने में।" वह खुलकर मुस्कराता है। साथ ही फिर से शरमा जाता है—शायद मेरे देश की आलोचना करने के कारण। ऐसा डील-डौल, फिर भी अन्दर से वह कितना कोमल होगा—उसका दिल कितने महीने रेशों से बुना होगा ! मैं जल्दी से उसे तसल्ली देना चाहती हूँ।

"मैं भी तोक्यो गयी हूँ। मैं आपका मतलब समझ सकती हूँ।"

"समझ सकती हैं न ? तो बताइये वहाँ जगह ढूँढ़ने का क्या तरीका है ?"

(अरे-रे-रे ! चाय के पानी, तुम्हें भी अभी उबलना था ? मुझे सोचने में इतना मजा आता है ! एक-एक शब्द, एक-एक पग, पूरे दिन की बातों को मन-ही-मन दोहराने में। बीच में किसी तरह की बाधा मुझे पसन्द नहीं। लो, अब तो सुलगते कोयलों पर से तुम्हें उठा लिया न ? फिर भी अभी केतली के पेट में बड़बड़ाये जा रहे हो ? तुम्हारी बदतमीज टोंटी मेरे हाथों पर जलता पानी डाल रही है ? मेहरबानी करके मुझे अब उसकी चादर सी लेने दो !)

पर मेरे विचारों का सिलसिला टूट गया। अच्छा, हटाओ। संक्षेप में यह कि विदेशी युवक अपना रिजर्व कमरा छोड़कर हमारे यहाँ चले आने का फैसला कर लेता है। (मैंने हल्के-से उसे बता दिया है कि हमारे पास एक कमरा खाली है।) अब येन की आमदनी के खयाल से मेरा मन बहुत हल्का हो रहा है, और मेरा फिर हँसने को जी चाह रहा है। हम मजे से बात करते खड़े हैं, और कुछ ही देर में मैं उस नवयुवक के बारे में सबकुछ जान जाती हूँ। वह सीटल की एक जहाज-कम्पनी की तरफ से

जापान में व्यावसायिक दौरे पर आया है। उसका सौतेला बाप जहाज-कम्पनी का हिस्सेदार है। इसी से इतनी छोटी उम्र में सैम-सान तिकड़म से इस दौरे पर चला आया है। कितने सालों से वह जापान आने के सपने देखता रहा है।

"कभी एक जापानी लड़की से मेरा परिचय था—वहाँ सीटल में।" वह मुझे अपने दिल की बात बताने लगता है। "मेरा असली घर सीटल में है। वह लड़की---तोशो हमादा हमारे हाई स्कूल की सबसे सुन्दर लड़की थी।"

बात करते हुए उसकी आँखें 'शोजी' से नहीं हटतीं, जिसके पीछे जाकर ओहात्सू गायब हो गयी है। मैं दो और दो जोड़ती हूँ। ओहात्सू, तोशो हमादा ! तो यह वजह है जो सुन्दर न्यू हिरोशिमा होटल छोड़कर यहाँ चला आना चाहता है।

'वह लड़की, जिसकी मैं बात कर रहा था, उसे मैं ज्यादा अच्छी तरह नहीं जानता था। मगर उफ ! मुझे तोशो हमादा हमेशा याद रहेगी। मैं बिलकुल बच्चा था, फिर भी मुझे लगता है, मैं उससे प्यार करता था। यहाँ तक कि मैं उस पर कविता लिखा करता था।' वह अपने खास अन्दाज में मुस्कराता है। 'तोक्यो में मैंने बहुत ढूंढ़ा, पर वहाँ वह मुझे नजर नहीं आयी। मेरा मतलब है तोक्यो की लड़कियाँ अपनी तरह से खूबसूरत हैं, मगर···।' अमरीकन युवक हमारे शान्त बाग की तरफ देखता है जिसमें चेरी का एक पेड़ और अलसाया-सा एक तालाब है। शायद वह सोच रहा है कि तोशो हमादा का बाग भी ऐसा ही लगता होगा। "सच, यहाँ आपके पास रहने में बहुत मजा आयेगा," वह कहता है।

मैं मुस्कराती हूँ। मेरा हाथ बाल ठीक करने के लिए ऊपर उठता है, पर साथ ही दिल धक्-से रह जाता है। किमोनो की बाँह ऊपर उठ जाने से पल-भर के लिए मेरी कलाई उघड़ आती है। उफ ! कहीं मेरे दाग तो उसने नहीं देख लिये ? खुशकिस्मती से तभी कोई मेरा नाम लेकर पुकार लेता है।

"युका ! युका-सान !"

"जी, माफ कीजिएगा।"

"देखो, मेरा नाम सैम है। सैम विलोवी। पर यह बोलने में मुश्किल पड़ता है···इसलिए सिर्फ सैम।"

"जी, शुक्रिया ! अब मुझे जरा जाना होगा।"

गली के निचले हिस्से से बूढ़ी मिसेज नाकानो अब भी मुझे आवाज दे रही है। मैं और विदेशी युवक दोनों इस तरफ देखते हैं। अरे ! मैं नाकानो-

सान को अचानक उसकी नजर से देखने लगती हूं। मैं नाकानो-सान और उसके झोंपड़े में रहनेवाली दूसरी बुढ़िया से प्यार करती हूँ। पर एक पश्चिम के व्यक्ति की नजर से उन्हें देखते हुए मुझे लगता है कि वे कितनी गँदली, कितनी घुन-खायी हैं ! उनकी हालत दर्दनाक नजर आती है— हिरोशिमा-विस्फोट से जिन्दा बचे सभी लोगों की तरह।

"मैं अपने इन दोनों पड़ोसियों को रोज इस वक्त शौचालय में ले जाती हूँ—मतलब खुले मैदान में।" मैं अमरीकन नवयुवक से कहती हूँ। वह दूसरी तरफ देखने लगता है। (विदेशियों के तौर-तरीके कितने अजीब होते हैं !)

"देखो···।" वह कहते-कहते रुक जाता है, क्योंकि ओहात्सू जैसे पंख फड़फड़ाती हमारे रूमाल जैसे बाग में चली आयी है। धीरे-से वह चेरी के पेड़ के नीचे बेंच पर बैठ जाती है। "तो मैं भागकर अपना बैग उठा लाऊँ ?" विदेशी युवक ऊँची आवाज में कहता है। "पाँच बजे तक लौट आऊँ, ठीक है ?"

"किसी भी वक्त आ जाओ।"

"युका ! युका !" नाकानो-सान चिल्लाती है।

"तो मैं अब भागूं। पाँच बजे यहाँ सबकुछ तैयार रहेगा। मैं फ्यूसुमा लगवा रखूंगी, और···"

"फ्यूसुमा ?"

न, मैं अपने अनमोल मेहमान को नहीं बताऊँगी कि हमारे पास केवल दो छोटे-छोटे कमरे हैं जिनमें से एक में सरकनेवाले तख्ते लगाकर मुझे उसके दो हिस्से करने हैं। कितनी ही चीजें हैं जो मैं अपने विदेशी मेहमान को नहीं बताना चाहती—कि कहीं ऐसा न हो कि जो वह और किरायेदारों को हमारे यहाँ भेजे ही नहीं। हमें कितनी जरूरत है किरायेदारों की ! चाहे जितनी भी होशियारी या चालाकी बरतनी पड़े— मैं उसे पता नहीं चलने दूंगी कि वह कैसे घर में रहने आया है।

आखिर, अपने लम्बे किमोनो में जितनी जल्दी चला जा सकता है, मैं वहाँ से चल पड़ती हूँ। ध्यान रखती हूँ कि गली में जगह-जगह पड़े गहरे गड्ढों में किसी एक में पाँव न पड़ जाये। गली ऐसी तंग और चक्करदार है जैसे एक चबाया हुआ तार हो। सोचती हूं क्या विदेशी नवयुवक को इस पिछवाड़े की गली में रहना स्वाभाविक लगेगा—तोशो-हमादा के बावजूद ? बच्चों के चीखने-चिल्लाने से उसके कान तो नहीं फट जायेंगे ? साथ एक गले-सड़े घर से दूसरे घर में आवाज लगाती उनकी माँओ के शोर से ? फिर यहाँ कई तरह की बू भी तो है—जहाँ-तहाँ बिखरा थूक और पंजों से

नोचती बिल्लियाँ। सड़ी मछली के एक ढेर से ठोकर खाकर मैं धचपच पानी में गिरते-गिरते बचती हूँ और किसी तरह नाकानो-सान और बूढ़ी तामुरा-सान के पास जा पहुँचती हूँ। वह मेरी बाहें पकड़ लेती है और हम तीनों खाली मैदान की तरफ चल देती हैं।

मैं घूमकर देखती हूँ। अमरीकन युवक हैरान होकर अधमीची आँखों से हमें ताक रहा है। ध्यान उसका मेरी दोनों मित्रों के सिर की तरफ है। मुझे हैरानी नहीं होती, क्योंकि नाकानो-सान और तामुरा-सान के सिर पर एक भी बाल नहीं है—कहने को भी नहीं। उन दोनों की ठण्डी-बूढ़ी बाँहों को अपने गरम शरीर से सटाये (सच मुझे दोनों से कितना प्यार है!) मैं उस युवक की तरफ मुस्कराकर देखती हूँ। फिर हम तीनों पैर मारती गली की नुक्कड़ से घूम जाती हैं।

चलो, यह आखिरी तोपा भी लग गया। अब तुम्हें किस चीज की मार पड़ गयी बी-बुलबुल? जीरे का दाना चाहिए? ठहरो अभी देती हूँ। बाहर पैरों की आहट सुनायी दे रही है—कोई विश्वास से लम्बे डग भरता आ रहा है। पच्छिमी ढंग से। यह आवाज जापानी 'गेता' की हल्की खट्खट् की तरह नहीं है। मेरा किरायेदार आ गया है। बी-बुलबुल, जल्दी से अपना जीरे का दाना निगल लो डार्लिंग! तकल्लुफ में पड़ने की जरूरत नहीं। अरे! अभी फ्यूसुमा तो मैंने लगाया ही नहीं।

## दो

"छोटी बहन, यह अमरीकन नवयुवक कुछ दिन हमारे यहाँ रहेगा।" मैंने इन शब्दों में ओहात्सू को सूचना दी, तो वह भड़क उठी हालाँकि कहा उसने कुछ नहीं। छोटी होने के नाते कुछ कहने का उसे अधिकार ही नहीं था। पर गुस्सैल बच्चों की तरह उसके गाल गुब्बारों-जैसे फूल गये और मेरी बात सुनते हुए वह सारा वक्त अपनी साँस वहीं रोके रही। (बाहर निकालने से तो यह अच्छा ही है न?—खासतौर से जबकि सख्त बातें ही मुँह से निकलनी हों?)

"देखो, तुम उससे अच्छी तरह पेश आओगी, समझीं?" मैं कहती रही। "उसे यहाँ अच्छा लगा तो हो सकता है और भी विदेशियों से हमारी

सिफारिश करे। रात के खाने के बाद तुम उसे बाग में ले जाकर उसका दिल बहलाना। समझीं ?"

"दीदी, मुझे यह हैरो-सान अच्छे नहीं लगते।"

"तुम्हें इस बेहूदा ढंग से उसका जिक्र नहीं करना चाहिए," मैं उसे झिड़क देती हूँ। पर साथ ही मेरे मुंह पर मुस्कराहट आ जाती है, क्योंकि मैं भी हमेशा मन में अमरीकनों को हैरो-सान ही कहती हूँ। यों यह एक बेहूदा शब्द है—युद्ध के साथ आये सभी शब्दों की तरह। अमरीकन हर वक्त 'हैलो-हैलो' करते रहते हैं, इसी से उन्हें हैलो-सान या हैरो-सान (क्योंकि ल का उच्चारण यहाँ हम नहीं कर पाते) कहने लगना कहाँ तक उचिन है ? "तुम्हें वे लोग अच्छे लगते हों या न लगते हों। पर तुम्हें इस आदमी मे अच्छा सलूक करना है," मैं डाँटकर कहती हूँ।

"वह मैं करूँगी बड़ी बहन," ओहात्सू कहती है। मेरी आँखों में शरम मे आँसू आ जाते हैं। ओहात्सू जानती है कि मैं उसकी सुन्दरता चारे के तौर पर इस्तेमाल कर रही हूँ। हम दोनों में इतना स्नेह न होता तो शायद वह इस वजह मे मुझसे घृणा करने लगती।

खैर वह अप्रीतिकर क्षण निकल गया—और अब मैं खामोशी से फर्श पर बैठी सिलाई कर रही हूँ। बाहर बाग की बेंच पर ओहात्सू किरायेदार से बातें कर रही है। रात गहरी हो चली है, पर हमारी पत्थर की लालटेन की हल्की रोशनी उनके चेहरों पर पड़ रही है। पास लकड़ी की मेज पर मेरी साके की झारी रखी है। ओहात्सू बहुत कोमलता से सैम-सान का प्याला भर देती है।

"दोजो।"

हर बार जब वह उसका प्याला भरती है तो साथ अपनी पतली कमर झुकाकर फुसफुसाती है। "कृपया।" छोटी बहन की आवाज वैसी ही रेशमी है जैसे बेंत के पिंजरे में सोती मेरी इस बुलबुल की साँस। 'शोजी' की एक दरार में से मैं अपने मेहमान को खुशी से उसे ताकते देख सकती हूँ। सच 'शोजी' कितनी अच्छी चीज है—खुलने-बन्द होने में जरा आवाज नहीं करती। इससे कितनी मदद मिलती है! सैम-सान उसाँस भरता है।

"आप उसाँस क्यों भर रहे हैं ?" ओहात्सू चिन्तित स्वर में पूछती हैं। और मैं सोचती हूँ कि कहीं युवक हैरो-सान उसके उच्चारण पर हँसेगा तो नहीं।

"मैंने उसाँस भरी है ? हाँ-आँ···वह मन के सन्तोष के कारण," मेहमान कहता है। उसकी आवाज अच्छी है—स्पष्ट और भरी-भरी, जिससे उसके पूरे स्वभाव पर प्रकाश पड़ता है। "तुम्हें पता है मुझे यहाँ से

जाना—जापान से जाना—अब अच्छा नहीं लगेगा ?" वह उससे कहता है।

"ऐसा क्यों ? जापान अमरीका से ज्यादा अच्छा है ? सुन्दर लगता है ?"

"अमरीका से ज्यादा अच्छा ?" मेहमान की भूरी भौंहें ऊपर उठ जाती हैं। "तुम मजाक कर रही हो ? बात यह है कि वहाँ अमरीका में मेरी जिन्दगी का एक साँचा-सा बन गया है। मुझे वह साँचा बहुत नागवार लगता है।"

मेहमान खामोश हो जाता है। एकाएक उसके मुँह पर आये तनाव को देखकर मुझे आश्चर्य होता है। उसके चिकने माथे और सपने में डूबी बड़ी-बड़ी आँखों से यह भाव मेल नहीं खाता। वह आगे बात करता है तो उसकी आवाज में एक चुभन महसूस होती है।

"यह जो जहाज कम्पनी की नौकरी है न—मैं अपने लिए ऐसी नौकरी नहीं चाहता था। दरअसल मेरे सौतेले पिता ने किसी तरह मुझे राजी कर लिया। मेरे अपने पिता सीटल के पास देहात में डाक्टरी करते थे।"

"जहाज-कम्पनी में बहुत मेहनत करनी पड़ती ? शाम को अरुबीत करना पड़ता ?"

"अरुबीत ? मतलब शाम को दूसरा काम ? जैसे यहाँ जापान में हम लोग करते हैं। यह जर्मन शब्द से निकला शब्द है।"

"अरे नहीं।" सैम-सान हँसता है। "रोज की चक्की पीसने के बाद दूसरा काम नहीं करना पड़ता।"

"तो शाम को पढ़ने जाते हैं ?" ओहात्सू पूछती है।

"तुम्हारी कसम, बिलकुल नहीं।" अमरीकन युवक को इस बात मे खासा धक्का लगा लगता है। "मैं उस वक्त मन-बहलाव के लिए निकल जाता हूँ। अगर अच्छी शाम हो तो हम कुछ लोग एक कार लेकर ड्राइव पर निकल पड़ते हैं।"

"कहाँ जाने के लिए ?"

"जाने के लिए ? जाने के लिए कहीं नहीं। बस जिधर मन आया उधर गाड़ी घुमा ली। कभी सिनेमा देख लिया या दो बियर पी लीं। कभी जाकर किसी लड़की को साथ ले आये···।"

'शोजी' की दरार से मुझे ओहात्सू का भौंचक्का चेहरा नजर आता है। वह क्या, मैं खुद भौंचक्की हो रही हूँ। हैरो-सान ने भी जरूर यह भाँप लिया होगा, क्योंकि वह उसे यह बताना छोड़ देता है कि पच्छिम के लोग किस तरह अपना मन-बहलाव करते हैं। वह ओहात्सू से पूछता है कि वह

अपनी शाम कैसे बिताती है। वह उसे बताती है कि वह एक नौकरी करती है टेलीफोन ऑपरेटर की—जिसमें उसकी ज्यादातर शामें चली जाती हैं। इस बार हैरो-सान भौंचक्का हो उठता है।

"तुम तो इतनी दुबली हो कि पता नहीं साँस कैसे लेती हो! तुमसे रात की ड्यूटी कैसे दी जाती है?" उसकी आँखें ओहात्सू के चेहरे पर टिक जाती हैं। "तुम्हें एक बात बताऊँ? हाथों में पैंजी के सफेद फूल लिये, इस सफेद किमोनो में तुम बिलकुल एक छोटी-सी रूह की तरह नजर आती हो।"

"रूह की तरह?" ओहात्सू अपने हाथ के फूलों को देखती है जो उसने अभी-अभी बाग से तोड़े हैं। (तकदीर की मार! छोटी बहन रूह का या किसी ऐसी चीज का जिक्र बर्दाश्त नहीं कर सकती, जिसका सम्बन्ध मौत से हो) "इससे आपका क्या मतलब है?" वह काँपती आवाज में पूछती है।

"यही कि तुम इतनी दुबली और पीली-सी हो कि लगता है एक रूह की तरह आसमान की रहनेवाली हो।" मेहमान के इस तरह व्याख्या करने से ओहात्सू के चेहरे पर आयी मुस्कराहट की चमक सितारों की रोशनी में साफ दिखायी देती है। (उसके लुभावने ढंग से मुस्कराने का मतलब है कि मन में उसे इस नवयुवक से बहुत-बहुत नफरत है) हैरो-सान उसकी नफरत को मैत्री का भाव समझ बैठता है। वह बेंच पर उसके नजदीक सरक जाता है।

"सच कहता हूँ ओहात्सू-सान," वह कुछ रंगीनी के साथ कहता है। "तुम्हारा नाम बहुत ही प्यारा है। जापान में क्या बहुत-सी लड़कियों का नाम ओहात्सू होता है?"

ओहात्सू उसे अपने नाम की पौराणिक जापानी लड़की असली ओहात्सू के विषय में बताने लगती है, जिसने प्यार की रूमानियत में आत्महत्या कर ली थी। अपनी इस प्रतिष्ठा के कारण ही सदियों से उसका सम्मान किया जाता है।

"प्यार में अपनी जान ही दे दी? यह जापान में ही हो सकता है।" हैरो-सान कह उठता है। "अच्छा बताओ ओहात्सू, तुम भी ऐसा कर सकती हो? प्यार में अपनी जान दे सकती हो?"

"जरूर-जरूर दे सकती हूँ।" छोटी बहन आवेश के साथ कहती है।

अरे रे! मैं 'शोजी' की दरार से माथा सटाकर ओहात्सू के चमकते चेहरे को देखती हूँ। इसे हुआ क्या है? लगता है इस लड़की पर किसी के प्यार का जादू चल चुका है। नहीं, नहीं, यह उस जादू के लिए सिर्फ तैयार

है, बस । किसी के प्रति समर्पित होने को वैसे ही उत्सुक जैसे कि पका आलूचा सितम्बर की सुबह को डाल से तोड़े जाने के लिए। मेरी साँस रुकी रहती है—खतरे के अहसास से, और साथ ही खुशी से ।

पर हैरो-सान को यही लगता है कि वह उसे लुभाना चाह रही है। वह अपनी एक उँगली फैलाकर ओहात्सू के हाथ के गुलदस्ते में से एक सफेद पैन्जी की ठोड़ी हल्के से ऊपर उठा देता है। फूल के भावपूर्ण चेहरे को गहरी आँखों से देखते हुए धीमे स्वर में पूछता है, "ओहात्सू-सान, ये फूल तुम मुझे दे सकती हो···यादगार के तौर पर ?"

कैसी गलती कर दी इसने ! छोटी बहन इस तरह सन्त्रस्त आँखों से उसकी तरफ देखती है जैसे कि उसने पैन्जी की पंखुड़ी को न सहलाकर उसके अपने कोमल दिल को ही उँगली से मसल दिया हो। गुच्छे परे हटा-कर वह अपनी छाती से लगा लेती है, फिर अचानक खड़ी होकर (साथ ही मैं भी उठ खड़ी होती हूँ) तेजी से घर की तरफ भाग आती है और अँधेरे में मुझसे टकरा जाती है ।

"ओहात्सू !"

"मुझसे कुछ मत कहो, बड़ी बहन !" वह रुआँसी हो रही है ।

दौड़ती हुई जाकर वह दीवार के आले से अपना बिस्तर खींचती है और उसे फर्श पर पटककर सुबकती हुई अपने कम्बल में जा छिपती है। आण्ट मात्सुई कहा करती है कि जब और कुछ समझ में न आये तो आदमी को और साके निकाल लेनी चाहिए। उस चतुर महिला का खयाल है कि साके ने अनन्त स्थितियों को बिगड़ने से बचाया है और आगे भी रहते समय तक बचाती रहेगी।

मैं गरम पानी में से साके की नयी झारी निकालकर बाग में आ जाती हूँ। उसे मेज पर रखकर (उँगलियाँ जल जाने के बावजूद मुस्कराते हुए) मैं धीमे और कोमल स्वर में ऐसे ही कोई बात करने लगती हूँ। आण्ट मात्सुई ने मुझे सिखाया है कि सम्भ्रान्त अतिथियों, विशेषतया पुरुषों के साथ ऐसा ही करना चाहिए ।

"सितारों की रोशनी में झींगुरों की आवाज बहुत प्यारी लगती है।"

"देखो, युका-सान, तुम्हारी बहन क्या मुझसे नाराज हो गयी है ?"

उस वक्त हैरो-सान के लिए झींगुरों की आवाज और सिलाई की मशीनों की घर्र-घर्र में कोई फर्क नहीं। न ही सितारों की रोशनी और निआन की बत्तियों की चमक में। लगता है एक बहुत नाजुक स्थिति मुझे सँभालनी है। इतनी मुश्किल से मिला किरायेदार आँख झपकते जा भी सकता है। जब मेरा कोई बच्चा कुनमुनाने लगता है तो मैं उसके मुँह में

लालीपॉप दे देती हूँ। उसी तरह इस वक्त मैं हैरो-सान के मजबूत हाथों में साके का प्याला पकड़ा देती हूँ। वह पीने लगता है क्योंकि कुछ भी हाथ में दे देने पर आदमी अनजाने ही उसे पीने लगता है। मैं झट-से उसका प्याला फिर भर देती हूँ।

"छोटी बहन को जरा-जरा-सी बात चुभ जाती है। आप उसका खयाल न करें।" मैं कहती हूँ।

"खयाल न करूँ? मुझे बिलकुल उसकी किसी बात का खयाल नहीं।" हैरो-सान सिर हिलाता है। "पर शैतान का कहर! मुझे लगता है मैंने किसी बात से उसे नाराज कर दिया है। मैंने उसके हाथ के गुलदस्ते को छुआ ही था कि···"

वह बात को मन में दोहरा रहा है और उसके माथे पर एक सलवट पड़ गयी है।

"नहीं, नहीं, आप खामखाह परेशान न हों।" मैं उसकी बात काट देती हूँ। मन इस डर से बर्फ हो रहा है कि वह कहीं ओहात्सू के गुच्छे के बारे में न पूछ ले! "ओहात्सू को नींद आ रही थी बस, इतनी ही बात थी। ऐसा है कि जापान में हर एक को सुबह बहुत जल्दी उठना पड़ता है। क्योंकि हमें एक की जगह दो-दो काम करने होते हैं जिससे···। (अरे रे! मेरे मुँह से निकला जा रहा था 'जिससे हम रोटी खा सकें।'···जिससे) ठीक से गुजारा कर सकें।" मैं ढंग से कह देती हूँ।

"मुझे पता है," हैरो-सान हँसता है। "अरुबीत। यह मेरी खुशकिस्मती है कि तुम लोगों को दूसरे काम की जरूरत पड़ती है। नहीं तो मुझे कभी यहाँ जगह न दी जाती। मुझे खुशी है कि ऐसा है, वरना इस वक्त मैं आडम्बर-भरे पश्चिमी होटल में टूरिस्टों की किसी टोली के साथ बैठा होता। मैं उस सबके लिए जापान नहीं आया—मेरी दिलचस्पी यहाँ के लोगों में है। अच्छा व्यापारी हूँ न मैं!" सैम-सान हँसता है, पर उसके चेहरे पर तनाव की रेखाएँ फिर झलक जाती हैं।

वह हाथ के साके के प्याले को लगातार घुमाता हुआ उसमें देखता रहता है। चावल की पीली शराब छलक-छलक पड़ती है। प्याले के तले पर बने चमकते पैगोडा को देखता हुआ वह जाने क्या सोच रहा है।

"मेरे पिता दिन में चौबीस घण्टे अपने मरीजों को देखने के लिए देहात में चक्कर काटते रहते थे हालाँकि उनमें से आधे उनकी फीस भी नहीं दे पाते थे। उन्हें इसकी परवाह नहीं थी। उनकी दिलचस्पी थी सिर्फ लोगों में। मेरा खयाल है, इसीलिए डॉक्टर का पेशा उन्हें पसन्द था।"

"तुमने कभी डॉक्टर बनने की नहीं सोची?"

"खयाल यही था। मेडिकल स्कूल में दो साल पढ़ा भी। पर तभी डैडी की मौत हो गयी और···मेरा खयाल है बहुत-से मरीजों ने उनके पैसे नहीं दिये थे। मेरी माँ ने दूसरी शादी कर ली तो सौतेले पिता ने मुझसे कहा कि मैं उनकी जहाज-कम्पनी में यह डेस्क का काम कर लूँ। वैसे ठीक ही है। पर कभी-कभी लगता है कि पढ़ाई पूरी कर लेता तो अच्छा रहता। डैडी की तरह शायद मुझे भी डाक्टर ही बनना चाहिए था।"

सैम-सान के माथे पर सलवटें गहरी हो जाती हैं, पर तभी वह हँस देता है।

इस नौकरी की एक अच्छी बात यह है कि इसकी वजह से जापान चला आया। अपने ईंधन से आना होता तो पचास की उम्र से पहले यहाँ न पहुँचता। जापान मेरे लिए सही जगह है, वैसी ही जैसी मैं सोचता था—बल्कि उससे कुछ ज्यादा ही।

फीकी-नीली जीन्स में अपनी लम्बी टाँगें फैलाकर वह बेंच की पीठ से टेक लगा लेता है। उसकी नजर हमारे घर की परों-जैसी छत से होती हुई ओहात्सू की सफेद पैन्जी की क्यारी पर आ टिकती है। फिर अँधेरे में चमकती—हमारे पुरखों के जमाने की पत्थर की लालटेन की तरफ चली आती है।

"हाँ, बिलकुल वही सब-कुछ है यह।" वह धीमे स्वर में कहता है। "यह तालाब। यह चेरी का पेड़। सब-कुछ जैसा होना चाहिए। यह बात मैं अपने जहन में बिठा ही नहीं पाता कि यही वह जगह है जहाँ चौदह साल पहले एटम-बम गिरा था। और फिर यह कि उस समय तुम और ओहात्सू यहीं पर थीं। तुम दोनों खुशकिस्मत रहीं। क्यों ?"

"सचमुच," मैं कहती हूँ, "हम बहुत ही खुशकिस्मत रहीं।"

सैम-सान कुछ चौंककर मुझे देखता है। क्या मेरी आवाज में उसे कोई अखरनेवाली ध्वनि सुनायी दे गयी है ? पर मैं ठीक से शिक्षित हूँ। मेरे चेहरे के नक्श मुस्करा रहे हैं। मैं उसकी तरफ झुकती हूँ और सितारों की रोशनी में हैरो-सान जो देख पाता है वह एक खुशकिस्मत लड़की का चेहरा ही है।

# तीन

पके भात के ढेर पर तिरछी, एक-दूसरी के ऊपर रखी छोटी-छोटी मछलियाँ कितनी सुन्दर लगती हैं ! मैं अपने पति के लिए लंच का डब्बा लेकर आयी हूँ और वार्निश किया ढक्कन हटाकर यहाँ बैठी खाना रखने के सुरुचिपूर्ण ढंग को प्रशंसा-भरी आँखों से देख रही हूँ। जब तक फ्यूमियो अपने बॉस से बातचीत समाप्त नहीं कर लेता, मुझे इसी तरह बैठे रहना है। (कार्यालय के शीशे की खिड़की से मैं उन दोनों को खड़े-खड़े बात करते देख सकती हूँ।) फूस की चटाई के टुकड़े पर घुटनों के बल बैठी मैं प्रतीक्षा करती रहूँगी, चाहे कितनी भी देर लगे। सहसा मुझे लगता है कि मैंने फ्यूमियो के साथ रहकर उतना समय नहीं बिताया जितना उसकी प्रतीक्षा में। पर यह भाग्य केवल मेरा ही नहीं। युद्ध और युद्ध के बाद की नस्ल में लाखों-करोड़ों हुई जापानी पत्नियों का यही भाग्य है।

गराज में बैठे हुए सिर चकराने लगता है। यहाँ के शोर, यहाँ की गन्ध, और यहाँ की ठण्डक के मारे। पर आँखें मूँदकर मैं अपनी दुनिया में खिसक जाती हूँ—जहाँ कि उसाँस और मुस्कराहट साथ-साथ अठखेलियाँ करती हैं। आस-पास के वातावरण को भूलकर, जरूरत पड़ने पर मैं घण्टों इन्तजार कर सकती हूँ। मेरे ईश्वर ! फ्यूमियो को जब फौज में ले लिया गया था तब क्या कभी-कभी मैं पूरा दिन इन्तजार नहीं करती थी ? जब वह बैरकों में था, तो हर इतवार को हमें हिरोशिमा रेलवे स्टेशन पर मिलने की इजाजत दी जाती थी। और भी बीसियों—बल्कि सैकड़ों—पति-पत्नी इसी तरह वहाँ मिलते थे। मुझे याद है—

"नाकामुरा-सान, तुम्हें अखबार पढ़ने को ला दूँ ?"

वह हेड-मेकेनिक है जो हमेशा इसी तरह मुझसे आदर से बात करता है। मैं नीचे तक झुककर कोमाको-सान से कहती हूँ कि उसे परेशान होने की जरूरत नहीं। हाँ, तो मैं क्या सोच रही थी ? चाहती हूँ उसने बीच में बाधा न डाली होती। अरे हाँ, मैं सोच रही थी रेलवे स्टेशन की बात, कि फ्यूमियो को बड़े-बड़े फौजी बूट पहने देखकर मुझे कितना अफसोस होता था। बूट इतने बड़े थे कि उसके दोनों पैर एक ही में आ सकते थे। तुरन्त एक आँसू मेरी आँख में भर जाता। पर तभी मेरी हँसी फट पड़ती, क्योंकि मेरा स्वभाव ऐसा ही है। मैं पूछती कि उसे बूट का दूसरा जोड़ा क्यों नहीं मिल सकता, तो फ्यूमियो उत्तर देता, "फौज बूट को पैरों में फिट नहीं करती, पैरों को ही बूट में फिट होना चाहिए।" इस पर हम कितना हँसते

थे ! और फिर उसे जल्दी ही युद्ध के लिए लौट जाना होता था।

टन-टन-टन्।

गराज की दीवार-घड़ी ने घरघराकर तीन बजा दिये हैं। इतनी देर से वे दोनों फ्यूमियो के छोटे-से दफ्तर में क्या बात कर रहे हैं। ताजा रोगन हुए दो ट्रक आगे के अहाते से बाहर जा रहे हैं। फ्यूमियो का मोटा बॉस भी यही भला काम क्यों नहीं करता ? मुटका अपनी बक-झक से मेरे घर-वाले को थका-थकाकर उसकी जान सुखा रहा है।

फ्यूमियो का चेहरा कितना जर्द है ! क्या यह मेरी कल्पना ही है कि वह आज, कल से भी मुरझाया हुआ नजर आ रहा है ? कि कल वह परसों से ज्यादा मुरझाया हुआ था ? न, मुझे यह तनाव मन में नहीं लाना चाहिए। इससे नसें उसी तरह फटने को हो जायँगी जैसे युद्ध के दिनों में, जबकि मेरे पेट में बच्चे ठहरते ही नहीं थे। मैं बच्चों को तभी जन्म दे सकी जबकि जिन्दगी फिर से सामान्य स्थिति पर लौट आयी—या कम-से-कम लगने लगा कि लौट आयी है। चिन्ता अब फिर मेरे दिल को जकड़ रही है और मैं परेशानी के साथ हेड मेकेनिक की तरफ देखती हूँ।

"कोमाको-सान, क्या आज सुबह मेरे पति ने नाश्ता ठीक से कर लिया था ? फली का सूप सारा पी लिया था ?"

कोमाको-सान कागजों का बड़ा पुलन्दा मेरे पति के दफ्तर की तरफ ले जाता हुआ रुक जाता है, पर मेरे सवाल का जवाब नहीं देता। मैं उसकी तरफ देखकर खुशदिली से मुस्कराती हूँ (कन्फ्यूशियस का कहना है कि हमें— विशेष रूप से स्त्रियों को—निजी दुःख दूसरों पर नहीं लादने चाहिए)। कुछ खुशामदी स्वर में कहती हूँ, "थोड़ा-सा तो नाश्ता उसने लिया ही होगा। नहीं ? थोड़ा-सा चावल—थोड़ा-सा फली का सूप ?"

घड़ी के पेंडुलम की तरह कोमाको-सान का सिर एक तरफ से दूसरी तरफ को हिल जाता है।

"गराज में इतना शोर रहता है कि एकाउण्टेण्ट-सान को रात को ठीक से नींद नहीं आती। इसी से सुबह उसे भूख नहीं लगती," हेड मेकेनिक हाथ आगे करके बहुत कोमल ढंग से मुझसे बात करता है। वह पच्छिमी ढंग की चमड़े की जैकेट पहने है, सिर पर अमरीकन टोपी है, पर तौर-तरीके उसके बिलकुल जापानी हैं। इससे मुझे अच्छा लगता है। (मैं यह सोचे बगैर नहीं रह सकती कि हमारे जापानी तौर-तरीके ज्यादा अच्छे हैं, हालाँकि मेरी जिस मित्र ने मुझे अंग्रेजी सिखायी थी उसका कहना था कि वे ज्यादा अच्छे नहीं हैं, सिर्फ अलग तरह के हैं। मेरी मित्र, जो कि बहुत घूम चुकी है, कहा करती थी कि इस तरह की तुलना करना मूर्खता है।)

कोमाको-सान नीचे तक झुकता है और हाथ उसी तरह मुँह के आगे रखे कोमल ढंग से अपनी बात जारी रखता है। "यह बात मेरे कहने की नहीं है, पर एकाउण्टेण्ट सान को ज्यादा रातें इस तरह दफ्तर में नहीं रहना चाहिए। ठीक है बहुत-सा काम यहाँ पड़ता है। यह भी ठीक है कि अब वह उतनी तेजी से काम नहीं कर सकता, फिर भी···।"

ओह, अगर सचाई इतनी ही होती—कि फ्यूमियो ज्यादा काम की वजह से ही दफ्तर में सो रहा होता! पर अफसोस कि सचाई यह नहीं। ठीक है मेरा पति बहुत मेहनती और जी-जान से काम करनेवाला आदमी है—जापान में सभी तो ऐसे हैं—पर जो वह अक्सर रात को इस दम घोटनेवाले सुरक्षित स्थान में पड़ा रहता है, उसका कारण काम का उत्साह नहीं है। कारण मैं जानती हूँ—हालाँकि मैं मरते दम तक किसी को बता नहीं सकती—और वह है मुझसे प्यार कर सकने में उसका निरन्तर असमर्थ होते जाना। ऊपर से तो यही लगता है कि वह अरुबीत की वजह से रात को बाहर रह जाता है। पर असली वजह यही रहस्यमय दुविधा है जिसे वह मुझसे भी छिपाये रखना चाहता है। सच हम दोनों ही एक विचित्र स्थिति में हैं। चाहती हूँ मुझे इतना प्यार चाहनेवाला शरीर न मिला होता!

ओह! आखिर मटका बाहर निकल आया। अब वह जा रहा है। नहीं, उसका मन बदल गया है। अपने फूले हुए ब्रीफकेस से कुछ और मुचड़े हुए कागज निकालकर वह वापस फ्यूमियो के दफ्तर में चला गया है और मेरा पति बार-बार झुकता-मुस्कराता छिपे-छिपे अपनी पिचकी हुई कनपटियों का पसीना पोंछ रहा है। हमें हमेशा खतरा बना रहता है कि कहीं उसकी नौकरी छूट न जाये—यह एक ऐसा संकट है जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। मेरा पति बहुत आदर-भाव से बात सुनता जाता है और मैं आँखें मूँदकर अपने को और प्रतीक्षा के लिए तैयार कर लेती हूँ।

बड़े लोगों को क्या हमेशा इस तरह वक्त लेना अच्छा लगता है—हमेशा अपने से नीचे के लोगों को परेशान रखना, और स्वयं मुग्ध होकर अपनी आवाज सुनते जाना? चार साल जापानी 'ब्रास' ने फ्यूमियो को अटैन्शन रखा था। (अमरीकन लोग फौजी अफसर को 'ब्रास' और बड़े आदमी को 'बिग-शॉट' कहते हैं। मैंने ये शब्द अमरीकन फिल्मों से सीखे हैं।) उसके बाद जब उस बेचारे को बैंक में पहली नौकरी मिली तो वैसा ही उसके साथ बैंक के मैनेजर ने किया।

मेरे मन में कितना विद्रोह उठता था! बैंक की इमारत के बाहर डरी-

सी खड़ी फ्यूमियो का इन्तजार किया करती थी और मन-ही-मन उबलती रहती थी। बेचारा फ्यूमियो ! लाखों जापानी युवक सिपाहियों की तरह वह भी अपनी पढ़ाई पूरी नहीं कर पाया था। सो पास में डिग्री न होने से वह अपने पिता की तरह कोई इज्जत का धन्धा नहीं कर सकता था। वह जापान के उन युवकों का सही उदाहरण है जिन्हें जीवन में अपने लिए कोई अवसर नहीं मिला, जिन्हें कभी ऐसे बूट नहीं मिले जो उनके पैरों में फिट आ सकें। चाहे फ्यूमियो से मेरी शादी रूढ़िगत ढंग से एक बीच की औरत ने तय करायी थी, फिर भी वह जिस साहस के साथ अपने जीवन के हीन स्तर को स्वीकार किये है, उसके लिए मैं मन से उसकी प्रशंसा करती हूँ। कहीं अन्दर उसमें अभिमान की एक परत है—उसी से फ्यूमियो फ्यूमियो है।

घुटनों से अचानक मैं पैरों पर खड़ी हो जाती हूँ।

"कोई मिलनेवाला—एक हैरो-सान गराज के बाहर तुम्हें पूछ रहा है।" कोमाको-सान हाथ आगे किये मुझसे कहता है।

"कोई विदेशी मुझे पूछ रहा है ?" मैं ऊपरी हैरानी दिखाती हूँ। मैंने कोमाको-सान को नहीं बताया कि मैंने एक विदेशी को घर में किरायेदार रख लिया है। हिरोशिमा में ऐसी बात अच्छी नहीं समझी जाती। घर में किरायेदार रखने की बात से ही हेड मेकेनिक सोचने लगता कि हमें आगे बुरे दिनों की आशंका है। कोमाको-सान अगर यह रहस्य बॉस के सामने खोल देता तो अन्धेर न हो जाता ?

"जरा देखना युका-सान।"

स्वयं हैरो-सान सामने खड़ा है। मैं इसके व्यवहार की बेतकल्लुफी की आदी नहीं हो पायी। पर यह मुझे जाहिर नहीं होने देना है कि मुझे चोट पहुँची है। जिस मित्र ने मुझे अंग्रेजी सिखायी थी उसका कहना था कि इटली में रहो तो वैसा ही व्यवहार करो जैसा कि उनकी राजधानी के लोग करते हैं। अब इस अमरीकन नवयुवक के साथ हूँ, तो मुझे ऐसे ही व्यवहार करना है जैसे कि न्यूयार्क की कोई महिला करती। सो मैं ऊँचे स्वर में आवाज देती हूँ, "हैलो सैम-सान !"

"मिस्टर यामोमोतो के साथ कुछ व्यापारिक बात करनी थी, बस वहीं से चला आ रहा हूँ," हैरो-सान दूधिया रूमाल से अपना माथा पोंछता हुआ कहता है। वह 'सिअर सकर' का सूट पहने है और पहले से उजला नजर आ रहा है। बालों में भी उसने कंघी की है। "होली-टोलेडो !" वह कहता है। "यह व्यापार का काम मुझे जरा पसन्द नहीं। न ही इस काम को मैं पसन्द हूँ। उस रंगीन यामोमोतो की मेरे बारे में कोई अच्छी राय नहीं

बनी—यही हाल सीटल में मेरे सौतेले पिता का है···" बात बीच में ही छोड़कर वह विषय बदलने के लिए इधर-उधर देखने लगता है। "युका-सान, इस गराज में कितनी पुरानी छकड़ा गाड़ियाँ जमा हैं!" वह चहक-कर कहता है।

मुझे हँसी आ जाती है। कोई साथ हँसने को हो, यह अनुभव नया-सा है और कितना अच्छा लगता है।

"हाँ, ये दौड़ नहीं जीत सकतीं," मैं सिर हिलाती हूँ। "पर इनमें जो एक नम्बर है वह तो तुमने अभी देखी ही नहीं। उसकी रिहायश अहाते में है, उसका नाम है 'वेनरेबल डक' और वह झूमती भी है। कभी-कभी बॉस की इजाजत से हम उसे पिकनिक या सैर के लिए ले जाते हैं—तभी एक बात मेरे ध्यान में आती है और झट से मैं वह कह भी देती हूँ। "समय कीमती चीज है, यह इस बात पर खासतौर से लागू होता है। तुम इतवार तक रुककर हमारे साथ मिआजिमा क्यों नहीं चलते? वह चेरी देखने का दिन है—सब लोग उस दिन वहीं होंगे।"

पर सैम-सान सिर हिला देता है।

"मैं नहीं जा सकूँगा। मेरी यहाँ दो मीटिंगें और हैं। काम खत्म हो जाने पर हिरोशिमा में और रुकने की कोई वजह नहीं रहेगी। वापसी का हवाई जहाज पकड़ने से पहले मैं नारा और क्योतो में भी थोड़ा घूमना चाहूँगा।"

"बहुत अच्छा खयाल है," मैं अपनी निराशा को छिपाने के लिए खुशी से मुस्करा देती हूँ।

सूमो पहलवान जैसा एक मोटा-तगड़ा आदमी टहलता हुआ पच्छिमी ढंग से मेरी तरफ सिर हिलाकर पास से निकल जाता है। आखिरकार!

"मेरा पति अब खाली है। आओ यहाँ दफ्तर में, एक बार उससे मिल लो" मैं हैरो-सान से कहती हूँ।

अरे! फ्यूमियो कहाँ गया? उसका दफ्तर असल में एक गली-सी है जिसके अँधेरे अहाते में एक छोटी-सी खिड़की से रोशनी आती है। वहाँ उसके काम-चलाऊ बिस्तर के अलावा ढेर-सा गराज का कचरा पड़ा रहता है—टायरों के ढेर, रस्सियों के लच्छे और पेट्रोल के कनस्तर। पहले तो मैं वहाँ अपने पति को देख ही नहीं पाती। अरे, वह रहा। उस अँधेरे सुरक्षित गार के परले सिरे पर दरार-जैसी खिड़की के नीचे खड़ा फ्यूमियो अपने हाथों की किसी चीज को देख रहा है। यह चीज क्या है? वह कोई चिट्ठी पढ़ रहा है या सुटका जाते हुए कोई बीजक उसे दे गया है?

मैं अपना हाथ मुँह पर रख लेती हूँ। फ्यूमियो कोई बीजक या हिसाब

का कागज नहीं देख रहा---अपनी ही गरदन को देख रहा है। हाथ में जेबी शीशा लिये वह इतने गौर से अपनी गरदन के बायें हिस्से को देख रहा है कि हमारे दहलीज पर आ पहुँचने का उसे पता ही नहीं चलता।

मैं थोड़ा खाँसती हूँ। फ्यूमियो घूमकर पीछे देखता है। उस एक ही क्षण में मैं देख लेती हूँ कि उसका चेहरा चिन्ता से विकृत है और आँखों में वीरानगी भरी है। पर तुरन्त ही वह अपने को सँभाल लेता है। (प्रिय फ्यूमियो, मुझे तुम पर कितना गर्व है!) अपने युवा मेहमान को अभिवादन करने तक उसका भाव हमेशा की तरह शान्त और प्रसन्नतापूर्ण हो जाता है। मैं लंच का डब्बा फ्यूमियो के हाथ में दे देती हूँ, पर वह उसे अनमने ढंग से स्पार्क प्लगों के डब्बे के पास मेज पर रख देता है। सहसा मेरा मन होता है कि अपने मेहमान को जल्दी से उस कमरे से बाहर ले आऊँ। वह जेबी शीशा, यह अनचाहा खाना---मुझे लगता है इससे हमारा सब भेद खुल जायेगा···

"चलो सैम-सान, मैं तुम्हें अपनी 'वेनरेबल डक' दिखाऊँ।" मैं ऊँचे स्वर में कहती हूँ। मुझे खुशी है कि विदेशी होने से वह मेरी बातचीत के आकस्मिक उतार-चढ़ाव को नहीं पकड़ पाया। पर अपनी घबराहट में मुझे सब तौर-तरीके भूल जाते हैं, और मैं उन दोनों से आगे कमरे से बाहर निकल आती हूँ।

धूल-भरी पुरानी ब्यूक मुसाफिरों से लदी है। मैं ड्राइवर को बाँहों में उठाकर उसके भरे-भरे गालों को चूम लेती हूँ, और फिर उसे जमीन पर खड़ा करके पीछे से उसके सिर पर हल्की-सी चपत लगाती हूँ कि उसे शिष्टाचार के नाते झुककर अभिवादन करना चाहिए।

"सैम-सान, यह तादेओ है और वह इसकी छोटी बहन मिचिको," कहते हुए मैं पिछली सीट पर बैठी अपनी छोटी बच्ची की तरफ सिर हिलाती हूँ।

"खुशी हुई," हैरो-सान अपने पुष्ट शरीर को जापानी अभिवादन के ढंग से झुकाकर कहता है। "और ये जो बाकी आधा दर्जन हैं, ये सब भी तुम्हारे ही हैं?"

"नहीं, सिर्फ इनके मित्र हैं।"

हम सब हँसते हैं---फ्यूमियो भी, जिससे कि उन दोनों के बीच की चुप्पी टूटती है। मेरा लड़का और लड़की संसार के सबसे अद्भुत बच्चे हैं। यह मैं विश्वास के साथ कह सकती हूँ। वे दोनों मिकी-माउस डिजाइन की लाल किमोनो पहने हैं। सैम-सान गाड़ी में घुस जाता है (बिलकुल पच्छिमी ढंग से, जैसे ये लोग फिल्मों में करते हैं। सब कितना अच्छा लगता है!)

अन्दर पुराने फटे गद्दे से उसका शरीर छूते ही धूल का एक बवण्डर ऊपर उठ आता है। खाँसी के मारे उसका बुरा हाल हो जाता है। मुझे बहुत मनोरंजक लगता है।

मेरी हँसी अभी रुकी नहीं कि···अरे, फ्यूमियो फिर अपनी गरदन को देख रहा है! वह ड्राइवर की सीट पर जा बैठा है, और छिपे-छिपे विंड-स्क्रीन में नजर डाल लेता है। उसकी आँखों में फिर वही वीरानगी भर गयी है। इस सबमें एक सेकेण्ड से अधिक समय नहीं लगता, पर मेरे दिल को जैसे बर्फीली उँगलियों में जकड़ लेता है। मैं अपने कन्धे को ढीला छोड़ देती हूँ। क्षण-भर के लिए लगता है जैसे मेरी साँस रुक रही हो। मैं मुँह खोल-कर हवा अन्दर खींचती हूँ।

"इसका थोड़ा मजा लेना चाहिए," हैरो-सान कहता है। मैं नहीं सोच पाती कि उसने कुछ नहीं देखा, या—मन को सालता विचार—जरूरत से ज्यादा देख लिया है। "आओ सब लोग—बैठो," वह कहता है। "हम लोग सैर के लिए चल रहे हैं। इतवार को 'चेरी-उत्सव' पर चलना है, तो उससे पहले इस पुराने छकड़े को एक बार आजमा लेना चाहिए।"

यह बात वह बिना मुस्कराये सरसरी तौर पर कहता है। ओह, यह विदेशी युवक कितना संवेदनशील और चतुर है! मन में समझकर भी कि मेरी इच्छा है कि वह कुछ दिन और हमारे यहाँ रहे, जता ऐसे रहा है जैसे रुकने में उसे उतनी ही खुशी है जितनी मेरी नजर से होनी चाहिए। कितना सुन्दर संकेत है! मैं इसे कभी नहीं भूलूंगी।

जल्दी से हम लोग बैठ जाते हैं—वैसे ही जैसे फिल्मों में। मैं पिछली सीट पर आ गयी हूँ और इससे पहले कि मुझे कुछ भी पता चल सके, फ्यूमियो गाड़ी स्टार्ट कर देता है। युवा हैरो-सान 'वेनरेबल डक' की खिड़की से बाहर देखने लगता है। गाड़ी कूल्हे मटकाती सड़क की तरफ बढ़ चलती है।

"सायोनारा, बच्चो!" वह चिल्लाकर कहता है।

धूप उसके सुनहरे बालों पर चमकती है। जिन्दगी उसके अन्दर से छलकी पड़ती है। हेड मेकेनिक के गिर्द जमा बच्चे उत्तर में हाथ हिलाते हैं। सब लोग हाथ हिलाते हैं—यहाँ तक कि तादेओ और मिचिको के किमोनो पर बने मिकी-माउस भी हाथ हिलाते हैं। जिन्दगी में हमेशा ज्यादा खुशी नहीं रहती, इसीलिए मैं बच्चों के किमोनो के लिए ऐसी विनोदपूर्ण डिजाइन चुनती हूँ। डिजनी-सान का चूहा कितना प्यारा और विनोदपूर्ण प्राणी है! क्यों?

## चार

कब सोचा था कि अचानक इस तरह मेरी तफरीह हो जायेगी ? बिना वजह ऐसी मजेदार सैर ! मैं अपने को इसकी हकदार नहीं समझती। फ्यूमियो हिचकोले खाती पुरानी छकड़ा-गाड़ी को सड़क पर लिये चलता है और मैं आराम से धूल-भरे गद्दे की पीठ से टेक लगा लेती हूँ। हार्न बजाते हुए हम फिर से बने हिरोशिमा की बिना कोलतार की सड़कों पर बढ़े चलते हैं।

दोपहर को यहाँ कितनी हलचल रहती है ! लोग दो कौर निगलने के लिए दफ्तरों से आ रहे हैं या लंच के खाली डब्बे बगल में दबाये जल्दी-जल्दी वापस जा रहे हैं। बहुत गहमा-गहमी है। मोड़ मुड़ते हुए हम सड़क पार करती दो स्त्रियों से लगभग टकरा जाते हैं। बचाव हो जाने पर वे गिल-गिली हँसी हँसती हैं। मैं मित्र-भाव से उनकी तरफ हाथ हिलाती हूँ, पर मेरी आँखें स्पर्धा से उनके किमोनो के चुस्त कपड़े पर टिकी रहती हैं जो कि खास इस बसन्त के मौसम के लिए ही है। तभी एक परेशान करनेवाली बात मेरे दिमाग में आती है, जैसे कभी-कभी एक कंकड़ जूते में आ घुसता है। अगले रविवार मिआजिमा के चेरी-उत्सव में मैं क्या पहनूँगी ?

सैम-सान के आने की बात से पहले मन में सोचा था कि हरे रंग की पश्चिमी पोशाक पहनूँगी, जो मुझे अंग्रेजी सिखानेवाली मेरी मित्र ने तोक्यो से भेजी थी। पर दुर्भाग्य कि उसकी बाँहें छोटी हैं। मेरी मित्र केइ को वह बात भूल गयी होगी जिसे मैं कभी नहीं भूल सकती—कि मेरी बाँहों के दाग मेरी कहानी सबको सुना देते हैं। वे गन्दे धब्बे, जो किमोनो में अपने-आप ढक जाते हैं, बाहर दिखायी दें, इससे तो मेरी सारी खुशी समाप्त हो जायेगी।

मैं इस समस्या को जबरदस्ती मन से निकाल देती हूँ। अपने से कहती हूँ कि मेरे अच्छी-बुरी लगने से कोई फर्क नहीं पड़ता, क्योंकि मैं अब इकत्तीस की हो चुकी हूँ, और एक पत्नी और एक माँ भी बन चुकी हूँ। अब तो ओहात्सू का वक्त है, और मुझे यही देखना है कि वह उस दिन हैरो-सान को सुन्दर नजर आये। दिमाग में एक खयाल आता है। क्यों न मैं बालों पर लगानी की अपनी चाँदी की सुइयाँ गिरवी रखकर कपड़ा खरीद लूँ और अपनी दर्जिन फ्युकुदा-सान से कहूँ कि वह जल्दी से ओहात्सू के लिए एक किमोनी सी दे। फ्युकुदा-सान एक अच्छी पड़ोसिन है और मुझे विश्वास है कि वह मुझे इन्कार नहीं करेगी।

"क्या सोच रही हो युका-सान ? बता दो, तो तुम्हें एक पेनी···।"

सैम-सान अगली सीट से मुझे देखकर खुले मुँह मुस्करा रहा है। मैं भी चुपचाप बिना कुछ कहे मुस्करा देती हूँ। एक पेनी मिले या दस लाख येन—भला अपने मन की बात कोई किसी को क्यों बतायेगा ? जब छोटी-सी बच्ची थी, तब जो भी मन में आता फटाक् से मुँह से निकाल देती थी। लेकिन छह साल की होने के पहले ही मेरी मामाजान ने मुझे शिष्टाचार सिखा दिया था। मैं अब भी इस दुविधा में हूँ कि कौन-सी बात बेहतर है—पच्छिमी ढंग से सबकुछ मुँह से कह देना या कि पेट में रखे रहना ? मुँह से सबकुछ कह देना आदमी को छोटा बना देता है, लेकिन अपने विचारों को हजम कर लेना कभी-कभी पेट में दर्द भी कर सकता है।

इस हमारी मोटरनुमा बत्तख को क्या हो गया है ? यह इतनी तेजी से मटकती चल रही है कि हम वास्तव में ही एक साइकिल को पीछे छोड़ आगे निकल रहे हैं। फ्यूमियो घूमकर मुझे 'विजय' की एक विशेष मुस्कराहट से देखता है। प्यारा फ्यूमियो ! धूप उसके मजबूत सफेद दाँतों पर चमकती है और वह बिलकुल सैम-सान जैसा पुष्ट नजर आ रहा है। मैं प्रसन्नतापूर्वक अपने से कहती हूँ कि अब निश्चित रूप से सबकुछ ठीक चलता जायेगा।

"हम लोग किधर जा रहे हैं ?" विदेशी पूछता है। "मैंने अभी हिरोशिमा का कुछ भी तो नहीं देखा। जहाज के उन लोगों ने पूरी सुबह मुझे लन्दन से पकड़े रखा। यह शहर भी तोक्यो की तरह फिर से बना लगता है।" वह अपने चारों तरफ देख रहा है। "युद्ध के बाद तुम लोगों ने यह बहुत ही चमत्कार का काम किया है।"

"हाँ," मैं जल्दी से कहती हूँ। "सबकुछ फिर से बना है। सबकुछ नया है।"

कुछ भी हो, मैं हैरो-सान को यह नहीं जानने देना चाहती कि पुराना हिरोशिमा भी जीवित है, क्योंकि हमारा पुरानी आबादी का शहर मलबे पर स्थित एक टूटा, जला और गन्दा कूचा है, जिसे बहुत कम विदेशी देख पाते हैं।

फ्यूमियो अंग्रेजी नहीं जानता, लेकिन उसने सैम-सान के शब्दों का मतलब समझ लिया है। अपने सिर को बिना मोड़े, वह अपने अँगूठे से मोटर के पिछले थैले की तरफ इशारा करता है। मैं उसमें से एक फटी हुई गाइड बुक निकालती हूँ और उसमें से पढ़ने लगती हूँ।

हिरोशिमा एक नदी-मुख भूमि पर स्थित है, जहाँ पाँच धाराओं में नदी ओथा अपने को जापान के भीतरी समुद्र में खाली करती है। "क्या

तुम सुन रहे हो सैम-सान ?" मैं भीड़ के शोरगुल से भी ऊँचे चिल्लाती हूँ ।

"किसी लाउडस्पीकर का इन्तजाम करो गाइड," वह जवाब देता है ।

"6 अगस्त 1945 तक, हिरोशिमा तीन सौ साठ हजार की आबादी का एक सम्पन्न समुद्री बन्दरगाह था । लेकिन उस दिन की सुबह यह महानगर धरती की सतह से अदृश्य हो गया···"

उफ् ! यह गाइड का काम मेरी हिम्मत से बाहर का है । गाइड बुक कहती है कि एक ही मिनट में—आठ-पन्द्रह से आठ-सोलह के बीच साठ हजार घर जलकर राख हो गये और एक लाख आदमी झुलस गये या चिथड़े हो गये । मुझे आँकड़ों से नफरत है । एक-एक संख्या के पीछे से दर्द-भरे इन्सानी चेहरे मुझे घूरते नजर आते हैं । मैं पढ़ना बन्द कर देती हूँ ।

"इस शोर में पढ़कर सुनाना मुश्किल है," मैं जल्दी से झूठ बोल जाती हूँ । "तुम इसे घर चलकर देख सकते हो ।"

शुक्र है मेरा इससे पीछा छूटा । मैं किताब फटे हुए थैले में वापस डाल देती हूँ । लेकिन इससे पहले कि मैं अपनी सीट पर सीधी हो पाऊँ, एक नयी मुसीबत सामने आ जाती है । अब हम 'एटम बम अजायबघर' के सामने से निकल रहे हैं, जहाँ पर दो दृश्य-दर्शक गाड़ियाँ रुकी हुई हैं । टूरिस्ट, अपने कैमरे लटकाये, यहाँ के ध्वंसावशेषों और उनकी तस्वीरों का संग्रह देखने के लिए उनसे बाहर निकल रहे हैं । ओह ! सैम-सान, जो कि यह नहीं जानता कि यह किसी किस्म का अजायबघर है, यहाँ रुककर अन्दर जाना चाहता है ।

"तुम कल सुबह आकर देख लेना ।" मैं उसे समझाना चाहती हूँ । "इस समय यहाँ बहुत भीड़ है ।"

लेकिन इससे हैरो-सान का चेहरा उतर जाता है तो उसकी बात रखने के सिवा कोई चारा नजर नहीं आता—चाहे इससे हम लोगों की दोपहर खराब क्यों न हो जाये । आखिर सैम-सान हमारा सम्मानित अतिथि है ।

"रुको, दोज़ो, फ्यूमियो, रुको जरा," मैं जापानी भाषा में कहती हूँ ।

पर रुकने की बजाय, हमारी 'वेनरेबल डक' तेजी से आगे बढ़ चलती है । फ्यूमियो का पाँव नीचे ऐक्सलेरेटर को दबा रहा है, और उसका चेहरा शीशे में गम्भीर नजर आ रहा है । बात हैरानी की नहीं । (जैसे कि हम बचे हुए लोगों में से एक ने कहा था—उस अजायबघर में जाना अपने कब्रिस्तान में घूमने की तरह है ।) हमारी 'डक' जोर से पहिये खड़खड़ाती तेजी से नदी की तरफ बढ़ती जाती है । मुझे एक भयानक चीख को पी जाना पड़ता है । यदि मेरे पति को स्त्रियों का पच्छिमी ढंग से बात करना बुरा न लगता, तो मैं जरूर उसे धीरे चलाने के लिए कहती । इसी से मैं

होंठ चबाती अपनी सीट से जुड़ी रहती हूँ।

चीं-चीं, घर्र-घर्र, और एक कर्कश आवाज! हमारी पुरानी 'डक' फिसलनी-झूलती पुल तक जा पहुँचती है, और फिर एकाएक ठण्डी पड़ जाती है। हम बाहर कूद आते हैं।

"यह हुई सैर।" हैरो-सान हँसता है। वह जल्दी से गाड़ी के आगे जाता है, लेकिन मेरे पति ने पहले से ही गाड़ी का बॉनेट खोल दिया है और उसके अन्दर झाँक रहा है। वह मुझे बेचैनी की नजर से देखता है। "इसे हटा ले जाओ!" यह अनुरोध मैं उसकी आँखों में पढ़ती हूँ।

"क्या तुम नदी देखना चाहोगे, हैरो-सान?" मैं पूछती हूँ और बिना उसके जवाब का इन्तजार किये उसे नदी के ढलवाँ किनारे पर ले जाती हूँ। मैं फिसलकर लगभग गिर जाती हूँ (जान-बूझकर) और जोर से हँसती हूँ, ताकि उसे लगे कि सबकुछ ठीक है। यदि सैम-सान जापानी होता तो जरूर मेरी हँसी को सही अर्थ में लेकर मुझसे ज्यादा जोर से हँसता। पर बजाय इसके वह असमंजस में मेरी नजर से फ्यूमियो की तरफ देखता है, जो मोटर की ठोंक-पीट कर रहा है।

"मेरी समझ में नहीं आ रहा," वह कहता है। "इस आदमी को हो क्या गया था? इसने गाड़ी इस तरह से क्यों चलाई? अब यह मुझे अपनी सहायता क्यों नहीं करने देता? मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा।"

"घबराओ नहीं, सैम-सान!"

मैं बिना प्रयत्न अपनी प्रसन्नता के दिखावे को बनाये रखती हूँ। यह बताने की जरूरत नहीं कि सैम-सान के पहले प्रश्न का उत्तर नहीं दिया जा सकता। जहाँ तक दूसरे का सवाल है, क्या यह अमरीकन नहीं समझ पा रहा कि फ्यूमियो शरमिन्दा महसूस कर रहा है? ताव में आकर गाड़ी चलाने मे वह उसे तोड़ बैठा है, और अब अपने मन में परेशान हो रहा है? इतना तो एक विदेशी को भी समझ जाना चाहिए।

"देखो! नदी में वे लड़कियाँ सुन्दर नहीं लग रहीं?" मैं खुशी से चिल्लाती हूँ। क्योंकि पुरुष, बच्चों की तरह, उसी समय सबकुछ भूल जाते है जब उनके सामने कोई नयी चीज़ ले आयी जाये।

हैरो-सान अभी तक माथे पर त्यौरी चढ़ाये हुए है। लेकिन जैसे ही उसकी नजर सामने चप्पू वाली नाव पर पड़ती है उसका भाव नरम पड़ जाता है। ताजा पत्तियों जैसी सुन्दर तीन लड़कियाँ नाव के ऊपरी हिस्से में फूस की चटाइयों पर घुटने टेके तामिसेन के स्वर पर गा रही हैं। कितना दुख-भरा गाना है!

"ये सब एक-सी पोशाक क्यों पहने हैं?" सैम-सान पूछता है।

"क्योंकि ये अनाथ हैं। यह अनाथ-आश्रम की पोशाक है," मैं जवाब देती हुई मन में आशा करती हूँ कि मेरा किरायेदार मुझसे ऐसे पेचीदा सवाल नहीं पूछेगा।

"वह गुलदस्ता वहाँ नदी में कैसे है, युका-सान ?"

"गुलदस्ता ?" मेरा चेहरा फक पड़ जाता है। "नहीं, वे कुछ पुराने फूल हैं जो किसी ने पानी में फेंक दिये हैं," मैं कहती हूँ। लेकिन सम-सान अपनी आँखें गुलदस्ते से नहीं हटाता। ठोड़ी की नोक बाहर निकालकर, वह सफेद पैन्जी के गुच्छे को देखता रहता है, रुपहली लहर पर उछल रहा है। कितनी बदकिस्मती की बात है कि यह बिलकुल सामने आ पड़ा है !

"तुम गलत कहती हो," आखिर वह कहता है। "यह वास्तव में एक गुलदस्ता ही है ! तुम देख नहीं रहीं कि उसकी इन्द्रियाँ नीम की हरी छाल से बँधी हैं !" हैरो-सान की ठोड़ी थोड़ी और बाहर को निकल आती है। "मैं तुम्हारे साथ कुछ भी शर्त लगा सकता हूँ कि किसी ने गुच्छा वहाँ डालकर उसे बड़े पत्थर के पीछे फँसा दिया है।"

वह मेरी तरफ प्रश्न-भरी नजर से देखता है, और मैं सूनी नजर से उसे देखती हूँ। लड़कियाँ अपनी नाव में धीरे-धीरे हमारे सामने से गुजर रही हैं। जैसे ही वे इस बहते गुलदस्ते को देखती हैं, नाव खेनेवाली लड़की बड़ी सावधानी से अपने चापुओं को ऊँचा उठा लेती है, जिससे वे उससे छुए नहीं। छोटी-छोटी पानी की बूंदें फूलों पर गिर जाती हैं, जो छलकते आँसुओं-सी नजर आती हैं। लड़कियाँ अपनी आवाजें धीमी कर लेती हैं और उनके गीत का स्वर और भी उदास हो जाता है।

"अरे !" मेरा किरायेदार अचानक चिल्लाता है। "फ्यूमियो को क्या हो गया है ?"

मैं सिर घुमाकर देखती हूँ कि फ्यूमियो जैसे लँगड़ा गाड़ी के खुले बॉनेट पर झुका है। मैं बेचैन कदमों से किनारे से ऊपर आती हूँ।

"फ्यूमियो, क्या बात है ?" मैं चीखती हूँ। "जवाब दो न ?"

लेकिन हमारे किरायेदार ने पहले ही मेरे पति को उस विश्वस्त पच्छिमी ढंग से अपनी बाँहों के घेरे में ले लिया है, जो ढंग मुझे बहुत प्रिय है। वह उसे पुरानी ब्यूक के बाहरी बोर्ड पर बिठा देता है।

"मेरे रूमाल को नदी से भिगो लाओ, युका-सान ! जल्दी करो !"

विदेशी के बड़े-से रूमाल को गीला करने के लिए कठिनाई से उस ढलान पर से उतरते हुए भी मेरे पास समय है कि मैं प्रशंसापूर्वक सोच सकूँ कि वह कैसे स्थितियों को सँभाल लेता है, वह सही माने में एक पुरुष है जिसके मन में एक सहजीवी की तकलीफ के लिए सच्ची सहानुभूति है।

लेकिन एक क्षण में ही वह मेरे मन से बाहर चला जाता है। जब मैं वापस मोटर की तरफ चढ़कर आती हूँ, तो मैं ऊपर से नीचे तक काँप रही हूँ। क्या यह वह चीज तो नहीं ? यह प्रश्न मुझे घेर लेता है। नहीं, नहीं, यह तो सिर्फ कई महीने की आकस्मिक गरमी से हुआ है—और इसलिए कि फ्यूमियो ने अपने को जी-तोड़ उस पुरानी क्रूर मोटर को ठीक करने में लगा दिया था।

"मैं तुम्हें बताता हूँ क्या हुआ है। मुझे यकीन है कि इसे लू लग गयी है।" फ्यूमियो को गाड़ी की पिछली सीट पर बिठाकर हम चल देते हैं, तो सैम-सान कहता है, "हाँ साहब, यहाँ की दोपहर की धूप बहुत ही जान-लेवा है। मैं इसे सीधा अस्पताल ले चल रहा हूँ।"

"नहीं।"

फ्यूमियो ने शब्द 'अस्पताल' समझ लिया होगा, इसी से पूरे जोर से विरोध कर रहा है। यह बात एक घण्टे में ही हमारे पूरे मोहल्ले में फैल जायेगी कि फ्यूमियो अस्पताल गया है। फ्यूमियो का बॉस भी जान जायेगा और हमारा दुष्ट मालिक-मकान तो सुनेगा ही। फिर हम लोगों का क्या होगा ?

"हमें घर ले चलो, सैम-सान !" मैं अपने पति की बर्फीली उँगलियों को तसल्ली देने के लिए दबाकर कहती हूँ।

"अस्पताल नहीं ?"

"नहीं, कृपया घर, सैम-सान !"

"ठीक है, घर ही सही," हैरी-सान कहता है। साथ ही सिर घुमाकर यह भी देख लेता है कि फ्यूमियो गाड़ी की पिछली गद्दी पर, जिसके स्प्रिंग बहुत साल पहले टूट गये थे, सुविधापूर्वक तो है। उसकी बड़ी-बड़ी आँखें थोड़ी मिच जाती हैं और मुझे विश्वास है कि वह अपने से कह रहा है, 'मुझे कुछ भी समझ नहीं आ रहा।'

ओह ! यहाँ हिरोशिमा में बहुत-सी ऐसी चीजें हैं जिन्हें मैं चाहती हूँ कि तुम न समझो, प्रिय सैम-सान ! अचानक मैं अपने-आपको तुमसे सौ साल बड़ी महसूस करने लगी हूँ। तुम इतने सीधे हो···तुमने अभी तक हमारी दीवार के, हमारी बाड़ के, उस तरफ नहीं देखा है। मैं तुम्हारे लिए ही चाहती हूँ कि तुम भी हिरोशिमा के बारे में उतना ही जानकर लौटो जितना कि अन्य लोग जान पाते हैं···जोकि सच बहुत ही थोड़ा है।

# पाँच

यह फ्युकुया का स्टोर कितना प्यारा है ! हम लोग कितना अच्छा समय बिता रहे हैं ! यह जानकर, जैसा कि सैम-सान ने कहा था, कि फ्युमियो की तकलीफ लू लगने के सिवा कुछ नहीं है, मैं निश्चिन्तता से घूम रही हूँ। यह ठीक है कि हमने किसी डॉक्टर को नहीं बुलाया (क्योंकि उससे लोग बातें बनाते), लेकिन हमने उस छोटे-से मेडिकल विद्यार्थी हाशिमोतो-सान से अवश्य परामर्श लिया था, जो हमारी गली में ही रहता है। वह नेक युवक भी इस बात से सहसा सहमत हो गया कि फ्यूमियो जरूर धूप खा गया है। इसलिए अब हम सब खुश हैं। जो पैसा मुझे अपनी चाँदी की सुइयों से मिला है उससे मैं ओहात्सू के लिए बसन्त के उपयुक्त एक जोड़ा खरीदने फ्युकुया स्टोर में गयी हूँ।

यह बहुत ही असाधारण स्थिति है कि मुझे कोई चीज खरीदने का मौका मिले, हालाँकि सुननेवाले को यह विचित्र लग सकता है। पर मैं बहुत गरीब हूँ। यही कारण है कि मैं इसका बहुत आनन्द ले रही हूँ। बार-बार मैं अपने किरायेदार को अपनी तरफ एक अजीब-सी मुस्कान के साथ देखते पाती हूँ। हो सकता है अपने भोलेपन में मैं अपनी खुशी छिपा नहीं पा रही। लेकिन मैं मजबूर हूँ। सैम-सान नहीं जानता कि अपनी पूरी जिन्दगी में कितनी कम बार इतनी बड़ी दुकान में आयी हूँ। यह भी नहीं कि मैंने इसी दुकान को इसके सारे सामान के साथ गारा होते देखा है, और इन्सान की हड्डियों को इसके मलबे में मिलते देखा है। एक के बाद एक चमकते काउण्टर की तरफ उत्सुकता से देखते हुए मुझे महसूस होता है कि उसने मेरी बाँह को दबाया है। मैं उसकी तरफ देखकर मुस्करा देती हूँ, और हम नया मैदान फतह करने आगे बढ़ते हैं। इस बार हम उस आकर्षक विभाग में जाते हैं जहाँ पर सस्ता नकली रेशम बिकता है।

"हे···" सैम-सान बात शुरू करता है और मेरी हँसी फिर फूटने लगती है। सैम-सान के बात करने के कुछ खास अन्दाज हैं और मैं उन सबको पसन्द करने लगी हूँ। मैं उसे उसके 'हे' और 'जी' पर छेड़ने भी लगी हूँ। कितना अच्छा लगता है इधर से उधर आग की तेजी से लपकना ! (यह मसखरेपन की कहावत भी मेरी उस मित्र ने याद कराई थी जिससे मैंने अंग्रेजी सीखी थी।) 'हे-क्या बात है ?' मैं शरारत से उससे पूछती हूँ।

"ओहात्सू को नीचे के दो किमोनो क्यों चाहिएँ ? मई का महीना है। बेचारी जिन्दा भुन जायेगी।"

मेरे मुँह से बात बेतुके ढंग से निकलती है। हँसते हुए मैं अपनी बेतुकी खुशी का कारण उस छोटे-से झुण्ड को समझाती हूँ जो हमारे पीछे-पीछे एक काउण्टर से दूसरे काउण्टर पर आ रहा है। वे सब धीमे स्वर में हँसते हैं (हाथ आगे करके जिससे कि विदेशी घबरा न जाये)। मैं अपने किरायेदार को बताती हूँ कि शताब्दियों से जापान की लड़कियाँ एक साथ नीचे कई-कई किमोनो पहनती आयी हैं—कई अवसरों पर दो से कहीं ज्यादा।

"नये फुर्तीले देशों में, जैसे कि तुम्हारा देश है, फैशन रात-भर में बदल सकते हैं," मैं उससे कहती हूँ, "पर यहाँ तो शताब्दियाँ लग जाती हैं। मिसाल के तौर पर, नीचे के किमोनो में से एक तो उसी रंग का होना चाहिए जिस रंग की ऊपर के किमोनो की डिजाइन हो; जैसे हमें जामुनी रंग का चाहिए।"

"ना, जी!"

यह 'ना जी' सैम-सान ने नहीं, सस्ते नकली रेशम विभाग के छोटे मैनेजर ने कहा है। वह थोड़ी अंग्रेजी जानता है और सम्भव है कि उसने यह ढंग फिल्मों से सीखा है, जो अच्छी आधुनिक भाषा सीखने का सबसे उपयुक्त साधन है।

"मुझे अफसोस है जामुनी रंग की इस वसन्त में बहुत माँग है," वह कहता है। "औरतें सिर्फ जामुनी रंग—जामुनी रंग ही माँगती हैं! वह सस्ता जामुनी नकली रेशम अब खत्म हो गया है।" वह सोच में डूबा अपने खूबसूरत सोने के दाँत को अपने बाल पाइंट पेन से सहलाता धूर्तता के साथ मुस्कराकर कहता है, "उसकी जगह राई का-सा पीला रंग कैसा रहेगा? वह हमारे पास काफी है!"

"क्योंकि कोई उसे चाहता नहीं है।"

"ओह, यह हैरो-सान जो कुछ सोचता है वह सब मुँह से बाहर क्यों निकाल देता है? हजम कर जाने से जो पेट-दर्द होता है उससे बचने के लिए? लेकिन दुकानदार बहुत चतुर होते हैं, नहीं तो वे भूखों मर जाएँ..." और उस सस्ते नकली रेशम विभाग का छोटा मैनेजर अपना सोने का दाँत उघाड़कर मुस्कराता हुआ पूछता है कि जिस नवयुवती के लिए हम यह खूबसूरत चीज खरीद रहे हैं, वह सम्मानित विदेशी की मँगेतर तो नहीं!

"मैं कितना चाहता हूँ कि वह हो! जी हाँ, मैं जरूर चाहता हूँ कि वह हो सके।" सैम-सान हँसते हुए कहता है।

और मैं भी कितना चाहती हूँ कि वह हो सके। मेरी कमसिन, सुन्दर युवा छोटी बहन की जिम्मेदारी सैम-सान जैसे नर-युवक के ऊपर हो, यह मेरी भी हार्दिक इच्छा है। (मेरी मित्र ने, जिसने मुझे अंग्रेजी सिखायी थी,

बताया था कि नर-युवक उसे कहते हैं जिसकी नसों में तेज खून दौड़ता हो; और मैं उस विदेशी की स्वस्थ चमड़ी के नीचे लाल खून की बड़ी-बड़ी नदियाँ कई छोटी-छोटी नदियों के साथ बहते देख सकती हूँ।) उफ् ! ओहात्सू को अपने खयालों में भी उस विदेशी के साथ ब्याहने पर वह मुझसे लड़ेगी। सुसंस्कृत होते हुए भी छोटी बहन में मनमानी करने की बड़ी आदत है— अपने ही मन की करने की तीव्र लालसा, जो कभी-कभी मुझे डरा भी देती है। अनेक हिरोशिमा-वासियों की तरह, जिन्होंने छोटी उम्र में ही भयानक दुर्घटनाएँ झेली हैं, वह लगभग हिस्टीरिया के स्तर पर जीती हैं।

अब एक अजीब-सा छोटा आदमी आगे बढ़कर मैनेजर से बहस करने लगता है। यह ठिगना, झुका-सा आदमी देहाती ढंग के कपड़े और माथे तक आयी बड़ी-सी ऊनी टोपी पहने घण्टे-भर से एक काउण्टर से दूसरे काउण्टर तक हमारा पीछा कर रहा है। असल में हमसे ज्यादा इस आदमी ने हमारी खरीदारी में रुचि ली है। वह गरम होकर छोटे मैनेजर से उस सरसों-जैसे पीले कपड़े की बात पर झगड़ने लगा।

हे ईश्वर ! छोटे मैनेजर की तो गत बनने जा रही है। जैसे-तैसे मुझे उस किसान का ध्यान बँटाना चाहिए। आखिर छोटा मैनेजर उस सस्ते नकली रेशम विभाग में दूसरे ऊंचे पद पर है; और ऊँचा कर्मचारी होते हुए भी उसने हमारे साथ दस मिनट लगाये हैं। मैं झुककर उस ठिगने किसान से पूछती हूँ कि वह कहाँ से आया है। वह अभी उत्तर में झुकता है, शालीनता से साँस खींचकर मुझे बताता है कि वह हिरोशिमा के बाहर रेशमी कीड़ों के खेत में काम करता है। वह शहर में एक दिन के लिए घूमने आया है और क्योंकि फ्युकुया स्टोर अपने चमत्कारिक एक्सेलेरेटर के कारण नये हिरोशिमा का खास आकर्षण है, इसलिए वह अपना पूरा दिन यहीं बिता रहा है। लेकिन जैसे ही उसकी नजर हैरो-सान के गगनचुम्बी शरीर और सुन्दर बालों पर पड़ी है, उसकी सारी रुचि उसमें केन्द्रित हो गयी है। उसने अपने-आपको हैरो-सान के साथ इस तरह जोड़ लिया है, मानो वह ऊँचा विदेशी एक लिफाफा हो और वह ठिगना रेशमी कीड़ों का किसान डाकघर का टिकट।

"वह सरसों-सा पीला कपड़ा···", वह उस विषय पर हठ के साथ लौटकर मुझसे कहता है, "मत खरीदना उसे ! वह रंग तो···"

हमारे छोटे-से झुण्ड के मर्द अपने हाथ और स्त्रियाँ अपने नये वासन्ती पंखे मुँह के आगे करके हँस देती हैं।

"इसमें मजाक क्या है, युका-सान ? मैं मजाक न समझकर मुँह ताकता रहूँ, यह मुझे अच्छा नहीं लगता।" हैरो-सान शिकायत करता है।

"यह ऐसी भद्दी बात है जो समझायी नहीं जा सकती," मैं उससे कहती हूँ।

मेरी मित्र ने, जिसने मुझे अंग्रेजी सिखायी थी, समझाया था कि पच्छिम के लोग खुले भी बहुत होते हैं, पर बनते भी बहुत हैं, जिससे मैं रेशमी कीड़ों के किसान के देहाती मजाक का मतलब उसे नहीं बताना चाहती। खैर, सैम-सान का ध्यान पहले ही किसी और चीज की तरफ चला गया है—उसके अस्थिर अमरीकी स्वभाव के कारण।

"देखो, मैं जरा भी नहीं···"

"अब तुम्हें क्या नहीं समझ आ रहा?" मैं उसे मजाक में कोहनी मारती हूँ, क्योंकि यह बात बार-बार उसकी जबान पर आती है। सैम-सान मुझे देखकर मुस्करा देता है। वह बताता है कि वह यह नहीं समझ पा रहा कि लोग उनका पीछा एक काउण्टर से दूसरे काउण्टर तक क्यों कर रहे हैं। "इन्होंने तो इन्हें भेड़ों की तरह इकट्ठा कर लिया है," वह कुढ़ता है।

स्कूल की तीन लड़कियाँ आपस में हाथ पकड़े हमारे साथ चिपककर खड़ी हैं। ऐसे ही एक युवा जोड़ा—जो अपने चमकते चेहरे से नवविवाहित नजर आता है। एक मोटी औरत, जो कि तेजी से अपने को पंखा झल रही है, हमारी खरीदी हर चीज को उत्सुक उँगलियों से छूकर देख रही है। वह ठिगना रेशमी कीड़ों का किसान हर क्षण बिलकुल हमसे सटकर खड़ा रहता है।

"जब हमने ओहात्सू के लिए चप्पल खरीदी, उस समय सिर्फ स्कूल के बच्चे थे," सैम-सान कहता है। 'नव-विवाहित जोड़ा तब आया जब हमने उसके लिए रूमाल खरीदा—और शेष सब छतरी वाले काउण्टर से साथ हैं। अब हम पूरे दस आदमी हैं—दुकानदार को और हमें मिलाकर। हे ईश्वर! ये लोग हमें अकेला क्यों नहीं छोड़ते?"

अजीब विदेशी है! छः फुट से ज्यादा ऊँचा, लेकिन अक्ल सिर्फ भौंरे-जितनी। क्या यह मुझसे यही उम्मीद करता है कि मैं इन लोगों को ऐसे भगा दूंगी जैसे कोई ताली बजाकर चूजों के झुण्ड को छितरा देता है? जापान के गरीब खरीदार केवल आँखों से ही चीजें खरीदते हैं—क्या युवा अमरीकन यह नहीं समझता? बड़ी नम्रता से वे खुशकिस्मत लोगों की खरीदारी में मजे से हिस्सा लेते हैं। और इसमें बुराई भी क्या है? पच्छिमी लोग कई बार कितने अजीब लगते हैं! वे मिल-जुलकर रहने की पहली सीढ़ी भी नहीं जानते—बिलकुल भी नहीं।

"अरे! क्या यह पागल है?"

वह नम्र, छोटा मैनेजर मेरे हाथों में लिफाफों का ढेर पकड़ा रहा है,

और विदेशी की भौंहें आश्चर्य से खिंच गयी हैं। जल्दी से मैं फुसफुसा देती हूँ कि वह बीच में न पड़े और सैम-सान अपने चौड़े कन्धों को झूठी हताशा से झटका देता है।

"तो अच्छा है तुम भद्दी बन जाओ, अगर यही जापान का रिवाज है! न रोकने दो मुझे," वह अपना सिर झटकता है। "अब हम यहाँ से घर जा रहे हैं?"

"घर।" मैं जवाब देती हूँ। सैम-सान को 'घर' कहना कितना अच्छा लगता है! ओह, मैं जानती हूँ कि मुझे ऐसा नहीं सोचना चाहिए। अपने साथ एक खुश-दिल साथी का होना मेरे लिए इतनी नयी बात है कि इसने मेरा सिर ही फिरा दिया है।

लेकिन सैम-सान जिद करता है, "नहीं, अब हम लोग तुम्हारे लिए भी कुछ खरीदेंगे युका-सान!"

"हाँ-हाँ, जरूर खरीदें।"

नवविवाहित जोड़ा अंग्रेजी समझता है और एक बार फिर सैम-सान की भौंहें तन जाती हैं। वह उनकी तरफ घूरता है। फिर समझदारी की मुस्कान उसके पूरे चेहरे पर फैल जाती है।

"लगता है अब मुझे समझ आने लगी है।"

"कौन-सी बात?" मैं पूछती हूँ। यह अमरीकन ज्यादा घुलने-मिलने वाला नहीं है। वह अपनी हल्के रंग की आँखों को उस झुण्ड पर दौड़ाता है और हल्के-से सिर हिला देता है। क्या इसका मतलब यह है कि जापानी सहयोगिता का अर्थ उसकी समझ में आने लगा है?

सहसा मुझे पिछली शाम की बातें याद हो आयीं—उसका मुझे यह बताना कि घर पर वह कभी-कभी कितना अकेला महसूस करता था, हालाँकि वह कभी अकेला नहीं होता था। सम्भव है हमारे साथ रहकर उसे अपने पिता का अपने मरीजों के साथ सम्बन्ध याद हो आया हो, जिसमें कि पैसे की जगह को कभी-कभी कृतज्ञता और मित्रता ही भर देती थी। क्या इसी की तो सैम-सान खोज नहीं कर रहा? क्या अनजाने में ही अपने पिता के रहने के ढंग का ही तो अनुसरण नहीं कर रहा?

हैरो-सान मेरी दुविधा को बुहार देता है। वह मेरी बाँह पकड़ लेता है।

"सुनो, तुम्हें वह जापानी सुइयों का जोड़ा खरीद दूं, कैसा खयाल है? वे तो लॉलीपॉप-जैसी दीखती हैं।"

"ओह! बुयेन्स!" मेरा खयाल सैम-सान से हटकर अपने पर आ जाता है। मैं जानती हूँ कि एक विवाहिता स्त्री का उपहार स्वीकार करना

बिलकुल उचित नहीं है, लेकिन मैं क्या करूँ ? मेरा मिआजिमा में नये बुयेन्स पहनने का मन है ! "कितना अच्छा रहेगा," मैं अपनी निर्लज्ज आवाज सुनती हूँ। "तुम्हें पता है मेरे पास अपनी चाँदी की थीं जो मैंने···।"

मैं सहसा रुक जाती हूँ, बिलकुल सहसा। सैम-सान ने सब-कुछ भाँप लिया है। मैं उसके देखने के ढंग से समझ जाती हूँ कि उसने जान लिया है, मैंने छोटी बहन की वासन्ती पोशाक खरीदने के लिए कैसे पैसा प्राप्त किया है।

"हम किसी और दिन खरीद लेंगे," मैं घबराकर कहती हूँ। "अब हमें चलना चाहिए, बहुत देर हो गयी है।"

लेकिन हैरो-सान वहीं खड़ा है। वह मुझे अजीब ढंग से देख रहा है। और मैं असह्य आकुलता का अनुभव करती हूँ। आखिर मैं एस्केलेटर की तरफ मुड़ती हूँ। झुण्ड के पीछे होने से मैं इतना घबरा जाती हूँ कि नीचे की बजाय ऊपर जाती सीढ़ियों पर हो लेती हूँ। आकाश की तरफ सरकते हुए मैं अपनी छाती में एक मीठा-सा दर्द महसूस करती हूँ। यह बात अनुचित नहीं की है, लेकिन मुझे हैरो-सान बहुत पसन्द है, और इस बात की खुशी है कि हैरो-सान भी मुझे पसन्द करता है। मुझे लग रहा है कि एस्केलेटर धीमी चाल चलता एक पक्षी है जिसके पंखों पर बैठकर ऊँची उड़ती हुई मैं एक नयी और अधिक प्रसन्न दुनिया की ओर जा रही हूँ।

ऊपर पहुँचकर मैं कूदकर उतर जाती हूँ। हमारा छोटा-सा बाकी झुण्ड भी उतर आता है, और वे सब विदेशी नवयुवक को देखकर स्नेह से हँसते हैं।

एस्केलेटर नीचे रेशमी कीड़ों के उस किसान की तरफ जा रहा है, जो कि मुँह में उँगली दबाये हमारी तरफ देख रहा है, मानो वह एक छोटे लड़के की तरह किसी खेल में से बाहर छूट गया हो। देहाती किसान ने अपनी जिन्दगी में कभी जीना ही नहीं देखा था, एस्केलेटर की तो बात ही क्या ! वह चढ़ने को तरस रहा है, लेकिन उसकी हिम्मत नहीं पड़ती।

ओह ! मेरा किरायेदार, अपनी पच्छिमी तेजी से, रेशमी कीड़ों के किसान को बाँह से पकड़कर इशारों से समझा रहा है कि कैसे वह अपने दोनों पाँव एक ही सीढ़ी पर रखकर स्थिर खड़ा रहे और कैसे वह रेंगता यन्त्र उसे ऊपर ले जायेगा। वह ठिगना आदमी खुशी से अपने दाँत निकालकर हँसता है। जैसे ही वह अद्भुत जोड़ा—एक फ्यूजी पहाड़-जैसा ऊँचा, और दूसरा अपने ही रेशमी कीड़ों के घर-जैसा छोटा और गोल—ऊपर पहुँचता है, वह किसान सैम-सान को नीचे जानेवाले एस्केलेटर की तरफ खींचता है। वे फिर ऊपर नजर आते हैं, फिर नीचे जा रहे हैं। हमारा

छोटा झुण्ड खुश होकर अपने पंखों के पीछे दबी हँसी हँसता है। फिर वे मेरी ओर झुकते हैं और अपने रास्ते चले जाते हैं।

रेशमी कीड़ों का किसान और हैरो-सान एस्केलेटर से फिर ऊपर आते हैं। इस बार अमरीकन मेरे साथ हो जाता है, जबकि देहाती अपने प्रिय एस्केलेटर की ओर जल्दी से लौटने से पहले कई बार हमारी तरफ झुकता है। उसने तरकीब सीख ली है, और वह तब तक ऊपर से नीचे जाता रहेगा जब तक कि सूर्यास्त के समय दुकान बन्द नहीं हो जाती।

"वाह! क्या आदमी है?" सैम-सान हँसता है। "लेकिन तुम्हारे खयाल में उसके सिर में क्या खराबी है? क्या तुमने किसी चीज पर गौर किया है युका-सान—मेरा मतलब है, उसकी ऊनी टोपी के नीचे?"

हम 'नवल-वस्तु विभाग' की ओर चल रहे हैं, और उस जल्दबाजी करती भीड़ में यह बहाना बनाना आसान है कि मैंने बात सुनी ही नहीं। हमारी यह खुशनुमा तफरीह खराब हो, इसका कोई कारण नहीं पैदा होना चाहिए।

"उसने वह ऊनी टोपी अपने सिर से कानों तक खींचकर पहन रखी है," हैरो-सान अपनी बात से नहीं टलता। "तुम जानती हो क्यों? इसलिए कि उसके कान नहीं हैं। हाँ, यह सच बात है कि उस भले आदमी के कान नहीं हैं। तुम जानती हो युका-सान, ऐसा क्यों है? उसकी गरदन पर नीले-पीले निशान हैं, जैसे वह बहुत गहरा जला हो। या फिर किसी जानवर ने उसे नोचा हो।"

मैं अस्पष्ट ढंग से सिर हिलाती हूँ। क्योंकि उसने असलियत नहीं बूझी, इसी से बात यहीं तक रहनी चाहिए। उसे क्यों बताएँ कि वह किस प्रकार का जानवर था जिसने अपने पंखों के निशान हिरोशिमा पर छोड़े—जिसने कि रेशमी कीड़ों के किसान के कान नोच लिये और मेरी बाँह हड्डी के अन्दर तक नोच ली? जितनी अच्छी तरह मैं सैम-सान को जान गयी हूँ उससे मुझे पता है कि वह कितना संवेदनशील है…बहुत ही संवेदनशील है वह! वह यह बात जानकर क्यों दुखी हो कि हमारे देश में चौदह साल पहले क्या हुआ था?

"देखो, ये हैं वे…," मेरे स्वर में उस स्थिति से उबरने का भाव स्पष्ट है। "बुयेन्स! लॉलीपॉप!"

सैम-सान गौर से काउण्टर पर रखे प्लास्टिक के केश-आभूषण को देखता है। वे दर्जनों में हरे रंग और नाप के वहाँ रखे हैं, लेकिन मैं जानती हूँ कि मुझ पर कौन-से जँचते हैं—और मैं किन्हें जँचती हूँ। क्षणभर बाद ही सैम-सान फाख्ता-जैसे भूरे रंग के सिरे वाली 'बुयेन्स' मेरे बालों में लगा

रहा है। कैसा भाग्य है कि उसने भी वही चुने! अच्छा है, हमारी रुचि एक-सी है।

"होली टोलेडो!"

"क्या बात है?"

"युका-सान···तुम बहुत सुन्दर हो।"

मैं जानती हूँ कि मैं शरमा रही हूँ। बिना इसका इन्तजार किये कि सैम-मान पैसे चुका दे, मैं वहाँ से चल पड़ती हूँ। और फिर मैं अपने को जलपान-काउण्टर के पास खड़ी पाती हूँ, जहाँ कई जोड़े हँसी-मजाक कर रहे हैं और पहाड़-जैसी ऊँची फेंटी हुई आइसक्रीम और चिकनी 'बनाना स्प्लिट' खा रहे हैं।

"क्या लोगी?" सैम-सान मेरे पास आकर पूछता है।

ऊँचे स्टूल पर बैठती हुई मैं अपने को एक अमरीकी फिल्म की पात्र-सी महसूस करती हूँ। असिस्टेण्ट आर्डर लेने आता है। सब-कुछ कितना अच्छा लग रहा है! जैसे ही हम पारदर्शी नालियों में से ठण्डा हरा पानी धीरे-धीरे अपने मुँह में चढ़ाते हैं, सैम-सान की और मेरी आँखें टकराती हैं। हम दाँत उघाड़कर एक-दूसरे की तरफ हँसते हैं और मैं निश्चित रूप से जान जाती हूँ कि हम दोनों दोस्त बन गये हैं।

## छः

जरा-सा चूक गयी। और यह स्थिति मेरी थोड़ी-सी सावधानी से बच सकती थी। किसी तरकीब से मैं अपने किरायेदार को थोड़ा समय और बाहर रख लेती, तो मैं उसे अपने पुराने कलाकार मित्र माएदा-सान से मिलने से बचा सकती थी। लेकिन आजकल मैं एक भँवर में जीती हूँ। अपने हैरो-सान के लिए चीजें ठीक करने में व्यस्त, मैं भोर के वक्त अपना फ्युमुमा खोलने से लेकर रात को अपना फ्युटोन पहनने तक अपने पैरों पर ही रहती हूँ। इसी से मेरा टाइम-टेबल गड़बड़ा गया है।

उफ्! कभी-कभी मैं अपने से बड़ी हताश हो जाती हूँ। विवेक और बुद्धि हम जापानी स्त्रियों के बुनियादी गुण हैं, लेकिन मैं अपनी मामा की तरह या झट सोच सकनेवाली आण्ट मात्सुई की तरह समझदार नहीं हो

पायी। क्या इसलिए कि मैं स्वभाव से बहुत विनोदप्रिय हूँ? मुझे बहुत शौक है, बातें करने का, गाने का, सामिसेन बजाने का! उफ्! अपनी इस गलती से शायद मुझे अपने आगे के किरायेदारों से हाथ धोना पड़े।

जैसे ही मैंने अपना गेट खोला, देखा कि माएदा-सान मेरी तीन पड़ोसिनों के साथ एक कतार बनाये हमारे स्नान-गृह की बेंच पर बैठा है। मुझे याद आया कि आज बुध की शाम है, नहाने की शाम। हमारा लकड़ी का दरवाजा दिन-भर की धूप से अभी तक गरम है, लेकिन वह मुझे ठण्डा महसूस हो रहा है। खैर, सिवाय इसके कुछ नहीं किया जा सकता कि उन्हें झुककर अभिवादन करूँ, मुस्कराती हुई आगे बढ़ूँ और वही नपी-तुली बातें नम्रतापूर्वक दोहराऊँ जिनकी कि परिचय कराते समय उपेक्षा की जाती है। हालाँकि मैं अपने किरायेदार को अन्दर चलने के लिए आँख से इशारा करती हूँ, पर मेरी कोशिश तुरन्त असफल हो जाती है। माएदा-सान उसी समय, अपनी अतुलनीय मुस्कराहट होंठों पर लिये विदेशी की ओर देख लेता है।

"अपनी मित्र के सम्मानित मेहमान से मिलकर बड़ी खुशी हुई।"

माएदा-सान एक कर्कश फुसफुसाहट में ही बोल सकता है, लेकिन उसका देखने का भाव जो उसके शब्दों को ढक लेता है और किसी को भी उसकी गले की टूटी-फूटी आवाज की बात भुला देता है। एक कोमल, भद्र व्यक्ति में क्या होता है, जो किसी को एकदम आकर्षित कर लेता है? मेरा पुराना मित्र माएदा-सान अपने को एक बगीचा समझता है, एक छोटा-सा बगीचा, जिसमें लगातार बागवानी की जा रही हो। रोज वह अपने अन्दर का एक चप्पा निखारता है—उसे खोदता है, साफ करता है और पानी देता है, नई खाद में नये बीज बोता है। अपने नम्र और प्रभावशाली ढंग से उसने मुझे भी ऐसा ही करने की राय दी है। नहीं तो, माएदा-सान के विचार में, आदमी के अन्दर बंजर भूमि रह जाती है— जहरीले साँप और दुर्गन्धित घास-फूस वाली भूमि, जोकि हर चीज का दम घोट देती है।

हमारी हरी बेंच पर से धूल झाड़ते हुए वह हमारे किरायेदार को वहाँ बैठने के लिए आमन्त्रित करता है और मैं एकाएक महसूस करती हूँ कि माएदा-सान के व्यक्तित्व ने उस नवयुवक को आकर्षित कर लिया है। अवश्य ऐसा है। मेरा मतलब है सैम-सान व्यक्ति ही ऐसा है जो जानना चाहेगा कि माएदा-सान कौन है—उसकी कर्कश, अप्रिय आवाज और उसके झुलसे हुए मांस के बावजूद हैरो-सान उत्सुकता से बैठ जाता है और एक बार और भद्रतापूर्वक झुकने के बाद माएदा-सान

भी उसका साथ देता है। तीनों औरतें उचित फासले पर हरी घास पर घुटनों के बल बैठ जाती हैं। अपनी आशंका को अत्यधिक उज्ज्वल मुस्कराहट में छिपाती मैं मकान की तरफ चल देती हूँ।

"मैं क्षमा चाहती हूँ। मुझे अपने मेहमान के लिए खाना बनाना है।" मैं कहती हूँ।

पर मैं रसोई की तरफ नहीं जाती। (मेरा कतई वैसा इरादा नहीं था।) एक कुशल स्त्री को किसी स्थिति को अपने हाथ से नहीं जाने देना चाहिए, आण्ट मात्सुई ने मुझे यह सिखाया है, इसी से मैं शोजी के पीछे खड़ी सुनती रहती हूँ— इसके लिए तैयार कि अगर माएदा-सान ने अधिक खुलकर बात करनी चाही, तो अपने किरायेदार को झपट्टा मारकर वहाँ से ले जाऊँगी। कहने का मतलब कि मैं बहुत बेचैन हूँ। प्रारम्भ में सबकुछ ठीक चलता लगता है। माएदा-सान सिर्फ उन्हीं शिष्टाचार की बातों तक सीमित रहता है जोकि सभ्य व्यवहार के लिए जरूरी मानी जाती हैं।

"यह सुनकर बहुत खुशी हुई कि आप इतवार को मिआजिमा चल रहे हैं। मैं भी अपने अन्य दोस्तों के साथ जा रहा हूँ। आशा है आपसे वहाँ मुलाकात होगी, मिस्टर विलोबी!"

(मेहरबानी करके चुप रहो बी-बुलबुल! माएदा-सान की आवाज इतनी कर्कश है कि मुश्किल से कुछ सुन पा रही हूँ। तुम्हारे इतने ऊँचे गाने से मुझे छिपकर सुनने में कितना जोर पड़ता है! डार्लिंग! तुम मेरे कान तो नहीं फाड़ देना चाहतीं? क्यों?)

"वाह, यह तो बहुत अच्छा रहेगा!"

मेरे किरायेदार की आवाज ऊँची और उत्साह-भरी है। (माएदा-सान की घुटी फुसफुसाहट से कहीं भिन्न) और वह मेरे मित्र के चेहरे से नजर नहीं हटा पा रहा। अपने भूरे किमोनो के गरेबान में उस बूढ़े कलाकार ने प्रथानुसार फूल लगा रखा है और उसके चेहरे पर नम्र मुस्कान है, जो उसकी नुकीली ठोड़ी और लम्बी प्यारी नाक का ही एक हिस्सा है।

"तुम ओफ्युरो के शौकीन हो?" माएदा-सान पूछता है। और मैं ईश्वर को धन्यवाद देती हूँ कि उसने ऐसा सुरक्षित विषय चुना है। जब मेरा किरायेदार यह बताता है कि उसे अभी तक जापानी स्नान लेने का सुअवसर प्राप्त नहीं हुआ, तो मेरा पुराना मित्र उससे पूछता है कि क्या वह इस संस्कार की दीक्षा लेना पसन्द करेगा।

"हाँ, अवश्य मैं आपके असाधारण देश के बारे में सबकुछ जानना चाहूँगा।" हैरो-सान उत्साहित होकर कहता है, जिसका कि उसके विदेशी अन्दाज में अपना ही एक आकर्षण है। माएदा-सान, जो कि लोगों को कम

ही पसन्द करता है, उससे खुश है। दो-तीन तालियाँ···जैसा कि पच्छिम में कहा जाता है।

"खैर, जापानी लोग गरम पानी के लिए पागल रहते हैं।" माएदा-सान समझाता है। "जैसे हर अमरीकन काकटेल के लिए और अंग्रेज चाय के लिए, वैसे ही हर जापानी···"

"दुनिया-भर में आप लोग स्नान के बारे में बहुत सचेत माने जाते हैं", सैम-सान बात पूरी करता है। "और सबसे सुथरे !"

"निस्सन्देह यह सच है," माएदा-सान सच्चे गर्व से कहता है। "तो, मेरे दोस्त, हमारे ओफ्युरो के बारे में सबसे विशेष बात यह है कि यह स्नान का पानी नहाने के लिए नहीं होता।"

"नहाने के लिए नहीं होता ?"

"नहीं। नहाओ बाहर। पानी का बड़ा टब सिर्फ इसलिए होता है कि जिस्म को गरमाया जा सके, आराम और सुख दिया जा सके। देखो, स्नान-प्रक्रिया इस तरह चलती है। पहले घर का सबसे बड़ा व्यक्ति भाप छोड़ते बाथ में दाखिल होता है। वह बाहर निकलता है। फिर बेटा दाखिल होता है। वह बाहर आता है। फिर मामा-सान दाखिल होती है और बाहर आती है···।"

"मतलब कि माँ बेटी के बाद स्नान करती है ?" सैम-सान अचकचाया-सा पूछता है और मैं अपने को शोजी के पीछे शरमाती महसूस करती हूँ। मेरा मित्र उस अमरीकन के विचित्र प्रश्न से कैसा महसूस करेगा ? अपने नवयुवक किरायेदार को मैं इतना पसन्द करती हूँ कि चाहती हूँ भागकर बाहर चली जाऊँ और दूसरों के मन में आते गलत विचारों से उसकी रक्षा करूँ।

"बेशक !" माएदा-सान उसे उत्तर देकर चतुरता से बात आगे बढ़ाता है। फिर लड़कियाँ खौलते गरम बाथ में उतरती हैं—और बाहर आती हैं। फिर विनम्र नौकर, अगर कोई हो। घर में कोई छोटा पालतू कुत्ता हो, तो वह सबसे अन्त में स्नान करता है।"

"यही एक बात है मेहरबानी की !"

"जी !"

"नहीं, कुछ नहीं," सैम-सान लज्जित हो कहता है।

ओह ! कितना प्यारा है यह हमारा हैरो-सान ! रेशमी बालों की एक लट उसके कान के आगे-पीछे झूल रही है। मेरी बहुत इच्छा हो रही है कि उसे अपनी उँगली से छुऊँ। मैं अपने को याद दिलाती हूँ कि मनुष्य को ऐसे खयालों को तभी दबा देना चाहिए जबकि वे अभी पनप रहे हों।

माएदा-सान अदा से अपना हाथ उठाता है, रंग के निशानों से भरा, जैसे कि मेरे खयाल में हर कलाकार के हाथ होते हैं।

"एक बात और।" वह कहता है, "स्नान करने से पहले मेरे दोस्त, हमेशा याद रखो कि अपने परिवार की तरफ नीचे झुककर कहो, 'हो फ्युरोनी…मैं स्नान करने लगा हूँ।' जब बाहर निकलो तो झुककर कहो, 'हो फ्युरो माशिता, मैंने स्नान कर लिया है।' समझे?"

"हो फ्युरोनी!" हमारा उतावला अमरीकन अपनी लम्बी टाँगों पर उछलकर चिल्लाता है। वह खुश नजर आता है, जैसे वह एक ऐसे व्यक्ति के साथ हो, जो उसे सचमुच पसन्द है। जरा बताना, मैं स्नान-प्रक्रिया में कौन-से स्थान पर आता हूँ? कुत्ते के बाद?"

माएदा-सान मुग्ध और रसिक ढंग से मुस्कराता है।

"यह देखते हुए कि तुम हमारे सम्मानित मेहमान हो, तुम्हें अवश्य सबसे पहले स्थान देंगे। दरअसल हम सब लोग यहाँ पानी गरम होने का इन्तजार कर रहे हैं। ये तीन स्त्रियाँ, मेरी ही तरह सन्ध्या-स्नान के लिए आयी हैं" माएदा-सान मेरी पड़ोसिनों की तरफ इशारा करता है, जोकि चिकनाहट के धब्बोंवाली मोम्पे पहने घास पर घुटनों के बल बैठी हैं। (उफ्! उनकी घटिया पुरानी काम करने की पैण्टें देखने लायक हैं!)

"तुम्हें मालूम है," वह कहता जाता है, "साधनों की कमी के कारण ये औरतें अपने टब नहीं खरीद सकतीं। इसी से युका-सान और मैं सप्ताह में दो बार इन्हें अपने-अपने घर निमन्त्रित करते हैं। युद्ध से पहले बात बिल्कुल दूसरी थी। अब हम शहर के पब्लिक बाथ में सम्मिलित नहीं हो सकते। इसलिए…"

"नहीं हो सकते?"

ओह! मैं जानती थी! जिस क्षण से मैं डरती थी, वह आ गया। ऐसे क्षण आये बिना नहीं रहते।

"चाय तैयार है।" अपनी शोजी के पीछे से बाहर आकर मैं चहकते स्वर में कहती हूँ, "कृपया अन्दर चलो, सैम-सान!"

मुझे पहले से जानना चाहिए था। सैम-सान की हठी प्रकृति, जिसकी कि मैं बहुत प्रशंसक हूँ, इस समय जिद में बदल जाती है। वह मेरी और चाय की अवहेलना कर देता है।

"क्यों सम्मिलित नहीं हो सकते?" वह आग्रह के साथ अपनी बात दोहराता है!

"अपने चकत्तों के कारण," मेरा मित्र कोमल ढंग से जवाब देता है। "विस्फोट से पैदा हुए चकत्तों के कारण। तुम्हें शायद मालूम नहीं मेरे दोस्त

कि तुम एक एटमबम से आहत व्यक्ति के साथ बात कर रहे हो।"

उफ्! अब तो माएदा-सान ने मारा भेद ही खोल दिया—जैसाकि अमरीकन फिल्मों में कहा जाता है। मेरे खयाल में यह उसने जानबूझकर कहा है। इससे ज्यादा बुरा क्या हो सकता है? उस-जैसा चतुर व्यक्ति बिना किसी ठोस वजह के एक मेहमान को भौंचक नहीं कर सकता।

"हम लोग—युका-सान और हम सब—एटमबम से बच रहे एक लाख व्यक्तियों में से सिर्फ पाँच हैं।" माएदा-सान बात जारी रखता है, "हममें से कई बुरी तरह जल गये—इस बात को छोड़ दो कि उनके अन्दर कितने गहरे जख्म हुए! यही कारण है कि हृष्ट-पुष्ट हिरोशिमावासी, जो युद्ध के बाद यहाँ आये हैं, हमसे कन्नी काटते हैं। एटमबम से बचे लोगों के चकत्तों को, उनके खुरदरे घृणित जख्मों को स्नान-गृह में देखकर उन्हें उबकाई आती है।

पहली बार मुझे अपने प्रिय मित्र माएदा-सान पर गुस्सा आता है। मेरे युवक किरायेदार के बारे में सबसे पहली बात यह है कि वह बहुत संवेदन-शील है। यह सच है कि उसका ऊँचा कद्दावर जिस्म बहुत पुष्ट है। लेकिन माएदा-सान को, जोकि मानव-प्रकृति के बारे में सब-कुछ जानता है, यह भाँप लेना चाहिए था कि वह अमरीकन अन्दर से कितना कोमल है। फिर क्यों नहीं वह अपनी सहज कोमलता से उसके साथ व्यवहार करता? मुझे स्थिति को सँभालने की कोशिश करनी चाहिए।

"क्या मैं चाय यहीं ले आऊँ?" मैं हताश भाव से पूछती हूँ।

कोई भी जवाब नहीं देता। लेकिन मैं जल्दी से घर में वापस चली जाती हूँ, और ट्रे लेकर भागती हुई वापस आ पहुँचती हूँ। हरी चाय लाल पालिशवाले मेरे खूबसूरत कटोरों में प्यारी लगती है। यद्यपि मेरे ओफ्युरो के लिए आये मेहमान चाय स्वीकार करते समय मेरी ओर प्रसन्न भाव से झुकते हैं, फिर भी वे तनाव से बाहर नहीं निकल पाते। मैं माएदा-सान की आँखों में देखकर उसे सचेत करने की कोशिश करती हूँ। मैं सफल भी हो जाती हूँ, और अपनी उँगलियाँ होंठों पर रख लेती हूँ। लेकिन आश्चर्य की बात कि वह अपना सिर हिला देता है। उस क्षण मैं महसूस करती हूँ कि माएदा-सान का तरीका मुझसे भिन्न है। यह बात साफ है कि वह स्थिति अपने हाथ में लेना चाहता है। एकाएक मुझे लगता है कि मैं उससे नाराज नहीं हूँ। मैं स्वयं बहुत हल्की महसूस करती हूँ।

"यह हरादा-सान एटमबम के शिकार लोगों का एक सही उदाहरण है," बूढ़ा कलाकार कहता जाता है और हमारी तीन मित्रों में से एक से नजर मिलाता है जो पीछे घास पर घुटने टेके बैठी है। "इसने मुझसे कहा

था कि आपसे कहूँ कि उसके बदसूरत चेहरे को देखकर आप घबरा न जायें। वह महसूस करती है कि उसका चेहरा बहुत सपाट है। खुशकिस्मती से उसके ऊपर रेलवे स्टेशन आ गिरा था। मैं इसे खुशकिस्मती कहूँगा, क्योंकि उसके सीमेण्ट ने हरादा-सान को घातक प्रकाश से बचा लिया। उफ्! मेरी मित्र हरादा-सान ने कितनी मुसीबतें झेली हैं। उसका फूल सजाने का एक अच्छा-सा स्कूल था, जो उसने खो दिया। प्यारे-से लड़के थे—वे खो दिये। अगस्त के उस विख्यात दिन एक मिनट में ही इसने पति, स्वास्थ्य और सुन्दरता सबकुछ खो दिया। अब अन्य बचे हुए गरीब लोगों की तरह इसने अपना नाम म्यूनिसिपल दफ्तर में दिन के मजदूरों में दर्ज करा रखा है और सड़कें कूटती है।"

मैम-सान अपनी हल्की भूरी चमड़ी के नीचे पीला पड़ गया है। वह एक नजर हरादा-सान को देख लेता है। फिर यह निश्चय नहीं कर पाता कि अपनी नजर कहाँ टिकाये।

"अब हरादा-सान आधी रात को उठती है और अपनी सूजी टाँगों पर मीलों चलकर जाती है," माएदा-सान बोलता जाता है। "दिन-भर गधों की तरह काम करने के बाद घिसटती हुई समुद्र के किनारे से खाने लायक नरम सीपियाँ चुनने जाती है, या फिर पहाड़ियों से बूटियाँ ढूंढ़ने। इतना कम पैसा मिलता है कि जीते रहने के लिए चावल भी नहीं खरीद सकती। अभी 'अरुबीत' भी करती है—थोड़े-से और येन कमाने के लिए पूरी रात जागकर दूसरा काम करती है। अपनी उँगलियों से मछली फाड़-कर होटलों के लिए छोटे-छोटे टुकड़ों में काटती है। अँधेरी रात में अकेले बैठकर मछली के टुकड़े काटना बड़ी मेहनत का काम है। इस काम में भी कई हजार में से—या दस हजार में से एक है। मेरे दोस्त, एक मुद्दत हो गयी हरादा-सान को दिल खोलकर हँसे हुए।"

माएदा-सान बोलते-बोलते चुप कर जाता है और मैं जल्दी से हैरो-सान की तरफ देख लेती हूँ। उफ्! वही निराशा की झलक जोकि मैं जानती थी कि हमारी और हमारी गली की असलियत मालूम होने से उस पर छा जायेगी। लेकिन तभी मेरी नजर हरादा-सान की तरफ चली जाती है और मुझे हैरो-सान को लेकर इतना दुःख नहीं रहता। कितनी अजीब बात है—हालाँकि जब से यह आया है मैं भरसक कोशिश करती रही हूँ कि उसे पता न चले।

मैं आहिस्ता-से चलकर ताजा घास पार करती हुई हरादा-सान की तरफ जाती हूँ। अपनी रंगीन ट्रे के साथ उसके सामने झुकती हूँ।

"चा" मैं कहती हूँ। "दोज़ो!"

हरादा-सान चाय का गोल लाल कटोरा, जो मैं उसकी तरफ बढ़ाती हूँ, मेरे हाथ से ले लेता है। जैसे ही हमारे हाथ एक-दूसरे से पल-भर के लिए छूते हैं, हमारे बीच मित्रता की एक चिनगारी सुलग जाती है। मेरा मन करता है कि मैं हरादा-सान को अपनी बाँहों में भींच लूं, जैसे कि मैंने एक बार दो पच्छिमी औरतों को रेलवे स्टेशन पर एक-दूसरे को आलिंगन करते देखा था। लेकिन जापानियों का दुःख हमेशा अन्दर ही बन्द रहना चाहिए। हमारी दो जोड़ी आँखें फिर भी सबकुछ कह देती हैं और गरम चाय से उठती भाप कृपापूर्वक हरादा-सान के बदसूरत नक्शों को ढक लेती है।

तभी एक असाधारण घटना होती है। मेरी जैसे अन्दर की आँख खुल जाती है। उस भाप के पर्दे के पीछे मुझे वह हरादा-सान नजर आती है जिसका चेहरा अभी एटमबम ने विकृत नहीं किया था––उसका युवा, सुन्दर और प्यार-भरा चेहरा। हरादा-सान साँस खींचती है। कोमल भाव से आगे झुकती है। मेरी आँखों की पुतलियों में वह अपना सही रूप देखती है, और उसका भद्दा चेहरा आभार की मुस्कराहट से फैल जाता है। एक गूँजती-सी युवा हँसी उसके गले से बाहर आती है।

'आरिगोतो' वह फुसफुसाती है और चाय ले लेती है। 'धन्यवाद !' हरादा-सान के कन्धों के ऊपर से मैं सैम-सान का चेहरा देख सकती हूँ। उसकी आँखों में कितनी व्यथा है ! वह असलियत जान गया है। क्या अब वह हमारे दुखों से दूर भाग जायेगा और अपने दोस्तों से हमारी सिफारिश नहीं करेगा ? बहरहाल, यदि वह हमें छोड़कर जाना ही चाहेगा तो चला जाये, क्योंकि ये मेरे लोग हैं। मेरा पूरा ध्यान, मेरा पूरा प्यार, अब हरादा-सान की ओर मुड़ गया है। मेरी आँखों के आईने में अपने बेदाग चेहरे की परछाईं देखकर वह अब भी मुस्करा रही है और मैं भी अपनी मित्र की तरफ देखकर मुस्करा रही हूँ––उस भाप के पीछे से जोकि चाय के लाल प्याले से उठ रही है।

# सात

यदि सैम-सान जापानी होता तो वह भी यही जताता जैसे कुछ हुआ ही न हो। खैर, वह जापानी नहीं है। हिरोशिमा के बाहरी खोल के भीतर की पहली झलक ने ही उसे बुरी तरह विचलित कर दिया है और वह नहीं जानता कि इसे कैसे छिपाये। उसके होंठों के कोने सख्त हो रहे हैं और वह शेष मेहमानों के जाने के बाद बाग में चक्कर काट रहा है। हैरो-सान जैसे हैरो-सान रह ही नहीं गया है।

मैं चुपके से घर के अन्दर चली जाती हूँ, क्योंकि यह स्पष्ट है कि हमारा किरायेदार एकान्त चाहता है। रसोईघर में मैं अपने मिट्टी के बरतन में चावल डालकर ऊपर से पानी बहने देती हूँ। मेरा प्यारा रसोईघर! मैं इसे कितना प्यार करती हूँ। यह जगह छोटी-सी, खाली और हर आधुनिक सुख से रहित है, फिर भी यहाँ मैं हर जापानी स्त्री की तरह कितनी सुखी महसूस करती हूँ! अपने रसोईघर में अकेली बैठकर हम अपने घुटे दुखों को बाहर निकाल सकती हैं और अपनी उन चिन्ताओं को अपने से स्वीकार कर सकती हैं, जो हर समय हमें दबाये रखनी होती हैं। खड़े होकर समुद्री सेवार में मांस मिलाकर बनाते हुए मेरा ध्यान फ्यूमियो की तरफ चला जाता है और एक काले बाज की तरह भय मुझ पर छा जाता है।

टन्-टन्। मैं घण्टे गिनती हूँ। पता चलता है कि आठ बज गये हैं। हर शाम फ्यूमियो गराज से घर पहुँचने में देर लगाता है और हर रात जब वह पहुँचता है तो पहले से ज्यादा थका हुआ लगता है (जिस फ्यूमियो से मैंने शादी की थी वह तो पूरा रास्ता भागते हुए दस मिनट में तय कर लेता था —अपने से बड़े नाप के फौजी बूटों में भी!) मैं इतनी उत्सुक हूँ कि जब आग जलाने जाती हूँ, तो मेरी काँपती उँगलियों से माचिस गिर जाती है जिससे जलकर मेरे युकाता में एक छेद हो जाता है।

एक ठहाके की आवाज हमारे घर को हिला देती है। जल्दी से मैं 'शोजी' की दरार में से झाँकती हूँ और देखती हूँ कि सैम-सान बच्चों के साथ जमीन पर बैठ चुका है। सैम-सान उन्हें बता रहा है कि उसकी जेब का रूमाल एकाएक तीखे कानोंवाला खरगोश बन सकता है। वे अन्दर बहुत सुख से समय बिता रहे हैं। कितना प्यारा, कितना सहज यह युवा अमरीकन है—बिलकुल ऐसा जैसे कि हमारे परिवार का ही एक सदस्य हो, हालाँकि तीन दिन पहले तक हमने इसे कभी देखा भी नहीं था। उसने यहाँ रहना, जमीन पर सोना और हर प्रकार की असुविधा सहना पसन्द किया

है और वह हमारे छोटे-से घर के वातावरण में खुश है। बहुत प्रसन्नचित्त से मैं खाना बनाने लौट आती हूँ।

आह! मैं बाग में अपने पति के कदमों की आहट और लकड़ी के दरवाजे के खुलने और बन्द होने की आवाज सुनती हूँ। इस संकेत पर मैं लकड़ी के पतीले में चावल और रोगन किये सुन्दर फूलदार डूँगों में समुद्री सेवार में मिला मांस डाल देती हूँ। मैं दूसरे कमरे में उन्हें एक-दूसरे को 'हेलो' करते और मिचिको को 'कोनिचिवा पापा सान्' कहते सुन सकती हूँ। मैं निश्चय करती हूँ कि यह शाम बहुत खुशनुमा ढंग से बिताऊँगी जिससे सैम-सान उन दुःखदायी बातों के बारे में, जो उसने सुनी हैं, और न सोचे। कितने अफसोस की बात है कि ओहात्सू 'अरुबीत' पर गयी है। उसका सुन्दर चेहरा (जो सम्भवतः सैम-सान को तोशो हामादा की याद दिलाता है) हमेशा उसे प्रसन्नचित्त रखता है।

"तुम लोग कितने खुश नजर आ रहे हो!" 'शोजी' खोलते ही उन्हें नीची खाना खाने की चौकी के इर्द-गिर्द बैठे देखकर मैं कहती हूँ। चौकी के नीचे से अँगीठी की सुखदायक आँच आ रही है। मिचिको हैरो-सान को बड़ी गम्भीरता से चाप स्टिक का प्रयोग सिखा रही है।

"दोजो," मेरी हीरे-सी बच्ची धीरज के साथ कहती है। इस तरह "सैमी!"

"मिचिको!" मैं आश्चर्य से चीखती हूँ।

"मैंने ही इससे कहा है कि मुझे सैमी कहकर बुलाये," मेरा किरायेदार समझाता है और मेरी ओर देखकर उसी तरह मुस्कराता है। वह अपनी बाँह मिचिको के गिर्द डालकर उसे छाती से सटा लेता है। "तुम मिचिको को मत डाँटो यूका-सान! यह मेरी लड़की है।"

मैं चावल का डूँगा चौकी के बीचों-बीच रख देती हूँ। जैसे ही मैं उसका ढक्कन उठाती हूँ, भाप का एक सुखद झोंका ऊपर उठ आता है। सैम-सान अपनी हाथीदाँत का चाप स्टिक्स को बड़े हास्यास्पद ढंग से चलाने लगता है।

"भद्दे छुरी-काँटों का इस्तेमाल करने की जरूरत ही क्या है? मैं आज से चाप स्टिक्स ही इस्तेमाल किया करूँगा।" वह कहता है और फ्यूमियो दाँत निकालकर मुस्कराता है। ओह, मेरे प्यारे पति, तुम्हारे पीले होंठों को ऊपर उठते देख मुझे कितनी खुशी होती है! इन दिनों यह चीज बहुत ही दुर्लभ हो गयी है। मैं शरमाकर मुस्कराती हुई उसे देखती हूँ। फिर अपनी आँखें झुका लेती हूँ, यहाँ तक कि अपनी पलकें मुझे गालों को छूती महसूस होती हैं। यह फ्यूमियो को घबरा देता है कि मैं उसके अपने प्रति भावों को

लोगों के बीच प्रकट करूँ, लेकिन स्नेह की एक लहर मेरे और मेरे पति के बीच दौड़ जाती है।

मैं सैम-सान के पास घुटनों पर झुककर उसके आगे सूप का डूँगा रख देती हूँ। उसके ऊपर से ढक्कन हटा देती हूँ जिस पर एक पीले मेंढक को खाती बत्तख का डिजाइन बना है।

"मुझे उम्मीद है तुम्हें हमारा समुद्री सेवार में मिले मांस का सूप पसन्द आयेगा, सैम-सान ! इसमें उन फूलों का इत्र पड़ा है जिन्हें ओहात्सू ने बाग में उगाया है।" इसे वह पसन्द आ जाय, इसीलिए मैं धीरे-से जोड़ देती हूँ।

"ओहात्सू ने उगाया है ?"

हमारा किरायेदार हैरान हो जाता है कि ओहात्सू-जैसी नाजुक लड़की क्या सच ही एक बाग की देखभाल कर सकती है। सूप को बिना चखे ही वह कहता है, "बहुत स्वादिष्ट है।" फिर एक स्नेह-भरी नजर हमारे कमरे पर डाल लेता है। "यहाँ निःसन्देह बड़ा अच्छा लगता है।" वह खुशी से कहता है और मुझे लगता है कि वह अपने पुराने ढंग पर लौट आया है।

मैं भी कमरे में चारों तरफ देखती हूँ। विदेशी की दृष्टि से देखने पर मुझे भी वह नया-सा लगता है। यह कितना साफ और सुखदायक है ! हमारी चित्रांकित दीवार पर फूलों का एक गुच्छा माएदा-सान ने बनाया है। उसके नीचे प्राचीन जापानी शब्द लिखे हैं : "जब तुम्हारे मन में फूल खिलेंगे तो सारी दुनिया उनकी खुशबू से महक उठेगी।" बेल-बूटों के नीचे फूलों की वास्तविक व्यवस्था इतनी विनीत है कि देखनेवालों के मन में वह नम्र विचार भर देती है। यही मेरे खयाल में फूलों का असली उद्देश्य है। (तीन सफेद नलिनी के फूल, जो खुद कुछ नहीं चाहते, केवल दुखी दिलों के लिए शान्ति माँगते हैं, एक सफेद फूलदान में से बाहर निकल रहे हैं।) फिसलने दरवाजों की दरार में से मैं अपने पुराने पत्थर के लैम्प के आकार का अन्दाजा लगाती हूँ। वह हमारे पीले चेरी के पेड़ पर धीमी रोशनी डालता है। उस पेड़ की कलियाँ अभी अपने-अपने शिशु-वस्त्रों में लिपटी सो रही हैं।

"यह है घर," हैरो-सान एहसास के साथ कहता है। "तुम जानती हो युका-सान कि एक मकान को घर बनाने के लिए तुम्हारी-जैसी लड़की की जरूरत होती है—एक आदमी को पति बनाने के लिए और बच्चों को--- उन्हें तुम खुद ही देख लो।"

मैं घबराहट में घिर जाती हूँ। मेरी-जैसी तीस साल की विवाहिता स्त्री पर प्रशंसाओं की इतनी बौछार ! न जानते हुए कि अपनी नजर कहाँ

रखूँ, मैं अपना लजाता चेहरा मिचिको के बालों में छिपा लेती हूँ। वह अपनी बाँहें मेरी गरदन में डाल देती है। सच, जिन्दगी कितनी प्यारी है! मैं आभार से इस तरह फट पड़ना चाहती हूँ जैसे तेज धूप में नारंगी। अपनी खुशी को छिपाने के लिए मैं रसोईघर में जाकर स्वादिष्ट, कच्ची, पीली-सफेद मछलियाँ और कटी गाजर का अचार ले आती हूँ। इस विशेष खाने के चखे जाने के बाद, जिसे कि मैं हैरो-सान के लिए विशेष रूप से खरीदकर लायी थी, मैं साके उँडेलती हूँ। अपने पैरों की उँगलियों को मोड़ती हुई खुशी से मैं पीछे हटकर बैठ जाती हूँ और अपने परिवार को खाते और गप करते देखती रहती हूँ।

मेरे प्रिय लोग! मेज के नीचे पाँच जोड़ी पैर गरम हो चुके हैं और वह गरमी ऊपर हमारी पाँच जोड़ी टाँगों तक, जोकि मुलायम रूई-भरे कपड़े से ढकी हैं, फैल रही हैं। पाँच जोड़ी कुहनियाँ चौकी के ऊपर टिकी हैं। पाँच प्रसन्न चेहरे खाने का गन्धमय धुआँ ले रहे हैं। चापस्टिक्स लगातार चल रही हैं।

प्याले साके से भरे हुए हैं। जैसे ही वह चावल की पीली शराब हमारे गले से नीचे उतरकर पेट में पहुँचती है, पेट भी हमारी ही तरह खुश और गरम हो उठता है। अँगीठी तथा खाने और शराब की गरमी हमें सन्तोष का अनुभव करा रही है।

ओह, मैं तो आपे से बाहर हुई जा रही हूँ—इस बात को महसूस करते हुए कि मैं अपने घर और परिवार को कितना प्यार करती हूँ! मैं एकदम झेंप जाती हूँ। सालों से मैंने यही सोचा है कि कैसे अपने झोंसले को फिर से ठीक करूँ, उसे मुलायम परों से सुखद बनाऊँ और अपने छोटे बच्चों के लिए चोगा जुटाऊँ। ओह, मैं बहुत स्वार्थी रही हूँ, 'अपने' और 'मेरे' के बीच में ही व्यस्त! मेरे इस शहीद हुए शहर में करने को बहुत-कुछ है, हमारे उन गिरोहों को ही सहायता की इतनी आवश्यकता है जो विध्वस्त लोगों के लिए काम कर रहे हैं। माएदा-सान मुझसे कहता है कि मुझे उन्हें भी कुछ समय और स्नेह देना चाहिए। लेकिन क्या माएदा-सान लोगों से बहुत ज्यादा की अपेक्षा नहीं करता?

"जरा मेरी तरफ ध्यान दीजिए, युका-सान, फ्यूमियो-सान!"

मैं उत्सुकतापूर्वक उसकी ओर झुकती हूँ और फ्यूमियो भी नम्रता से झुकता है।

"मैं संसार के सबसे अच्छे जोड़े से मिलने की खुशी में पीना चाहता हूँ।" हैरो-सान कहता है। "तुम दोनों को सुखी लम्बी आयु मिले। तुम्हारे बच्चों को सुखी जीवन मिले। और, यह देखते हुए कि यह जापान है,

तुम्हारे सब आदरणीय पोते-पोतियों को भी !'' सैम-सान हँसता है।

उसे थोड़ी चढ़ गयी है, फिर भी वह कितना प्यारा है !

वह अपना प्याला खाली कर देता है और फिर से भरने के लिए आगे बढ़ा देता है।

''और अब,'' सैम-सान जोर से कहता है, ''हमें सबकी खुशहाली के लिए पीनी चाहिए।''

मैं फ्यूमियो को अनुवाद करके समझाती हूँ। फिर बच्चों के लिए थोड़ी और शराब उँडेल देती हूँ। मैं अपना खूबसूरत प्याला उठाती हूँ, जिसके अन्दर लाल बेरी का चित्र बना है। मैं अपने मेहमान की तरफ झुकती हूँ, फिर अपने पति की तरफ, फिर अपने बेटे की तरफ और सबसे अन्त में अपनी लड़की की तरफ। उसके बाद मैं अपने पति की तरफ फिर मुड़ती हूँ और—उफ् ! गरम शराब मेरे हाथ पर गिर जाती है। जैसे ही मैं फ्यूमियो की तरफ देखकर मुस्कराती हूँ, हमारी आँखें टकराती हैं, वैसे ही उसकी काली युवा आँखों में मैं क्या देखती हूँ—निराशा ! वे दुःख से धधक रही हैं। दो आँसू उसकी लम्बी बरौनियों में पल-भर काँपते हैं, फिर गालों से नीचे ढुलक आते हैं।

एक सर्द हाथ जैसे मेरे दिल को जकड़ लेता है। मुझे अपनी चीख दबानी पड़ती है। अब मुझे पता चलता है कि फ्यूमियो को जो हुआ था, वह लू लगना नहीं था। इस डर से कि मैं अपना संयम न खो बैठूँ, मैं अपने पैरों पर उचककर पीछे फ्युसुमा की तरफ बढ़ती हुई बुदबुदाती हूँ, ''कृपया मुझे क्षमा करें।'' मैं देखती हूँ कि हैरो-सान चिन्ता से पहले मुझे और फिर फ्यूमियो को देखता है। मुझे लगता है कि इस समय बहाना करना उचित ही था।

''मेरे हाथ ने अपने को साके से जला लिया है। फूहड़ हाथ !'' मैं सजा के तौर पर उसे एक चपत लगाकर जोर से कहती हूँ। खूब ! मैंने सैम-सान को हँसा दिया, अपने बच्चों को भी हँसा दिया। वे भी अपने छोटे पंजों की जोर की चपतें लगाने लगते हैं, तो मैं कमरे से खिसक आती हूँ।

खैर, मैंने किसी तरह निभा लिया। मेरी आँखें जल रही हैं और पूरा शरीर दर्द कर रहा है। मैं फ्युसुमा बन्द कर देती हूँ। अपना सिर दीवार पर टँगे प्लास्टिक के थैले के अन्दर (जोकि मेरी अंग्रेजी सिखानेवाली मित्र ने मुझे तोक्यो से भेजा था) डाल देती हूँ और अपने को फफकने देती हूँ। मैं धीरे-धीरे रोती हूँ : अपने होंठों को इस तरह जोर से काटती हूँ कि खून का स्वाद मुँह में आ जाता है। मुझे जरा भी आवाज नहीं करनी, हालाँकि मैं हिचकियों से हिले जा रही हूँ। फ्यूमियो ! ओह फ्यूमियो।

मैं अपने-आपको रोते सुन सकती हूँ, लेकिन बहुत धीमे। मेरा एक पाँव ऐंठन से ऊपर को उठ गया है और जोर-जोर से फर्श के साथ टकरा रहा है। रुलाई से मैं दोहरी हुई जा रही हूँ। मेरा पाँव पीड़ा के मारे अपनी साफ-सफेद ताबी से फर्श को लगातार पीटे जा रहा है। मेरे आँसू उस प्लास्टिक के थैले को एक छोटी-सी झील की तरह भरे जा रहे हैं।

आधा मिनट गुजर गया होगा। मेरे मन के भीतर कहीं आ रहा है कि अब मुझे जल्दी लौटना चाहिए। हमारा किरायेदार आश्चर्य कर रहा होगा कि मुझे क्या हुआ है। मेरा पाँव अपने को चोट पहुँचाता जमीन को पीटे जा रहा है और मैं तड़पती हुई सुबकती जा रही हूँ, मानो मुझे उबकाई आ रही हो। पर अचानक मैं अपने सिर को झटका देकर तोक्यो से आये सुन्दर बैग में से सिर निकाल लेती हूँ और अपनी आखिरी हिचकी को भी वहीं रोक देती हूँ। अपने लम्बे बालों को सहेजती हूँ--वे स्नान के बाद अभी तक गीले हैं—और होंठों के कोनों को ठीक करती अपना चेहरा भी सहेज लेती हूँ। जल्दी-जल्दी! मैंने चमकते हरे आलूचों का एक डूँगा तैयार कर लिया है। उसे ऊँचा उठाकर अपने आगे किये मैं सबके बीच वापस पहुँच जाती हूँ।

## आठ

"फूलों के कीड़े! ओह, मैं कोई ऐसी दुनिया चाहती हूँ जिसमें ये कीड़े न हों।"

ओहात्सू अपनी फूलों की क्यारी में घुटनों के बल बैठकर एक सफेद पैन्जी से कीड़ा निकालती है और फूल के विकृत चेहरे को चिन्तित दृष्टि से देखती है।

"मैं इन गन्दे कीड़ों से निजात पाना चाहती हूँ।" छोटी बहन आवेश के साथ कहती है। उसकी आवाज दुःख से भरी है। उफ्! मैं चाहती हूँ कि ओहात्सू जो कुछ भी कहा या किया करे, उसमें इतनी भावुकता न भर दिया करे। वह फूलों को बहुत चाहती है। उन्हें लेकर बहुत परेशान भी होती है। जैसे ही वह उस कीड़े को अपने आगे की उँगली और अँगूठे के बीच पकड़ती है, उसके भूरे सींग डर के मारे आगे-पीछे को हिलने लगते हैं। तभी ओहात्सू की व्याकुल सहानुभूति उसकी ओर घूम जाती है।

"क्या इसे दर्द महसूस होता है जबकि इसे···तुम्हें मालूम है ? तुम्हारे खयाल में होता है ?"

वह शब्द 'मसला' का प्रयोग नहीं कर पा रही, इसी से अपनी आँख के कोने से एक प्रश्नात्मक दृष्टि मुझ पर डालती है। हम घुटने टेके साथ-साथ निराई कर रही हैं। मई की हरी-सी रात इतनी कोमल है कि ओहात्सू उसकी शान्ति भंग नहीं करना चाहती। इसलिए वह मेरे साथ फुसफुसाकर बात कर रही है। उसका हर जीव-जन्तु के लिए परेशान होना छूत की बीमारी की तरह है। अचानक मुझे हिरोशिमा के पशुओं का मिमियाना, रम्भाना और हताशा से भौंकना याद हो आता है—वह सब-कुछ जो उन्होंने इस महाबलि के दिन सहा और झेला था। हाँ, मैं समझती हूँ हर कोई दुःख सहता है—एक कीड़ा भी। मैं ओहात्सू को इशारा करती हूँ कि वह उस कीड़े को खुला छोड़ दे। जैसे ही वह कीड़ा अपने ऐंठे सींगों को सुख से लंगड़ाता चलने लगता है, ओहात्सू और मैं एक-दूसरी की तरफ देखकर मुस्करा देती हैं

छोटी बहन के साथ फूल की क्यारी में घुटने टेककर बैठना मुझे अच्छा लगता है। सिर के ऊपर पेड़ के छेद में से झींगुरों को पर पटकते एक साथ सुनना अच्छा लगता है। खट्टी घास की सुगन्ध लेना अच्छा लगता है। ओहात्सू के साथ बिलकुल अकेले होना बहुत भला लगता है।

"बड़ी बहन !"

"हाँ।"

"मैं तुमसे कुछ पूछना चाहती हूँ।"

"किस बारे में ?"

"प्यार के बारे में !"

ओह ! मुझे हल्की-सी हँसी आ जाती है। लेकिन फिर एक नजर ओहात्सू पर डालकर मैं गम्भीर हो जाती हूँ। उसकी साँस तेज चल रही है—सिर्फ इसलिए कि उसने 'प्यार' शब्द का प्रयोग किया है—इस जादू-भरे शब्द का। उसकी छाती ऊपर-नीचे होती है। यह स्पष्ट है कि ओहात्सू केवल उस बड़ी घटना के लिए तैयार ही नहीं है—उसके लिए उत्सुक भी है अब तक. मैं उसे पूछती हूँ कि वह क्या जानना चाहती है।

"क्या तुम पहली नजर के प्यार में विश्वास करती हो, बड़ी बहन ?"

ओह, तो यह हैरो-सान को लेकर ही होगा, हालाँकि मुझे यह सच महसूस नहीं होता। सोचने को और समय लेने के लिए मैं एक तीली जमीन से उखाड़ लेती हूँ। मेरे खयाल एक बिलकुल ही नयी दिशा ले रहे हैं। ओहात्सू के लिए एक अमरीकन पति। खैर, यदि सैम-सान चाहे तो क्यों

नहीं ? सम्भव है मेरी दुबली बहन उसके समृद्ध देश में जाकर, जहाँ कोई अभाव नहीं है, थोड़ा-सा वजन बढ़ा सके। सम्भव है उस आदमी की भुजाओं में, जिसके लिए मुसीबतें अजनबी हैं, वह शान्ति की नींद सो सके—ऐसी नींद कि जिसमें उसे चीखकर कभी जागना न पड़े। अपनी कमसिन सुन्दर युवा बहन को सैम-सान जैसे व्यक्ति के साथ ब्याहना कितना सुरक्षित होगा ! ओहात्सू ऊपर से जरूर कोमल और बेदाग है, लेकिन उसका मन खुरदरे दागों से भरा है। उसका दिल छोटी उम्र के दुःख से टूट-फूटकर विकृत हो चुका है।

"तुम विश्वास करती हो, बड़ी बहन ?"

"पहली नजर के प्यार में ? हाँ बिलकुल !" मैं झूठ कहती हूँ, लेकिन तभी मेरी आत्मा मुझे छीलती है।

असलियत यह है कि मैं पहली नजर के प्यार में विश्वास नहीं करती ! सच्चा प्यार एक पेड़ की तरह बढ़ता है। लेकिन इस खयाल से कि छोटी बहन ने अपने दुखी जीवन के लिए एक हल ढूँढ़ लिया है, मैं सुख की साँस लेती हूँ। ओहात्सू मेरे मन की बात भाँप लेती है।

"तो फिर तुम मुझे उससे शादी करने दोगी जिससे मैं खुद करना चाहूँ ? तुम नाकादो द्वारा तो मेरा ब्याह तय नहीं कर दोगी ?" वह अपनी रेशमी उँगलियों को मेरी उँगलियों में डालती एक ही साँस में पूछ लेती है।

शर्मीली ओहात्सू का मुझे इस तरह पुचकारना नयी बात है और मैं उसके कोमल स्पर्श से पिघल जाती हूँ। मैं इतनी कमजोर हो जाती हूँ कि उसके इस आग्रह का, कि मध्यस्थ द्वारा ब्याह तय नहीं करेंगे, विरोध नहीं कर पाती।

"निश्चय ही तुम जिसके साथ चाहो, विवाह कर सकती हो, छोटी बहन !"

इससे वह अपने पैरों पर कूद पड़ती है। अपने छोटे हाथों से अपनी छाती को दबाती है— यह ओहात्सू की सबसे मोहक भंगिमा है— और आवेश के साथ मुझे धन्यवाद देती है।

"याद रखना, अब तुम अपनी बात नहीं मोड़ सकतीं ! तुमने मुझसे वायदा किया है।" ओहात्सू ऊँचे स्वर में कहती है। फिर दाँत निकालकर अपने ही भोलेपन से हँसती है।

हमारे बाग में अँधेरा हो रहा है। साँझ में ओहात्सू के सफेद पैन्जी सुरमई-से हो गये हैं। आखिर हम अपनी टोकरियाँ उठाकर घर के अन्दर जाने की तैयारी करती हैं। 'शोजी' को धक्का देकर खोलने से पहले ओहात्सू सिर घुमाकर कतारों में फूली अपनी पीली पैन्जी की क्यारी को

देखती है और अपनी सफेद आइरिस को, जिसने अभी अपनी तीखी नोकें निकाली हैं। इस साल ओहात्सू ने सिर्फ सफेद फूल बोये हैं। सफेद आइरिस के बाद दूधिया सफेद जिन्निया फूलेगी और जिन्निया के बाद बर्फ रंग के तारा फूल। आखिर में जापानी गुलदाऊदी अपने पूर्ण सौन्दर्य में फूलेगी।

"सफेद रंग उसे प्यारा था। मुझे विश्वास है कि इस साल उसे सफेद गुलदस्ते अच्छे लगेंगे।" ओहात्सू मुझसे कहती है। एक क्षण से दूसरे क्षण के बीच ही उसकी आवाज कस गयी है।

"अब छोड़ो डार्लिंग !"

मैं ओहात्सू के एकाएक तनते जिस्म के गिर्द अपना हाथ डाल देती हूँ और उस झुटपुटी शाम में अपने घर के अन्दर जाते हुए अपनी बहन के लिए चिन्तित हो उठती हूँ। वह अपने बचपन की बातों में बहुत जीती है—उस बचपन की, जो कि उसे नहीं मिला। एटम बम गिरने के दिन का अनुभव इस तरह उस पर हावी है, जैसे एक कोमल देवदार की नाजुक टहनियों पर छोटी उम्र में ही ढेर-सी बर्फ गिर गयी हो। ओह ! हिरोशिमा में ओहात्सू-जैसे युवा लोग भरे पड़े हैं। बाहर से अच्छे-भले लेकिन अन्दर से टूटे हुए और अपाहिज।

"चलो अपना बक्सा देखें, बड़ी बहन !"

मैं जानती थी, वह इस समय व्याकुल मन:स्थिति में है। अपनी मरी हुई माँ के बारे में सोचती, वह अतीत में खो गयी है। अपना बक्सा ही है जिसके पास ऐसे वक्त वह हमेशा जाना चाहती है। पुरानी यादों वाला हमारा बक्सा ही एक ऐसी चीज है जो उसके जख्मों को सहला देती है।

हम घर में आ जाती हैं और ओहात्सू जल्दी से बक्सा लाने चली जाती है। बत्ती जलाये बिना हम घुटनों के बल साथ-साथ तातामी पर बक्से के सामने बैठ जाती हैं। ओहात्सू अपने हाथ इतनी उत्सुकता से रोगन वाले बक्से की चीजों में डालती है, मानो वह उन्हें पहली बार देख रही हो।

"ओह—घण्टी ! जरा इसे सुनो, बड़ी बहन !"

टन्-टन्-टन्।

ओहात्सू हमारे अँधेरे कमरे में उस चाँदी की घण्टी को आगे-पीछे हिलाती है। वह हमारी मामा-सान की बहन ने उसे उसके तीसरे जन्म-दिन पर दी थी। हमारे बक्से की सभी चीजें आण्ट मात्सुई के दिये जन्म-दिन के उपहार हैं। उनकी दी बहुमूल्य चीजों को हम उन्हीं के घर में सँभालकर रखती थीं। (यह आण्ट मात्सुई की ही राय थी, ताकि हम उन खिलौनों को हफ्तावार उनके घर जाने के दिन इधर से उधर न ढोती फिरें।) ओह, यह तरकीब कितनी कामयाब रही ! जो खिलौने हमने आण्टी के देहाती

घर में रखे थे, वे अच्छी तरह संभले रहे, जबकि हमारे घर की हर चीज राख बनकर हवा में उड़ गयी।

"मेरी शीशे की बत्तख !" ओहात्सू खुशी से चीखती है, "और देखो ! मेरी गुड़िया की चाप स्टिक्स। ओह, मुझे कितना प्रिय है यह बक्सा, बड़ी बहन !"

"मुझे भी, मेरी रानी !"

मुझे अपने बक्से में सबसे प्रिय है एक चिथड़ा गुड्डा। मैं उसे बाहर निकालकर उसके मुचड़े किमोनो को ठीक करती हूँ। उसके ओबी का नीला कपड़ा बिलकुल फट गया है और उसकी ताबी सारी तिरछी हो गयी है। ओह चिथड़ा गुड्डा कितना भद्दा लग रहा है ! कितना फटा हुआ ! मैं उसे अपनी बाँह के जोड़ में आराम से लिटा लेती हूँ और झुलाने लगती हूँ।

प्यारे चिथड़े गुड्डे ! तुम इतने दुबले और थके क्यों नजर आ रहे हो ? तुम इतने पराजित क्यों लग रहे हो ? क्या तुम जानते हो चिथड़े गुड्डे कि तुम कुछ-कुछ फ्यूमियो-जैसे दीखने लगे हो ? या फ्यूमियो तुम्हारी तरह लगने लगा है ? आजकल जब वह मेरी बाँह में अपना सिर रखकर लेटता है—कितना शिथिल और थका हुआ लगता है—ओह !

"चिथड़ा गुड्डा कितना कमजोर नजर आ रहा है ! तुम्हारा क्या खयाल है, ओहात्सू ?"

"यह हमेशा से कमजोर रहा है, बड़ी बहन !" ओहात्सू साँझ की धुंधली रोशनी में चाँदी की घण्टी टुनटुनाती मस्त मुस्कान के साथ कहती है।

"पर ऐसा कमजोर नहीं। यह अब उस तरह दीखने लगा है जैसे···"

मैं वक्त पर रुक जाती हूँ। मुझे भयभीत करनेवाले विचारों से अपने को बचाना चाहिए ! मुझे अपनी नाजुक बहन को यह नहीं जानने देना चाहिए कि मैं फ्यूमियो के बारे में कितनी चिन्तित हूँ। इससे पहले कि वह मुझसे पूछे कि मेरा मतलब क्या है, सौभाग्य से हमारा ध्यान बँट जाता है। हमें बाहर से पैरों की आहट सुनायी देती है और हमारा लकड़ी का गेट धीरे-से खुलता और बन्द होता है।

"दोज़ो ! प्रिय लोगो, तुममें से कोई घर पर है ?"

कुछ आवाजें होती हैं जो आदमी की चमड़ी सिकोड़ देती हैं या उसे सतर्क कर देती हैं। जो मधुर आवाज मुझे सुनायी दी है, उसका असर मुझ पर बचपन से ही इस तरह होता आया है। लेकिन बूढ़ी नागा-सान बेढब तरीके से कमरे में घुसती है तो मैं उसे अत्यधिक नम्रता से मिलती हूँ। पहली बात कि वह मेरी दूर की रिश्तेदार है जिसके कारण मुझे उसके प्रति

अधिक शिष्ट होना चाहिए। दूसरे वह धन्धे से नाकादी है, जिसका उसे अलग से सम्मान प्राप्त है। यह सच है कि नागाइ-सान ने ही मेरी भी शादी फ्यूमियो से तय करायी थी। मैं निर्धारित नम्र बातों की एक साथ झड़ी लगा देती हूँ—उस अनचाही मेहमान को यह जताते हुए कि उसका कितना-कितना स्वागत है।

"ओह, नागाइ-सान, तुमसे मिले तो महीनों हो गये ! आज कितनी अचानक मुलाकात हुई ! ओहात्सू, कृपया नागाइ-सान के लिए चाय लाओगी ? इतने में मैं यहाँ रोशनी कर दूँ। अब बताओ नागाइ-सान, तुम्हारा स्वास्थ्य कैसा रहा ? कौन-सा सौभाग्य-नक्षत्र इस शाम तुम्हें यहाँ हमसे मिलने ले आया है ?"

लेकिन मुझे नहीं पूछना चाहिए था। जैसे ही ओहात्सू रसोईघर की तरफ मुड़ती है, बुड्ढी मध्यस्थ की नजर मेरी बहन के जिस्म से रेंगती उसकी प्यारी गरदन के पिछले हिस्से पर जा टिकती है।

"कितनी सुन्दर लड़की है ! सचमुच कितनी सुन्दर !" वह मेरे पास जमीन पर घुटनों के बल बैठती, अपने नसवारी रंग के रेशमी पंखे के पीछे से फुसफुसाती है। (कितनी अच्छी तरह मुझे उन दिनों की इस पंखे की याद है जब वह यहाँ फ्यूमियो के साथ मेरी शादी की बात तय करने आया करती थी।) कोई आश्चर्य नहीं है कि नवयुवक—वह एक नवयुवक खास तौर से···

"मुझे अफसोस है कि आपको गलतफहमी हुई है, नागाइ-सान ! ऐसा कोई नवयुवक नहीं है।"

"तुम्हें कुछ मालूम नहीं है। परिवार को सबसे अन्त में पता चलता है। लेकिन यकीन रखो कि ऐसा एक नवयुवक है और प्रेम-विवाह का आजकल ऐसा प्रचलन है कि तुम्हें एक दिन पता चलेगा कि तुम्हारी चिड़िया उड़ चुकी है।"

मैं दाँत निकालकर इस तरह आदरपूर्वक हँसती हूँ मानो नागाइ-सान ने मजाक किया हो। लेकिन तभी मुझे उसी शाम ओहात्सू का अनुमति माँगना याद आया कि क्या वह जिसके साथ चाहे, शादी कर सकती है। उफ़ ! इस बुढ़िया जादूगरनी ने सचमुच गुप्त रूप से कुछ जान तो नहीं लिया ? मेरी आण्ट मात्सुई हमेशा मुझे लम्बी नाकवाली औरतों से खबरदार रहने को कहा करती थी और नागाइ-सान की नाक, हर मध्यस्थ की तरह, आमतौर से लम्बी है, उसकी चोंच हमेशा इस तरह हिलती है, मानो वह कोई खुशबू सूंघ रही हो।

वह घुटनों के बल मेरे और पास सरक आयी है। अब भी अपने पंखे

के पीछे से फुसफुसा रही है ।

"सच बताऊँ तो आज मैं केवल तुम्हारे साथ ओहात्सू की बात करने ही आयी थी । हमें उसकी शादी करने में जरा देर नहीं करनी चाहिए । हाँ, आदमी ठीक होना चाहिए । एक बहुत ही भला आदमी है जिसे मैं जानती हूँ – बहुत ही सम्मानित भला आदमी ।"

"आपका गठिया कैसा है नागाइ-सान ?" मैं बीच में ही पूछ लेती हूँ ।

"तुम्हारा मतलब है मेरी कमर का गठिया," नागाइ-सान बुरा मान जाती है । "उसका और भी बुरा हाल है । खैर, मैंने इस सम्मानित व्यक्ति को ओहात्सू के बारे में थोड़ा-बहुत बताया है और···"

"हमारे बारे में इतनी तकलीफ करने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद, नागाइ-सान ! कमर के गठिया और शेष सब तकलीफों के रहते आपको इतनी मेहनत नहीं करनी चाहिए। छोटी बहन के लिए आप इतनी तकलीफ न उठायें ।"

(तकलीफ ! जैसे कि वह उस सम्मानित व्यक्ति से पैसों के रूप में 'धन्यवाद' पाने की ताक में न हो ।) उसकी लालची आँखें झपकती हैं। फिर भी वह मीठे स्वर में समझाती है कि वह तो केवल अपना 'कर्तव्य' निभा रही है ।

"मैंने तुम्हारी भी शादी तय करायी थी, करायी थी कि नहीं ? और सोलह साल की उम्र में। अब मैं तुम्हारी छोटी बहन का भी प्रबन्ध करूँगी। लेकिन हमें देर नहीं करनी चाहिए । यह सम्मानित व्यक्ति जल्दी में है। वह···वह···ऐसा है कि वह अपनी पहली जवानी में नहीं है। वह ज्यादा समय के लिए रुक नहीं सकता···।"

तड़ाक् !

रसोईघर के फर्श पर गिरकर एक प्याला टूट गया है। हम दोनों जानती हैं कि किसने उसे तोड़ा है। ओह, यह नहीं चलेगा। नाकादो को अपने विरुद्ध कर लेना हमारे लिए विनाशकारी सिद्ध हो सकता है। जो जहर यह उगलेगी वह हर कोने और दरार में जा पहुँचेगा। वह हमें बर-बाद भी कर सकता है।

"कृपया मुझे एक मिनट के लिए क्षमा करें, नागाइ-सान," मैं जैसे ध्यान बँट जाने से कहती हूँ ।

मैं तेजी से रसोईघर की तरफ जाती हूँ, लेकिन वहाँ ओहात्सू का कहीं पता नहीं है। यह पहली बार नहीं है कि वह अपनी उत्तेजित भावनाओं को सहन न कर पाने से भाग खड़ी हुई हो और हर बार मैं डर से काँप जाती हूँ। क्या वह अँधेरी सड़कों पर छाती पर हाथ रखे भागी जा रही है ? या

उसी जगह नदी-किनारे घुटने टेके बैठी है जहाँ हमारी मामा-सान···? या वह उन्हीं का पीछा···?

"युका !" मध्यस्थ की आवाज आती है। "मेरे पास थोड़ा ही समय है। मेरी लड़की, तुम्हें क्या चीज रोके हुए है ?"

"मैं आ रही हूँ, नागाइ-सान !"

मैं ट्रे में कुछ जलपान का सामान रखकर भागती हुई वापस उस कमरे में आती हूँ। चिन्तित-सा भाव बनाये मैं क्षमा-याचना के लिए झुकती हूँ।

"ओहात्सू को किसी ने बुला लिया है। हमारी पड़ोसिन की छोटी लड़की अभी-अभी कुएँ में गिर गयी है।" (कितना बेतुका झूठ है) "आप हरी चाय लेंगी, नागाइ-सान ? मैं सड़क-पार की मछली की दूकान से भागकर आपके लिए थोड़ी सुचि ले आऊँ ?"

"तुम कहती ही हो तो थोड़ी चाय ले लूँगी, लेकिन सुचि नहीं। मुझे तो घर पर तुम्हारे मिलने की आशा ही नहीं थी। लेकिन तुम चिन्ता न करो, मैं फिर आऊँगी। मेरी लड़की, हम तो अथक मेहनत में विश्वास करते हैं। धीरज ही हमारे धन्धे का विशेष गुण है।"

"थोड़ा-सा केक ?" मैं फुसफुसाती हूँ। "दोज़ो, नागाइ-सान !"

उसके बाद जैसे अनन्त काल तक हम तातामी पर एक-दूसरी के सामने घुटने टेके चाय की चुसकियाँ लेती घर-गृहस्थी और जान-पहचान के लोगों के बारे में नम्र आदान-प्रदान करती बैठी रहती हैं। एक घण्टा, जोकि मुलाकात के लिए निश्चित समय होता है, किसी तरह बीत जाता है। आखिर जब हम जलपान समाप्त कर लेती हैं तो इतनी नीचे तक झुकती हैं कि हमारे सिर आपस में दो उबले अण्डों की तरह टकरा जाते हैं। फिर जल्दी से हम अपने पैरों पर खड़ी हो जाती हैं। बूढ़ी नाकादो कबूतर-जैसे पंजों पर फ़्युसुमा की तरफ बढ़ती है। साथ वह अपने सिर को नसवारी पंखे से हवा करती जाती है।

"उस प्रौढ़ सम्मानित व्यक्ति को तो शादी करने की जल्दी है ही," वह बके जाती है। "पर सुन्दर ओहात्सू के लिए भी तो हमें जल्दी है। हाँ-हाँ, मेरी लड़की, हमें सचाई का सामना करना ही चाहिए। तुम्हारी युवा बहन की आज माँग है, लेकिन कल ? इसके अलावा तुम्हें पता होना चाहिए, बच्चों का भी प्रश्न है। किस प्रकार के बच्चे ओहात्सू पैदा करेगी ? हैं ? आजकल हिरोशिमा में तुम्हारे-जैसे एटमबम से बचे लोगों की बहुत चर्चा है कि उनके बच्चे अजीब तरह के होंगे। ओह, यह सबकुछ बहुत निराशाजनक है मेरी लड़की ! लेकिन मेरे कहने का मतलब इतना ही है कि हमें जल्दी करनी चाहिए। वास्तव में हमें एक क्षण भी नहीं खोना चाहिए। यह

बात जितनी अच्छी तरह तुम जानती हो, उतनी ही अच्छी तरह मैं भी जानती हूँ। एटमबम से बची लड़की को कोई भी परिवार अपनी बहू नहीं बनाना चाहता। फिर भी यह सम्मानित व्यक्ति···।"

"सायोनारा! आरिगातो गोजाइ माशिता!"

"सायोनारा! योकु इराशिते कुदासाइ माशिता।"

हम एक-दूसरी की तरफ बनावटी ढंग से मुस्कराती हैं। हम बहुत-बहुत झुकती हैं—इस बार इस बात का ध्यान रखकर कि हमारे सिर टकराएँ नहीं और काफी देर बाद हम सीधी होती हैं तो मध्यस्थ मेरी तरफ तीखी नजर से देख लेती है। फिर उसकी छोटी तीखी जबान होंठों पर फिरती है। वह जानती है कि उसने मैदान मार लिया है। मेरी आँखों में उसने वह अनाम भय देख लिया है जो बम से बचे हर हिरोशिमा के व्यक्ति में पाया जाता है। ओहात्सू की और मेरी हड्डियों में चौदह साल पहले क्या रेडियो-ऐक्टिव किरणों ने प्रवेश नहीं किया था? ओह! हम बम की सन्तान हैं। हमारे बच्चे भी बम की ही सन्तान हैं, क्योंकि इसका असर तो पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलेगा। क्या यही मेरे मिचिको, मेरे स्वस्थ तादेओ और सुन्दर ओहात्सू का भविष्य होगा कि उनकी सन्तान···?

"आरिगातो! गोजाइ माशिता, आदरणीया नागाइ-सान!" मैं डर से काँपती हुई फुसफुसाती हूँ।

लेकिन बूढ़ी नाकादो-सान, मेरी दिल की सारी शान्ति साथ लिये अब तक जल्दी-जल्दी अँधेरे बाग के बीच से होकर जा रही है।

## नौ

लम्बी सरदी के बाद, खिले चेरी के वृक्ष के नीचे बैठना कितना अच्छा लग रहा है! तेज धूप में फूटी कलियाँ और धरती में से हरियाली की बेचैन उँगलियों-सी निकली घास! (मेरा बेटा तादेओ थोड़ी-सी तिगलियाँ तोड़-कर खा जाता है।) आकाश गरमी से काँपता है। छुट्टी मनाने आये अन्य कई लोगों की तरह हम अपनी फूस की चटाइयाँ साथ लाये हैं और घुटनों के बल उन पर गोलाकार बैठ गये हैं। मैं सबके बीच में हूँ। मैं सामिसेन पर एक धुन छेड़ती हूँ।

"ला···ला-ला···ला···"

मुझे गाना और साज बजाना कितना अच्छा लगता है! मैंने अनगिनत गीत बनाये हैं—उसी तरह जैसे कीट-पतंग अपने गीत बनाते हैं। एक लय का टुकड़ा—एक पत्ती के झरने का वर्णन करते कुछ शब्द, क्योंकि उसका समय आ पहुँचा है—और इसी तरह की चीजें।

"छोटी बहन, तुम क्यों नहीं गा रहीं? दोज़ो, गाओ न!" मैं उत्साह से कहती हूँ।

"अच्छा बड़ी बहन," ओहात्सू अंग्रेजी में जवाब देती है। लेकिन वह बहुत अनमने ढंग से गाती है। उसके विचार दूर कहीं हैं। मेरी छोटी बहन को क्या हो गया है? मैं अपने से पूछती हूँ। वह चेरी की कली का गीत अचानक बन्द कर देती है। मैं चौंक जाती हूँ।

"यह मत भूल जाना कि हम माएदा-सान से चायघर में मिल रहे हैं।" वह मुझसे फुसफुसाकर कहती है। "अब लगभग चार बज गये हैं। बड़ी बहन!"

हे भगवान, ओहात्सू को आज वक्त का पता है! कुछ-न-कुछ बात जरूर है। क्यों वह ढीठ बच्ची सैम-सान से बात करने से कतराती है?

"किसे साके चाहिए?" मैं कुछ नशे में पूछती हूँ।

"मैं कहूँगा सभी को।" हैरो-सान हँसता है।

अगर उसका देश सैम-सान जैसे कुछ हजार लड़के पैराशूट से यहाँ नीचे उतार दे—इतने ही मस्त और इतने ही घुल-मिल जानेवाले—तो हम सबको अमरीकन अच्छे लगने लगेंगे। ये हमारी साधारण-सी दावत से भी कितने प्रसन्न हैं! वह हमारे साथ छुट्टी के मूड में आकर (हम अपनी कभी-कभार की छुट्टी को यूँ लेते हैं जैसे वह एक मीठी गोली हो और उसे तब तक धीरे-धीरे चूसते रहना हो जब तक कि वह खत्म नहीं हो जाती), हमारा किरायेदार साके पी रहा है, मस्ती से गा रहा है और हमारे ही जैसे मजेदार और ऊलजलूल मजाक कर रहा है। हमारे साथ मिआजिमा टापू की हिचकोले-भरी जलयात्रा में भी वह कितना उत्साहित था, हालाँकि नाव इतनी भरी थी कि लगभग डूबने ही जा रही थी।

अब वह अपने आस-पास छुट्टी मनानेवाले झुण्डों को देखता है जो फूस की चटाइयों पर घुटने टेके बैठे हैं। दफ्तर के मालिक अपने जर्द चेहरे के क्लर्कों को साके का नशा दिलाने, और कारखानों के मालिक अपने मजदूरों को चेरी के पेडों के नीचे कच्ची मछली की दावत उड़वाने साथ लाये हुए हैं। अपने भारी जिम्मेदारी के कामों से एक दिन की छुट्टी पाने की खुशी में नवयुवक मस्ती में इधर से उधर कूद रहे हैं। और 'बेबी-सान' जैसे कि

मेरा किरायेदार तादेओ और मिचिको को बुलाता है, नये किमोनो पहने जो कि माएदा-सान ने उन्हें दिये हैं, पैरों पर कूदते हुए बैले-नृत्य कर रहे हैं। इनके किमोनो के ऊपर फ्यूजी पहाड़ी के छोटे-छोटे शिखर बने हैं जिनके मुँह से मजे से धुआँ निकल रहा है। सब लोग उनके नृत्य पर ताली बजाते हैं।

"अब तुम कोई गाना गाओ, युका!" मेरा पति अनुरोध करता है। वह धूप में आकर स्वस्थ लग रहा है। ओह मुझे आशा है कि बसन्त की यह कुनकुनी हवा उसका स्वास्थ्य फिर ठीक कर देगी! मैं उसकी तरफ देखकर मुसकराती हूँ और उसके सम्मान में ताँका बनाकर सुनाती हूँ। अर्थ है कि अबाबीलों के आने और चेरी के खिलने से हमारा भाग्य भी चमक उठेगा।

"ला···ला-ला···ला···ला" मैं गाती हूँ।

जब मैं खाना समाप्त करती हूँ तो हम सन्तोष से कुछ देर खामोश रहते हैं। इससे अच्छा क्या हो सकता है कि इतने सुन्दर प्राकृतिक दृश्य के बीच हम उन लोगों के साथ बैठ सकें जिनसे कि हम स्नेह करते हैं! और तो और, मेरा खुश-मिजाज सैम-सान भी चुप और स्थिर है। उसकी नजर ओहात्सू पर टिकी है, जिसकी सुन्दरता मई महीने के युवा-दिन से मेल खाती है। लेकिन अचानक हमारी सुन्दरी अपने पैरों पर खड़ी हो जाती है।

"चार बज गये हैं, बड़ी बहन!" उसकी उत्सुकता ने उसकी रेशमी आवाज में खराश ला दी है। "चार से लगभग पाँच मिनट ऊपर।"

वह अस्थिर लड़की अपनी पतली उँगलियाँ मेरी उँगलियों में फँसाकर मुझे झटके से उठा देती है। मुझे हरी घास पर साथ खींचते हुए वह एक उत्तेजित बच्ची की तरह खिलखिलाकर हँसती है।

ओहात्सू का भाव इतना प्रफुल्ल है कि सब लोग रुककर उसकी तरफ देखते हैं और हँस देते हैं। लेकिन हमेशा की तरह छोटी बहन प्रशंसा की ओर ध्यान नहीं देती।

"वहाँ! वहाँ···वह है," वह चीखती है।

"माएदा-सान?"

"नहीं, नहीं। मेरा मित्र! मेरा वह मित्र जिसके बारे में मैंने तुम्हें कल बताया था।"

हम रुक जाते हैं। आस-पास का शोर, चायघरों के आगे हँसते, छुट्टी मनाते झुण्ड-के-झुण्ड बड़े-बूढ़े, विद्यार्थी, माँ-बाप के हाथों से चिपटे बच्चे—ओहात्सू के और मेरे गिर्द लहराते समुद्र की तरह घूम रहे हैं। जल्दी से सिर घुमाकर वह एक नजर 'रेड ड्रैगन' चायघर की तरफ देख लेती है, जहाँ हमें अपने मेजबान माएदा-सान से मिलना है।

"वह रहा, वह हिरू। वह जो गहरे हरे रंग का किमोनो पहने सीढ़ियों

पर खड़ा है।"

अपनी काँपती उँगलियाँ वह मेरे हाथ में ठूँस देती है। जल्दी-जल्दी बोलती हुई मुझे यकीन दिलाती है कि वह 'अनन्त काल' के लिए प्रसिद्ध पौराणिक कथा की ओहात्सू की तरह प्रेम में फँस चुकी है। यह कितना विचित्र है कि उसके प्रेमी की शक्ल बिलकुल वैसी ही है जैसी पुराने जापानी चित्रों में पौराणिक ओहात्सू के प्रेमी की दिखायी जाती है।

"वह सुन्दर है, है न बड़ी बहन ?" ओहात्सू मुझसे पूछती है, और मेरी आँखों को प्रशंसा से फैलते देखती है। सुन्दर ? वह तो एक युवा देवता-जैसा है। मैं हाँफती हुई फुसफुसाती हूँ, "हाँ।" (ओह मुझे यह नहीं कहना चाहिए था ! उस सुन्दर युवक के बारे में मुझे जरा भी तो जानकारी नहीं। इसलिए ओहात्सू को प्रोत्साहित करने का मुझे कोई अधिकार नहीं। लेकिन क्या करूँ ? रोमांस मुझे अच्छा लगता है।) ओहात्सू मुझे बताती है कि उसका नवयुवक प्रेमी एक कलाकार है—माएदा-सान का एक शिष्य। माएदा-सान ने ही उन्हें मिलाया था। चूंकि कलाकृतियाँ मुश्किल से बिकती हैं, इसलिए वह बाध्य होकर आजीविका के लिए एक अखबार में फोटोग्राफरी करता है।

"तो, इससे क्या हुआ ?" मैं अपनी आवाज में उदासीनता लाकर पूछती हूँ।

"वह मुझसे शादी करना चाहता है।"

ओहात्सू उल्लासपूर्ण दृष्टि से चायघर की सीढ़ियों की तरफ देखती है। हम चेरी के पेड़ के नीचे खड़े हैं। उसके जुड़े हुए मुखर हाथों पर अचानक कलियों की वर्षा हो जाती है। मेरा दिल मसोस उठता है। छोटी बहन ! वह उन सफेद फूलों-जैसी नाजुक लग रही है जिनकी जीवनलीला समाप्त हो चुकी है। फिर भी ओहात्सू उस महान् जन-संहार से बची है जिसे मानव ने पहले कभी नहीं देखा था। उसके फूल-से कोमल जिस्म को, उस प्रचण्ड ज्वाला से हिरोशिमा नदी ने छीन लिया था जिसमें हमारी माँ एक मशाल की तरह जलती हुई कूदकर मृत्यु के मुँह में चली गयी थी।

"ओहात्सू···" मैं कहना शुरू करती हूँ। और मेरी आवाज जो रूखी होनी चाहिए थी, स्नेह से काँप जाती है।

"बड़ी बहन ! तुमने वचन दिया था। तुम अपनी बात से अब फिर नहीं सकतीं। तुमने कहा था कि मैं जिससे चाहूँ शादी कर सकती हूँ।"

क्या कहना चाहिए ? क्या करना चाहिए ? अभी सोच ही रही हूँ कि देखती हूँ उस सुन्दर नवयुवक ने हमें देख लिया है, और छोटी बहन की तरफ प्रेम के पंखों पर उड़ता चला आ रहा है। (देखने में कवित्वहीन लगते हुए

भी पश्चिमी लोग कितने कोमल ढंग से अपने भाव प्रकट करते हैं।) ओह ! इससे पहले कि मैं निश्चय करूँ कि मुझे उससे कैसे पेश आना है, ओहात्सू हमारा परिचय करा देती है—हिरू शिमिजु। और मैं झुककर मुसकराती हूँ, फिर झुककर मुसकराती हूँ और उसी नाजुक क्षण में मेरा परिवार मेरे पास आ पहुँचता है।

"ओह, तो तुम सब आ गये !" मैं ऊपर से अपने को सहेजकर कहती हूँ। आण्ट मात्सुई कहा करती है कि चेहरे का भाव ही सबसे आवश्यक चीज है- -थोड़ा-सा घबराये नहीं कि तुम बाजी हारे। फिर भी ओहात्सू के प्रेमी से सैम-सान और अपने पति का परिचय कराती मैं उतनी ही झेंप रही हूँ जितनी कि छोटी बहन।

"शिमिजु-सान, ओहात्सू का बहुत अच्छा मित्र है," मैं कहती हूँ। सुन-कर मेरे किरायेदार का चेहरा लटक जाता है।

मेरा भाव भी बदलता है, क्योंकि मुझे महसूस होता है कि जो स्वप्न मैंने छोटी बहन के लिए सँजोये थे वे तूफान में फूस की झोंपड़ी की तरह टूट-फूट गये हैं। हैरो-सान की आँखों से लगता है कि ओहात्सू के दोस्त के एकाएक आ प्रकट होने से उसे दु:खद आश्चर्य हुआ है। हरएक की तरह उसे भी लग गया होगा कि ओहात्सू उस देवता-जैसे हिरू से मन से प्यार करती है। ओह ! एक क्षण में ही मुझे पता चल जाता है कि उसका ओहात्सू की निकटता पाना बिलकुल सम्भव नहीं था।

"प्रिय मित्रो, हम सब तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

चायघर की लम्बी सीढ़ियों से माएदा-सान की 'गेता' खुशी से नीचे-नीचे आती सुनायी देती हैं।

"हम चेरी की कलियों के बीच यह खुशी की शाम साथ-साथ बिताने जा रहे हैं।" वह कहता है। उसकी आँखें इतनी प्यारी हैं कि उसकी भारी और विध्वस्त आवाज भी मुझे प्रफुल्लित कर देती है। एक ही क्षण में उसने कितनी चतुराई से स्थिति को सँभाल लिया है। ओहात्सू और हिरू स्पष्टत: एक-दूसरे के प्रति आकर्षित हैं (और हैरो-सान को जाने इससे कितनी तकलीफ और होती !) माएदा-सान अपने ओबी से चेरी की एक छोटी कली तोड़ता है और सैम-सान को भेंट करता है।

"तुम खुशी से हमारी चेरी की 'फ्यूरी' में शामिल हो सकते हो।" वह अपनी अद्भुत मुस्कान के साथ कहता है और चेरी की डण्डी सैम-सान की पेटी में लगा देता है। "तुम्हारे साथ होने से हमारी पार्टी दुगुनी अच्छी रहेगी। बहुत खुशी का समय अब सामने है।"

हाँ-हाँ, खुशी का समय ! मैं कितनी खुश-नसीब हूँ ! यहाँ मैं एक बढ़िया

चायघर में बैठी सैमिसेन का संगीत सुन रही हूँ और इतना बढ़िया खाना खा रही हूँ कि हरादा-सान और अपनी गली के अन्य अभागे लोगों को मुझे इन भिन्न-भिन्न व्यंजनों की तस्वीरें बनाकर समझाना पड़ेगा। उदाहरण के लिए सुगन्धित सेवार पर सोती मछली की आँखें और फेंटे मसाले में डूबी मधुमक्खियाँ—भूनकर करारी की हुई और सुन्दर ढंग से तीलियों पर चढ़ाई हुई। हे ईश्वर, हमारे रोज के मनहूस खाने से दावत का खाना कितना भिन्न होता है और उस चावल-पानी से और भी कितना भिन्न. जोकि हरादा-सान को हासिल है।''

''बान जाइ ! बान जाइ !''

''बान जाइ सैम-सान !'' मैं चिल्लाती हूँ। इन सब 'टोस्टों' से हमारी छोटी-सी पार्टी धुत्त हो रही है और सैम-सान का चेहरा गहरा सुर्ख हुआ जा रहा है।

वह अब भी ठीक मनःस्थिति में नहीं है। रह-रहकर ओहात्सू और हिरू पर, जोकि नीची मेज के कोने पर साथ-साथ घुटने टेके बैठे हैं, नजर डालकर वह फिर से अपना गिलास भरता जा रहा है। ''कुछ अच्छी-सी चीज लो—यह मछली की आँख ले लो !'' मैं उससे अनुरोध करती हूँ।

''धन्यवाद ! मुझे भूख नहीं है।''

यह स्पष्ट है कि सैम-सान को डाह है—अकेले हिरू से नहीं कि उसने ओहात्सू को हथिया लिया है, बल्कि उन दोनों से कि उन्हें एक-दूसरे में खुशी मिल गयी है। लेकिन अब क्या होने जा रहा है ? कान फाड़ती ऊँची हँसी हमें दूर की मेज पर से सुनायी देती है।

''आहा, खेल शुरू हो गये, थ्री चियर्स !'' यह देखकर कि दूसरे लम्बे कमरे के परले सिरे पर बेसबाल का खेल शुरू हो गया है, मैं चिल्लाती हूँ। यह सच है कि उनके पास असली गेंदें नहीं हैं और उनके बल्ले भी असली नहीं हैं। लेकिन डिनर के मेहमान इस तरह बेसबाल की चेष्टाएँ कर रहे हैं, मानो वे बल्ले इधर से उधर हिला रहे हों और हवा में उड़ती कल्पित गेंदों को दबोच रहे हों। यह सब एक तरह का बेले नृत्य ही है।

मैं माएदा-सान और उसके अन्य धुत्त कलाकार मित्रों का खेल में साथ देने उछलकर पैरों पर खड़ी हो जाती हूँ और जल्दी से उधर को चल देती हूँ। ओह ! वे लोग कितना मजा ले रहे हैं ! दो 'गीशा', जो इस अवसर के लिए भाड़े पर बुलायी गयी हैं, सामिसेन बजा रही हैं। सब लोग बेस बाल के खिलाड़ियों की-सी चेष्टाएँ करते जोर-जोर से गाने लगते हैं।

उसके बाद हम 'रेलगाड़ी' का खेल खेलने लगते हैं, जोकि मेरा सबसे प्रिय खेल है। अपने हाथों को एक-दूसरे के कानों पर रखकर हम उस लम्बे

कमरे में ऊपर से नीचे तक छुक्-छुक् फुसफुसाते दौड़ते हैं।"

मैं अपने किमोनो में लगभग गिरती-सी दौड़कर वापस आती हूँ—सैम-सान के प्याले में साके भरने और उससे खेल में शामिल होने का अनुरोध करने।

"आओ, मेरे साथ छुक्-छुक् खेलो सैम-सान !"

"तुम बच्ची ही हो युका-सान ! तुम सब जापानी बिलकुल बच्चे हो।" अमरीकन कहता है, लेकिन मैं सिर्फ हँसती हूँ और उसे कमरे के आखिरी सिरे तक खींच ले जाती हूँ, जहाँ एक और खेल शुरू होनेवाला है।

मैं उसे बताती हूँ कि इस खेल का नाम है, 'बूढ़ा शिकारी और भालू', और यह जापान के सब चायघरों में खेला जाता है। यह दो आदमियों का खेल है, मैं उसे बताती हूँ, जिसमें हर खिलाड़ी एक लम्बे परदे के पीछे दूसरे से ओट में होकर या तो बुढ़िया बनता है (झुकी कमर से उछलती) या शिकारी (अपने शिकार का पीछा करता) या भालू (अपने पंजों पर आगे बढ़ता)।

"दर्शक दोनों खिलाड़ियों को देख सकते हैं, इसी से पहले से ही जान जाते हैं कि कौन जीतनेवाला है। लेकिन खिलाड़ी एक-दूसरे को तब तक नहीं देख सकते, जब तक कि वे परदे के पास नहीं पहुँच जाते। तुम्हें आया समझ ?" मैं सैम-सान को छेड़ती हुई हँसकर पूछती हूँ।

"मैं अब चुप ही रहूँगा।"

"लेकिन यह खेल जरा भी मुश्किल नहीं है। बुढ़िया शिकारी को हरा देती है, लेकिन भालू उसे खा लेता है। शिकारी भालू को मार सकता है, लेकिन वह हार जाता है जब उसे बुढ़िया मिलती है। मजा आता है सैम-सान ! सब हँस-हँसकर दोहरे हो जाते हैं।"

"सच ?"

लगता है हैरो-सान को यकीन नहीं आया। लेकिन मैं उससे कहती हूँ कि फ्यूमियो और मैं उसे खेलकर बतायेंगे। हम अपने पैरों पर खड़े हो जाते हैं। दाँत निकालकर एक-दूसरे की तरफ हँसते हैं और फिर परदे के दोनों तरफ अपनी-अपनी जगह ले लेते हैं। मैं क्या बनूँ ? मैं अपने से अकेले में पूछती हूँ और शिकारी बनने का निश्चय करती हूँ। फिर मैं हाथ में कल्पित छुरी लिये फ्यूमियो को ढूँढ़ती परदे के अन्त तक पहुँच जाती हूँ, जहाँ वह बुढ़िया बना मेरा इन्तजार कर रहा है। वह बुढ़िया मुझे पीटती है तो दर्शक इसका आनन्द लेते हैं। मेरा फ्यूमियो बहुत अच्छा अभिनेता है ! हाँ, उसे आनन्द लेना कितना अच्छा लगता है ! उसे जिन्दगी से कितना प्यार है !

अगली बारी निश्चय करती हूँ कि इस बार मैं बुढ़िया बनूँगी और मैं

परदे के अन्त तक एक कल्पित लकड़ी के सहारे पीठ झुकाये चलती हूँ। इस बार फिर फ्यूमियो मुझे हरा देता है। वह सिर हिलाता अपने चारों पंजों पर चला आ रहा है और गुर्राता हुआ मुझे निगल लेने को है। जैसे ही वह भयानक भालू मजाकिया ढंग से उलटबाजी खाकर अपनी पीठ पर लोट जाता है सब लोग चीखने-हँसने लगते हैं। सब लोग—सिवाय मेरे। मैं फ्यूमियो के चेहरे के उतार-चढ़ाव को देखकर सहसा महसूस करती हूँ कि अब वह नाटक नहीं कर रहा।

उफ्! मैं उसके करीब घुटनों पर गिर जाती हूँ। मेरा पति बेचारा सन्त्रस्त आँखों से मेरी तरफ देखता है। उसके चेहरे से पसीना टपक रहा है।

"मैं नहीं उठ सकता," वह कमजोर आवाज में फुसफुसाता है।

जैसे ही मैं आवाज देने के लिए मुँह खोलती हूँ, फ्यूमियो अपना हाथ मेरे हाथ पर रखकर मुझे रोक देता है।

"किसी को मत बताना कि क्या हुआ है। उनकी शाम बरबाद हो जायेगी। युका—वह आ पहुँची है। यह वही बीमारी है…"

फ्यूमियो की आवाज धीमी पड़ती जाती है और उसकी आँखें बन्द हो जाती हैं। मैं जानती हूँ कि वह बेहोश हो गया है। एक बार फिर मेरा मुँह आवाज देने के लिए खुलता है, लेकिन मैं किसी तरह अपनी गले तक आयी चीख को अन्दर दबा देने की कोशिश करती हूँ। मेरा पति ठीक कहता है (फ्यूमियो हमेशा ठीक कहता है) यह अनुचित होगा कि हम अपने सह-अतिथियों की शाम खराब करें—उनकी जिन्दगी में पहले ही बहुत कम खुशी है। अपने पति के जमीन पर पड़े शरीर के करीब घुटने टेककर मैं अपने मित्रों की ओर बहुत नीचे तक झुकती हूँ।

"कृपया हमें क्षमा करें," मैं कहती हूँ और उनकी तरफ मुस्कराती हूँ, "एक छोटी-सी दुर्घटना हो गयी है। लेकिन कोई गम्भीर बात नहीं है। कृपया हमें क्षमा करें।"

"दोजो!"

महँगे सेब, मैं तुमसे नाराज हूँ। इस अस्पताल की दूकान में सब-कुछ बड़ा महँगा है। वह सेलुलाइड की कंघी भी, जिसकी कीमत अभी पूछी है। मैं उस सेल्ज-गर्ल से पूछे जा रही हूँ, "कितने की है ?" (जैसे-जैसे मैं कैरामेल की थैली, एक कागजी पंखे और 'गो' वाले खेल को छूती हूँ)। मैं जानती हूँ कि 'इफ़ुरा देसुका' कितने की है—अब से मेरा आम सवाल यही होगा। सफ्— मैं हमेशा से निर्धन रही हूँ। फ्यूमियो की बीमारी से मैं कितनी मुसीबत में पड़ जाऊँगी, इस खयाल से मैं जैसे बेहोश होने लगती हूँ। मैं उन लोगों से घृणा करती हूँ जो जिन्दगी से बहुत-कुछ की अपेक्षा रखते हैं, लेकिन हरादा-सान की तरह कभी एक सेब भी न खरीद पाने की आदत डालने में मुझे थोड़ा समय लगेगा।

"मैलिलिन मोनलो," वह भूरे चेहरेवाली सेल्ज-गर्ल कहती है। "पंखे पर बनी है—माउण्ट फ्यूजी की बगल में। यह फटा हुआ है। तुम आधे दाम पर खरीद सकती हो।"

उसे देखकर ऐसा लगता है मानो एक बदबूदार मछली उसकी नाक के नीचे लटक रही हो। निस्सन्देह रोगाणुनाशक की और दवाइयों की गन्ध दिन-रात उसके आस-पास रहती है। इस बात से इन्कार नहीं कि अस्पताल की एक अपनी ही गन्ध होती है और मैं अपने को एकदम उस गन्ध को स्वीकारने की सलाह देती हूँ। यह अभी से मेरे जीवन का हिस्सा बनने जा रही है। क्या यह शिष्टता नहीं कि जो कुछ भी जिन्दगी हमें दे उसे हम एकदम स्वीकार कर लें ? इसी में सद्भावना है।

मैं असल में कुछ खरीद नहीं रही, सिर्फ देख रही हूँ। मैं उस सेल्ज-गर्ल से झूठमूठ कहती हूँ, "मेरा पति···"

लेकिन इस खयाल से कि फ्यूमियो ऊपर बीमार पड़ा है, कारिडार एकाएक मेरे सामने घूमने लगता है। जैसे ही मैं जल्दी से काउण्टर को थामती हूँ, मुझे आवाज़ आती है कि वह सेल्ज-गर्ल मुझसे पूछ रही है कि मेरा पति किस वार्ड में है। जब मैं उसे जवाब देती हूँ कि वह रेडिएशन की बीमारीवाले सेक्शन में है, तो उसका तौर एकदम बदल जाता है। वह महँगा सेब मेरे हाथ में ठूँस देती है।

"ले लो ! यह तुम्हारा है।" उसके जले गाल काँपते हैं। "मेरा परिवार एटम बम से जल गया था। यह बात कहने के लिए मुझे क्षमा करना।" वह नम्रता से कहती है।

हम एक-दूसरी की तरफ झुकती हैं। उसने अपने चेहरे की ऐंठन पर काबू पा लिया है। उस पर अब फिर एक नकाब-सी आ गयी है, लेकिन हमारी आँखें देर तक मिली रहती हैं। जैसे ही और ग्राहक आता है, वह फुसफुसाकर मुझसे रुकने के लिए कहती है। वह फ्यूमियो का सेब उपहार के कागज में बाँधना चाहती है। (ओह, ऐसा महसूस होता है, मानो उसने अपनी उँगलियाँ बढ़ाकर मेरे दिल को छू लिया हो।)

"शुक्रिया," मैं उत्तर में फुसफुसाती हूँ।

मैं दीवार से टेक लगाकर फ्यूमियो के बारे में सोचने लगती हूँ। ऊपर के एक वार्ड में मेरा पति मृत्यु के साथ लड़ रहा है—मतलब कि उसका खून, जिगर और तिल्ली लड़ रहे हैं, जबकि फ्यूमियो अपनी खिड़की के चौखटे पर बैठे मस्त गिलहर को देख रहा है। वह और उसके कमरे के पाँच अन्य साथी उस गिलहर को बड़ी उत्सुकता से देख रहे थे जब कुछ ही देर पहले मैं उनके पास से आयी थी। बात समझ में आती है। मेरा मतलब है कि चौदह साल पहले इन नवयुवकों के अन्दर मौत चुपचाप घुस आयी थी और वह उन्हें आज खत्म कर रही है, जबकि यह मस्त गिलहर—

मैं अपनी आँखें बन्द कर लेती हूँ (वह सेल्ज-गर्ल अभी व्यस्त है) और अपने थके शरीर को अस्पताल की दीवार के सहारे ढीला छोड़ देती हूँ। कल पूरी रात मैं बिलकुल नहीं सोयी—मैंने पूरी रात फ्यूमियो के बिस्तर के पास घुटने टेके काटी है—लेकिन मेरी थकान का मुख्य कारण यह नहीं है। मैं इसलिए थक गयी हूँ कि मैं वे सब बातें सोचती रही हूँ जो कि मेरे लिहाज से बहुत बड़ी हैं।

मिसाल के तौर पर मैं सोचती रही कि संयोग का हमारी जिन्दगी में कितना बड़ा स्थान है। अगर फ्यूमियो को उस विख्यात छः अगस्त सन् पैंतालीस के दिन फौज से छुट्टी न मिली होती, तो वह हिरोशिमा में न होता और हिरोशिमा में न होता, तो उन ढेर-की-ढेर लाशों में से एक-एक लाश उठाकर मुझे न ढूँढ़ता और न ही रेडिएशन की बीमारी से पड़ता। वह अब स्वस्थ हो जाये, तो हम चारों के लिए एक सुखी भविष्य की योजना बना सकेगा। पर इस वक्त स्थिति यह है कि सब-कुछ उसके जिगर के हाथ में है और वह निश्चय किये है कि फ्यूमियो को अपने साथ लेकर खत्म हो जायेगा। यही सब है जिसे मैं बहुत बड़ी बातें कहती हूँ।

"खड़े-खड़े सो गयी हो, युका-सान ?"

"सैम-सान !"

लम्बी टाँगें, बिखरे बाल, उत्सुक आँखें, वह अमरीकन सिर पर आ खड़ा हुआ है। जल्दी से मैं अपने चिन्तित चेहरे को ठीक करने की कोशिश

करती हूँ।

"तुम फ्यूमियो को देखने आये हो ?" मैं पूछती हूँ, "मुझे अफसोस है कि वह सो रहा है, सैम-सान ! उससे कोई मिल नहीं सकता।"

"हे भगवान् ! युका-सान, तुमने मुझे बताया क्यों नहीं कि फ्यूमियो इतना सख्त बीमार है ?"

हैरो-सान बुरी तरह से झुँझलाया नजर आता है। अभी उसे पता चला है कि कल रात फ्यूमियो को क्या हुआ था और हमेशा की तरह उसे अपने आवेश को छिपाना नहीं आया। उसकी हताशा मेरे अवरोध को तोड़ देती है और मेरी आँखों में आँसू आ जाते हैं। मैं अपने को फिर से संयत रखने के लिए संघर्ष करती हूँ। तभी मैं अपने हाथों में कोई चीज महसूस करती हूँ और मुझे पता चलता है कि मेरी नयी मित्र, वह सेल्ज-गर्ल, मेरी रक्षा के लिए आ पहुँची है। फ्यूमियो के लिए उपहार के बंधे सेब को अपनी उँगलियों में दबाती हुई मैं उसके चेहरे के सधे भाव को इस तरह देखती हूँ जैसे एक युवा अभिनेत्री एक प्रसिद्ध अभिनेत्री को देखती है जिसमे कि वह बहुत-कुछ सीख सकती है।

हम एक-दूसरी की तरफ देखती हुई खुलकर मुस्कराती हैं और कई बार झुकती हैं।

"सैम-सान, तुम घर चलकर वहाँ मेरा इन्तजार क्यों नहीं करते ? फ्यूमियो के पास किसी को जाने की इजाजत नहीं है।" मैं अमरीकन से कहती हूँ और सुनकर खुश होती हूँ कि मेरी आवाज अब ठीक हो गयी है।

जो मैंने कहा वह सच नहीं है। असलियत यह है कि मैं नहीं चाहती कि सैम-सान फ्यूमियो को देखे—न ही उसके कमरे के सहवासियों को। वह समय गुजर गया है जब मैं उससे चीजें छिपा सकती थी। लेकिन मैं अपने किरायेदार को इतना पसन्द करती हूँ कि उसे अनावश्यक रूप से भय की कोख में नहीं ले जाना चाहती। सैम-सान अभी तक स्वतन्त्र है। लेकिन जैसे ही एक बार उसके मन में दया (और दया के साथ लोगों की सहायता करने की तीव्र आकांक्षा) ने प्रवेश किया, वह शायद कभी के लिए भी स्वतन्त्र न रह पाये। मैं उसे हिरोशिमा की ट्रेजेडी से बाहर रखना चाहती हूँ।

अगर डॉक्टर दोमोतो उसी समय वहाँ से न गुजरता तो सब ठीक रहता। वह अच्छा खुशमिजाज डाक्टर पहले मेरे पास से जल्दी में गुजर जाता है, फिर रुककर मुझे बाँह से पकड़ लेता है। उसकी तीखी आँखें मोटे चश्मे के पीछे से चमक उठती हैं।

"आह; मैं अभी तुम्हारे पति की तरफ ही जा रहा था मिसेज नाका-

मुरा !" वह टूटी-फूटी अंग्रेजी में कहता है।

मैं उसका परिचय अमरीकन से कराती हूँ। फिर एक ऐसी बात होती है जो मैं नहीं चाहती। डॉक्टर दोमोतो, जिसे 'रेडिएशन' के मरीजों के अपने नये विभाग पर बहुत गर्व है, सैम-सान को हम सबके साथ ऊपर चलने को कहता है। भाग्य ने सब-कुछ मेरे हाथ से अपने हाथ में ले लिया है। मैं खामोशी से सीढ़ियाँ चढ़ती हूँ—भाग्य-वश अपने शिष्टाचार को याद रखकर उस भद्र व्यक्ति से तीन कदम पीछे। लेकिन जैसे ही डॉ. दोमोती फ्यूमियो के कमरे का दरवाजा खोलता है, सैम-सान सिर घुमाकर मुझे भर्त्सना से देख लेता है। 'तुम मुझसे यह सब छिपाकर कैसे रख सकीं ?' उसकी आँखें पूछती-सी लगती हैं। 'मुझसे युका-सान !'

"मेरी खिड़की के बाहर पेड़ के सूराख में गिलहर अपना घोंसला बना रहा है," फ्यूमियो मुझसे फुसफुसाकर कहता है। डॉक्टर इस बीच उसे अभिवादन करके दूसरे बिस्तर की तरफ चला गया है।

"क्या यही मेरा प्रिय पति है ?"

वे हाथ, जिन्हें मैं अच्छी तरह जानती और आदर-सम्मान देती हूँ, मेरे पति की रजाई पर सूजे-से पड़े हैं। इतने थोड़े समय में ही वे अजीब और डरावने लगने लगे हैं। हैरो-सान के कारण मैं जल्दी से उन्हें अपने हाथ मे ढक लेती हूँ। मैं उस रोयेंदार पूँछ की तरफ देखकर सिर हिलाती हूँ, जो बड़े सचेत भाव से हिलती हुई उस चेरी के पेड़ के सूराख में से बाहर निकल रही हो।

"तुम्हारा क्या ख़याल है—उसकी पत्नी अन्दर अण्डों पर बैठी है, फ्यूमियो ?"

मैंने अपने पीड़ित पति को हँसा दिया है।

"हाँ बैठी ही तो है। बहुत-से अण्डे हैं।"

उसकी आवाज एक भारी-सी फुसफुसाहट की तरह है। उसका चेहरा उसके फूले हुए पेट में उठते दर्द के मारे खिचा हुआ है। फिर भी मेरा बहादुर फ्यूमियो अस्पताल की खिड़की के बाहर के दृश्य का आनन्द ले रहा है। अण्डों के बारे में मेरा अटपटा मजाक बिस्तर से बिस्तर तक दोहराया जा रहा है, और विकृत चेहरों पर मुस्कराहटें पैदा होती जा रही है। वह लड़का, जिसका हाथ चौदह साल से मुड़ा हुआ है और जिसकी उँगलियाँ एक पेड़ की भूरी-मुरझायी जड़ों जैसी नजर आती हैं, उत्तेजित होकर चिल्लाता है, "हमें यकीन है कि उसमें जरूर छोटे बच्चे हैं। हाँ—यह बिल्कुल निश्चित है।" वह मुझसे कहता है और अस्पताल के तकियों पर के पाँच चकत्तेदार सिर विश्वास से हिल उठते हैं।

"इस बिस्तर के आदमी के बीस ऑपरेशन हो चुके हैं।" डॉक्टर दोमोतो सैम-सान को बताता है। "यह जो लड़का है-- एटम का युवा शिकार---इसका एक-तिहाई जिस्म विस्फोट के निशानों से भरा है। ओह--अंग्रेजी मैं नहीं बोल सकता।" डॉक्टर कहता है, और कुछ जापानी शब्द बोलता है कि मैं उनका अनुवाद कर दूँ। फ्यूमियो की पीड़ित उँगलियों पर हाथ रखे, और आँखें चेरी के लहराते पेड़ पर टिकाये मैं धीरे-धीरे अनुवाद करती हूँ।

"डॉक्टर कहते हैं कि एक एटम बम के रोगी अन्दर और बाहर दोनों तरह की चोटें झेलते हैं। बहुत-से ऑपरेशन कभी-कभी जलने के तथा एटम बम के अन्य निशानों को मिटा सकते हैं, लेकिन अन्दर की चोटों के लिए कोई इलाज नहीं है।"

सैम-सान सिर हिलाता है। वह उन भयावह पट्टियों को देख रहा है जो मरीजों की छातियों और कन्धों पर लपेटी हुई हैं। उसकी एकटक नजर मुझे याद दिलाती है कि उसका अपना पिता डॉक्टर था। हो सकता है सैम-सान स्वयं भी डॉक्टर बनता, जैसा उसने मुझे उस पहली शाम को बताया था। सम्भव है कि वह अब भी, किसी दिन बन जाये।

"यह लड़का जो यहाँ लेटा है, उसकी आँखों के पपोटे बम-विस्फोट से जड़ हो गये हैं।" डॉ. दोमोतो फिर मेरी जगह लेकर अंग्रेजी बोलने लगता है। "चौदह साल से यह खुली आँखों से सो रहा है, या सो ही नहीं रहा। दोनों कानों के ढकने गायब हैं। मुँह-- खैर, तुम खुद ही देख सकते हो उसके मुँह को क्या हुआ है···"

वह हर केस वैज्ञानिक दृष्टि से समझाता है। कभी-कभी आगन्तुक को नयी विभीषिका दिखाने के लिए ऊपर से चादर हटा देता है। मैं डॉक्टर की आवाज सुनती हुई आश्चर्य करती हूँ कि मरीज़ स्वयं क्या सोचते होंगे। सौभाग्यवश वे अंग्रेजी नहीं जानते। जानते, तो भी शायद यह सब जानने के इच्छुक न होते कि उनमें से अधिकांश की मृत्यु क्यों अवश्यम्भावी है। उनकी आँखें गिलहर की लाल पूँछ पर अटकी हैं, मानो एक महान् रहस्य का उत्तर खोज रही हों— जिन्दगी के रहस्य का। क्या वे अपने से यह पूछते हैं कि क्यों आदमी ने, जोकि इस गिलहर की पूँछ का एक बाल भी नहीं बना सका, अपने को जीव-विनाश का विशेषज्ञ बना लिया है।

एक हाथ मेरे हाथ को ऊपर से थोड़ा दबाता है। कुछ देर के लिए हमारे तीनों हाथ—डॉक्टर का, मेरे पति का और मेरा—आपस में एक विश्वास के साथ जुड़े रहते हैं। फिर वे धीरे से अलग हो जाते हैं। जब डॉक्टर धीरे-धीरे फ्यूमियो से बात करने लगता है, तो मैं अपना सिर घुमा-

कर सैम-सान की आँखों में देखती हूँ।

लेकिन हैरो-सान को क्या हो गया है ? उसकी आँखों का भाव बदल गया है। सम्भव है वह अब बाहर से देखनेवाला व्यक्ति नहीं रहा—वह अब अन्दर पहुँच गया है। जब से उसने फ्यूमियो के कमरे में कदम रखा है, वह हमारी ट्रेजेडी का साझीदार बन गया है—हमारी जिन्दगी का भी। सैम-सान अवश्य हिरोशिमा के तथ्य पहले से जानता होगा, लेकिन तथ्य जानना अलग बात है और एक कमरे में जहाँ छः पीड़ित आदमी पड़े हों, खड़े होना बिल्कुल और बात है - न केवल उन्हें देखते हुए, बल्कि साथ ही दुःखी होते हुए और सहायता करने की इच्छा रखते हुए।

"क्या मैं···क्या मैं फ्यूमियो के लिए कुछ कर सकता हूँ ?" वह तनाव-भरी आवाज में पूछता है।

उसकी लड़कों की-सी लम्बी उँगलियाँ आपस में इस तरह भिच जाती हैं कि क्षण-भर के लिए मेरे पति का ध्यान रोयेंदार पूँछवाले गिलहर से हट आता है और वह किरायेदार की तरफ देखकर मुसकरा देता है।

"इससे कहो, गिलहरी के लिए कुछ दाने खरीद दे," मुझसे सवाल का अनुवाद सुनकर फ्यूमियो कहता है। सैम-सान जवाब सुनकर भौंचक्का-सा हो रहता है, मानो उसके मुँह पर चपत लगा दी गयी हो।

"दाने···सिर्फ दाने···? क्या मैं सिर्फ इतना ही कर सकता हूँ···?"

सैम-सान धीरे से दरवाजे की तरफ मुड़ता है। उसे खोलने से पहले, वह एक नजर एक-एक करके कमरे में पड़े उन छः व्यक्तियों को देख लेता है जो अपने दर्द के भार से दबे हैं। तभी उसका चेहरा सहमा इस तरह सुर्ख हो उठता है मानो उसका सारा खून जिस्म से वहीं निचुड़ आया हो।

हमारा किरायेदार हताश भाव से जरा-सा झुकता है। फिर वह मुड़कर तेजी से कमरे से बाहर चला जाता है।

## ग्यारह

मुझे भोर अच्छी लगती है। आदमी का दिन कई लोगों का होता है, लेकिन भोर सिर्फ अपनी होती है। मेरी तरह मेरी बेटी मिचिको भी प्रातः के उस एकान्त से प्यार करती है, शायद इसलिए कि उसका आधान भोर के समय

हुआ था, और जन्म भी भोर के समय ही हुआ था। हर सुबह गुलाबी आभा निकलने से पहले, वह चुपचाप बागीचे में चली जाती है —इस खयाल से कि कोई उसका पीछा नहीं करेगा। उसकी उम्र में मैं भी ऐसा ही किया करती थी। मिचिको की तरह मैं भी कुछ समय अपने अकेलेपन के साथ बिताती थी। निर्धारित जगह पर पंजों के बल जाते मेरी साँस फूल जाती थी, जैसाकि बाद में चलकर प्रेम-मिलन के लिए जाते हुए होता था।

"मामा···" मैं हर सुबह उसकी फुसफुसाहट सुनती हूँ, और जल्दी से एक खर्राटा भरकर उसे आश्वस्त कर देती हूँ। (क्या मेरी माँ भी झूठी नींद का बहाना करती थी, जब मैं भोर देखने भागने से पहले उसका नाम फुस-फुसाती थी? मामा-सान, प्यारी मामा-सान, मुझे यकीन है तुम ऐसा ही करती थीं!)

जैसे ही मैं 'शोजी' को फिसलते सुनती हूँ, देखती हूँ कि एक छोटी-सी आकृति नीले युकाता में नंगे पाँव चुपचाप बाहर निकल रही है। मैं अपने ओढ़ने के नीचे एक मोम की गुड़िया की तरह चुपचाप पड़ी रहती हूँ। सम्भवतः मैं अपना हाथ फ्यूमियो की तरफ बढ़ाती हूँ, और यह याद हो आने पर कि वह वहाँ नहीं है, पूरी तरह जाग जाती हूँ। मैं अपना रात का किमोनो उतारकर युकाता पहने दबे पैरों फर्श पार करती हूँ ताकि मेरा मुटल्ला लड़का न जाग जाये। (उसे अपनी नींद में मैं हँसते सुनती हूँ) जल्दी से मैं रसोईघर में आग जलाने चली जाती हूँ। एक कटोरा गरम चाय शायद मेरे अकेले शरीर को गरम कर दे, जिसके पास कोई साथी अब उसे गरम करने के लिए नहीं रह गया है।

ओह! मैंने बी-बुलबुल को जगा दिया है। मैं उसे अपनी तीली-जैसी टाँगों को फैलाते और परों को झटकते सुन सकती हूँ, हालाँकि एक कपड़ा अभी भी उसके पिंजरे को ढके हुए है। जब मैं कपड़े का एक कोना उठाती हूँ, वह तुरन्त अपनी पीली चोंच खोल देती है। नहीं, नहीं, बी-बुलबुल! मैं तुम्हारे हाथ जोड़ती हूँ। अभी मत चहचहाना! तुम मेरे तादेओ को जगा दोगी! ओह, कितनी तीखी नजर से बी-बुलबुल मुझे देखती है! नरम दिल होने से मैं हथियार डाल देती हूँ। अच्छा बी-बुलबुल, चहचहाओ। लेकिन आहिस्ता-से डार्लिंग···आहिस्ता-से।

शुँ SSS!

लो चाय का पानी उबल गया। मेरी पुरानी चाय की केतली कितना शोर करती है। वह सीटी बजाती है और जैसे ही मैं जल्दी से उसे आग से उठाने लगती हूँ, वह मुझे बी-बुलबुल की तरह गुस्से की नजर से देखती है। उसे सीटी बजाना पसन्द है। सीटी बजाना ही हमारी केतली का भाव प्रकट

करने का एक ढंग है, फ्यूमियो कहा करता था। मैं अपने को पकड़ती हूँ। कहा करता था, क्यों ? ओह फ्यूमियो !

मैं अपने लिए एक कटोरा चाय बना लेती हूँ और उसकी चुस्कियाँ लेती, फिसलते दरवाजे तक आ जाती हूँ। दरार से आँख सटाकर मैं मिचिको को तालाब के किनारे बैठे देखती हूँ। खामोश और स्थिर, वह घास पर घुटने टेके बैठी है और उसकी आँखें पानी में सोये बन्द कमलों पर रुकी हुई हैं। मैं अपनी साँस को तेज चलते महसूस करती हूँ। आह, तुम भी ? मिचिको, तुम भी चीजों को खुलते देखने में सुख पाती हो— शुरू होते देखने में ? हम लोग बिलकुल एक-जैसी हैं।

भोर की खामोशी में घुटने टेके मेरी बेटी उत्सुकता से इन्तजार कर रही है। अपने सिर को एक तरफ झुकाये कमल की कलियों के खुलने की आवाज सुनना चाह रही है। कितनी अच्छी तरह मुझे याद है कि कुछ कमल 'पक्' की आवाज के साथ झट-से खुलते हैं और कुछ चुम्बन की-सी आवाज से। एक गहरे सन्तोष की चमक मिचिको के गोल चेहरे पर नजर आती है और मैं महसूस करती हूँ कि उसने अभी एक करिश्मा देखा है— इस सर्वथा नये बसन्त की सुबह, एक बड़े-से नये फूल के जन्म का। मैं भी फ्यूसुमा के पीछे छिपी मुस्करा देती हूँ।

"दबोचो, मिचिको !"

मैं एक हरी गेंद को हवा में उछलकर आते देखती हूँ। वह हाथ जिसने उसे फेंका है और वह शरीर जिससे वह हाथ जुड़ा है, मुझे बाद में नजर आते हैं। मेरा युवक किरायेदार इतना जाना-पहचाना हो गया है कि मैं उसके घर से निकलकर आने से पहले ही उस छोटे-से युकोता में, जोकि मैंने उसे पहनने को दिया है, लिपटी उसकी लम्बी टाँगों का अनुमान कर लेती हूँ।

"क्या तुम मेंढक ढूँढ़ रही हो मिचिका ?" सैम-सान उससे पूछता है।

मिचिका त्यौरी चढ़ा लेती है। वह अंग्रेजी शब्दों से घबरा जाती है। फिर अपना सिर धीरे-से हिलाती है। वह अपना गोल सिर लगातार हिलाती रहती है और मैं समझ जाती हूँ कि वह कभी किसी को नहीं बतायेगी कि उसने अभी क्या देखा है। अपने अन्तिम दिन तक वह यह जानकारी अपनी विचित्र एकान्त मुस्कराहट के पीछे छिपाये रखेगी।

अब वह उछलकर अपने पैरों पर खड़ी हो जाती है और अपने नीले युकाता में नीचे तक झुकती है। इस शिष्टाचार का पालन करते हुए उसकी आँखें गम्भीर हैं और वह बहुत आकर्षक लग रही है। अचानक मुझ पर अपराध की वह विचित्र-सी भावना छा जाती है। हमेशा यह खयाल आने

पर कि मैं अपने परिवार को कितना प्यार करती हूँ, यह भावना मुझ पर छा जाती है। लेकिन मैं क्यों उस भावुकता से लज्जित महसूस करूँ जोकि किसी भी स्त्री के लिए स्वाभाविक है ? फिर मैं अपराधी क्यों हूँ ?

जैसे कि इसके उत्तर में, तीन भूत-जैसी आकृतियाँ हमारे दरवाजे के सामने से गुजरती हैं—हरादा-सान और उसकी दोनों मित्र घिसटती हुई अपने दिन क काम पर जा रही हैं। (वे शहर से कुछ मील बाहर, एक नयी सड़क के लिए पत्थर तोड़ती हैं।) हाँ, मुझे अपनी अपराध-भावना अब समझ आ रही है। अपने परिवार को पूरा वक्त देने में, अपने पुराने मित्रों के प्रति मैं उदासीन रही हूँ—यह भूल रही हूँ कि हम एटमबम के उत्तरजीवियों का पहला कर्तव्य एक-दूसरे के प्रति है। पहले मैं उन लोगों के बीच जाकर उनकी सहायता किया करती थी, लेकिर अब काई से घिरे पत्थर की तरह मैं स्वार्थ से ढक गयी हूं।

"कोनिचिवा हरादा-सान।"

तालाब के किनारे खड़ी मिचिको हमारी तीन पड़ोसिनों की तरफ झुकती है। वे भी गम्भीरता से उत्तर में झुकती हैं। फिर हैरो-सान को देखती हैं और उसकी तरफ झुकती हैं। तीन थकी औरतें, काम करने की कालिख-भरी पैण्टें पहने, जिनके अन्दर उन्होंने अपने बड़े-बड़े किमोनो ठूंस लिये हैं। युवा-विदेशी जवाब में झुकता है। मैं जानती हूँ कि एक सप्ताह पहले वह इस ईमानदारी से जापानी अभिवादन नहीं कर सकता था। इसमें सन्देह नहीं कि हिरोशिमा आने के बाद हैरो-सान में इन कुछ दिनों में बहुत फर्क आ गया है।

मैं 'शोजी' में बनी दरार के बिलकुल करीब आ जाती हूँ और देखती हूँ कि सैम-सान मेरी मित्रों को ताक रहा है। वह परेशान है। अचानक वह झुककर अपने हाथ मिचिको की तरफ बढ़ा देता है। मेरी लड़की भागकर उसके आलिंगन में चली जाती है। मुझे हैरो-सान के उस लड़की को साथ सटा लेने से लगता है कि वह उसकी उस कहर से रक्षा करना चाहता है जो हरादा-सान और अन्य लोगों पर, हम हिरोशिमा के सब लोगों पर, टूटा है। उसका गम्भीर भाव मुझे चकित करता है। क्या मैंने शुरू से ही नहीं भाँप लिया था कि उस लड़कपन करते युवा-अमरीकन के अन्दर एक और सैम-सान बन्द है जो फूट पड़ने के लिए तड़प रहा है—कमल की कलियों की तरह ?

उसके सुन्दर बाल धूप में चमक उठे हैं। हमारी गली की तिरछी छतें और चेरी के अकेले पेड़ की शाखाएँ रोशनी से सुलग उठी हैं। धूप ! धूप ! मैं 'शोजी' खोलकर भागती हुई बाहर सुबह के बीच जाने ही वाली हूँ कि

एक खयाल मुझे ठण्डा कर देता है। मेरे पति के अस्पताल की खिड़की के बाहर का पेड़ भी चमक उठा होगा। उसे भी सुबह उसी तरह नजर आ रही होगी, जैसी कि मुझे नजर आ रही है। लेकिन वह नया दिन, उसके और उन पाँच आदमियों के लिए उल्लास नहीं लायेगा। यह केवल उन्हें मौत के एक दिन और नजदीक ले जायेगा। मैं भय की कँपकँपी को दबाती हूँ और एक क्षण के लिए 'शोजी' से अपना सिर टिका देती हूँ। ऐसी ही धूप मे नहाई सुबह में उठना और बागीचे में मिचिको के साथ घूमना, जबकि उसका पिता मुस्कराता हुआ देख रहा हो---यह उन खुशियों में से एक थी जो परसों मेरे लिए समाप्त हो गयी। हाँ, सिर्फ कल से एक दिन पहले।

हूम !

फिर वही हरी गेंद। वह जोर से सीधी मेरी तरफ आती है। मुझे सोचना छोड़कर क्रियाशील होने के लिए मजबूर करती है। मैं उसे दबोच-कर मिचिको की तरफ फेंकती हूँ। वह उस गेंद को सैम-सान की तरफ उछाल देती है। कितना मनोरंजक है यह, कितना आनन्ददायक ! एक क्षण के लिए मैं उस खेल के उत्साह में सबकुछ भूल जाती हूँ, क्योंकि मैं हमेशा से गेंद के खेलों में कुशल रही हूँ। हिरोशिमा के स्कूल में मैं लड़कियों की बेस-बाल टीम में खेला करती थी। मैं अपनी कक्षा की सबसे अच्छी खिलाड़ी मानी जाती थी।

"युका-सान, तुम एक लड़की होने के नाते इतनी बुरी खिलाड़ी नहीं हो। बुरी हो, लेकिन इतनी बुरी नहीं।"

सैम-सान ठहाका लगाता है। कल मैंने उसे अस्पताल से विदा किया था, तो मैं डरी थी कि हमारी आज की सुबह बड़ी दुःखद होगी, लेकिन यह युवा अमरीकन बहुत समझदार और व्यवहारकुशल है। जानता है कि यह वक्त मेरे दुःखों का जिक्र करने का नहीं, हालाँकि एक तरह से हम अब उनमें साझीदार हैं। मैं उसे देखकर जवाब में मुस्करा देती हूँ। वह मुझे जरा भी तनाव महसूस नहीं करने देता।

मिचिको खेलना बन्द कर देती है और नंगे धूल-भरे पैरों से दौड़कर मेरी तरफ आती है।

"मामा-सान ! यामागुचि-सान सड़क पर इधर को आ रहा है।"

मैं गेंद गिरा देती हूँ। उसे उछलकर बागीचे में दूर जाते सुनते हुए मुझे लगता है जैसे मेरी खुशी ही मुझसे दूर भागी जा रही है।

"क्या बात है, युका-सान ?"

मैं अपने होंठों पर उँगली रखकर अपने किरायेदार को चुप कराती

हूँ—इस खयाल से कि अगर यामागुचि-सान हमारी आवाज न सुने तो शायद चला जाये, जैसे कि कोई मकान-मालिक खून सूंघकर वापस जा सकता हो। निःसन्देह यामागुचि-सान ने बुरी खबर सुन ली है। मैं जानती हूँ कि वह हमें निकाल देने के लिए कितना उत्सुक है। बहुत अरसे से वह चमकते आधुनिक मकानों की लम्बी कतार बनाने की सोच रहा है जिनसे उसे आज के किरायों से कहीं ज्यादा किराया मिल सकता।

"आह, गुड मार्निंग, गुड मार्निंग नाकामुरा-सान !"

जैसाकि मैंने सोचा था, यह जोंक हमारे पीछे है। मैं किसी तरह कोशिश करके अपने को खूबसूरत सूट और बाँकी पानामा हैट पहने उस नाटे व्यक्ति के सामने झुकाती हूँ। ओह ! विद्रोही हाथो, मेरी जाँघों पर से नम्रतापूर्वक फिसलो। कमर, लोचदार कमर, नीचे झुको, थोड़ा और नीचे ! होंठो, कृतज्ञता से हँसो ! आँखो, झपको।

"कितनी सुहानी सुबह है," औपचारिकता पूरी होने पर मैं कहती हूँ। "आज तुम बड़ी सुबह बाहर निकल आये, यामागुचि-सान !"

"जल्दी जागनेवाले कीड़े को पकड़ना था। माफ करना, मेरा मतलब तुम्हारे पति से है," यामागुचि-सान खीसें निपोरता है। "मुझे उससे एक बात करनी है।"

सोचने के लिए समय लेने के लिए मैं अपने किरायेदार का परिचय देती हूँ। यामागुचि-सान उसकी पीठ पर धौल लगाता है—केवल यह जताने के लिए कि उसे पच्छिमी ढंग आता है।

"सुनाओ, क्या हाल हैं अपने देश के ? अपना न्यूयार्क कैसा है ?" वह कहता है। उसने अंग्रेजी एक व्यावसायिक स्कूल से सीखी है और अपने काले रोजगार के सम्पर्कों से उसे माँजा है।

"ठीक है," सैम-सान ठण्डे ढंग से कहता है। यह स्पष्ट है कि वह इस सख्त नजरवाले जोकर से कोई वास्ता नहीं रखना चाहता।

"मैंने कहा है मैं तुम्हारे पति से बात करना चाहता हूँ। नाकामुरा-सान !"

मकान-मालिक की आवाज बदल गयी है, ढंग भी बदल गया है, जैसे कि एक अ-कलाकार एक नया नकाब चढ़ा ले।

"मेरे पति ओसाका गये हैं," मैं जल्दी से झूठ बोलती हूँ। "उसके बॉस ने उसे गराज के लिए सामान खरीदने भेजा है।"

"सोदेस्का !"

यामागुचि-सान इस तरह इत्मीनान से मुस्कराता है कि मैं समझ जाती हूँ कि वह सबकुछ जानता है, और हमें घर से खदेड़ना चाहता है। वह मुझे

यकीन दिलाता है कि कोई बात नहीं, वह फिर किसी दिन आ जायेगा। उसका काम फिर भी हो जायेगा, वह कहता है। (हाँ फिर हो जायेगा। वक़्त जो उसके साथ है।)

"तो अब मुझे चलना चाहिए। पड़ोस में मुझे दो-तीन जगह और जाना है," यामागुचि-सान पहले से तेज धौल मेरे किरायेदार के लगाकर कहता है। "मैं काफी अरसे से तुम्हारे देश का चक्कर लगाने की सोच रहा हूँ। वह दुनिया का सबसे बड़ा देश है। जापान मेरे लिए बहुत छोटा है। अच्छा तो फिर मिलेंगे, दोस्त!" वह अपने पानामा हैट को अधिक तिरछे कोण पर करता हुआ कहता है और लम्बे कदम रखता हुआ बागीचे के रास्ते चला जाता है।

"बिजली का तार है यह आदमी," सैम-सान खड़ा यामागुचि-सान को तेजी से लकड़ी का दरवाजा खोलते, बन्द करते और फिर सड़क पार करते देखकर कहता है। "लेकिन मुझे इस तरह के तार को नंगे हाथों छूने से घृणा है। मेरा खयाल है तुम्हें भी होगी युका-सान!"

लेकिन मैं उसकी बात नहीं सुन रही। देख रही हूँ कि मैंने ठीक सोचा था। मकान-मालिक होदा-सान से बात करने रुक गया है, जो कि सड़क के पार अपनी सुचि की दुकान का दरवाजा खोलने जा रहा है। असली जासूस है यह यामागुचि-सान। निस्सन्देह वह होदा-सान से पूछ रहा है कि उसने स्यूमियो के बारे में अफवाह सुनी है या नहीं। साथ ही पता लगा रहा है कि मुझ पर उसका कुछ कर्ज तो नहीं। हमारे मकान-मालिक का यह खास ढंग है। असल में वह होदा-सान के भी पीछे पड़ा है। उसका उसने किराया बढ़ा दिया है और उसे उस छोटी दुकान से बाहर निकालना चाहता है ताकि अपनी नये मकानों की योजना पूरी कर सके।

"क्या बात है, युका-सान? इतनी परेशान क्यों हो?"

मैं अपने को सँभाल लेती हूँ। देखती हूँ कि सैम-सान मुझे अपने युकाता की पेटी पर उँगलियाँ मरोड़ते देख रहा है। मैं उसकी तरफ मुस्कराने की कोशिश करती हूँ।

"कोई बात नहीं युका-सान! मैं कुछ भी जानने की कोशिश नहीं कर रहा।" सैम-सान कहता है। "मैं उस मकान-मालिक सान की तरह घास में बिलबिलाता साँप नहीं हूँ।"

मैं क्यों अपने दुःख सैम-सान के आगे रो देती हूँ? यह मेरे स्वभाव के विरुद्ध है, लेकिन मेरी तनी नसें फटने को हो रही हैं। यह सोचकर कि सैम-सान अब हमारा अपना ही है, मैं जबान ढीली छोड़ देती हूँ। अपने को यह बताते पाती हूँ कि एटमबम का शिकार होना क्या अर्थ रखता है। मैं

उसे बताती हूँ कि कैसे हमें बहिष्कृत व्यक्ति समझा जाता है, जिनसे सम्पर्क रखना दुर्भाग्य का लक्षण है। और भी बड़ी बात—कि जिन्हें किसी भी अच्छी नौकरी के काबिल नहीं समझा जाता। यह सच है कि हमारा बिगड़ा स्वास्थ्य हमें ज्यादा काम करने लायक नहीं रहने देता। यह भी सच है कि हमारे जले निशानों को देखकर वितृष्णा होती है···

सैम-सान मेरी बाँह थाम लेता है (यह बाँह मेरे जख्मों से भरी है जो युकाता के अन्दर छिपे हैं।)

"तुमने यह सब मुझे पहले क्यों नहीं बताया ? क्या वजह है ? बताओ, मैं दोस्त हूँ या दुश्मन ?"

"मैं तुम्हें अपने दुःखों से परेशान नहीं करना चाहती थी, सैम-सान ! तुम यहाँ काम से आये हो—और जापान देखने के लिए। एक-दो दिन में तुम क्योतो चले जाओगे।"

"जहन्नुम में जाये क्योतो।" उसके मुँह से निकल पड़ता है। फिर सैम-सान दाँत निकालकर मुस्करा देता है। "तुम्हें पता नहीं कि मैं ऐसा आदमी नहीं हूँ जिसे रमणीक स्थानों या मन्दिरों आदि को देखने का शौक हो। क्योतो जाना टल सकता है। कैसा रहे अगर मैं क्योतो तार दे दूं और यहाँ कुछ दिन और रहने का प्रबन्ध कर लूँ ? हद-से-हद यही तो होगा कि मेरा सौतेला पिता मेरा काम छुड़ा देगा। सच पूछो तो मैं इससे छुटकारा ही महसूस करूँगा। और देखो, युका-सान, जब मैं यहाँ रुक ही रहा हूँ तो मुझे एक सप्ताह का किराया तुम्हें अग्रिम दे देना चाहिए।"

मैं बिना जवाब दिये सैम-सान को देखती रहती हूँ और आभार से दब जाती हूँ। हमेशा की तरह मैं उचित शब्द नहीं ढूँढ़ पाती। मैं रूढ़ियों में इतनी बँधी हूँ कि अपनी भावना शब्दों में प्रकट नहीं कर सकती।

"अब तुम तैयार हो जाओ," सैम-सान मुझसे कहता है। "फ्यूमियो अस्पताल में तुम्हारा इन्तजार कर रहा होगा। क्या मैं दोपहर को तुम्हें वहाँ से लेता आऊँ ? हम साथ-साथ कुछ खरीदारी करेंगे। ठीक है ?"

कितना सुखकर लग रहा है ! कितना सुरक्षित ! मैं उसे धन्यवाद की मुस्कान से देखती हूँ।

"तुम मुस्कराती हो तो बिलकुल एक बच्ची-सी लगती हो।" सैम-सान अपने सिर को एक तरफ झुकाकर मुझे ध्यान से देखता हुआ कहता है। "मैं तो कहूँगा बिलकुल मिचिको की उम्र की जान पड़ती हो ! दो बेरों की तरह तुम बिलकुल एक-जैसी लगती हो, तुम्हें मालूम है ? यही बात मैं सुबह सोच रहा था, जब मैंने बाहर आकर उस बच्ची को तालाब में देखते पाया था। यह बिलकुल युका-सान की तरह लग रही है, मैंने सोचा

था।"

"और मिचिका देख क्या रही थी ?" मैं उसे छेड़ती हूँ।

"वह तो बस देखती जा रही थी, देखती जा रही थी, जाने क्या ! मुझे यकीन है वहाँ था कुछ भी नहीं।"

मुझे अपनी लड़की के चेहरे का भाव याद हो आता है—जब वह भोर के वक्त घुटने टेके तालाब के किनारे बैठी थी।

तुम गलत सोचते हो सैम-सान, बिलकुल गलत सोचते हो। वहाँ कुछ था जरूर। लेकिन उसे सिर्फ मिचिको ही देख सकती थी।

## बारह

कितने सौभाग्य की बात है कि ओहात्सू की यह पार्टी जुगनुओं के मौसम में पड़ी। दो रात हम पहाड़ियों पर जुगनुओं का पीछा करते रहे। उन्हें उन बाँस के पिंजरों में बन्द करते रहे जिन्हें हम हर बसन्त में बाहर निकालते हैं। हमेशा की तरह, शहर से बाहर के जंगल, उस चकमक कीड़े को पकड़ने-वाले लोगों से भरे थे। लेकिन मुझे यकीन है कि हैरो-सान जितने जुगनू किसी ने नहीं इकट्ठे किये। ओह, यह युवा अमरीकन हर काम कितने उत्साह के साथ करता है ! उत्सुकता से वह आज रात की दावत का इन्तजार कर रहा है जो माएदा-सान ओहात्सू और अपने सबसे अच्छे शिष्य हिरू के लिए दे रहा है।

"हमें कब पहुँचना होगा ?" वह मुझसे पूछता है, "उम्मीद करनी चाहिए कि मौसम आज अच्छा रहेगा। तुम क्या सोचती हो, मुझे सज-धज-कर जाना चाहिए, युका-सान ?"

"नहीं, सिर्फ एक बार कंघी करके।"

मैं मुस्कराती हूँ और अब मैं उससे इतनी अच्छी तरह परिचित हो चुकी हूँ कि उचककर उसके सदा बिखरे बालों को सँवार देती हूँ। वे उतने ही मुलायम हैं जितने कि देखने में लगते हैं। इन मुलायम सुनहरे बालों के कारण कभी-कभी हैरो-सान मुझे थोड़ा अयथार्थ-सा लगता है।

"जुगनुओं की दावतें तब शुरू होती हैं जब पहला सितारा निकलता है," मैं उससे कहती हूँ। "और माएदा-सान के शिष्य भी ठीक समय पर ही

पहुंचेंगे ।"

ठीक समय पर ! वे रहे वे लोग अपने-अपने दावत के किमोनो में माएदा-सान के नरम बेंत के दरवाजे के पास खड़े, अपनी गरदनें ऊँची किये सितारे को देखते हुए। विस्फोट से तहस-नहस होने के बाद माएदा-सान का यह नाजुक मकान फिर अपनी पहली हालत में नहीं आ सका। एक कलाकार अपने पंखे के पीछे से हँस रहा है।

"किसी दिन हमारे चित्रकला के अभ्यास के दौरान एक बम हम पर आ गिरेगा। हमारे गुरु यह जगह बदल लेते, अगर उन्हें ओकासान का खयाल न होता।" उफ्। सैम-सान शब्द ओका-सान पर अटक जाता है। (वह जापानी सीखने पर तुला है। इसी से हर शब्द को स्पंज की तरह सोख लेता है।)

"क्या माएदा-सान के पत्नी है ? तुमने कभी उसका जिक्र नहीं किया, युका-सान !"

मैं बागीचे में निकल आती हूँ, मानो मैंने सुना ही न हो—इस बात की निरर्थक आशा लिये कि सैम-सान ईइज़ा को आज रात नहीं देख पायेगा। यह एक सुहानी शाम है और मैं हैरो-सान को हिरोशिमा के एक और दुःख से बोझिल नहीं बनाना चाहती। लेकिन मेरी आशा जल्दी ही टूट जाती है।

"आओ मेरी पत्नी से मिलो, प्यारे दोस्त !" माएदा-सान एक मुस्कान के साथ हमारा स्वागत करता है। "आओ और ईइज़ा को 'हैलो' करो।"

अपनी प्रिय पत्नी के प्रति स्नेह उसके चेहरे के हर रोम से फूटा पड़ता है। हल्के पैरों चलता हुआ वह अपने युवा मित्रों को इशारा करता है कि वे भी अपनी 'गेता' से आवाज पैदा न करें। माएदा-सान हमें बागीचे के कमरे की तरफ ले जाता है, जिसकी बाहर की दीवार खुले लकड़ी के ढाँचे की है और जिस पर बेलें चढ़ी हैं। थोड़े-से जुगनू अपने पिंजरों से जरूर निकल गये होंगे और उनकी हरी रोशनी में हम ईइज़ा के कमरे का काफी हिस्सा देख सकते हैं। रोगन किये परदे के आगे वह घुटने टेके बैठी है। एक विचित्र दृश्य है ! अगर किसी को यह मालूम न हो कि माएदा-सान की पत्नी सचमुच साँस लेती है, खाती और सोती है, तो उसे लग सकता है कि उसके पति ने एक आदम-कद गुड़िया परदे से टिकाकर रखी हुई है—सख्त किमोनो पहने गुड़िया, जिसे वह एक मॉडल के तौर पर इस्तेमाल करना चाहता है।

जल्दी से मैं सैम-सान की तरफ देख लेती हूँ। उसकी आँखें आधी बन्द हैं और मैं उसे उसाँसें भरते सुन सकती हूँ। माएदा-सान के शिष्य एक साथ झुकते हैं। सैम-सान भी अपने आगे-पीछे देखने के बाद झुक जाता है। सभी

युवा पुरुष अपने गुरु की बीमार पत्नी को सम्मान दे रहे हैं।

मैं भी ईइज़ा को अभिवादन करती हूँ। मैं चाहती हूँ कि मैं अपने शरीर को झुकाने से अधिक भी कुछ कर सकूँ, लेकिन मुँह से कुछ भी कहना निरर्थक है। ओह बेचारी ईइज़ा, तुम्हारा मस्तिष्क--हिरोशिमा की घड़ियों की तरह—उस बीते अगस्त के दिन सवा आठ बजे चलना बन्द हो गया था! मेरी अभागी मित्र, विस्फोट से भौंचक तुम फटे कपड़ों में अपने को घसीटती घर ले आयी थीं--तुम्हारा अनुभूतिशील मस्तिष्क खो चुका था--और उसके बाद यहाँ से कभी नहीं गयीं। तुम्हारे पति ने तुम्हें गेट के भीतर अपने मरते बच्चे को दूध पिलाते देखा था और तुम्हारी आँखें भय से जड़-सी होकर एटम की काली वर्षा को देख रही थीं।

"किरि।"

कोचिरो, सबसे युवक कलाकार, फुसफुसाता है, 'सुन्दर,' और कोई और धीरे-से इसे दोहराता है। क्यों नहीं? क्या वे सब कलाकार नहीं हैं? सौन्दर्य के प्यासे? एक जुगनू ईइज़ा की कोमल भौंह पर बैठ जाता है और वह लालटेन से उसके चेहरे पर रोशनी डालती है। वह वास्तव में सुन्दर है। उसके जुड़े हुए हाथ, जो इत्मीनान से उसकी गोद में रखे हैं, उसके रेशमी किमोनो की सलवटों की तरह रुपहले हैं। उसके लम्बे काले बाल उसके मखमली रिबनों की तरह मुलायम हैं। शब्द 'किरि' ही हमारी नेक ईइज़ा के लिए उपयुक्त है।

लेकिन उसके माथे पर चमकता जुगनू एकाएक अपनी रोशनी बुझा देता है और ईइज़ा का चेहरा एकदम अँधेरे में डूब जाता है। माएदा-सान हमें वापस चलने के लिए इशारा करता है, ताकि हम उसकी पत्नी को थकायें नहीं। फिर भी कोई उस बेचारी सफेद गुड़िया को यह महसूस नहीं होने देना चाहता कि वह अपने ही घर की दावत में शरीक नहीं है। इसी से घास पर घुटने टेके, हम उसे गीत सुनाते हैं। हमारी आवाजें फुसफुसाहट से थोड़ी ही ऊँची हैं और हम हिरोशिमा के वे गीत गाते हैं, जो हम सबको बहुत प्रिय हैं। "जबकि वह काली बारिश आयी," हम गाते हैं और 'नदी में फूलों का गुच्छा' हमेशा की तरह हम 'बुंगाकु नो को' के साथ समापन करते हैं। हम अपना पूरा हृदय इन शब्दों में उँडेल देते हैं, "अब कोई हिरोशिमा नहीं होगा।" ओह हम अपने को एक-दूसरे के कितने निकट महसूस कर रहे हैं! हम एक विशेष जाति के लोग हैं--रेडिएशन-ग्रस्त जाति के--जोकि धरती पर अपनी तरह की सिर्फ एक ही जाति है। हम सब बहन-भाई हैं।

"युका-सान!"

मैं हैरो-सान को भूल गयी थी। गाना रुक चुका है और उसकी जगह फुसफुसाहट ने ले ली है। मैं अचानक सोचती हूँ कि सैम-सान बहुत-बहुत अजनबी महसूस कर रहा होगा। अपने सम्मानित मेहमान की तरफ लापरवाह रहना, यह मेरी कितनी रुखाई है!

मैं अपराधी महसूस करती उसकी तरफ मुस्कराती हूँ।

"क्या यह···क्या यह कभी नहीं ठीक होगी?" वह फुसफुसाकर कहता है, जिससे कि ईइज़ा का ध्यान न बँटे। मैं सिर हिलाती हूँ और संक्षेप में उसे उसकी कहानी सुनाती हूँ। मैं देखती हूँ कि सैम-सान की आँखें भर आयी हैं। वह मुझसे पूछता है कि क्या हिरोशिमा में ऐसे बहुत-से व्यक्ति हैं? मैं सिर हिलाती हूँ तो सैम-सान की भौंहें तन जाती हैं। वह उस समय वैसा ही लग रहा है जैसे डॉ. दोमोतो के वार्ड में भिन्न-भिन्न केस दिखाये जाने के समय लग रहा था। हाँ, सैम-सान को डॉक्टर ही बनना चाहिए था। वह संवेदनशील है और जीवन के प्रति अनुराग रखता है। उसका पिता, जिसकी वह अक्सर बातें करता है, बिलकुल इसी तरह का होगा।

"जल-पान!" माएदा-सान की धीमी आवाज, जिसका हम सब देर से इन्तजार कर रहे थे, सुनायी देती है। "युवा लोगो, आओ, पेट भरकर खाओ।" वह धीमे स्वर में हँसता है। फिर धीमे स्वर में ताली बजाता है। वह सब-कुछ धीमे स्वर में करता है ताकि उसकी पत्नी को बाधा न पहुँचे और उसी का अनुसरण करते हम लोग भी फुसफुसाहट में ही हँसते और बातें करते हैं। सच ही यह एक स्वप्न की-सी दावत लगती है। ओहात्सू और मैं चुपचाप 'सुचि' और हिशिमोशि की प्लेटें लिये इधर-उधर घूमती हैं। ओह, इन नवयुवकों को, जिन्हें कसकर भूख लगती है, खाना खिलाना कितना अच्छा लगता है! वे हर बार जब नये सिरे से प्लेटें भरते हैं, तो हमारी तरफ आँखें झपकते हैं क्योंकि यह खाना उनके लिए भी उतना ही दुर्लभ है जितना हमारे लिए। वे इतने युवा, इतने अच्छे हैं! रसोई की तरफ आते-जाते बीच में ओहात्सू और मैं अपना हिस्सा झपट लेती हैं और उन हीरे-जैसी हिशिमोशि को चबाने लगती हैं जो मैंने पकाई हैं! साथ ही जल्दी-जल्दी लेमनेड के घूँट भरती जाती हैं।

काफी देर बाद जब सब खाना खत्म करते हैं, तो मैं ताली बजाती हूँ।

"सब जुगनुओं का समय है। आओ अपने-अपने पिंजरे ले लो। दोज़ो!"

माएदा-सान के युवा मेहमान अपने पैरों पर खड़े हो जाते हैं। ईइज़ा को बाधा न हो, इसलिए जुगनुओं के लिए दौड़ने से पहले हम अपनी आवाज करती 'गेता' उतार देते हैं। फिर हम सब एक-एक करके उन बाँस के घरों

के दरवाजे खोल देते हैं ताकि वे कीड़े उड़ सकें। लेकिन जैसे ही दरवाजे खुलते हैं कीड़े शरारत से अपनी रोशनी बुझा देते हैं। ओह। जुगनू कितना तंग करते हैं—यह सब जानते हैं ! आदमी उनके पिंजरे को हिलाये जाता है, हिलाये जाता है, और जैसे ही वह हार मानने को होता है, वे अपनी रोशनी फिर जला देते हैं। "मेरे बुझ गये हैं," मैं चिल्लाती हूँ और इसके साथ हमारा खेल शुरू हो जाता है। हम सब अपने जुगनुओं का पीछा शुरू करते हैं। हँसते-गिरते हुए हम आहिस्ता-से एक-दूसरे से अँधेरे में टकरा जाते हैं।

आह ! जुगनुओ, जुगनुओ, वासन्ती रातों के, तारों-भरी रातों के जन्तुओ ! अपनी-अपनी लालटेनें लिये तुम बिखरते, उड़ते हो—दिशा बदलते नाचते हो। तुममें से जिन्हें एकान्त प्रिय है, वे पत्तियों पर जा बैठते हैं और अपनी पीली रोशनी से उन्हें हरित नील बना देते हैं। तुममें कुछ को स्वप्न प्रिय हैं। जानते हुए कि तुम स्वयं छोटे-छोटे रहस्यमय चाँद हो, तुम सारी सतर्कता छोड़, बड़े चाँद की तरफ लपकते हो। मुझे बताओ जुगनुओ, क्या तुम चाँद की यात्रा में अक्सर बेहोश नहीं हो जाते ? आकाश में मर नहीं जाते ? पर यह अधिक महत्त्वपूर्ण नहीं। महत्त्वपूर्ण है केवल उड़ना। हाँ-हाँ। हमारे अति विशाल स्वप्न, हमारे अति विकट रास्ते, केवल यही महत्त्व रखते हैं। जुगनुओ ! जुगनुओ !

दौड़ते पैरों की आवाजों से माएदा-सान का बागीचा भर जाता है। हम सब बच्चे बन गये हैं। अपने खेल में गुम। एक पेड़ के नीचे मैं सैम-सान से टकरा जाती हूँ। वह अपना बाँस का पिंजरा लिये खड़ा है। उसका दरवाजा खुला है और उसकी नजर बेलों के पीछे ईइज़ा के अस्पष्ट शरीर पर टिकी है। उसकी जुगनुओं में जरा भी दिलचस्पी नहीं रही—बावजूद उस उत्साह के जो उसने उन्हें इकट्ठा करने में लगाया था। ओह वही हुआ जिससे मैं डरती थी ! ईइज़ा के भाग्य ने उसे छा लिया है। वह कुछ सोच नहीं पा रहा। जहाँ तक उसका ताल्लुक है, दावत दावत नहीं रही।

"आओ, हमारा साथ दो, सैम-सान !"

वह अन्यमनस्क-सा मुसकराता है। मुझे वह नहीं देख रहा।

मुझे आश्चर्य होता है कि वह अपनी लड़कों की-सी बाँह मेरे कन्धों के गिर्द डालकर मुझे क्षण-भर के लिए अपने साथ सटा लेता है—उसी तरह जैसे उसने उस सुबह मिचिको को तालाब के किनारे अपने साथ सटाया था।

"यह तुम्हारे साथ भी हो सकता था युका !" वह गम्भीरता से कहता है।

प्रसन्नता की एक लहर, जिसका कि मैं वर्णन करने की कोशिश नहीं

करूँगी, मेरे भीतर कहीं से उठ आती है। शक्ति सँजोकर फिर मेरे पूरे शरीर में दौड़ जाती है। जिस ढंग से उसने यह कहा और जिस तरह उसने मुझे पहली बार सिर्फ युका कहकर बुलाया, उससे मुझे महसूस होता है कि मैं सैम-सान की कुछ लगती हूँ। मैं हिलती नहीं हूँ, क्योंकि मैं उसे अपनी सुरक्षित बाँह हटाने नहीं देना चाहती। मैं चाहती हूँ कि वह मेरी उष्णता महसूस करे, जैसे कि मैं उसकी महसूस कर रही हूँ, और बिना उसकी तरफ देखे बात करती हूँ।

"एक बात सच है कि आज की रात मुझे कुछ नहीं हो सकता।"

"क्यों ?"

"क्योंकि तुम यहाँ हो। इससे मैं महसूस करती हूँ कि मैं सुरक्षित हूँ।"

सैम-सान की बाँह मेरे कन्धे के गिर्द कस जाती है, लेकिन तभी वह उसे गिरा देता है, जैसे कि उसे खयाल हो आया हो कि उसे वहाँ नहीं होना चाहिए था। फिर थोड़ा लजाकर हँसता है।

"तुम जानती हो—यह पहली बार है जब मुझसे किसी ने ऐसा कहा है! मुझे अच्छा लगा। मेरे खयाल में यही बात हर आदमी चाहता है कि वह किसी को सुरक्षित महसूस करा सके। शायद यह बड़े होने का एक हिस्सा है। हाँ युका, यह एक अजीब-सी बात है। एक तरह से मैं यहाँ हिरोशिमा में आकर बड़ा हुआ हूँ। एक तरह से नहीं, बल्कि कई तरह से।"

थोड़ी देर में जुगनू पागल हो उठते हैं, जैसा कि जुगनुओं की पार्टी में हमेशा होता है। वे हर जगह हैं— पेड़ों पर, छतों पर। कुएँ के पास की आइरिस के फूल जली मोमबत्तियों की तरह लग रहे हैं, क्योंकि जुगनू उनके कोनों पर टिके हैं। घास एक चमकदार गालीचा बन गयी है, जिसके ऊपर माएदा-सान की काली बिल्ली 'प्रिन्स गेंजी' ठाठ से चल रही है। उसकी मूंछों पर भी रुपहले जुगनू चमक रहे हैं।

"बड़ी बहन !"

मैं अँधेरे में एक बार आवाज सुनती हूँ, और ओहात्सू की आकृति सामने आ जाती है।

"क्या है छोटी बहन ?" ओहात्सू खेल से गरम और हाँफती हुई मेरे पास आ जाती है।

"तुम्हें यकीन है न कि तुम्हें हमारे इतना प्यारा समय बिताने से बुरा नहीं लग रहा ? मेरा मतलब है कि फ्यूमियो अस्पताल में इतना बीमार पड़ा है, इसलिए।" ओहात्सू फुसफुसाती है, "बड़ी बहन, यह मेरी जिन्दगी की सबसे प्यारी शाम है। सब-कुछ कितना सुन्दर है—ये जुगनू, ये सितारे—छोटे-छोटे केक जो तुमने बनाये हैं। मैं यह अपनी दावत कभी नहीं भूलूंगी।

पर तुम्हें यकीन है न कि तुम्हें बुरा नहीं लग रहा ?"

"बिलकुल नहीं, छोटी बहन !" मैं जवाब देती हूँ, "मैंने तुम्हें बताया नहीं था कि फ्यूमियो पहले से अच्छा हो रहा है ? उसका बुखार उतर गया है और उसके खून में सफेद अंश बढ़ रहा है। अब अपने हिरू के पास भाग जाओ।"

"तुम समझती हो कि फ्यूमियो अब जल्दी ठीक हो जायेगा ? नहीं ?"

"हाँ मैं समझती हूँ जरूर ठीक हो जायेगा।" मैं जवाब देती हूँ। मेरी बहन के चेहरे से तनाव दूर हो जाता है।

"ओह बड़ी बहन, मुझसे बर्दाश्त नहीं होता ! आह, मैं तुम्हें कितना प्यार करती हूँ ! मैं हिरू को कितना प्यार करती हूँ ! मुझसे तुम दोनों के लिए यह प्यार बर्दाश्त नहीं होता। मैं नहीं जानती कि मैं तुम दोनों में से किसे ज्यादा प्यार करती हूँ।"

"हिरू को स्वाभाविक रूप से," मैं मुस्कराकर कहती हूँ, "अब जल्दी से उसके पास वापस भाग जाओ, यह मेरा हुक्म है।"

वह जल्दी से अपने लम्बे चिपकते किमोनो में उड़ने लगती है, लेकिन सहसा रुककर झटके से पीछे की तरफ मुड़ आती है।

"तुम वचन देती हो कि फ्यूमियो ठीक हो जायेगा ?" ओहात्सू याचना करती है। मैं उतर में कहती हूँ, "मैं वचन देती हूँ," तो उसकी आँखें चमक उठती हैं। वह जल्दी से पार्टी में लौट जाती है।

ओह प्रिय झूठ, तुम्हारी सहायता के बिना मैं कैसे संभाल सकती थी ? मैं जानती हूँ कि हैरो-सान तुम्हारे हक में नहीं है, लेकिन मेरे खयाल में वह गलत सोचता है। प्रिय झूठ, तुम मूल्यवान हो—उसके लिए जो प्रेम करता हो।

## तेरह

तो तुम पिता बन गये, गिलहर ! कितने खुशकिस्मत हो ! तुम्हारे पास छोटे, स्वस्थ और सुन्दर बेटे-बेटियाँ हैं जो पेड़ के सूराख से बाहर झाँक रहे हैं। हर एक तुम्हारी ही छोटी-सी मूर्ति-जैसा लगता है। ओहात्सू ने और मैंने तुम्हें अखरोटों की एक थैली ला दी है। अब तुम्हें चोगे के बारे में

परेशान नहीं होना है। तुम सारा दिन फ्यूमियो की खिड़की के चौखटे पर बैठकर उसे और उसके साथी मरीजों को याद दिला सकते हो कि इस धरती पर सुख अभी भी मिल सकता है। यह अजीब बात है कि मनुष्य भी गिलहर की तरह उन्हीं चीजों के लिए तरसता है--प्रेम, स्वास्थ्य, बच्चों और शान्ति के लिए। लेकिन इन चीजों को पाना आजकल गिलहरियों के लिए मनुष्य से ज्यादा आसान है।

"हमारा गिलहर मोटा नहीं हो गया?"

मादोका, जिस लड़के के पपोटे नहीं है, खिड़की के पास अपने बिस्तर से मुझे पूछता है।

मादोका-सान की आवाज उत्साहपूर्ण लगती है। वह खुद कागज के पन्ने की तरह पतला है—दरअसल उस कमरे के छः मरीजों का उतना वजन नहीं होगा जितना तीन स्वस्थ पुरुषों का, हालाँकि उनके जिस्म वहाँ-वहाँ से सूज रहे हैं जहाँ उनकी ग्रन्थियाँ बेकार हो गयी हैं। ओह, मैं मुश्किल से फ्यूमियो को देख पा रही हूँ! एक सप्ताह के छोटे-से समय में ही उसकी बाँह सिकुड़ी-सी लगने लगी है, जबकि उसका चेहरा दुगुना सूज गया है। अपने फूले, फटे होंठों और थकी आँखों के साथ मेरे पति का चेहरा एक नकाब की तरह लगता है, जो शारीरिक पीड़ा को व्यक्त करता है। मैं दर्द हूँ, यह आवाज इसके मुँह से निकलती लगती है।

"आपको कल रात नींद आयी, जीजाजी?" ओहात्सू पूछती है। वह, सैम-सान और मैं फ्यूमियो के बिस्तर के पास खड़े हैं। वह हम सबको अपने करीब पाकर खुश लग रहा है। मेरे पति की आँखों में एक अजीब-सा भाव उमड़ आता है, जब वह ओहात्सू की तरफ सिर हिलाता है, मानो वह हम सब लोगों से ज्यादा देखता हो, ज्यादा जानता हो। फ्यूमियो क्या जानता है? अगर वह हमें बता सकता तो भी हम उसे समझ न पाते। आण्ट मात्सुई कहती है कि दर्द को समझने से पहले इन्सान को स्वयं दर्द तक पहुँचना चाहिए।

सैम-सान अपनी नजर मेरे पति पर से नहीं हटा पा रहा। इस सप्ताह हर बार अस्पताल आने पर और फ्यूमियो की हालत बदतर होते पाकर वह अपनी आँखें सिकोड़े उसे देखता खड़ा रहा है। हो सकता है मेरे पति का अपने भाग्य को इतने धैर्य से स्वीकार कर लेना सैम-सान को दुविधा में डाले हो। अपने ही विनीत ढंग से मेरे पति ने ऊँचाइयों को छू लिया है। वह उस पहाड़ी की चोटी पर पहुँच गया है जहाँ छोटे और मामूली लोगों के लिए स्थान नहीं है।

"युका, क्या मैं फ्यूमियो से दो शब्द कह सकता हूँ?" सैम-सान मेरे

कान में फुसफुसाता है, "तुम्हें एतराज तो नहीं ?"

सैम-सान बिस्तर के करीब एक कदम बढ़ आता है। उसका चेहरा गम्भीर है। वह अपने अव्यवस्थित बालों में हाथ फिराता है।

"देखो, मुझे बात कहनी नहीं आती," वह शुरू करता है. "मैं बात करने में ज्यादा अच्छा नहीं हूँ। लेकिन मैं तुम्हें धन्यवाद देना चाहता हूँ, फ्यूमियो—मेरा मतलब है यह सब भोगने के लिए। तुम्हें मालूम है कि तुम्हारे जरिये मैंने हिरोशिमा का अर्थ जाना है— यह वह चीज है जिसे ज्यादा लोग नहीं जानते। मैं कुछ-एक लोगों को बताऊँगा। यही कुछ मैं इस समय कर सकता हूँ कि लोगों को बताऊँ।"

धीरे-धीरे, बड़े ध्यान के साथ, मैं अनुवाद करती हूँ। जब मैं समाप्त करती हूँ, तो फ्यूमियो आँखें ऊपर उठाकर सैम-सान की आँखों से मिलाता है। एक क्षण के लिए दोनों युवक एक-दूसरे की तरफ देखते हैं। ओह, मेरे दीन पति, तुम्हारी नजर में अचानक कितनी शक्ति आ गयी है ! फिर फ्यूमियो हँसता है—हाँ, हँसता है। सैम-सान के चेहरे पर लहू दौड़ जाता है। फिर भी वे एक-दूसरे को देखते रहते हैं। एक क्षण के लिए मुझे लगता है कि सारा ब्रह्माण्ड रुक गया है—चुपचाप खड़ा अपनी टोपी उतारे इन दो युवकों के आगे नतमस्तक हो रहा है। वह अमर क्षण गुजर गया, लेकिन समय के चेहरे पर अपना निशान छोड़कर।

"मेरे खयाल में फ्यूमियो सो गया है, बड़ी बहन !" ओहात्सू फुसफुसाती है।

"हाँ, छोटी बहन !"

हम पंजों के बल बिस्तर से परे हट जाते हैं। हम फ्यूमियो के एक-एक साथी मरीज की तरफ झुकते-झुकते ही पीछे गलियारे में निकल आते हैं। हम डॉ. दोमोतो से लगभग टकरा जाते हैं। हर समय प्रसन्न रहनेवाला वह डॉक्टर जल्दी से गलियारा पार कर रहा है—लम्बे-लम्बे डग भरते एक पच्छिमी व्यक्ति के साथ, जिसके बाल घने हैं और दाढ़ी काली है।

"ओह ! किस दुविधा में मैं फँस गया हूँ !" सैम-सान को देखते ही डॉ. दोमोतो चिल्लाकर कहता है, "अच्छा बताओ, तुम्हारी फ्रेंच कैसी है ?"

सैम-सान सिर हिलाता है। वह गम्भीर है। यह सच है कि उसका लम्बा दुबला शरीर बाहर गलियारे में है, लेकिन उसके खयाल अभी तक फ्यूमियो के कमरे में ही हैं।

"आह, बुरी बात है ! लेकिन छोड़ो, आओ चाय पियें। दफ्तर में चलो।" डॉ. दोमोतो कहता है।

वह दरवाजा खोलता है, और हम सब अन्दर दाखिल होते हैं—वह झाड़दार दाढ़ीवाला फ्रांसीसी, सैम-सान, ओहात्सू और मैं।

"यह डॉ. बोनार्ड है—दुनिया-भर में उत्पत्ति-विज्ञान और विक्रियाओं के विशेषज्ञ।" डॉ. दोमोतो सैम-सान को बताता है। "पच्चीस साल पहले मैंने पेरिस में फ्रेंच सीखी थी, लेकिन अब तक मैं वह लगभग भूल चुका हूँ। डॉ. बोनार्ड हमारे प्रसिद्ध जापानी विशेषज्ञों से विचार-विमर्श करने जापान आये हैं—प्रोफेसर तोमोकि से, डॉ. फ्यूजिमोतो से और डॉ. किकुशिगे, जो थोड़े कम प्रसिद्ध हैं। थोड़ी-सी स्वादिष्ट हरी चाय लोगे? हाँ? आह, अच्छा!"

झुकी टाँगोंवाली एक कस्बाती नौकरानी चाय पिला रही है और अपने हाथ के पीछे उस फ्रांसीसी की लम्बी दाढ़ी पर हँस रही है। लेकिन फ्रांसीसी की न तो चाय में और न ही शिष्टाचार में दिलचस्पी है। वह मेज पर पड़े नक्शों और तस्वीरों को गौर से देख रहा है। मैं अपने प्याले के ऊपर से देखती हूँ कि उसमें एक तस्वीर मछली की है। लेकिन कितनी भयंकर मछली है!

"यह प्रोफेसर तोमोकि द्वारा किया गया एक बहुत ही रोचक प्रयोग है।" डॉ. दोमोतो बताता है (जो चालाकी से भाँप लेता है कि मैं चुपके से देख रही हूँ) तस्वीर में यह घृणित मछली जिसके दो सिर और चार आँखें हैं..."

वह मुझे देखता है और उसे शब्द नहीं सूझता। फिर वह जापानी में बोलता है। मैं सैम-सान को समझाती हूँ कि इस मछली को प्रयोगशाला में निकिल की किरणें दिखाकर 'रेडियेट' किया गया था। बहुत जल्द ही यह अपरूपता के लक्षण दिखाने लगी।

"हाँ-हाँ," डॉ. दामोतो उत्सुकता से मुझे बीच में टोक देता है। "सही है। जितनी ज्यादा निकिल की किरणें, उतनी ज्यादा अपरूपता। एक सप्ताह के बाद उसके दो सिर उग आते हैं और चार आँखें हो जाती हैं। यही बात पैदाइश से पहले इन्सान के बच्चों के साथ हो सकती है, अगर माँ को 'रेडिएट' किया जाये—बच्चों के बच्चे विकृत होने की अधिक सम्भावना होगी। विकृतियाँ कई बार एक नस्ल छोड़ जाती हैं। जो आदमी 'रेडिएट' हुआ हो, वह नहीं कह सकता कि उसके नाती-पोते इस मछली की तरह भयानक नहीं लगेंगे।"

प्रोफेसर तोमोकि की मछली को देखते हुए हम मेज को घेर लेते हैं। फ्रांसीसी के हाथ में एक आतिशी शीशा है, जिसमें से वह काफी देर तक देखता रहता है। फिर वह शीशा ओहात्सू को देता हुआ मुस्कराता है।

(काली दाढ़ीवाला वैज्ञानिक भी उसकी सुन्दरता पर मुग्ध हो गया है) लेकिन छोटी बहन सिर हिला देती है और एक कदम पीछे हट जाती है। वह कितनी पीली पड़ गयी है ! उसकी डरी आँखें एक बार जल्दी से मछली को देख लेती हैं, फिर इधर-उधर इस तरह भटकती हैं मानो भाग जाने का रास्ता ढूँढ़ रही हों। मैं एकाएक महसूस करती हूँ कि मुझे ओहात्सू को यहाँ से बाहर ले जाना चाहिए। मैं जल्दी से डॉ. दोमोतो से नजर मिलाती हूँ। एटम बम के शिकार लोगों के ध्वस्त मस्तिष्क और सन्तुलन के अभाव को उससे ज्यादा कौन जानता है !

"मिलने आने के लिए धन्यवाद," नाकामुरा-सान स्थिति को अपने योग्य हाथों में लेता हुआ जल्दी से मुझसे कहता है, "जल्दी ही फिर मिलेंगे।"

हम बाहर सड़क पर हैं। धूप में आकर ओहात्सू डॉक्टर के अँधेरे दफ्तर से ज्यादा जर्द नजर आ रही है। उसके हाथ हृदय-विदारक ढंग से उसकी छाती को दबाये हैं।

"हमें भागना चाहिए। दस मिनट में मुझे काम पर पहुँचना है।" वह कहती है, हालाँकि उसे कभी वक्त का पता नहीं रहता।

मैं उसे बताती हूँ कि अभी तो एक भी नहीं बजा और उसे तो दो बजे जाना है। मैं चाहती हूँ कि छोटी बहन को कुछ देर अपने साथ घुमाऊँ, लेकिन वह जिद करती है कि उसे आज एक घण्टा पहले पहुँचना है। वह भाग जाती है। ओह ! मैं डर से सिहर जाती हूँ और एक क्षण के लिए उसके पीछे भागना चाहती हूँ। मैं नहीं कह सकती कि छोटी बहन, जब उसका मूड बिगड़ा हो, तो क्या न कर बैठे !

"युका, ओहात्सू की चिन्ता न करो। तुम्हारी अपनी ही चिन्ताएँ कम नहीं हैं।" सैम-सान मेरी बाँह दबाकर आश्वासन देता है, "बच्ची प्यार में पड़ी है। सब ठीक-ठाक है।"

मैं सिर हिलाती हूँ और अपने को समझाने की कोशिश करती हूँ कि वह ठीक-ठाक है। पर मेरा खयाल दूसरा है। कोई बच्चा, जिसने वह सब देखा हो जो ओहात्सू ने देखा है, कभी 'ठीक-ठाक' नहीं हो सकता। लेकिन मैं यह सब हैरो-सान से नहीं कहना चाहती।

हम नये पुल को पार करके नदी की तरफ चलते हैं। नीचे देखते हैं कि एक आदमी किनारे खड़ा जाल से मछलियाँ पकड़ रहा है। वह ठिगना आदमी जाल खींचकर फिर से फेंकता है। जाल एक दायरा बनाता गिरता है, जिससे फुहार-सी उठ आती है। किनारे के पास दो पत्थरों के बीच एक गुलदस्ता रखा है। मैं जल्दी-जल्दी चलती हूँ कि कहीं सैम-सान

उसे देख न ले।

"देखो वहाँ फिर फूल रखे हैं ! दोजख की मार ! लगता है जैसे उन्हें वहाँ किसी मतलब से रखा गया हो।"

(मामा-सान, मैं इसे अब बताने जा रही हूँ ! मैं किसी के सामने तुम्हारा प्यारा नाम लेते सकुचाती हूँ---तुम यह जानती हो। लेकिन सैम-सान अब हम लोगों में से ही एक हो गया है। उसे बताना चाहिए। उसके जरिये ही अन्य लोगों को पता चलेगा कि यहाँ क्या हुआ था। इसलिए प्यारी मामा-सान, मुझे क्षमा करना, अगर मैं इस अमरीकन लड़के को तुम्हारे अन्तिम समय के विषय में बता दूँ---पानी के अन्दर तुम्हारे गोलगोथा के बारे में। क्षमा कर मामा-सान ! दोज़ो !)

"तुम ठीक कहते हो, सैम-सान ! यह ओहात्सू का गुलदस्ता है।" मैं सैम-सान की बगल में खड़ी जंगले के पार देखती धीरे-से कहती हूँ।

सैम-सान चौंक जाता है, "ओहात्सू का ?"

"हाँ," मैं कहती हूँ। "वह हर सुबह काम पर जाते समय ताजा फूल नदी में डाल जाती है।"

और मैं सैम-सान को वह बात बताती हूँ जो कुछ दिन पहले उसे बताना असम्भव था। मैंने इन सालों में किसी को यह बात नहीं बतायी। मैं उसे बताती हूँ कि यही वह जगह है जहाँ हमारी माँ, एक जिन्दा जलती मशाल की तरह बम-विस्फोट के बाद नदी में कूदी थी। (उसने अपनी बच्ची ओहात्सू को पीठ से उतारकर नदी-किनारे डाल दिया था) मैं उसे बताती हूँ कि इस तरह की बीस हजार मानव-बातियों के अवशेष हमारी इस नदी में दफन हैं। कभी-कभार लोग इस नदी की लहरों पर फूल चढ़ाने आते हैं। यही एक कब्र है जिसे वे सजा सकते हैं।

सैम-सान का हाथ मेरी बाँह को दबाता है। वह कुछ नहीं बोलता---मैं जानती थी वह कुछ नहीं बोलेगा। वह जान गया है कि उस पहली रात को, जो उसने हमारे घर पर बितायी थी, ओहात्सू ने उसके हाथों से फूल क्यों छीन लिये थे।

"सैम-सान, मैं तुम्हें मामा-सान के अन्तिम क्षणों के बारे में बताना चाहती हूँ। बताना चाहती हूँ, क्योंकि कितनों के आगे उस समय मौत बिछी थी— वह अन्त जो स्वभावत: हम सबके लिए है।"

मैं उसे वह दृश्य दिखाने की कोशिश करती हूँ जोकि मुझे बहुत साफ-साफ याद है—हिरोशिमा का शहर आग की लपटों में घिरा है। मैं उसे बताती हूँ कि उस दिन कैसे मैं सड़कों पर भागी थी---अपनी मामा-सान और तीन साल की ओहात्सू के साथ, जोकि माँ की पीठ के साथ चिपकी

थी। हमारे कपड़े विस्फोट से चिथड़े होकर उड़ गये थे और हम लगभग नंगी थीं ! आग के गोले हवा में उड़ गये थे—उड़ती आग के फव्वारे जोकि जिसे छूते उसी को निगल जाते—पेड़ों को, घरों को और भागते लोगों को। सड़कें इतनी गरम थीं कि उनका कोलतार उबल गया था। कितने ही कुत्ते जिन्दा भुन गये थे, क्योंकि वे अपने पाँव नहीं छुड़ा सकते थे। ओह, मुझे याद है वे डर से कितना चीख रहे थे—वे कुत्ते ! और मामा भी जरूर चीखी होंगी पानी में कूदने से पहले···

"युका, अब और मत बोलो। तुममें ताकत नहीं है।"

"मुझे ताकत ढूँढनी पड़ेगी। तुम्हें मालूम होना चाहिए।" मैं कहती हूँ, "क्योंकि तुम अब इसके बीच में हो, हम सबके साथ।"

मैं सैम-सान को वह सब बताती हूँ, जोकि आण्ट मात्सुई ने मुझे बताया था। "एक पेड़ की शाखा मुझे बेहोश करती मुझ पर आ गिरी थी। इसी से मैंने अपनी मामा-सान के अन्त की कहानी अपनी आण्ट से सुनी थी। (ओह, झुलसी पेड़ की शाख, अपनी जिन्दगी को शायद मैं तुम्हारी ही देन समझूँ !)

"आण्ट मात्सुई कहती हैं कि वे कभी उन चीखों को नहीं भूल सकतीं—उस जलते मांस की तेज बदबू को नहीं भूल सकतीं। वही थीं जिन्होंने ओहात्सू को उठाया था जबकि मानमा हताशा चीख के साथ पानी में कूद गयी थीं। वहाँ और लोगों के बीच से उन्होंने अन्तिम बार अपना चेहरा ओहात्सू की तरफ फेरा था। डूबने से पहले उन्होंने ओहात्सू का नाम लिया था—ठीक उसी जगह जहाँ तुम यह फूल देख रहे हो। उसके फूल···"

मैं आगे नहीं कह पा रही। "और मामा-सान, तुम्हारा स्याह चेहरा उस भूरे पानी में से ऊपर अपनी बेटी की तरफ देख रहा है। तुम्हारे सिर के गिर्द एक दैवी मुकुट है—तुम्हारे जलते बालों का। मैं सौगन्ध खाती हूँ मामा-सान—तुम्हारे स्याह चेहरे की सौगन्ध खाती हूँ, तुम्हारे जलते बालों की—कि अपना शेष जीवन इस बात में दे दूँगी कि फिर कभी ऐसा न होने पाये। आह, मामा-सान ! तुम मेरी तरफ देखकर मुस्करा रही हो ? क्या यही तुम अपनी लड़की से आशा करती थीं—कि वह वचन दे कि वह इस काम में जुट जाये ? तो लो वह तुम्हें मिल गया है। मैंने सौगन्ध खा ली है। अब तुम्हारा दुखी चेहरा लहरों में खो गया और उसकी जगह ओहात्सू के फूल तैर रहे हैं। क्या तुम्हें शान्ति मिल गयी है मामा-सान ? क्या तुम शान्ति से हो, डार्लिंग ?"

# चौदह

'को' ! कोई कैसे किसी को समझाये—खास तौर से एक अमरीकन को ? वह 'को' को समझने में, या उसके लिए अपनी जिन्दगी को उलझन में डालने से उतना ही दूर है जितने कि हम अपने माता-पिता से मजाक करने या अपने पिता को 'पाप' बुलाने से। किओसोको में हिरू के परिवार से मिलने हम लोकल ट्रेन में हिचकोले खाते जा रहे हैं। मुझे यह याद करके हँसी आ रही है कि सुबह मुझे सैम-सान को 'को' समझाने में कितनी दिक्कत उठानी पड़ी थी।

"स्टेट्स में इस तरह की कोई चीज नहीं है," सैम-सान हठ करता रहा था, मानो 'को' जापान की ही विशेषता हा—कुछ-कुछ सुकियाकि की तरह। "मैं अपने पिता को प्यार करता था। सचमुच प्यार करता था, लेकिन पितृ-भक्ति···" वह हँसा, "नहीं, मैं बिलकुल 'को' को नहीं समझ पा रहा, युका !"

मैंने उसे दिखाकर समझाना शुरू किया। एक गद्दी लेकर मैंने उसे अपनी पीठ पर टिका लिया और बार-बार झुकती आगे को चलने लगी। बच्चा भी आगे को झुकता रहा।

"मैं एक जापानी औरत अपने पति का स्वागत कर रही हूँ। जब भी वह झुकती है, बच्चा सान भी उसके साथ झुकता है। इस तरह घर में सबसे बड़े का आदर करना उसके निर्माण का हिस्सा बन जाना है। यह है 'को' की शुरुआत।"

"मैं कहता हूँ, युका, तुम तो खासी अभिनेत्री हो।" सैम-सान चिल्लाया था।

उत्साहित होकर मैं उसकी तरफ दौड़ी, उसके सामने कितनी ही बार इतना नीचे तक झुकी कि मेरा सिर हर बार जमीन से टकरा गया।

"हे भगवान् ! तुम क्या कर रही हो, युका ?"

"यह नया साल है और मैं अपने सम्मानित पिता को उस सबके लिए धन्यवाद दे रही हूँ जो उसने पिछले साल मेरे लिए किया। मैं उसे अपनी भक्ति और उसकी इच्छाओं के सम्मान का वचन दे रही हूँ। यही 'को' है।"

खैर, यह स्पष्ट है कि वह कभी नहीं समझेगा। अब इस दनदनाती गाड़ी में बैठकर हिरू को देखती महसूस कर रही हूँ कि 'को' सिर्फ हम जापानियों के लिए ही है। हिरू ने इस पर कभी सवाल नहीं उठाया—न

गी मैंने या मेरी छोटी बहन ने। यह एक धार्मिक अवसर है, क्योंकि उसकी होनेवाली मंगेतर उसके माता-पिता के सामने पेश होगी—इसलिए हिरू ने अपना विशेष किमोनो पहन रखा है। उसकी चौड़ी बाँह पर सामुराइ परिवार का चिह्न कढ़ा है। इस पहनावे में हिरू बिलकुल भिन्न लग रहा है—अखबार के उत्साही फोटोग्राफर-जैसा बिलकुल नहीं। वह हमारे पुराने ग्रन्थों के एक चित्र-जैसा लग रहा है। वह अपना सुन्दर शरीर तलवार की तरह सीधा किये है। न वह हिलता है और न बात करता है। नैम-सान का साथ न आना शायद अच्छा ही रहा।

उसकी बगल में बैठी छोटी बहन बाहर के दृश्य को देखती हुई अपने-ने मुस्करा रही है। हमारी कभी-कभार की सैर से वह इतनी खुश है कि होनेवाली मुलाकात की परेशानी को बिल्कुल भूली हुई है, हालाँकि यह मुलाकात ही उसके भविष्य के लिए सब-कुछ है।

"देखो, एक गाय।" वह चिल्लाती है। उसकी प्यारी नाक खिड़की मे सटकर एक बटन की तरह लग रही है। "देखो वह नोकदार पहाड़ी! देखो वह नीला मन्दिर!"

हमारे डब्बे का हर व्यक्ति ओहात्सू पर मुग्ध है, और यह देखकर हिरू का तनाव थोड़ा कम हो गया है। शायद उसके माता-पिता पर भी उसकी मंगेतर का यही प्रभाव पड़े। कोई भी ओहात्सू से अप्रभावित कैसे रह सकता है?

"मिउचु!" जैसे ही हमारी गाड़ी एक छोटे-से स्टेशन पर रुकती है, वह हँसती और ताली पीटती हुई कहती है।

"मिउचु में ऐसी क्या विशेषता है?"

"कुछ नहीं। सिर्फ मैं बहुत खुश हूँ, बड़ी बहन! मैं हँसना चाहती थी—सिर्फ इतनी ही बात है।"

अगले स्टेशन पर जहाँ गाड़ी कई मिनट रुकती है, हिरू मुझसे पूछता है कि क्या मैं लेमनेड पिऊँगी? मैं सिर हिला देती हूँ। यह स्पष्ट है कि वह और ओहात्सू अकेले होना चाहते हैं। मैं एक ऐसा स्टाल देखती हूँ जहाँ उपहार की चीजें बिक रही हैं—लकड़ी पर नक्काशी किये फूलदान, रंगे कागजी पंखे, सौभाग्य लानेवाले तावीज। मैं उन्हें छोड़कर उधर चली जाती हूँ। यहाँ सुनहले धागे से दिल की शक्ल का एक छोटा-सा नकली हीरा लटक रहा है। यह मेरी नाजुक ओहात्सू के लिए ही बना लगता है। हालाँकि इसकी कीमत कुछ येन ही है, फिर भी यह मेरी औकात से बाहर की चीज है। पर मैं बिना सोचे वह माला खरीद लेती हूँ और छोटी बहन की प्रफुल्ल मुसकराहट देखकर मुझे उससे ज्यादा कीमत वसूल हो जाती

है। वह अपने हाथों को अपनी छाती पर दबाये फुसफुमाती है

"मैं इसे हमेशा पहने रहूँगी, बड़ी बहन !"

"यह तुम्हारे लिए सौभाग्य लायेगी, डार्लिंग !"

अभी तक हम चावल के खेतों से गुजर रहे थे, लेकिन अब हमारी गाड़ी उन्हें छोड़ देवदारों के जंगल में से गुजरती हुई आखिर समुद्र के पास पहुँच जाती है। हम कुछ देर पानी के साथ-साथ चलते हैं और एक खाड़ी का चक्कर काटते हैं जिसके उस ओर से एक लाल चट्टान हमारी तरफ मुँह किये है। यह प्रसिद्ध ओसिमा चट्टान है।

"जरा सोचो, लोग यहाँ कूदने के लिए आते हैं।" अपनी नाक को फिर खिड़की से सटाये ओहात्सू कहती है। "कोई ऐसी मूर्खता क्यों करता है ?" वह बिलकुल वैसे ही दाँत निकालकर हँसती है जैसे गाय नीले मन्दिर को देखकर हँसी थी। आज छोटी बहन को हर चीज मनोरंजक लग रही है— आत्म-हत्या करने का स्थान भी।

"लो, पहुँच गये। किओसोको !" हिरू कहता है। गाड़ी अगले स्टेशन पर रुकती है। वह अब बहुत तनाव में है, और जैसे ही हम उसके परिवार के घर की तरफ बढ़ते हैं, मैं देखती हूँ कि उसकी कनपटी की एक छोटी-सी नस फड़क रही है। वह अभी से अपने घर के परिचित माहौल में आ गया है। कोई बूझ सकता कि और दिन यही आदमी एक पच्छिमी अखबार का फोटोग्राफर होता है ? इस क्षण लगता है कि हिरू अपने धन्धे को भूल गया है—अपनी रोज की दुनिया को भी और हमें भी। ऐसे भाव से जैसे कोई मन्दिर में दाखिल होता है, वह गेट पार करके वह तना हुआ-सा उस रास्ते पर बढ़ चलता है जो उसके बाँस के साधारण घर की तरफ जाता है। सामने देवदारों की एक कतार है और एक छोटा-सा आदमी और एक छोटी-सी औरत उन्हीं पेड़ों की तरह सीधे और तने हुए, सीढ़ियों पर खड़े हमारा इन्तजार कर रहे हैं। उनके किमोनो बिलकुल फटे-पुराने हैं और आस-पास हर चीज टूट-फूटकर ध्वस्त हो चुकी लगती है। फिर भी इस घर को और घर के मालिकों को देखने से ही कुलीनता का आभास मिलता है। मैंने उनके किमोनो की बाँह पर बने फीके राज-चिह्न न देखे होते, तो भी मैं जान जाती कि वे ओहात्सू से और मुझसे भिन्न हैं। उसके चेहरे के भाव अत्यन्त संयत और सधे हुए हैं। स्वागत करने का उनका ढंग भी बहुत आकर्षक और नम्रतापूर्ण है।

"योकु इराशाइ माशिता। दोज़ो।"

कई बार नीचे झुकने के पश्चात् हम पाँचों सीधे होते हैं, तो मैं अपने अतिथियों के चेहरे पर एक छिपी नजर डाल लेती हूँ। उफ् ! अपेक्षित

मुस्कानों की जगह उनके शालीन चेहरों पर निराशा का भाव है जो मुझे चौंका देता है। यद्यपि उनकी आँखें ओहात्सू की सुन्दरता पर मुग्ध हैं और मुझे विश्वास है कि वे उसके हृदय की कोमलता को भी जान रही हैं, फिर भी कहीं कुछ गलत है—बहुत गलत। मैं अपने दिल में एक चुभन-सी महसूस करती हूँ।

"कृपया हमारे तुच्छ जलपान में हिस्सा लीजिए। दोज़ो !"

हम फिर से झुकते हैं। फिर से नम्रतापूर्ण रूढ़ियों को दोहराते हैं। फिर हम काले देवदारों के नीचे एक दायरे में कोमल फूस की चटाई पर घुटने टेककर बैठ जाते हैं। एक प्रौढ़ बौना जगह-जगह से रफू किया किमोनो पहने कागज-जैसे पतले कटोरों में हरी चाय उँडेलता है। यह आचार-विधि काफी देर तक चलती है और सिवाय साधारण शिष्टाचार के और कोई बात नहीं की जाती। दोनों परिवारों की इस पहली मुलाकात में चाहे कोई भी विशेष बात न हो, लेकिन इससे दोनों ओर के परीक्षण में कोई बाधा नहीं पड़ती। जो कुछ मैं और मेरी छोटी बहन हैं, वह गौण है; महत्त्वपूर्ण है हमारी आवाज़ों की ध्वनि, हमारा उच्चारण, हमारी भंगिमाएँ, और हमारे हाव-भाव। इसके अलावा हमारे पहनावे को भी बहुत गौर से देखा-परखा जा रहा है। हिरू के माँ-बाप को ओहात्सू पसन्द आ गयी है। वे एकाएक उस पर मुग्ध हो उठे हैं। लेकिन जितना ही लड़की उन्हें भा रही है, उतना ही उनकी आँखें उदास होती जा रही हैं।

आखिर मैं उन्हें आपस में नजरें मिलाते देखती हूँ। कुलीन लोगों की तरह वे शालीनता के साथ घुटनों से उठते हैं और अपने बेटे को सम्बोधित करके कुछ समय के लिए अकेले अपने साथ आने को कहते हैं। वे उसके साथ अत्यधिक औपचारिकता से पेश आते हैं। उसे आश्वासन देते हैं कि वे ज्यादा समय नहीं लेंगे, और उसे शाम के काम के वक्त तक हिरोशिमा पहुँच जाने देंगे। काम सबसे पहले है, उसका पिता संजीदगी से कहता है। फिर ओहात्सू के तथा मेरे सामने झुककर कहता है कि हम कुछ क्षणों के लिए उन्हें क्षमा करें।

"हमारा नौकर आपके लिए ताजा चाय ले आयेगा। हमें क्षमा कीजियेगा। दोज़ो !"

"इसमें कहने की क्या बात है?" हम जवाब देती हैं और लगभग जमीन तक झुक जाती हैं।

पिता बहुत सीधा चलता हुआ सबसे पहले घर में घुसता है। फिर हिरू घुसता है और फिर उसकी माँ, उस फुदकती चाल से जोकि पहले स्त्रियों का गुण मानी जाती थी, अपने बेटे से तीन कदम पीछे। (अवज्ञाकारी सैम-

सान इसे कबूतरी चाल कहता।) सब-कुछ शिष्टाचार के अनुकूल है। कोई भी अखरनेवाली बात नहीं, जब तक कि···

हिरू सिर घुमाता है। उफ्! उसकी आँखों का भाव बिलकुल एक कैदी-जैसा है जोकि अभी अपनी सजा सुननेवाला हो। क्या यह सच में वही हिरू है जिसे हम ऊनी पैंट और चमड़े की जैकेट में रिपोर्टर का कैमरा लिये, और जेबों में फोटोग्राफिक फिल्में ठूंसे, इधर-उधर भागते देखती हैं? या क्या दो हिरू हैं? क्या हम सबमें दो-दो इन्सान हैं?

ओहात्सू उछलकर अपने पैरों पर खड़ी हो जाती है। "हिरू···" वह फुसफुसाती है। हालाँकि उसने मुश्किल से सुन पाया होगा, फिर भी मैं देखती हूँ कि हिरू का तना हुआ जिस्म काँप जाता है। लेकिन तभी 'को' उस पर छा जाता है। अपनी नजर हटाकर वह अपने पिता के पीछे उस जर्जर घर में चला जाता है। उसकी माँ सिर झुकाये अपने दोनों मालिकों के पीछे-पीछे फुदकती चली जाती है। उसकी नाजुक झुकी गरदन जिन्दगी-भर की आज्ञाकारिता और दुःख का आभास देती है।

"बड़ी बहन···"

ओहात्सू की व्यथा-भरी आवाज मुझ तक पहुँचती है, लेकिन मैं अपना सिर हिला देती हूँ। इससे पहले कभी ओहात्सू के सहायता चाहने पर मेरी उसे मना करने की हिम्मत नहीं हुई। लेकिन ऐसे मौके पर व्यक्तिगत भावनाओं का कोई मूल्य नहीं होना चाहिए। जो हो, हमें शिष्टाचार के अनुसार रूढ़िगत व्यवहार करना चाहिए। ओहात्सू झट से समझ जाती है। घुटनों पर होकर वह फिर से मेरे करीब उसी तरह चुपचाप बैठ जाती है जैसे एक छोटी बहन को बैठना चाहिए।

उस ठिगने बूढ़े की मेहरबानी! उसे भी, हरएक की तरह, ओहात्सू बहुत प्यारी लगी है। वह उसके साथ लाड़-प्यार करने लगता है।

"कुछ चाय?" वह तुतलाता है, "एक केक? दो छोटे केक?"

बौना चमकते चेहरे से छोटी बहन की तरफ देखता है और ओहात्सू झुककर एक केक ले लेती है। धीमी आवाज में हम उस प्रौढ़ नौकर के साथ मौसम के बारे में बात करती हैं। वह बताता है कि सत्तर साल में यह सबसे गरम बसन्त है। (मेरी सुन्दर ओहात्सू एकदम हामी भर देती है, यद्यपि उसने कुल सत्रह बसन्त ही देखे हैं।) अपने नंगे पैरों पर हल्के से दौड़कर वह बूढ़ा चेरी के पेड़ से एक कोंपल लाकर ओहात्सू के सामने घास की चटाई पर रख देता है। वह फूलों को उसके हाथ में न ठूंसकर उसके सामने रखता है, मानो ओहात्सू इतनी नाजुक हो कि फूल भी न उठा सकती हो — वह, जिसे विनाश की शक्ति स्वयं छूकर जा चुकी है।

"आह, वे लोग वापस आ रहे हैं, छोटी बहन !" मैं फुसफुसाती हूँ।

जैसे ही हिरू और उसके माँ-बाप संजीदा भाव से घर से बाहर निकलते हैं, हम अपने घुटनों पर झुक जाती हैं। उस समय मुझे लगता है कि हम किसी नाटक में हिस्सा ले रही हैं। जैसे हमारे प्राचीन नाटकों में हर संयत संकेत, मुँह में बुदबुदाता हर शब्द, एक निर्दिष्ट अन्त की ओर ले जाता है, वैसे ही ओहात्सू और मैं यहाँ घुटने टेके बैठी शेष कलाकारों के पहुँचने की प्रतीक्षा कर रही हैं। अ-नाटक अक्सर प्रेम और कर्त्तव्य के संघर्ष को चित्रित करते हैं। हमारा नाटक भी ऐसा ही है, लेकिन इसकी तह में एक ऐसी भयानक कथावस्तु है जिसका आविष्कार किसी पुराने कवि ने नहीं किया था। कभी उन्होंने ऐसे पात्र की सृष्टि नहीं की थी जो अस्वाभाविक सन्तान पैदा करने के लिए शापित हो और इसी कारण जिसका अपने प्रेमी से मिलन निषिद्ध हो।

वह भयंकर मछली ! जैसे ही ओहात्सू की नजर हिरू के चेहरे पर पड़ती है, मैं उस मछली को उसकी आँखों में प्रतिबिम्बित देखती हूँ। उसकी काली पुतली में वह 'रेडिएट' हुई मछली तैर रही है जिसके दो मोटे सिर हैं और चार दुःख-भरी आँखें—वह, जिसकी तस्वीर हमने डॉ. दोमोतो के दफ्तर में देखी थी। मैं देखती हूँ कि मेरी बहन के शरीर में कँपकँपी भर जाती है। क्या उसे अचानक अपने शरीर से नफरत होने लगी है ? उसकी बाहरी खाल बेदाग है, यह सच है, पर उस लहू का क्या होगा जो छोटी बहन की नाजुक नसों में दौड़ रहा है ? क्या उस निरंकुश बम ने हमेशा के लिए उसके लहू और अस्थियों को दूषित कर दिया है—ओहात्सू नाम की इस खूबसूरत लड़की की कोख को भी ?

"ओह, अभी से साँझ हो गयी है," हिरू का पिता कहता है और मुझे लगता है कि उसकी आवाज भी एक अ-नाटक के अभिनेता की तरह है।

"बहुत सुन्दर साँझ है," मैं उत्तर में कहती हूँ।

क्या आदमी निराशा के क्षणों में भी सन्तुष्ट महसूस कर सकता है ? 'सुन्दर साँझ' दृढ़तापूर्वक यह कहने पर अपने इन शब्दों की ध्वनि मुझे प्रसन्नता देती है। जैसे ही ओहात्सू और मैं अपने पैरों पर खड़ी होती हैं, मुझे लगता है कि उसे भी उस शक्ति से सहारा मिल रहा है जो मेरे अन्दर से फूट रही है। मैं उसे छूती नहीं, फिर भी महसूस करती हूँ कि हिरू और उसके माँ-बाप से अलग होकर पीठ सीधी और सिर ऊँचा किये चलने में उसे मुझसे सहायता मिल रही है। हाँ, मैं महसूस करती हूँ कि मेरे पास हम दोनों को सहारा देने के लिए काफी शक्ति है।

मैं उन्हें धन्यवाद देकर लौटने के लिए निर्धारित सीढ़ियों का पालन

करती हूँ और अपने मेजबानों को बताती हूँ कि उनके घर में स्वागत पाना हमारा कितना बड़ा सौभाग्य है।

''कितना सुन्दर बागीचा है ! यह दृश्य भूला नहीं जा सकता। बहुत-बहुत धन्यवाद !''

आह, विजय ! मेरी विजय ! वह हल्की-सी मुस्कान जिसके साथ हिरू का पिता मुझे देखता है, उसके अनुमोदन का संकेत है। मैं देख सकती हूँ कि हिरू भी मेरे और ओहात्सू के व्यवहार से सन्तुष्ट है, हालाँकि उसकी आँखों में त्रास का भाव है। मेरा हृदय गर्व से फूल जाता है। मैंने अकेले समय के अनुकूल आचार को निभाया है और इस तरह पाँचों व्यक्तियों की पीड़ा को दूसरे धरातल पर ला दिया है। मैं एक और मुस्कान चेहरे पर ले आती हूँ और मुझे लगता है कि मैं हिरोशिमा की एक सच्ची बेटी बन गयी हूँ।

''हमें गाड़ी पकड़ने के लिए जल्दी करनी होगी।''

''सोदेस्का। आपकी वापसी की यात्रा सुखद हो। अब धूप ढल चुकी है, इसलिए काफी सुहावना लगेगा। समुद्र-तट का रास्ता बहुत ही प्यारा है।''

''हाँ, बहुत ही प्यारा है।''

हिरू के पिता के चेहरे के भाव से मुझे लगता है कि उसने हमें अपने परिवार का सदस्य मान लिया है, हालाँकि हम कभी भी उस परिवार की नहीं हो सकेंगी। उसने हमें सामुराइ स्वीकार कर लिया है-- हालाँकि हम बहुत साधारण लोग हैं। वह छोटी बहन को उसी तरह देखता है जैसे कि अपनी बहू को देखता।

हम अन्तिम विदाई लेती हैं—अपना रास्ते चलते बार-बार झुककर मुस्कराती हुई। जैसे ही हिरू नरम बेंत के गेट को खोलता है, गेट बिलकुल वैसी ही आवाज करता है जैसी कि अ-नाटक के अन्त में परदा गिरने पर होती है।

## पन्द्रह

"मैं तुम्हारे लिए एक स्ट्राबेरी लायी हूँ, बी-बुलबुल ! बहार की सबसे पहली स्ट्राबेरी।"

प्लास्टिक का थैला बगल में दबाये मैं फ्युसुमा सरकाकर जल्दी से घर के अन्दर घुस आती हूँ। जल्दबाजी अच्छी आदत है—अपने खयालों को जल्दी दौड़ाने से कहीं बेहतर है अपनी टाँगों को दौड़ाना। लेकिन एक बार आदमी अन्दर आ जाये, तो दौड़कर कहाँ जा सकता है ? मैं अपना थैला नीचे रखती हूँ और उन आवाजों को सुनने के लिए रुक जाती हूँ, जिन्हें जानती हूँ कि मैं सुन नहीं सकती। क्या यह चार दिन पहले की ही बात है कि यह छोटा-सा घर लोगों से भरा था और आवाजों से गूँजता था ? जब से मिचिको और तादेओ आण्ट मात्सुई के पास रहने चले गये हैं, मेरा घर एक दरगाह-सा बन गया है।

मैं बी-बुलबुल की स्ट्राबेरी उसके पिंजरे के पास ले जाती हूँ। यह स्पष्ट है कि वह भी वैसे ही विषाद में है जैसे कि मैं हूँ। वह अपने बाँस के पिंजरे में एक बुढ़िया की तरह बैठी है, परों के दोशाले में लिपटी, पीठ दोहरी किये और सिर लटकाये। उसकी चोंच खुली है और आँखें अभी बन्द हैं।

"तुम्हें शरम आनी चाहिए बी-बुलबुल," मैं उसे डाँटती हूँ। "खाना खाने और पिंजरे पर मेरे चादर डालने से पहले ही तुम सुस्ताने लगीं ?"

लेकिन मैं अब और बर्दाश्त नहीं कर सकती। मैं इसके पिंजरे के आगे घुटनों के बल बैठ जाती हूँ और बहुत कोशिश के साथ अपनी पीठ सीधी और सिर ऊँचा रखती हूँ। मैं इतनी थकी हूँ कि उठकर अपने लिए एक चाय का प्याला भी नहीं बना सकती। फिर भी मैं अपनी आँखों को निश्चित कोने में रखी सुपरिचित चायदानी की ओर जाने से नहीं रोक सकती। ओहात्सू भी उस दोपहर यही सोच रही होगी, जब चायदानी के भारी तले के नीचे परची रखकर वह चली गयी थी।

"मैं तोक्यो जा रही हूँ," उसने लिखा था। "मुझे ढूंढ़ने की कोशिश न करना, बड़ी बहन ! हिरू मुझसे शादी करने के लिए जिद कर रहा है, अपने सम्मानित माँ-बाप की इच्छा के विरुद्ध। इसीलिए मुझे ऐसा करना पड़ रहा है। मैं शादी नहीं कर सकती। हर युवक को स्वस्थ बच्चे पैदा करने का अधिकार है। मेरे बच्चे, हो सकता है, उस मछली की तरह हों। बड़ी बहन, मैं तुमसे प्यार करती हूँ, लेकिन मुझे जाना ही है। कृपया मुझे

क्षमा करना। आदर के साथ, छोटी बहन !"

विचित्र बात है ! ओहात्सू की लिखावट की अशुद्धियों के कारण मेरी आँखों से आँसू टपकने लगते हैं। स्वसत्य ! बेचारी छोटी बहन अपनी विचारलिपि कभी ठीक नहीं कर सकी, और उसकी हस्तलिपि तो दोषपूर्ण थी ही। चावल के कागज को देखते हुए, जिसके कोने में चेरी का पेड़ बना है, मुझे लगता है कि उसके आड़े-तिरछे अक्षर उन कलियों की तरह हैं जिन्हें हवा ने बिखरा दिया हो।

साथ ही मुझे यह भी लगता है कि ओहात्सू के उन अशुद्ध लिखे शब्दों में एक चेतावनी है जिससे कि लोगों को सतर्क होना चाहिए। ओहात्सू अकेली एक कमजोर लड़की थी, लेकिन लाख—या दस लाख—ओहात्सू कमजोर नहीं होंगी ! अगर युवा लड़कियाँ बच्चे पैदा करने से इन्कार कर दें तो वे बम लानेवाले विमान-चालकों से अधिक शक्तिशाली होंगी। विमान-चालकों के पास देने को केवल मौत है, जबकि वे कमजोर ओहात्सू अपने जिस्म में जिन्दगी के बीज लिये हैं।

"युका, युका ! क्या बात है ?"

मैं अपने पैरों पर जल्दी से खड़ी हो जाती हूँ। मेरे बालों की सुइयाँ गिर जाती हैं और मेरे लम्बे बाल मेरे कन्धों पर बिखर जाते हैं। अब लगभग अँधेरा हो चुका है, और मैं खुश हूँ कि सैम-सान मेरा चेहरा नहीं देख सकता। लेकिन मैं उसके हाथ को अपने बालों और गालों को छूते महसूस करती हूँ।

"तुम रो रही थीं युका ?" मैं अपना सिर हिला देती हूँ। लेकिन सैम-सान मुझे अब तक अच्छी तरह से जान गया है। मैं उसे धोखा नहीं दे सकती। "तुम्हें अभी तक ओहात्सू की कोई चिट्ठी नहीं मिली ? यही बात है न, बच्ची ?"

मैं सिर हिलाती हूँ। यद्यपि उसने कहा नहीं है, लेकिन मैं जानती हूँ कि सैम-सान को भी विश्वास है कि ओहात्सू हिरोशिमा के ढंग से 'बाहर चली गयी है।' उसने बम के उत्तरजीवियों की आत्महत्या के बारे में इतना सुन रखा है कि वह मेरी हताश बहन के भाग्य के सम्बन्ध में सही अनुमान लगा सकता है। क्या उसी के नामवाली प्राचीन ओहात्सू ने भी प्रेम की खातिर आत्महत्या नहीं की थी ? फिर भी मैं यह मानने से इन्कार करती हूँ कि सैम-सान सही सोचता है। साथ ही एक कँपकँपी महसूस करती हूँ। अपने सामने ओसिमा की चोटी देखते हुए भी, जिसके पास से हम उस दिन गाड़ी में गुजरे थे, मैं इस आशा से चिपट रही हूँ कि मैं अपनी छोटी बहन को फिर से देखूंगी। मैं इस आशा को कभी नहीं छोड़ूंगी।

सैम-सान तुनक रहा है। एकाएक उसकी मुट्ठी आवाज के साथ नीचे आती है।

"हे भगवान् ! मुझे उन सब जिन्दगियों का खयाल आता है जो बम से तबाह हुई हैं। चौदह साल हो गये हैं उसे गिरे, लेकिन उसका काम अभी तक चल रहा है। इस बीच हम खामोश बैठे दूसरे बम के गिरने का इन्तजार कर रहे हैं। हम जानते हैं कि वह बम हिरोशिमा को तबाह करनेवाले बम से हजार गुना शक्तिशाली होगा, लेकिन क्या हमें इसकी परवाह है ? ऐसे लगता है जैसे कि हम कठपुतलियों की दुनिया में रहते हो। मैं इसके लिए जरूर कुछ करने जा रहा हूँ। मैं तुम्हें अभी और इसी वक्त बता रहा हूँ।"

सैम-सान अपने हाथों को अपने बालों में फेरता है। वे भयंकर बिच्छू के डंकों की तरह तीखे लग रहे हैं।

"जी हाँ ! मैं जीना चाहता हूँ। मैं युवा हूँ। मुझे कोई बटन दबानेवाला अफसर बुहार नहीं सकता—अगर मैं बचना चाहूँ, तो मैं बचूँगा। मुझे इतना क्रोध आया हुआ है, और मैं इतना ढीठ हूँ कि सोचता हूँ मैं बच सकता हूँ। पिताजी हमेशा जिन्दगी के लिए लड़ते रहे। मैं भी क्यों न लड़ूँ ?"

वह रुक जाता है। मुझे कोई बागीचे से बुला रहा है—बल्कि केवल फुसफुसा रहा है। जो आवाज अन्दर आती है वह इतनी बैठी, इतनी धीमी है कि मैं एकदम जान जाती हूँ कि यह माएदा-सान है। उसे इस समय क्या चाहिए ?

मैं सैम-सान को छोड़कर जल्दी से बाहर अँधेरे में चली जाती हूँ। लकड़ी के गेट के पास हमारा पुराना दोस्त खड़ा है। उसका चेहरा उस पत्थर की लालटेन की मद्धिम रोशनी में और भी ज्यादा मुरझाया नजर आ रहा है।

"क्या तुम ठीक-ठाक हो माएदा-सान ?" मैं घबराहट में पूछती हूँ। "क्या ईइज़ा···?"

"युका, तुम्हें अपने-आपको मजबूत बनाना चाहिए। उन्होंने तुम्हारे लिए अस्पताल से फोन किया है। फ्यूमियो तुम्हें बुला रहा है, युका !" माएदा-मान कहता है। उसकी टूटी आवाज इतनी धीमी है कि मैं मुश्किल से सुन पाती हूँ।

मैं माएदा-मान के किमोनो की बाँह पकड़ लेती हूँ। मैं पूछना चाहती हूँ कि क्या हुआ है, लेकिन फिर सोचती हूँ कि पूछने की क्या तुक है। उन्होंने मुझे इतनी रात गये कभी न बुलाया होता जब तक कि···। हम गेट पार करके सड़क पर चलने लगते हैं। मेरे पैर तेजी से चलते हैं, जिससे कि उस

बेचारे बूढ़े आदमी को भी मेरे पीछे जल्दी करनी पड़ती है। उसकी एक 'गेता' उतर जाती है और वह झुककर उसे उठाता है।

"मैं दौड़कर आगे चलती हूँ, माएदा-सान !" मैं चिल्लाती हूँ।

"यही अच्छा होगा। मैं तुम्हें अस्पताल में मिलूंगा। युका, तुम जल्दी चलो।"

ओह, मैं सालों से इतनी तेज नहीं दौड़ी ! मैं काली स्याह सड़क पर भागती हूँ और वह खाली मैदान पार करती हूँ जहाँ मैं नाकानो-सान और तामुरा-सान को हर सुबह लाती हूँ। एक क्षण के लिए मेरे लम्बे बाल मेरे पीछे पाल की तरह लहराते हैं, और दूसरे ही क्षण हवा उन्हें मेरे मुँह पर दे मारती है और मुझे आधी अन्धी बना देती है। मैं आगे और आगे भागती जाती हूँ, बिना देखे कि मैं कहाँ जा रही हूँ—और अचानक मुझे लगता है कि मैं अकेली नहीं हूँ—कि मेरे आस-पास और हर तरफ और भी लोग भाग रहे हैं—भाग रहे हैं--भाग रहे हैं।

हाँ, ये सब भूत हैं। चौदह साल पहले मैं इन्हीं सड़कों पर एक भयभीत झुण्ड के साथ भाग रही थी। चौदह साल वे सब मेरे ही सिर के अन्दर भागते रहे हैं, लेकिन आज रात वे फिर हिरोशिमा में वापस आकर मेरे बराबर दौड़ रहे हैं। उनके चेहरे काले पड़ गये हैं, और कन्धों से फटा मांस नीचे लटक रहा है। मैं उन्हें इस तरह पहचानती हूँ मानो मैंने उन्हें किसी भयानक सपने में देख रखा हो। वह लड़की जिसका सारा चेहरा जल गया है--वह आदमी जो कि अपनी पत्नी को अपनी पीठ पर उठाये है-- ये उस समय भी मेरे करीब से भागकर जा रहे थे। हम उन स्कूल के बच्चों को भी पास से देखते हैं जो एक दायरा बनाये घुटनों के बल झुके हुए हैं---सब मरे हुए। और यह है वह कुत्ता। 'दुर्' मेरे रास्ते से हट, कुत्ते ! तेरे पंजे जलते कोलतार में फँस गये हैं। यही हम सबके साथ होगा अगर हम जल्दी नहीं भागेंगे। तेरी तरह हम भी जिन्दा भुन जायेंगे। मैं तेरी सहायता नहीं कर सकती, कुत्ते ! मुझे अपने को बचाना चाहिए। मुझे मामा-सान को ढूंढ़ना है। अपने से बहुत आगे मैं नदी-तट की सीमा-रेखा और पानी में कूदते सायों को देख सकती हूँ। बहुत-सी जलती मशालों की तरह जलते सिरोंवाली औरतें किनारे से कूद रही हैं। क्या मेर' माँ उनमें है ? कहाँ, कहाँ है मामा-सान ?

"सामने देखकर चलो ! तुम्हें क्या हुआ है, औरत ?" अपने को गिरने से बचाने के लिए मुझे एक रोशनी के खम्भे को पकड़ना पड़ता है। मैं पूरे जोर से एक वर्दीधारी सिपाही से टकरा जाती हूँ। इससे सहसा होश में आ जाती हूँ। मैं झुकती और बुदबुदाती हूँ, "मुझे क्षमा कीजिए, कृपया मुझे

क्षमा कीजिए।" फिर सामने अस्पताल की बड़ी इमारत की तरफ जल्दी से बढ़ती हूँ। पिछले दो हफ्ते में मैं कितनी अच्छी तरह इस जगह को जान गयी हूँ।

हॉल में से गुजरते हुए मैं अपने को आईने में देखती हूँ। अस्तव्यस्त और जंगली-सी! बिना सोचे मैं अपना किमोनो शीघ्रता से ठीक करती हूँ और अपने बालों को सहेजती हूँ। रात का पहरेदार मेरे करीब से गुजरता है और मैं रुककर उसके सामने झुकती हूँ। फिर मैं सीढ़ियों के ऊपर 'रेडिएशन' विभाग की तरफ तेजी से चढ़ती हुई एक नर्स की तरफ झुकती हूँ जो कि कई कागजी प्याले एक ट्रे में ले जा रही है। (हर प्याली में एक लाल गोली है, जो निस्सन्देह नींद लेनेवाली गोली है) अपने पंजों पर चलते हुए, जिससे कि किसी को परेशानी न हो, मैं फ्यूमियो के कमरे तक पहुँचती हूँ, और धीरे-से उसका दरवाजा खोलती हूँ।

एक परदा। छः बजे जब मैं यहाँ से गयी थी तो मेरे पति के बिस्तर के गिर्द कोई परदा नहीं था। लेकिन अब नर्स ने पर्दा लगा दिया है। मैं एकदम जान जाती हूँ कि इसका मतलब क्या है। मैं उसकी तरफ बढ़ती हूँ, पंजों पर ही, और जैसे ही उसके करीब पहुँचती हूँ, मैं उसकी आवाज सुन सकती हूँ। पहले मुझे लगता है कि वह अकेला नहीं है।

"फ्यूमियो!"

उसकी आँखें मेरी तरफ घूमती हैं। वह अपना सिर नहीं हिला सकता, लेकिन बिस्तर के उस तरफ से उसकी आँखें मुझसे मिल जाती हैं।

"मैं तुमसे बात कर रहा था युका," फ्यूमियो फुसफुसाता है।

मैं सिर हिलाती हूँ। मैं बिस्तर के बराबर घुटनों पर बैठकर उसका हाथ अपने होंठों तक ले आती हूँ। उसकी आँखें मुझे देखकर चमक उठती हैं—वे कोमल और विनीत आँखें जिनमें कभी कड़ुआहट नहीं आयी—चाहे जिन्दगी ने उससे कितना ही कठोर व्यवहार क्यों न किया हो।

"हाँ, मैं यहाँ लेटे-लेटे तुमसे बातें कर रहा था," वह फुसफुसाता है। "मैं तुम्हें वह सब बता रहा था, जो मैंने पहले कभी किसी को नहीं बताया। मैं बहुत संकोची रहा हूँ—शब्द कभी जबान पर आये ही नहीं।"

वह रुक जाता है। लेकिन मैं जानती हूँ कि उसे अभी और कहना है। मैं आगे बात सुनने के लिए रुकी रहती हूँ।

"तुम मेरे लिए सब-कुछ रही हो," मैं फ्यूमियो को फिर से फुसफुसाते सुनती हूँ। "तुम जानती हो, युका! मैं भी तुम्हारे लिए बहुत बहुत-कुछ था, और यही मुझे तकलीफ देता है। मेरा मतलब है कि तुम अपने प्यार का बिना उपयोग किये रह जाओगी और नहीं सोच पाओगी कि उसका क्या

करो।"

मैं सिर हिलाती हूँ, लेकिन वह जिद करता है।

"हाँ-हाँ ! तुम्हें पता है कि तुमने अपना सारा प्यार मेरे साथ बाँध रखा है, और अब वह प्यार ही रह जायेगा—मैं नहीं रहूँगा। मैं तुमसे यही कहना चाहता हूँ कि उसे बाँट देना, उन्मुक्त भाव से। हर एक को तुम्हारी जरूरत है—बिलकुल वैसे ही जैसे मुझे तुम्हारी जरूरत थी···"

वह मुस्कराने की कोशिश करता है, लेकिन दर्द का दौरा उसके चेहरे को विकृत कर देता है। उसका सारा जिस्म सिकुड़ जाता है। मेरा पति वहाँ लेटा दर्द के साथ लड़ता रहता है, जैसे कि एक आदमी किसी शेर के साथ लड़ रहा हो।

मैं अपने घुटनों से आधा उठती हूँ, नर्स को भागकर बुलाने के लिए, लेकिन फ्यूमियो की सूखी बाँह बढ़कर मुझे रोकती है। वह अपनी कराह रोकने के लिए अपने होंठ काटता है। वह अपने साथी मरीजों को, जो परदे के उस पार हैं, परेशान नहीं करना चाहता। (वह बहुत सभ्य है, वह हमेशा सभ्य रहा है) फ्यूमियो और वह शेर वहाँ लेटे कुश्ती कर रहे हैं। जिन्दगी और मौत की लड़ाई में उनकी फूली साँस की आवाज मैं सुन सकती हूँ।

जीत फ्यूमियो की होती है। मैं यह जानती हूँ क्योंकि वह मुस्करा देता है। मैं स्वभावतः झुक जाती हूँ। जमीन पर घुटने टेके मैं विजेता के आगे झुक जाती हूँ—उस बीमार और दुःखी व्यक्ति के आगे—उस महामानव के आगे जोकि मेरा पति है। जैसे ही मेरा पति मुझे अपनी विजय के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते देखता है, उसकी आँखों में आँसू उमड़ आते हैं, जो क्षण-भर के लिए उसकी लम्बी युवा पलकों पर चमकते रहते हैं। फिर छोटी-छोटी नदियों के रूप में उस दुःख-भरे मैदान से होकर बहने लगते हैं, जो कि कभी एक इन्सान का चेहरा था। आँसू उसकी सूखी फुन्सियों के इर्द-गिर्द होते और उसके जख्मों पर से बहते, उसके खुले मुँह की तरफ रास्ता बनाते हैं।

"फ्यूमियो !" मैं फुसफुसाती हूँ। कहने को इतना कुछ है कि मैं कुछ भी कह नहीं पाती। मैं केवल वहाँ घुटनों पर झुकी फुसफुसाती हूँ, 'फ्यूमियो' और जानती हूँ कि वह मेरी आवाज नहीं सुन सकता।

वह तकिये पर अपना सिर मोड़ लेता है और आँखें मूँद लेता है। कटा-सा वह वहाँ लेटा है—इतना दुबला, इतना सूखा ! उसका कुछ भी शेष नहीं है। आज रात फ्यूमियो कैसा लग रहा है ? अरे हाँ—चिथड़े गुड्डे-जैसा ! आह, चिथड़े गुड्डे, प्यारे चिथड़े गुड्डे, मैंने जिन्दगी-भर तुम्हें कितना प्यार किया है !

# वियतनाम को प्यार

अनुवाद

**शिवदानसिंह चौहान,**
**विजय चौहान**

# भूमिका

'हिरोशिमा के फूल' की विश्वविख्यात लेखिका एदिता मॉरिस के इस उपन्यास में अमरीकी नापाम बमों से झुलसे वियतनामियों की वेदना और संकल्प का संवेदनशील चित्रण है। कहानी पात्रों के माध्यम से कही गयी है। बाईस बरस का जापानी युवक निशीना शिन्ज़ो, जिसने आठ बरस की उम्र में नागासाकी का एटमी संहार देखा था, जिसके चेहरे का बायाँ हिस्सा बेकार हो गया है—सुदूर वियतनाम में नापाम बमों से झुलसी, चेरी के पेड़ जैसी कोमल, सत्रह बरस की लड़की दान थान्ह को पत्र लिखता है; फिर अपने दोस्त इस्सा के साथ युद्ध-विरोधी फिल्म बनाने के लिए वियतनाम जाता है, जहाँ जख्मियों की एक बारक में दान थान्ह से उसकी मुलाकात होती है। यह मुलाकात प्यार की शक्ल अख्तियार कर लेती है, लेकिन तरुण प्रेमियों के सपने अमरीकी बमबारी में जलकर राख हो जाते हैं।

जब तक संसार में आकाश से मौत बरसानेवाले राक्षस मौजूद हैं तब तक किसी भी एशियावासी का भविष्य सुरक्षित नहीं रह सकता। हिरोशिमा, नागासाकी के बाद, वैसे ही घातक अस्त्रों का वियतनाम में प्रयोग किया गया और भविष्य में किसी भी एशियाई देश पर किया जा सकता है। यही इस उपन्यास का सन्देश है।

यह उपन्यास इसलिए भी महत्त्वपूर्ण है क्योंकि श्रीमती एदिता मॉरिस अमरीकी लेखिका हैं और उन्होंने अमरीकी जनता की अन्तरात्मा को अमरीकी सरकार के राक्षसी कुकृत्यों के विरुद्ध झकझोरा है। उपन्यास की भाषा अत्यन्त सरल है--वियतनाम के भोले-भाले, निश्छल लोगों की तरह। हमारे युग के कड़वे ऐतिहासिक सत्य को केवल इसी जुबान में लिखा जा सकता है।

श्रीमती विजय चौहान
शिवदानसिंह चौहान

# एक

नागासाकी
फरवरी—

प्यारी मिस दान थान्ह,[1]

अब तुम्हारी तबियत कैसी है। मुझे पूरी उम्मीद है कि अब तुम्हारी सेहत पहले से अच्छी होगी।

ओह, मैं उन्तीस साल का हूँ और मैं एक ऐसी फर्म में काम करता हूँ जो फिल्म और फोटोग्राफी का सामान बेचती है—न्यूयार्क फोटो एम्पोरियम, इन्कॉरपोरेटेड। मेरा सिर्फ इतना ही परिचय है।

अगर तुम इस खत के कागज को गौर से देखोगी तो समझ जाओगी कि वियतनाम सम्बन्धी एक फिलम में तुम्हें देखकर मैंने क्यों तुमको यह खत लिखा है। अफसोस, यह नाम सिर्फ एक शहर के नाम का ही प्रतीक नहीं है। जलने के जख्मों के बारे में कोई भी इतना नहीं जानता, जितना हम इस शहर के बाशिन्दे जानते हैं, जिसका नाम इस पैड के कागज पर ऊपर छपा है। खैर, आज इतना ही काफी है।

तुम्हारा
विनीत
निशीना शिन्ज़ो

**पुनश्च** : शिन्ज़ो मेरा ईसाई नाम है। जापान में हम लोग खानदान का नाम पहले रखते हैं, ईसाई नाम उसके बाद। 'ईसाई' शब्द तुम जैसी बौद्ध लड़की को अजब लगेगा, लेकिन मेरा शहर ईसाई शहर है, हालाँकि यहाँ एक बड़ी अजब बात हुई थी। सन् उन्नीस सौ पैंतालीस में ऐटम बम से हमारे तमाम गिरजाघर तो बरबाद होकर मिट्टी में मिल गये, लेकिन नदी पार योशीवारा मोहल्ले के वेश्यालयों की इमारतें ज्यों की त्यों खड़ी

1. वियतनामी भाषा में दान का उच्चारण दाह्न होता है।

रहीं, जिससे दयालु ईसा मसीह के दोस्तों को जो हमारा संरक्षक सन्त है, दुखद आश्चर्य हुआ था।

नि. शि.

□

नागासाकी
फरवरी—

प्यारी मिस दान थान्ह,

तुम कैसी हो ? कल मैं तुमको यह बताना भूल गया कि एक फिल्म में तुमसे मेरी मुलाकात क्यों हुई थी, जो एक अजब बात थी, क्योंकि मैं कभी फिल्म देखने नहीं जाता। बहरहाल, इस्सा ने, जो एक नौजवान प्रोड्यूसर है और जिसके साथ मेरी फर्म के व्यापारिक सम्बन्ध हैं, मुझे एक फिल्म देखने का निमन्त्रण दिया जो उसने वियतनाम में शूट किया था। फिल्म देखने के बाद जब मैं इस तरह काँपने लगा कि उठकर खड़ा होना मुश्किल हो गया तो उसने कहा, खामोश बैठे रहो और सुस्थिर होने से पहले उठने की जल्दी न करो। इस्सा ने ऐसा क्यों कहा था ? क्योंकि उसने मेरी शक्ल देखकर ऐसा कहा था, जो नापाम बम से जली हुई उस लड़की से हू-ब-हू मिलती थी, जिसे अपने फिलम में उसने फेड-आउट के लिए इस्तेमाल किया था। दरअसल, वह लड़की तुम ही थीं, मिस।

"वियतनाम के एक अस्पताल में इस लड़की को मैंने देखा था," इस्सा ने कहा और यह सुनकर मेरी कँपकँपी और ज्यादा तेज हो गयी। लेकिन फिर हम दोनों ने बाहर जाकर एक साथ आइसक्रीम खायी।

"भले आदमी, तुम मिस दान थान्ह को खत क्यों नहीं लिखते ? इससे वह खुश होगी। बस छोटी-छोटी बातें। मैं और फिल्म शूट करने के लिए फिर वियतनाम जाऊँगा और तुम्हारे खत साथ ले जाऊँगा।"

"कब ?" मैंने पूछा।

उसने तपाक से कहा : "करीब पन्द्रह दिन बाद।"

"तो बात पक्की रही," मैंने जवाब दिया। यह वाक्य मैंने फिल्मों में सुना था। बातचीत खत्म करने के लिए इसका इस्तेमाल किया जाता है।

बहरहाल, अगर मैं अपने प्राकृतिक दृश्योंवाले फोटो बेचने में कामयाब रहा तो अपनी स्कूली अंग्रेजी को सुधारने के लिए एक बढ़िया-सी अंग्रेजी-जापानी डिक्शनरी खरीद लूंगा। इस वक्त मेरे पास सिर्फ बिजनेस में काम आनेवाले पत्र-व्यवहार की पाठ्य-पुस्तक ही है, जो मैं पुरानी किताबों की एक दुकान से खरीद लाया था। मिस, जब से मैंने वह फिल्म देखी है, जिसमें तुम थीं, मैं तुम्हारे देश की खबरों के बारे में सतर्क हो गया हूँ। (यह मेरे

लिए बिल्कुल नयी बात है, क्योंकि मैं सब चीजों से बाहर हूँ।) मिसाल के लिए, मैं अब लेज़ी डॉग बम के बारे में जान गया हूँ और काँप रहा हूँ।

अपने पूरे ध्यान का यकीन
दिलाते हुए, तुम्हारा
निशीना शिन्ज़ो

**पुनश्च** : क्या तुम्हारे दाहिनी तरफ जरा भी खाल नहीं बची है? ऐटम बम के बाद मेरे बायीं तरफ जरा भी खाल नहीं बची थी। एक दरख्त को अपनी छाल की जरूरत होती है।

□

नागासाकी
फरवरी —

प्यारी मिस दान थान्ह,

अपने पत्र-व्यवहार को जारी रखने में मुझे खुशी होत। है। बहरहाल, आज मैं तुम्हारे और वियतनाम के बारे में कल की अपेक्षा ज्यादा-कुछ जानता हूँ और तुम्हें अपनी टूटी-फटी शब्दावली में बताने की कोशिश करूँगा कि क्यों ज्यादा जानता हूँ।

इस्सा-सान आया था। वह एक अजब गाहक है। यह श्लेष का प्रयोग है। मेरे कहने का मतलब यह है कि वह सचमुच हमारा गाहक है, लेकिन 'अजब गाहक' का यह मतलब भी है कि वह अनोखी शक्ल-सूरत का आदमी है। उसकी आँखें अंगारों की तरह चमकती हैं और वह अपने बाल जापानी गुड़िया की तरह गोल कटवाता है।

"कोई तुमसे मिलना चाहता है," हमारे दफ्तर के चपरासी ने चकित स्वर में कहा। क्योंकि मुझसे मिलने के लिए कभी कोई नहीं आता।

"हाँ, कौन?" मैंने दफ्तर के चपरासी को अपनी दाहिनी आँख से देखते हुए कहा, क्योंकि मैं अपने चेहरे के बायें हिस्से को निजी कारणों से दीवार की तरफ रखता हूँ।

दरअसल, कौन हो सकता था? मैं किसी को नहीं जानता। (चूँकि हम इतने अभागे थे कि उन्नीस सौ पैंतालीस को नौ अगस्त को यहाँ पर मौजूद थे, इसलिए बहुत-से लोग सोचते हैं कि हम उनके लिए भी दुर्भाग्य का कारण बन सकते हैं। और वे हमसे मिलने से कतराते हैं।) अरे हाँ, मैं अपने घर की मालकिन को तो खूब जानता हूँ। कहीं वह तो नहीं है?

"एक लम्बा आदमी है, गुड़िया के जैसे बालोंवाला, निशीना-सान," चपरासी के लड़के ने कहा।

तो इस्सा और मैंने साथ बैठकर उस बेहद अँधेरी आइसक्रीम की

दुकान में आइसक्रीम खायी, जहाँ मैं अक्सर जाता हूँ और उसने मुझसे कहा कि मैं उसे 'इस्सा' कहकर पुकारा करूँ। यह एक महान जापानी कवि का नाम है जो आम लोगों के बीच में रहता था और जिसका वह अपनी जिन्दगी में अनुकरण करता है। यह अच्छा हुआ कि हम लोग आइसक्रीम की उस अँधेरी दुकान में गये थे, क्योंकि इस्सा ने मुझसे पूछा :

"तुमने शाम का अखबार देखा है ?" उसने तस्वीर में इन्सानों की एक कतार दिखायी जो जले हुए सूअर के गोश्त के टुकड़ों जैसे लग रहे थे। "दान का दाहिना अंग नापाम बम से इसी तरह जल गया है," इस्सा ने कहा। "उन्होंने इसी तरह वियतनाम में हजारों को अपाहिज बना दिया है, और 'उन्होंने' से मेरा मतलब अमरीकन सरकार से है, अमरीकन लोगों से नहीं।" फिर वह बड़बड़ाया, "अपनी आइसक्रीम खत्म करने की चिन्ता न करो। बाथरूम उस तरफ है। भागो ! कै कर आओ !"

खैर, आज मैं दफ्तर नहीं जा सका, लेकिन वे मेरे जैसे लोगों की इन हरकतों के आदी हो गये हैं, यही वजह है कि उन लोगों का दावा है कि हम लोग नौकरी करने के काबिल नहीं हैं। खासतौर पर मेरा सीनियर क्लर्क, जिसका दिल जहर के कीड़ों से भरा हुआ है, यह दावा करता है। यह छैल-छबीला शरीफजादा मुझसे नफरत करता है। इस तथ्य को दर्ज करके मैं आज खत्म करता हूँ और अपने दस्तखत करता हूँ,

तुम्हारा आज्ञाकारी
निशीना शिन्ज़ो

**पुनश्च** : चाँद ज्यादा गोल हो गया है। उसकी ओर देखा करो। इससे तुम्हें राहत मिलेगी।

□

नागासाकी
फरवरी —

प्यारी मिस दान थान्ह,

तबसे तुम्हारी सेहत कैसी है ? अच्छी-बुरी ? जलने के जख्मों के बारे में पहले से कुछ नहीं कहा जा सकता, लेकिन मेहरबानी करके हिम्मत न छोड़ना। सबसे बड़ा डर पागल हो जाने का है, इसलिए जब तुम्हारी चीखों में पागलपन की ध्वनि सुनायी दे तो एकदम चुप हो जाया करो !

"हैलो !"

यह इस्सा का स्वर था, जब वह कल रात बिना खबर किये ही आ गया, जिससे मुझे भागकर अपने डार्क रूम में शरण लेनी पड़ गयी। भागने का कारण ? वह अकेला नहीं था। उसकी हट्टी-कट्टी दोस्त लड़की ने, जिसने

अपने मुँह पर बिखरे बालों को रँग रखा था, मुझे डर से कँपा दिया था। जब तक मैंने उसकी तिरछी आँखें नहीं देखीं तब तक मैं उसे गलती से सौ फीसदी अमरीकन समझता रहा ! (दरअसल वह आधी अमरीकन और आधी फ्रेंच है।) लेकिन जिस बेतकल्लुफी से उसने पूछा कि मेरे परिवार की वेदी पर किन-किन लोगों की तस्वीरें थीं, उससे अगर जाँचा जाय तो वह पूरी अमरीकन भी हो सकती थी।

"मेरे आदरणीय पिता, मेरी आदरणीय माँ," मैंने उस सुन्दर जोड़े का झुककर अभिवादन करते हुए उत्तर दिया।

"और वह प्यारा लड़का ? कौन है वह ?" उसने उनके पास की फोटो को ओर इशारा करते हुए पूछा। "अरे, यह तो तुम हो !" वह चिल्लायी। "लेकिन तुम तो—मरे नहीं हो, नहीं मरे हो न ? फिर परिवार की वेदी पर तुम्हारी फोटो क्यों है ?" "चुप रहो," इस्सा ने डाँटा, जिसे मालूम है कि एटमी बम के हम जैसे बहुत से प्रेत अपने-आपको मरा हुआ समझते हैं, इसलिए हमारी जगह वेदी पर है।

उसकी दोस्त लड़की की आँखें पिघल गयी थीं और उनमें से आँसू बह निकले थे। मैंने भागकर अपने डार्क-रूम में शरण ली, क्योंकि मैं किसी की दया बर्दाश्त नहीं कर सकता।

"मैं तुम्हें पास में होनेवाली एक युद्ध-विरोधी मीटिंग में ले जाने के लिए आया था। चल रहे हो, मैन ?" इस्सा ने पूछा, जिसने यह शब्द 'मैन' न्यूयार्क शहर में स्थित एक गाँव[1] में सीखा था। लेकिन मैंने अपना सिर हिलाकर इन्कार कर दिया। शान्ति की मीटिंगों का क्या उपयोग है ? इसके अलावा, एक प्रेत होने की वजह से मैं अपने-आपको जिन्दगी के क्षेत्र से एकदम बाहर रखता हूँ।

"यह अक्लमन्द आदमी है," उस मदमोज़ेल[2] ने, जो मिनी-स्कर्ट पहने थी, इस्सा ने कहा। (एम. मिचिको दूँपाँ उसका नाम है। वह फ्रेंच-अमरीकी-जापानी वंश की लड़की है जो लुईसियाना में पैदा हुई थी, और पहले कभी जापान नहीं आयी थी। वह न्यूयार्क के उपरोक्त गाँव में रहती है, जहाँ सब लोग उसे मदमोज़ेल कहकर पुकारते हैं—जिसे एम. करके लिखा जाता है।) "जो भी वियतनाम-युद्ध के खिलाफ काम करेगा, उसे न्यूयार्क फोटो एम्पोरियम जैसी अमरीकन पूँजी से चलनेवाली फर्म की नौकरी से जरूर निकाल दिया जायगा," उसने कहा।

1. ग्रीनविच विलेज जो कलाकारों और बीटनिक लोगों का केन्द्र है।
2. अविवाहित लड़की।

"तो क्या हुआ ? मुझे भी तो निकाला गया," इस्सा ने कहा।

"हाँ। मेरा ख्याल है कि शायद इसी वजह से हम लोग शादी नहीं कर सकते," मोटी-तगड़ी एम. ने अपने हाथ के चॉकलेट से अपने बीटनिक बालों को खुजलाते हुए मजाक किया। लेकिन इस्सा, मेरे सिन्क में डेवेलप होनेवाले नेगेटिव फिल्मों को देखकर हरा पड़ गया था।

"सायोनारा।"[1] वह चिल्लाया और एम. को अपने साथ खींचता हुआ तेजी से बाहर निकल गया। ओह, मैं तुमको यह बताने की जुर्रत नहीं कर सकता, मिस, कि मैं अपने सिन्क में कैसी तस्वीरें डेवेलप कर रहा था। तुम्हें भी 'सायोनारा', मैं हूँ तुम्हारा,

आज्ञाकारी
निशीना शिन्ज़ो

☐

नागासाकी
फरवरी—

प्यारी मिस दान थान्ह,

तुम कैसी हो ? मुझे अहसास है कि तुम शायद ही कभी सो पाती हो, लेकिन कोशिश करो कि सारी रात ऐंठती-सिकुड़ती न रहो। जलने के मरीजों के साथ अक्सर होता है जो उन्हें घातक स्नायविक बीमारियों का शिकार बना देता है। उनके बारे में इस पैड के कागज पर छपे नामवाले शहर के हम लोग खूब परिचित हैं।

आज सुबह तीन नन्हे-नन्हे चूहे उछलते-कूदते मेरी मकान-मालकिन के बावर्चीखाने में पहुँच गये, लेकिन चूंकि मेरी मकान-मालकिन को कम दिखायी देता है, जिस कारण ही मैंने उसके यहाँ रहने के लिए कमरा लिया है, उसने उन्हें 'शू' करके भगाया नहीं। इसलिए मैंने अपने पॉकेट कैमरा से, जो हर वक्त मेरे पास रहता है, मैंने उनकी तस्वीर खींच ली। क्योंकि वे उन नन्हे-नन्हे और भूखे लोगों की तरह नजर आ रहे थे जो तुम्हारे भूखे देश में भोजन की तलाश में घूमते हैं। तुम्हारा देश इन दिनों हर समय मेरे ख्यालों में बसा रहता है।

मुझे जानवर बहुत पसन्द हैं। वे अपनी आस्तीन की आड़ में किसी पर हँस नहीं सकते। इसी वजह से मैं पेड़-पौधों का भी बहुत शौकीन हूँ। और आज सुबह मैंने मकान-मालकिन के बाग के चेरी के जवान पेड़ की भी तस्वीर खींची, ताकि उसे भी मैं अपनी प्राकृतिक दृश्यों की अल्बम में रख

1. अलविदा। जापानी शब्द।

सकूं, जो मैं तैयार कर रहा हूँ। मेरे बॉस ने राय दी कि सम्भव है कि फोटोग्राफी की प्रतियोगिता में उस अल्बम पर मुझे सम्मान का पदक मिल जायगा। मुझे भी ऐसी ही उम्मीद है, हालाँकि यह बड़ी शर्मनाक बात लगती है कि कोई मरा हुआ आदमी भी अपने दिल में उम्मीद रखे।

रात को मैंने सपना देखा कि चेरी के पेड़ से मेरी शादी हो गयी है। जानती हो, इस साल पहली बार उसमें शगूफा आया है। चाँदनी रात में हम दोनों कितने खुश हैं, मेरा सिर उसकी कोमल टहनियों की बाँहों में टिका हुआ है। मिस, जले हुए लोग प्यार के लिए तड़पते-कलपते रहते हैं, और अगर कोई हमसे प्यार करे तो हम लोग खान-पीना भी त्याग सकते हैं।

लेकिन दिन में मेरी खुशी गायब हो गयी। मैं कभी अखबार पढ़ने की कोशिश नहीं करता, क्योंकि यहाँ नागासाकी में हम लोग जानते हैं कि उन्नीस सौ पैंतालीस में उन्होंने हमारे बारे में कैसी कुटिल चुप्पी साध रखी थी। (जापान पर कब्जा जमानेवाली फौजों ने खबरों पर सख्त पाबन्दी लगा दी थी, प्रेस में या भाषण में ऐटम बम से मरनेवालों का जिक्र तक करने की इजाजत नहीं थी, ताकि लोगों को यह पता न चले कि हम सिर्फ मौत की प्रयोगशाला-भर थे।) इस लड़ाई में एक अलग नीति है। वे सब चीज कबूल करते हैं, यहाँ तक कि **डींग भी मारते हैं**, और आज सुबह जब मैं अखबार के स्टैण्ड के पास गुजरा तो मैंने चीखती हुई सुर्खियों में लिखा देखा : "वियतनाम में पेड़-पौधों को नष्ट करने का काम और बढ़ाया जायगा। हजारों एकड़ हरे-भरे जंगल हवाई जहाजों से जहरीली रसायन छिड़ककर जला दिये गये।" ओह, यह सच नहीं हो सकता। मैंने सोचा। सिर्फ खूँखार दरिन्दे ही ऐसी कुटिल बातें सोच सकते हैं। लेकिन फिर मैंने अपने आपको याद दिलाया कि आदमी खुद एक खूँखार दरिन्दा **बन गया है** और मैंने अपने सीनियर क्लर्क से घर जाने की इजाजत माँगी, क्योंकि मुझे मिचली आ रही थी। घर लौटकर मैं अपने चेरी के पेड़ के सहारे खड़ा हो गया। और मैंने कसम खायी कि मैं उन दरिन्दों से उसकी रक्षा करूँगा।

मिस, मैं इस खत को आगे जारी नहीं रख सकता, क्योंकि अब मेरे अन्दर कलम पकड़ने की सामर्थ्य नहीं रही। कभी-कभी मुझे लगता है कि मैं और नहीं चल सकता। सौभाग्य से मेरे पास एक गोली है, जिसे बहुत हताश हो जाने पर मैं खा सकता हूँ। वह मेरे कोट के अस्तर में सिली हुई है। उसे मैं **अपनी गोली** पुकारता हूँ।

मेरी आदरपूर्ण शुभकामनाएँ<br>
निशीना शिन्जो

नागामाकी
फरवरी—

प्यारी मिस दान थान्ह,

तुम कैसी हो ? अब मैंने सीख लिया है कि अंग्रेज़ी में खत शुरू करने का यही ठीक तरीका है। मेहरबानी करके मेरे पिछले अनाड़ी तरीकों को माफ कर देना। खैर, एम. आयी थी। मैं अपने डार्क रूम की तरफ लपका, लेकिन वह तेजी से पीछा करती हुई वहाँ भी पहुँच गयी। मैंने अपने चेरी के पेड़ की जो तस्वीरें ली थीं, वह उनके आगे प्रशंसा भरे अन्दाज में अपने विशाल हाथ जोड़कर खड़ी हो गयी। अगर वे हमारे पेड़ों पर भी जहरीली रसायन छिड़कने का फैसला करें तो इन फोटो-तस्वीरों का अस्तित्व तो रहेगा ही, जो दिखा सकेंगी कि हमारी धरती एक विशाल ब्राऊन दाग बनने से पहले कैसी नजर आती थी।

"तुम उस नन्हें पेड़ से प्यार करते हो !" एम. विस्मय से चिल्लायी। फिर उसने एक अजब बात कही : "तो दरअसल चेरी का पेड़ **ऐसा** नजर आता है ? में नहीं जानती थी।" फिर जल्दी से उसने ये शब्द जोड़े : "सूक्ष्म ब्यौरों को भी पकड़नेवाली तुम्हारी निगाह से तो ईसा की कसम, लगता है कि तुम एक जीनियस हो।" ओह, मैं खुशी से शरमा गया।

लेकिन इस कसमें खानेवाली और अपने मुँह पर बाल बिखेरकर चलनेवाली अजनबी बीट्निक से कहने के लिए मुझे कोई शब्द नहीं सूझे।

"इस्सा अच्छी तरह है ?" मैंने पूछा।

"ओह, तिकड़म भिड़ाता हुआ दौड़-धूप कर रहा है।"

"मतलब ?"

"वियतनाम वापस जाने के लिए पैसा इकट्ठा करने की कोशिश में है। क्या तुम भी इस्सा की तरह, उतने ही पागलपन से युद्ध को नफरत करते हो ?"

**युद्ध से नफरत !**

मैं किसी ऐसे बाहरी आदमी के साथ इस भयानक जुर्म पर बहस नहीं कर सकता, जिसने युद्ध की यातनाएँ नहीं झेलीं, इसलिए बायीं ओर को मुड़कर दीवार की ओर हो गया और मैंने कोई जवाब नहीं दिया। जब मैं छोटा था, तब अक्सर महीनों-महीनों तक बिना बोले गुमसुम बना रहता था ! अब मैं अक्सर हफ्तों-हफ्तों तक बिल्कुल नहीं बोलता। लेकिन यह खामोशी कुछ ज्यादा भारी होती जा रही थी।

"इस्सा···" मैंने फिर कहना चाहा, क्योंकि सच बात यह है कि हम दोनों के बीच सिर्फ इस्सा ही है जो साँझी चीज है। "काश, इस्सा तुम्हारे

जैसा होता," मेरे नजदीक बढ़ते हुए एम. बड़बड़ायी। "तुम एक प्रेत की तरह बोलते और चलते हो, गोया तुम नहीं चाहते कि कोई तुम पर ध्यान दे। मुझे यह बात पसन्द है। इस्सा दो दिन के भीतर चला जायेगा। हम लोग कहीं मिलें, तुम और मैं।"

दो दिन ! इस बात ने मुझे बेचैन और उतावला कर दिया। मिस, मैंने अभी तक अपने बचपन के दिनों के बारे में तुम्हें नहीं लिखा है और अब इस्सा हवाई जहाज से वियतनाम जा रहा है, तुम्हारे लिए मेरे खत लेकर जिनमें मेरी जिन्दगी के इस महत्त्वपूर्ण प्रसंग का कोई हवाला नहीं होगा। मैंने तुम्हें **उस दिन** के बारे में भी नहीं बताया ! मैं कामना करने लगा कि एम. वहाँ से फौरन चली जाय, ताकि मैं तुम्हें लिख सकूँ, इसलिए मैंने उससे कुछ देर और ठहरने का आग्रह किया। हमें जापानी स्कूलों में शिष्टाचार सिखाया जाता है, जो दरअसल किसी से निर्दय व्यवहार न करने का सबक है। जहर से भी ज्यादा मुझे निर्दयता से नफरत है।

"अभी ठहरो, एम. !"

"नहीं, मुझे कुछ और लोगों को खबर करनी है," इस रहमदिल लड़की ने झूठ बोला, शायद यह महसूस करते हुए कि मेरा निमन्त्रण हार्दिक नहीं था। (उसके सामनेवाले दाँतों के बीच थोड़ी-सी जगह है। यह इस बात का लक्षण है कि वह एक नेक दिल की लड़की है।) वह अपने विशाल पाश्चात्य पाँवों से खट-खट आवाज करती हुई और मेरे कमरे की बाँस की दीवारों को कँपाती हुई, चली गयी। अब मैं अपने लिखने की मेज पर झुका बैठा हूँ, लेकिन अपना खत शुरू करने से पहले मुझे आँखें मूँदकर उन बीते दिनों की याद जगानी पड़ेगी, जब मैं एक नन्हा-सा, लेकिन जिन्दा बालक था।

तुम्हारा आज्ञाकारी
निशीना शिन्ज़ो

□

नागासाकी
फरवरी—

प्यारी मिस दान थान्ह,

तो, **उस दिन** मैं उछलता-कूदता आगे-आगे चल रहा था—अपने माँ-बाप के आगे-आगे गिरजाघर जाने के रास्ते में। आठ साल के लड़के के रूप में मुझे दयालु ईसा मसीह बहुत प्यारा लगता था, वह अद्भुत आदमी, और मैं उस भले आदमी को देने के लिए अपने हाथ में एक फूल पकड़े हुए था।

क्या मैं एक हँसमुख बालक था ? ओ, हाँ ! मिस, बचपन के दिनों मैं हर वक्त खिलखिलाकर हँसता रहता था, और मेरे गालों में दो नन्हे-नन्हे गड्ढे थे, हँसने के गड्ढे। ममी-पापा जिन्हें मैं एक ही आदमी समझता था, मुस्करा रहे थे, जब मैं पेड़ों के बीच की सड़क पर एक टाँग से कुदकता हुआ जा रहा था।

"ऐ नटखट; यह मसखरी बन्द करो। हम लोग गिरजाघर जा रहे हैं, समझे नटखट बच्चे !"

मैं कुदकता-फुदकता बढ़ता ही गया। हमारा गिरजाघर सामने था। उसके बाहर के चौक में मेरे स्कूल के पाँच सहपाठी एक दायरे में घुटनों के बल बैठे **बीन-खेल** खेल रहे थे और मैंने उन्हें पुकारकर कहा : "हैलो, योशी ! हैलो, ईईची ! हैलो, कोयचीरो, यूकी, हन्नो ! गिरजाघर से लौटकर मैं भी तुम्हारे साथ खेलूँगा," और मैंने फूल हिलाकर उनका अभिनन्दन किया। इसके बाद मैंने एक लम्बी कुदान ली, क्योंकि मैं यह सोचकर इतना खुश था कि मैं अपने दोस्तों के साथ खूब खेलूंगा, गिरजे से लौटने के बाद, जिसे मैं प्यार करता था, और जहाँ मैं ममी-पापा के साथ जा रहा था, जिन्हें मैं प्यार करता था। लेकिन तभी कोई चीज आकर मुझे लगी···

(अफसोस है कि मुझे यहाँ आकर कई घण्टों तक रुकना पड़ गया, यही कारण है कि इस खत की शुरूआत, इसके अन्त से भिन्न दिखायी देगी। अब मैं अन्त के हिस्से को एक नये बाल-पॉयन्ट कलम से लिख रहा हूँ।)

तो, मैं वहाँ सड़क पर पड़ा हुआ था। मुझे मालूम नहीं था कि मुझे क्या चीज आकर लगी थी। "मुझे कौन चीज आकर लगी है, ममी-पापा ?" मैं चिल्लाया, और मैंने गर्दन उठाकर उनकी ओर देखने की कोशिश की। लेकिन वे लोग तो वहाँ नहीं थे। वे तो वहाँ थे ही नहीं, वे तो वहाँ थे ही नहीं, वे तो वहाँ थे ही नहीं···

मैंने बीन-खेल के दायरे में बैठे अपने पाँच दोस्तों में से एक को आवाज दी, "योशी, मेरे ममी-पापा कहाँ चले गये ?" बीन खेलनेवाले उस वक्त भी अपने दायरे में बैठे थे, लेकिन वे बुत बने निश्चल आसमान की ओर ताक रहे थे, न हिले-डुले, न उन्होंने मेरी बात का जवाब ही दिया। वे हक्के-बक्के हो गये थे। दरअसल ऐटमी विस्फोट की चमक से वे सबके सब अन्धे हो गये थे, जैसा कि बाद में पता चला था। उनमें से किसी की आँख की ज्योति पूरी तरह फिर नहीं लौट सकी और इसके नतीजे के तौर पर : योशी अपनी चोरियों की वजह से जेल की चिड़िया बन गया है, हन्नो शराबी हो गया है। हमारे शहर में आस-उम्मीद से हाथ धोकर सैकड़ों लोग अपराधी बन गये हैं।

मेरी बायीं बगल में दर्द शुरू हुआ। मैं चीखने लगा। मुझे याद नहीं कि मैं अपने माँ-बाप के लिए चीख रहा था, जो राख में तब्दील होकर हवा में उड़ गये थे या अपनी बायीं बगल के कारण चीख रहा था जो उस वक्त कच्चा गोश्त बन गयी थी। अचानक मुझे भूख महसूस हुई। मैंने दयालु ईसा मसीह का फूल खा डाला। उसके बाद मैं फिर चीखने लगा और चीख-चीखकर बारी-बारी से अपने ममी-पापा और योशी को पुकारने लगा। बाद में मैं चीखता रहा, बस चीखता रहा। तो, यह **था वह दिन।**

तुम्हारा आज्ञाकारी
निशीना शिन्ज़ो

□

नागासाकी
फरवरी—

प्यारी मिस दान थान्ह,

क्या हालचाल हैं? काश, मैं तुम्हारे जलने के जख्मों के लिए एण्टी-हिस्टेमाइन दवा भेज सकता, लेकिन मैंने सुना है कि पार्सल वहाँ कभी नहीं पहुँचते। हाँ, उन्नीस सौ पैंतालीस में हमारे पास भी कोई दवाएँ नहीं थीं। और तब भी, आज की ही तरह, कोई परवाह नहीं करता **था**।

इस्सा कुछ दिनों में ही जानेवाला है। काश मैं एक तितली होता और उसके कन्धे पर बैठकर वियतनाम और तुम्हारे पास जा सकता। "अगर ख्वाहिशें घोड़े हों तो भिखारी कभी पैदल ही न चलें।" अंग्रेजी भाषा की यह मिसाल मेरे जापानी कानों को खटकती है, लेकिन चलने दो।

"निशीना-सान, आपसे कोई मिलने आया है!" लोगों की मजाक-भरी निगाहों से बचने के लिए मैंने दफ्तर के सबसे अँधेरे कोने में अपनी मेज रखी है, ताकि मुझे यह नजर न आये कि दफ्तर का चपरासी लड़का हमेशा की तरह मेरे मुँह के दागों की ओर घूर रहा है। "कौन है, गोल कटे बालोंवाला आदमी?" मैंने पूछा। "नहीं, एक लेडी है, सीधे बालोंवाली," दफ्तर के चपरासी ने जवाब दिया, जिसे हम यो···कहते हैं, लेकिन मैं उसका नाम नहीं लिखना चाहता क्योंकि यह **बीन-खेल** के मेरे सबसे प्यारे दोस्त का नाम था। उसकी बात सुनकर जब मैं हँस पड़ा तो वह लड़खड़ाकर गिरते-गिरते बचा। दफ्तर के चपरासी लड़के ने मुझे पहले कभी हँसते हुए नहीं देखा था। हालाँकि इस औपचारिकता की कोई जरूरत नहीं थी।

"मैं अपना कैमरा लेकर आयी हूँ। आओ, बाहर चलो, शिन्ज़ो! मैं तुम्हें नये ढंग की फोटोग्राफी दिखाऊँगी," एम. ने ऊँची आवाज में चिल्लाकर कहा, पश्चिमी ढंग से। मेरे कमरे के दूसरे साथी उसकी ओर प्रशंसा-

भरी नजरों से ताक रहे थे। या खुदा, मैं उनकी नजर में अब उतना नीचा नहीं रहा था। "हम लोग शहर में जायेंगे और चीजों की तस्वीरें खींचेंगे," मिचीको दूपाँ ने आदेश दिया। लेकिन मैंने तपाक से कहा, "नहीं!" और मैं उसे उन सुनसान गलियों में ले गया जहाँ मैं लोगों से बचने के लिए अक्सर जाता हूँ। मैं अपने चेहरे तक को हमेशा इतना बायीं ओर मोड़कर चलता हूँ कि मेरी गर्दन की एक नस ही अकड़ गयी है और जो अब ठीक नहीं हो सकती, जिससे मेरी विचित्र शक्ल और भी विचित्र हो गयी है। सौभाग्य से एम. को मेरी सुनसान गलियाँ पसन्द आयीं और वह खुशी से चीख पड़ी। क्योंकि वहाँ रेत के ऊपर एक निचोड़ा हुआ नीबू पड़ा हुआ था और उसके पास ही साके बियर की खाली बोतल रेत में आधी दबी हुई थी। एम. ने फौरन टॉयलट पेपर का एक बण्डल निकाला और इन 'चीजों' के पास उसे फेंककर उसने कैमरे से उनकी तस्वीर खींच ली।

"देखा?" उसने पूछा। मैंने उसका मजाक उड़ाया: "बकवास! पॉप आर्ट!" और हिकारत से कन्धे झटक दिये।

"पॉप आर्ट में बकवास कुछ नहीं है। पॉप आर्ट अभी भी फैशन में है," हट्टी-कट्टी एम. चिल्लायी, जब मैं एक कोमल चिड़िया की तस्वीर खींच रहा था। (अफसोस, कि आज के अखबारों की सुर्खियों ने सूचना दी है कि तुम्हारे जलाये हुए देश में पशु-पक्षी बहुत तेजी से नष्ट होते जा रहे हैं। हजारों की तादाद में भैंसें मारी जा रही हैं और जवान हाथियों और रेशमी बन्दरों की नस्ल ही खत्म हो रही है। और इन गानेवाली बुलबुलों की नस्ल भी, जिनमें से एक की तस्वीर मैंने अभी ली है, मैंने दुखी मन से सोचा।)

"खुदा के लिए तुम्हें क्या हो गया है?" पॉप फोटोग्राफर ने पूछा, लेकिन चूंकि लोगों की बेरहम निगाहों से बचने के लिए मैं काला चश्मा पहनता हूँ, इसलिए वह मेरे आँसू नहीं देख सकी। अगर आदमियों का कत्ल न भी किया जाय, तो पशु-पक्षियों और पेड़-पौधों का नष्ट किया जाना भी एक आदमी को शर्म से अपनी आँखें झुकाने के लिए काफी है। मेहरबानी करके, मिस दान थान्ह, वियतनाम को मेरा प्यार देना!

आज्ञाकारी तुम्हारा<br>निशीना शिन्ज़ो जो तुम्हें<br>अपने आँसू भेजता है!

नागासाकी
फरवरी—

प्यारी मिस दान थान्ह,

आज रात तुम कैसा महसूस कर रही हो? अपने मन में? अपने दिल में? मैंने अब दूसरे रास्ते से दफ्तर जाने का फैसला किया है ताकि अखबारों के उस स्टैण्ड के पास से न गुजरना पड़े, जहाँ आज की सुर्खी चीख-चीखकर बता रही थी, 'एक लाख वियतनामी बच्चों को अब तक नापाम बमों से जलाया गया है।" इसलिए अब मैं लम्बे रास्ते से अपने काम पर जाया करूँगा। (मैं नहीं चाहता कि कोई मुझे इसकी याद दिलाये। बिना याद दिलाये ही मुझे काफी याद है।) सौभाग्य से मैं दिन-भर बीजक बनाने में इतना व्यस्त रहा कि मुझे काम के बीच सोचने की फुर्सत ही नहीं मिली।

अब आधी रात गुजर चुकी है। मिस, रात के वक्त मेरा दिमाग भन-भनाती हुई एक फैक्टरी बन जाता है जिसकी मशीनों पर मेरा कोई काबू नहीं रहता। सपने मुझे अपनी थपेड़ों से कभी इधर, कभी उधर फेंकते-पटकते रहते हैं। आज के अखबारों की सुर्खियों ने मुझे अपने बचपन सम्बन्धी दुःस्वप्नों के गर्त में धकेल दिया। आग और आतिश के शिकार को अगर अपनी माँ के कोमल स्तनों के बीच अपना भयानक चेहरा छिपाने को मिल जाय तो वह भावना के स्तर पर जिन्दा बच सकता है। मेरी माँ की बोटी-बोटी उड़ गयी थी, इसलिए मैं जिन्दा नहीं बच सका। यही कारण है कि मैंने अपने बचपन का वह फोटो अपने मृत माँ-बाप के फोटो के साथ वेदी पर रख दिया है। क्योंकि, मैं भी **उस दिन** मर गया था। हाँ, भावना के स्तर पर मैं मर चुका हूं। यह बात मैंने आज तक किसी के आगे कबूल नहीं की। लेकिन तुम, तुम भी तो आग से जली हुई हो, नापाम बम की आतिश से।

जैसा कि मैंने कहा, मैं अपने बचपन के बारे में सपने देखने लगा, खास तौर पर अपने स्कूल के बारे में। काफी दिन खाकी अस्पतालों में रखने के बाद, मुझे स्कूल में भेज दिया गया। लेकिन मैंने इतना वक्त खो दिया था कि मुझे नन्हे-मुन्ने बच्चों के क्लास में रखा गया, जो एक नया अपमान था! क्या ये नन्हे-मुन्ने मुझे सताते थे? हाँ! यही तो वजह है कि इस पैड के कागज पर मेरे पसीने की बूंदें गिरने लगी हैं, मेहरबानी करके उनका ख्याल न करना।

बच्चों के सबसे पहले स्कूल में, मेरा सहपाठी होको (एक भावी जनरल, या शायद, एक राजनीतिज्ञ?) मेरी चीखें निकलवाने के लिए कान के

परदे फाड़नेवाली भयानक एटम-बम की आवाजें निकालकर शरण के लिए फौरन मेज के नीचे घुस जाता था। इस पर क्लास के सभी बच्चे जोर-जोर से हँसने लगते थे। मुझे दूसरे स्कूल में भेज दिया गया, क्योंकि इस दुनिया के होकोओं को दूसरों को सताने से नहीं रोका जा सकता, सिर्फ उनके सताये लोगों को उनके पास से हटाया जा सकता है।

ओह, सच, परनाले के मुँह पर लगी भयंकर आकृति जैसी शक्ल के विद्यार्थी के लिए स्कूल के दिन बड़े दुख भरे होते हैं, इसलिए मेरे मन में एक विचार आया है। जिस तरह वहाँ उनकी यह आदत बन गयी है कि समूची-समूची जन-संख्या को अपने घरों से हटाकर स्ट्रेटेजिक हेमलेटों[1] में रख देते हैं, उसी तरह क्या उन्हें कोई यह करने के लिए राजी नहीं कर सकता कि वे नापाम बमों से जले भयानक शक्लोंवाले लोगों को भी एक जगह बन्द करने के लिए खास किस्म की 'हेमलेटें' बनायें ? नहीं, मनुष्य-कृत परनाले के मुँह पर बनी वियतनामी आकृतियों की कल्पना मात्र बेहद दर्दनाक है। मुझे अब यह खत समाप्त कर देना चाहिए, इससे पहले कि मैं कभी समाप्त ही न कर सकूं, जो तभी होता है जब मन बेकाबू हो जाता है।

प्यारी मिस, मैं बाहर जाकर अपने चेरी के पेड़ से कुछ राहत पाने की कोशिश करूँगा, जो खुद अभी नन्हा बच्चा ही है। वह चाँदनी रात में बड़ा दुबला-पतला दिखायी देता है। वह चाहता है कि मैं उसके पतले तने को अपनी बाँहों में बाँध लूँ। ओह, मेरी हसरत है कि मैं किसी कमजोर लड़की को अपनी अनचाही बाँहों में लपेट लूँ, जिसे उनकी चाह और जरूरत हो।

मैं हूँ तुम्हारा
आज्ञाकारी सेवक
निशीना शिन्ज़ो

नागामाकी
फरवरी—

प्यारी मिस दान थान्ह,

तुम्हारी हालत कैसी चल रही है ? मेहरबानी करके कुछ ठोस भोजन

1. वियतकांग के प्रभाव से देहात की जनता को बचाने के लिए अमरीकनों ने गाँव-के-गाँव खाली करवा के लोगों को खास कैम्पों में अपने सैनिक नियन्त्रण में रखा है। इन कैम्पों को वे 'स्ट्रेटेजिक हेमलेट्स' पुकारते हैं।

भी खाया करो, अगर मिल सके तो। जरूर खाना! बरसों तक मैं तरल भोजन पर जिया हूँ, अपने झुलसे हुए चेहरे के कारण। नतीजा? मैं अब भी एक ऐसी पेन्सिल की तरह पतला नजर आता हूँ, जिसे बहुत बार छीला जा चुका है।

सवेरे मुँह-अँधेरे एक गड़गड़ाती आवाज ने मुझे अपनी चटाई से उछलकर खड़ा होने और अपने हाथों से कान बन्द करने के लिए मजबूर कर दिया। आवाजें मेरी सबसे बड़ी दुश्मन हैं। क्या तुम्हारी भी हैं? लेकिन यह तो अपनी मोटर साइकल पर इस्सा था।

"लाओ, दान के खत मुझे दो, मैन! मैं हवाई अड्डे पर जा रहा हूँ। मैं जरूर ही उससे मिलूंगा और उसे तुम्हारे खत और उसके जले हुए घावों के लिए कुछ अच्छी-सी एण्टी-हिस्टेमाइन दवाएँ पहुँचाऊँगा।"

ओह, कितनी शानदार खबर थी! अब तुम अच्छी हो जाओगी, मिस, बस अगर हिम्मत न हारो और कोशिश जारी रखो तो। इस्सा अपनी मोटर साइकल से उतर पड़ा और उसे मेरे चेरी के पेड़ के सहारे खड़ा करने लगा था कि मैं जोर से चिल्ला पड़ा, "नहीं!" और उसने गुस्से से घूरकर मेरी ओर देखा। मैंने अपना मुँह फेर लिया। वह समझ गया होगा कि मैं उस पेड़ से कितना प्यार करता हूँ। खैर, सूरज निकल आया। उसकी किरणों ने मेरे चेरी के शगूफों को ऐसा गुलाबी बना दिया जैसे एक लड़की के गाल होते हैं और इस्सा का चेहरा स्वप्निल हो गया। फिर उसने जबरन अपना मुँह दूसरी ओर फेर लिया, क्योंकि उसके पास सपनों में खोने का वक्त नहीं था। उसने तुम्हारे खतों को, जो मैं भागकर कमरे से ले आया था, चमड़े के काले जाकेट की जेब में जल्दी से रखा और फिर उछलकर अपनी मोटर साइकल पर सवार हो गया।

"और देर नहीं ठहर सकता! मैन, तुमने उस रात बहुत कीमती सुझाव दिया था। मैंने देखा था कि तुम अपने डार्क-रूम के सिन्क में कैसी तस्वीरें डेवेलप कर रहे थे," इस्सा ने कहा और शर्म से मेरा दायाँ गाल सुर्ख हो गया। (मेरे चेहरे का बायाँ हिस्सा शर्म से लाल नहीं हो सकता। मैं उसमें आलपीन भी चुभो सकता हूँ, लेकिन वह उतना ही संवेदनशील है, जैसी मछली की दूकान पर खरीदी हुई मछली होती है।) "जैसा कि मैं कह रहा था," इस्सा चिल्लाया, "तुम्हारे अपने जले हुए चेहरे और अंगों के उन एन्लार्ज्ड और रंगीन फोटोग्राफों को देखते ही मैंने फैसला कर लिया था कि इस बार वियतनाम पहुँचकर मैं जले और झुलसे लोगों को ही फिलम करने पर अपना ध्यान केन्द्रित करूँगा। तुम देखोगे कि उनका इरादा उन सब लोगों को नापाम बमों से भून डालने का है जो उनके एशियाई साम्राज्य

के पुलिस-निजाम में रहना पसन्द नहीं करते। इसीलिए तो तुम्हें और मुझे खास तौर पर जले और झुलसे लोगों के फोटो खींचने चाहिए और उन तस्वीरों को ज्यादातर लोगों तक पहुँचाना चाहिए, ताकि एशिया के मासूम लोगों को (और इससे बाहर के लोगों को भी) यह बताया जा सके कि अब से आगे उन्हें किस चीज का मुकाबला करना पड़ेगा," इस्सा ने चिल्लाकर कहा। फिर बोला, "मैंन, मेरे पीछे मेहरबानी करके ऐटम-बम से जले और झुलसे लोगों की तस्वीरें खीचना। दर्जनों! बहुत जरूरी है!"

"मैं नहीं खींचूँगा!" मैं तपाक से बोला।

ओह, मिस, मैं कभी किसी झगड़े में नहीं पड़ा और न कभी पड़ूँगा। मैं मर चुका हूँ। मैं जिन्दा हूँ तो सिर्फ आठ साल के बालक की फोटो में जो परिवार की वेदी पर मेरे हमेशा के लिए चले गये माँ-बाप की फोटो के साथ रखी हुई है। हालाँकि यह बात मैं इस्सा से नहीं कह सकता था। अपने उद्देश्य के प्रति उसमें सच्ची लगन है। इस्सा ने जोर नहीं दिया। वह ऐसा अनोखा आदमी है कि उसके रुख से यह भी जाहिर नहीं हुआ कि वह मुझसे तंग आ गया है, सिर्फ उसकी निराशा ही नजर आयी। वह चिल्लाया, "सायोनारा," और फट्-फट् करता हुआ हवाई अड्डे की ओर चल पड़ा।

मैं भागकर अन्दर गया। अपने बनाये हुए उन कला-फोटोग्राफों की ओर गौर से देखता रहा जो मेरे डार्क-रूम की दीवारों को अलंकृत करते हैं और मैंने एक बार फिर इस्सा के सुझाव को "नहीं!" कहा। फिर मैंने अपने सबसे नये फोटो 'लहरें' को सिन्क के पानी में डाला और लहरों को उभरते हुए खड़ा देखता रहा। उन्हें देखकर मुझे कुछ राहत मिली। अभी भी काफी सबेरा था, इसलिए मैं फिर चादर ओढ़कर लेट गया। मैं सिर्फ नींद चाहता हूँ: मौत की नींद। (ओह मैंने तुम्हें **उस गोली** के बारे में लिखा था, लिखा था न? शायद ही कोई दिन ऐसा गुजरता है, जब मैं उस गोली का इस्तेमाल करने की बात नहीं सोचता।)

तुम्हारा आज्ञाकारी
निशीना शिन्जो

□

नागासाकी
फरवरी—

प्यारी मिस दान थान्ह,

यह सोचकर अजब-सा लग रहा है कि मेरा दोस्त इस्सा इस वक्त अस्पताल में सचमुच तुम्हारे पास बैठा बातें कर रहा होगा। (मुझे इस बात का अहसास है कि 'अस्पताल' शायद कोई मामूली-सी झोंपड़ी ही हो

और 'बेड' जमीन पर बिछी चटाई मात्र हो। बड़ा अफसोस है!) तुम्हारे चेहरे का बायाँ हिस्सा उस फोटो में, जो इस्सा ने पिछली यात्रा में खींचा था, बहुत खूबसूरत लग रहा था। वियतनामी लोग नन्हे और कोमल पौधों की तरह होते हैं। शायद, तुम अपने दायें हिस्से में भी खूबसूरत होती जा रही हो। मेरा मतलब है कि जलने से पैदा हुए जख्म शायद अब उतने गहरे नहीं रहे, जितने कि तुम्हें हमेशा के लिए विकृत बनाने की गरज से तुम्हें जलाया गया था।

खैर, म. के साथ मेरी एक अजब किस्म की दोस्ती हो गयी है। इसकी वजह से मेरे प्रति मेरे साथियों का पहला हिकारत-भरा दृष्टिकोण बदल गया है। मेरे सीनियर क्लर्क इवारा-सान ने मुझसे म. का पता पूछा और जब से मैंने उसे म. का पता दे दिया है, तब से इवारा-सान ने मुझे अपने व्यंगवाणों से सताना बन्द कर दिया है। उसने सचमुच मुझे एक सिगार भी पेश किया, जिसे मैं पी नहीं सकता, क्योंकि मेरा मुँह अभी भी दर्द करता है। (इस इवारा ने स्कूल के दिनों के जालिम होको की जगह ले ली है। मेहरबानी करके हवाले के लिए मेरा पिछला खत पढ़ना।) मेरे साथी क्लर्क सबके-सब यही कहते हैं कि एम. 'इन' है—एक मूर्खतापूर्ण शब्द जो न्यूयार्क के उस गाँव के गूंगे इस्तेमाल करते हैं—क्योंकि वह अपने बालों को कभी कंघी नहीं करती। उसकी लम्बी, नंगी टाँगें भी 'इन' हैं, और उसकी 'मिनी' पोशाकें भी। मुझे तो वह बेहद गन्दी और गरीब, लेकिन रहमदिल लड़की नजर आती है।

चूंकि फोटोग्राफी में हम दोनों की दिलचस्पी है, इसलिए जब से इस्सा वियतनाम गया है, हम बिली हो की तरह (जो एक व्यस्त अंग्रेज है) एक साथ फोटो खींचते फिरे हैं। मैं अपनी अल्बम के लिए, जिसे मेरा बॉस मेरे लिए बेचने की उम्मीद करता है, कला-फोटो खींचता हूँ, और एम. अपने पॉप फोटो खींचती है, यानी एक सड़ी हुई सार्डाइन मछली वगैरह के फोटो जिनके पीछे पृष्ठभूमि के लिए वह हमेशा अपने टॉयलेट कागज का बण्डल फेंक देती है। कल शाम को मैंने एक बड़ी खूबसूरत नन्हीं-सी पहाड़ी की फोटो ली. जिसके बारे में उसने कहा कि वह औरत के एक स्तन की तरह लगती थी। न्यूयार्क के बीचोबीच वह गाँव है, जिसका मैं बार-बार जिक्र करता आया हूँ। उसके वाशिन्दे स्तनों और नितम्बों के बारे में पागल रहते हैं. और शायद यही कारण है कि उनका 'हिप्पी' नाम पड़ गया है। इस्सा की यह दोस्त उस गाँव में कई साल तक रही थी, और वहाँ ही लोग उसे **एम**. नाम से पुकारने लगे थे। अब उसने अचानक मेरे गिर्द अपनी बाँहें डाल दीं, और मुझे लगा जैसे किसी ने मेरी गर्दन को अपनी विशाल टाँग में

दबोच लिया हो।

"क्या हम लोग इसी तरह दूर-दूर बने रहेंगे, शिन्ज़ो ?" उसने पूछा।

"तुम्हारा मतलब ?" मैंने पूछा।

"वेल, इस्सा जैसे स्क्वायर लोगों से मैं ऊब गयी हूँ। वह एक उद्देश्य के पीछे दीवाना हो गया है। तुम एक कलाकार हो, ईसा की कसम, बोलो, क्या इरादा है ?"

कैसा इरादा ? किस चीज का इरादा ? मेरी समझ में कुछ नहीं आया, लेकिन मैंने अपने जापानी शिष्टाचार के अनुसार उसका धन्यवाद किया।

"तुमने मुझे दोस्त मानकर मुझे इज्जत बख्शी है, एम. मिचीको दूगाँ। यकीन रखो कि मैं भी तुम्हारी बेहद इज्जत करता हूँ।"

"मेरे कहने का यह मतलब बिल्कुल नहीं था," एम. ने तपाक से कहा और मेरे गले से अपनी बाँह हटाते हुए वह जैसे अचानक गुस्से से तमतमा गयी। इसमें शक नहीं कि मैंने उसे नाराज कर दिया था। सच तो यह है कि इस हट्टी-कट्टी पश्चिमी लड़की को शारीरिक रूप से स्वीकार करना मुश्किल काम है, क्योंकि सभी जापानियों की तरह, मुझे भी दुबली-पतली लड़कियाँ ही प्यारी लगती हैं जिनके काले बाल मेरी चेरी के पत्तों जैसे हों। "मैं कल तुम्हारे यहाँ नहीं आऊँगी, शिन्ज़ो" एम. कहती गयी, उसकी आँखों से चिनगारियाँ फूट रही थीं। "मैं नारा जा रही हूँ, कुछ मन्दिरों की उल्टी तस्वीरें खींचने के लिए। गुड बाई !" उसने कहा और अपनी फटी चप्पलों को घसीटते हुए, जो हमेशा पैरों से निकल-निकल जाती थीं, वह चली गयी।

मैं अपने घर लौट आया और मैंने रात के खाने में कुछ ठण्डी मछलियाँ खायीं। मिस, मैं व्यक्तिगत सम्बन्ध जोड़ने में कामयाब आदमी नहीं हूँ। मुझे इसका कभी तजुर्बा नहीं हुआ।

तुम्हारा आज्ञाकारी
निशीना शिन्ज़ो

☐

नागासाकी
फरवरी ---

प्यारी मिस दान थान्ह,

कल एम. के साथ जो दुर्भाग्यपूर्ण अनुभव हुआ था, उसने मेरी जिन्दगी का वह दिन आँखों के सामने लाकर खड़ा कर दिया, जिसको मैं सोचता था, कभी जाहिर नहीं करूँगा। यह बात अब तुम्हें क्यों बता रहा हूँ ? क्योंकि

मुझे यकीन है कि अगर तुम इस्सा की दी हुई दवाओं का लगातार इस्तेमाल करती रहोगी तो तुम्हारे जले और झुलसे हुए अंग फिर ठीक हो जायेंगे। वे लोग वियतनाम में भी राक्षस पैदा कर रहे हैं, उसी तरह जैसे उन्होंने जापान में पैदा किये थे, संयोगवश नहीं, बल्कि एक निश्चित इरादे से। जरा सोचो तो ! और मिस, मेरी तरह मत बन जाना।

वह वसन्त का एक दिन था—दस साल पहले--और जापान का वसन्त हर आदमी के शरीर में संगीत भर देता है। और मेरा शरीर तोकी यामा-शीता के लिए नगमे गुनगुना रहा था, जो प्रोफेसर निचीवारा की लैबॉरेट्री असिस्टेण्ट थी, जिनके यहाँ मैं बर्तन माँजकर अपनी रोजी कमाता था। तोकी भी, मैं यहाँ स्पष्ट कर दूँ, मेरी ही तरह ऐटमी विध्वंस से बचे हुए लोगों में से थी। एम. की तरह वह भी मुझे अपना दोस्त मानती थी, जिसके कारण मेरी सन्दियाँ खुशगवार हो गयी थीं। काश, उस साल अगर वसन्त आना ही नहीं तो कितना अच्छा होता !

"क्या तुम संगीत सुनना चाहोगी ?" मैंने लैबॉरेट्री में अपने ट्रान्जिस्टर का बटन दबाते हुए तोकी से पूछा। "तुम मेरे दिल की कली हो।"

लेकिन यह लड़की कोई अछूती कली नहीं थी। उसकी बाँहों पर झुलसने के छोटे-छोटे दाग थे, शायद इसी कारण मेरा ख्याल था कि वह मुझसे स्नेह का बर्ताव करती थी। (कभी-कभी मैं उम्मीद करने लगता था कि उसके दिल में मेरे प्रति और किस्म की भावनाएँ भी हैं।) खैर, हम संगीत की धुन सुनने लगे, वह मुस्करायी और "ला-ला-ला" के रूप में उसे गुनगुनाने लगी और मैंने उसकी कमर में अपनी बाँह डाल दी। मैंने उसे पहले कभी नहीं छुआ था। इस पर वह जोर से चीख पड़ी। सफेद लबादा पहने हमारा प्रोफेसर फौरन अपने कमरे से निकला और उसने एक ही नजर में सबकुछ देख-समझ लिया।

"क्या तुम्हें अपने ऊपर शर्म नहीं आती, निशीना ?" वह पागल की तरह चिल्लाया। उसने अपना मोटी-मोटी उभरी नसोंवाला हाथ हिला-हिलाकर मुझे धमकाया। (मुझे बाद में पता चला कि तोकी के साथ उस खूसट बुड्ढे का 'मामला' चल रहा था।) "यह सोचना भी कि तुम्हारे जैसा बदसूरत चेहरेवाला आदमी अपने दिल में इश्को-मुहब्बत के ख्वाब देख सकता है--कितनी बेहूदा बात है।" प्रोफेसर ने मजाक उड़ाया। इसलिए मैंने निश्चय किया कि मैं उसकी हत्या करूँगा।

मुझे मालूम था कि वह जहर की गोलियाँ कहाँ रखता था, और मैंने कसम खायी कि एक गोली मैं उसकी कूको में डाल दूँगा। यह जड़ी-बूटियों-वाली चाय होती है, जो वह अपना पुंसत्व बढ़ाने के लिए खुद काढ़कर पिया

करता था। "निकल जाओ !" वह गरजा ! मैं निकल तो गया, लेकिन **उस गोली** को चुराने के बाद ही।

प्यार की हसरतों के साथ-साथ एक गहरी मायूसी भी उस शाम वसन्त से गरमाये मेरे अठारह-साला खून में तूफान उठाती रही। चाँद चढ़ आया और मैं भी एक खास किस्म के कोठे पर चढ़ गया और मैंने वहाँ की मदाम को फीस चुका दी।

"मेहरबानी करके ऊपर की मंजिल में चले जाओ," वह मुस्करायी।

"ओह, शुक्रिया, मदाम," मैंने अदब से झुककर कहा।

लेकिन, मिस, उस दिन एक बार फिर मुझे बेरहमी से दुतकार दिया गया। मदाम ने जिस जवान लड़की को मेरे लिए चुना था, वह मुझे देखते ही जोर से चीख पड़ी। "**निकल जाओ !**" वह चिल्लायी। उसने वह रकम छोड़ देना, जिसकी उसे सख्त जरूरत थी, बेहतर समझा, बजाय इसके कि वह ऐटम बम की आग से जले-झुलसे परनाले के मुँह पर बनी आकृति जैसे आदमी के साथ सम्भोग करने के लिए मजबूर की जाय। यही वह क्षण था जब मैंने खुद **उस गोली** को खाने का फैसला किया था। मैं आँधी की चाल से अपने कमरे पर लौटा और अपनी चटाई पर धम् से गिर पड़ा। फिर मैंने गोली उठाकर अपने मुँह की ओर बढ़ायी···

लेकिन उसी वक्त कमरे के खुले हुए स्लाइडिंग दरवाजे से एक कीड़ा भिनभिनाता हुआ अन्दर आ गया। दरअसल वह साकार सौन्दर्य ही था। कीड़े के मूँछ-नुमा स्पर्श-सूत्र खालिस सुनहरे थे। उसकी खूबसूरत काली आँखों के बीच भी एक सुनहरी रेखा थी। उसके पंख मलमल के थे ! और मैंने महसूस किया कि परनाले के मुख की आकृतिवाले लोगों के मेरे संसार के बाहर सौन्दर्य की एक और दुनिया भी बसती है। जिस हाथ में मैं गोली पकड़े हुए था, वह फर्श पर गिर गया। (यही क्षण था, जब से मैं जिन्दगी-भर के लिए सौन्दर्य का पुजारी बन गया, ऐसा पुजारी कि घास की कोंपल के आगे भी जैसे इबादत में घुटने टेककर बैठने को मजबूर हो जाता हूँ।)

और अब मैं फिर उस आग्रह को दोहराना चाहता हूँ, जो मैंने इस खत के शुरू में किया था : कि तुम मेरी तरह की न बनना ! जानती हो, कि हम नौजवान लोग प्यार मोहब्बत के बगैर जिन्दा नहीं रह सकते। लेकिन परनाले के मुँह पर बनी आकृतियों को तो इस तरह ही जिन्दा रहना पड़ेगा, कोई भी 'ऐटमी युद्ध के विकृत चेहरों' को देखना पसन्द नहीं करना और न 'नापाम बम के विकृत चेहरों' को ही। ये चेहरे सचमुच बहुत कुरूप होते हैं, हमें कबूल करना चाहिए। इन चेहरों को देखकर शायद लोगों को एक

बेचैनी महसूस होती है, शायद अपराध की भावना भी महसूस होती है, खास तौर पर उन्हें जिनके हवाई चालकों को ये अत्याचार करने के लिए मजबूर किया गया था। (यह शब्द 'मजबूर किया गया' बहुत महत्त्वपूर्ण है। व्यक्तियों के रूप में हवाई चालकों, सैनिकों आदि से मैं नफरत नहीं करता. सिर्फ उनकी सरकारों से नफरत करता हूँ।) इसमें ताज्जुब की बात नहीं है कि वह सरकार वियतनाम के झुलसे और जले हुए लोगों को बाहर जाने का वीसा नहीं देती। वे नहीं चाहते कि दुनिया यह देख सके कि इस धरती के सबसे मासूम लोगों के साथ उन्होंने क्या-क्या किया है— उनके बच्चों और जवान लड़के-लड़कियों के साथ।

सदा ही
तुम्हारा आज्ञाकारी
निशीना शिन्ज़ो

□

नागासाकी
मार्च—

प्यारी मिस दान थान्ह,

मार्च का महीना शुरू है और आज मुझे इस्सा का एक तार मिला है। अब मुझे जल्द ही तुम्हारे समाचार भी मिल जायेंगे, क्योंकि हांग-कांग से भेजा गया उसका तार इस प्रकार था : "शुक्रवार को पहुँच रहा हूँ। ऐटम-बम से जले-झुलसे लोगों की तस्वीरों की सीरीज पूरी कर रखना, जैसा मैंने आग्रह किया था। यह बिल्कुल जरूरी है।"

अफसोस कि मैं अपने दोनों दोस्तों को निराश कर रहा हूँ, अपने एक-मात्र दोस्तों को ही ! इस्सा ने जिन फोटोग्राफों के लिए 'आग्रह' किया था, मैंने उनको शूट करना भी शुरू नहीं किया है, क्योंकि मैं अ-प्रतिबद्ध ही रहना चाहता हूँ, मरा हुआ व्यक्ति जो हूँ। रही रहमदिल एम. की बात, तो मुझे खुलकर उसके आलिंगन के लिए कृतज्ञता दिखानी चाहिए थी, न कि सिर्फ जापानी ढंग से सर झुकाकर। उसकी दोस्ती मुझे खुशगवार लगती है और इस कारण ही हालाँकि वह आजकल नारा शहर में है, मेरे ओठों पर एक मुस्कान खेल गयी है (जो मेरे साथ होनेवाली एक अनहोनी घटना है।)

"हा ! यह प्रेमियों का झगड़ा है !" इवारा-सान ने ताना दिया, जब मैंने अपने दफ्तर में आज दाखिल हुआ। "तुम्हारी गोरी प्रेमिका तुम्हें छोड़कर चली गयी ? नारा में जाकर ठहरी है, क्यों ?"

"तुम्हें कैसे मालूम हुआ ?"

"ओह, एक नन्हीं-सी चिड़िया से—मतलब यह कि उसके होटल की टेलीफोन ऑपरेटर से। एक उदार समारियाई[1] का रोल अदा करते-करते थक गयी थी, क्यों?" मेरे झुलसे चेहरे पर आँखें गड़ाकर उस खूबसूरत नौजवान ने व्यंग्य किया।

मिस, कभी न कभी तो हर आदमी दूसरों की खराबी पर अपनी नजर गड़ाता ही है। लोगों का ख्याल है कि यह एक अचेतन क्रिया है। लेकिन मेरी राय में, यह परपीड़न की एक सचेतन क्रिया है (इस नगर के हम लोग इस बात को बखूबी जानते हैं), और मेरी आँखों से अपमान के आँसू निकलकर मेज पर रखे बीजकों पर टप-टप गिरने लगे।

"नारा, कितनी बेकार यात्रा थी!"

वेल, पिस्तौल की गोली की तरह यह एम. की आवाज थी। मैं उछलकर खड़ा हो गया, लेकिन उसने अपनी मुस्कान तो इवारा-सान की ओर फेंकी थी। मेरी हैसियत तो हमेशा के लिए मिट्टी में मिल जाती, अगर मनमौजी एम. ने आकर मेरी बाँह न पकड़ ली होती। "चलो शिन्ज़ो!" वह चिल्लायी।

"तुम इतनी जल्दी क्यों वापस आ गयीं?" मैंने सड़क पर उससे पूछा, इस उम्मीद में कि वह कहेगी कि हमारी नयी दोस्ती के कारण।

"नारा में अमरीकन छोकरे भरे हुए थे, जिनके माथों पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था—'मु-ह-ब्ब-त' और वे बगल में जेन[2] की किताबें दबाये घूम रहे थे, इसलिए मैं जल्दी से वापस आ गयी" एम. ने हँसते हुए कहा।

मैंने उससे कहा कि मेरे प्रति उसके दिल में जो स्नेह की भावना है, उसके लिए मैं बहुत कृतज्ञ हूँ, लेकित दुर्भाग्य से उसने अपने रँगे हुए बालों को झटका देते हुए बात अनसुनी कर दी।

"नारा में मेरी एक हिप्पी से मुलाकात हुई, जो वहाँ आत्मसाक्षात के लिए गया था," उसने कहा। "उस लड़के ने ही मुझे बताया कि शायद अपनी अपराध-भावनाओं के कारण ही मैंने अपने आपको तुम्हारे ऊपर लादने की कोशिश की होगी। जानते हो कि सारे वक्त जब तुम अपना जला और झुलसा चेहरा लिये गलियों में भटकते फिरते थे, मैं न्यूयॉर्क के गाँव में नाच-गाने में मशगूल मजे लूट रही थी। उस अमरीकन हिप्पी ने कहा कि फ्रॉयड के ख्याल में दया बिल्कुल बकवास चीज है और मुझे

1. फिलिस्तीन के नगर समारिया के निवासी, जो दूसरों की मदद करने के लिए प्रसिद्ध हैं।
2. बौद्धमत की एक जापानी शाखा।

फ़ौरन इसको अपने दिल से निकाल देना चाहिए।"

"मुझे अब वापस जाना चाहिए," मैंने झूठ बोला। फिर जल्दी से कहा कि इस्सा शुक्रवार तक उसके पास लौट आयेगा। "वह अपना मिशन पूरा करके लौट रहा है," मैंने उससे कहा। इस पर उसे हँसी आ गयी।

"इस्सा और उसका मिशन ! फ्रॉयड का कहना है कि मिशन और आदर्श सब बिल्कुल बकवास हैं। नहीं, मुझे तो इवारा-सान पसन्द है ! जानते हो, जब मैं बाहर गयी थी, वह रोज मेरे होटल में टेलीफोन करके मेरे लौटने के बारे में पूछता था। अच्छा, गुड बाई, शिन्ज़ो। फिर मिलेंगे," वह अपने अलमस्त अन्दाज में चिल्लायी।

लेकिन मैं अपनी जगह पर ही खड़ा काँपता रहा। ओह, मैंने उसी वक्त **वह गोली** खा लेने का विचार किया। अन-जले लोगों की दुनिया में मैं बिल्कुल असफल साबित हुआ था, और गोली खाना इस तथ्य को कबूल करने का पहला कदम होता। लेकिन इसके बजाय, मैं सुनसान गलियों में रात-भर चक्कर काटता फिरा, जैसा कि मैं बरसों से करता आया हूँ। मिस, मैं चाहता हूँ कि इस्सा यह खबर लेकर आये कि नापाम बम से जले और झुलसे तुम्हारे अंगों के जख्म अच्छे होने लगे हैं क्योंकि मैं यह बर्दाश्त नहीं कर पाऊँगा कि तुम भी रात के सन्नाटे में अपनी पीड़ा लिये अकेली घूमती फिरो।

तुम्हारा आज्ञाकारी
निशीना शिन्ज़ो

—

नागासाकी
मार्च, 1967

प्यारी मिस दान थान्ह,

इतवार का दिन मैंने कछुवों की तस्वीरें खींचने में बिताया। यह फैसला कर लेने के बाद कि मैं नॉर्मल लोगों की दोस्ती के काबिल नहीं हूँ, मैं अपने जैसे अनेक ऐटम-प्रेतों की तरह फिर अकेलेपन की जिन्दगी में लौट आया हूँ। कल मैं बहुत सुरक्षित महसूस कर रहा था, जब मैं एक वेद-वृक्ष के नीचे लेटा था, जिसकी टहनियों ने मुझे लोगों की नजरों से छिपा लिया था।

"निशीना-सान !"

मैंने पत्तियों के बाहर सिर निकालकर झाँका और हेलो ! सामने मेरा बॉस था जो चुस्त कदमों से सीधी कमर करके टहल रहा था। न्यूयॉर्क फोटो एम्पोरियम, इन्कार्पोरेटेड का मैनेजर, हाटा-सान ताजी हवा और

कसरत का दीवाना है।

"क्या अपने घास के चप्पे पर मुझे भी जगह दे सकते हो, बेटे ?" उसने पूछा और मेरे नजदीक घुटनों के बल बैठ गया। "आह ! तुम तो एक कछुवे के बच्चे की तस्वीर ले रहे हो ?"

"नहीं, बच्चे की नहीं, एक बूढ़े कछुवे की, हाटा-सान ! मेहरबानी करके देखिए न, उसकी गर्दन में कितनी झुर्रियाँ हैं और उसकी सलवटें हरे रंग की हैं। मैं सुबह के सात बजे से उसकी तस्वीरें खींच रहा हूँ," मैंने अपने आदरणीय बॉस से कहा। उसने शाबाशी देते हुए कहा कि मेरी खूबी इस बात में थी कि मैं बड़ी मेहनत और सब्र से अपनी तस्वीरों में सूक्ष्म-से-सूक्ष्म डिटेल पकड़ने की कोशिश करता हूँ।

"मैं खास तौर पर तुम्हारे लिये हुए पुराने पत्थरों के क्लोज-अप्स का बड़ा प्रशंसक हूँ," वह बोला। "निहायत शर्म की बात है कि तुम्हारे जैसे कलाकार को दिन-भर बीजक तैयार करने पड़ते हैं। लेकिन मुझे पूरी उम्मीद है कि तुम्हारे प्राकृतिक दृश्यों के अल्बम को छापने के लिए मैं जल्द ही कोई प्रकाशक तलाश कर लूँगा।"

"मछली की सैण्डविच खायेंगे ?"

मिस, यह सोचकर मैं इतना खुश था कि अपनी सफलता की सम्भावना पर अपनी खुशी को (जो बिल्कुल बेसूद बात है क्योंकि मैं मरा हुआ हूँ) छिपाने के लिए उस वक्त मेरे पास कहने को कुछ था। मैं जो खाना लाया था उसमें से हम दोनों ने मिलकर दोपहर का खाना खाया। सैण्डविच चबाते हुए, मैंने उसको बताया कि जिन दिनों मैं अनाथालय में था, मैं पाँच साल तक लगातार पत्थरों का अध्ययन करता रहा था।

"मेरे साथ कोई लड़का खेलने को राजी नहीं था, हाटा-सान ! इसलिए मैं अकेला बैठा हर चीज को गौर से देखता रहता था, जिसके कारण मैं अब जानता हूँ कि हर चीज कैसी दिखती है," मैंने उसको बताया।

फिर मैं चुप हो गया, क्योंकि मुझे लगा कि मेरा बॉस यह बात इतनी गहरी दिलचस्पी लेकर सुन रहा था कि उसका बायाँ कान फड़कने लगा था।

"तुम्हारी कहानी ऐटम-बम से जले और बहुत-से नौजवानों की भी कहानी है," उसने मुझे बताया। "मैं जो बात कह रहा हूँ, उसे अच्छी तरह जानता हूँ।" फिर उसने बताया कि वह सारी जिन्दगी कोरिया में रहा था, लेकिन युद्ध के बाद और सब जापानियों की तरह उसे भी अपने देश लौटने के लिए मजबूर होना पड़ा। उनमें से अधिकतर लोगों की तरह वह भी हमारे इस विध्वस्त शहर में आया, क्योंकि उस वक्त यहाँ बहुत-सी

जगह खाली पड़ी थी और उसने खँडहरों के बीच अपने लिए एक घर का निर्माण किया। (कितनी अजब कहानी थी ! मैं बड़ी उत्सुकता से सुन रहा था।)

"वेल, मेरे बच्चे, एक रात को जब मैं अपने घर वापस लौट रहा था, मेरे ऊपर ऐटम-बम से जले-झुलसे भूख के मारे अनाथों का झुण्ड टूट पड़ा और उन्होंने मेरे पास जो भी था, यहाँ तक कि बनियान-जाँघिया तक भी छीन लिया। इस बीच एक पुलिसवाला आ गया। उसने जू-जित्सू का इस्तेमाल करके भूख से पागल उन ठगों को मार भगाया और उनके लीडर की मुक्कों से पिटाई की। इस पर उसका एक साथी पुलिसवाले को पीटने लगा। हा ! पुलिसवाले और मैं उस जंगली लड़के को पकड़कर जेल पहुँचा आये। जानते हो यह खूँखार चीता कौन था ?"

मैंने सिर झटका। कयास भिड़ाने में मैं बहुत तेज नहीं हूँ।

"अरे—इस्सा था !" मेरा बॉस चिल्लाया। "अफसोस है कि मैंने तुम्हें यह बात बतायी। उसके बाद इस्सा ने जेल में कई साल काटे।"

"जेल में, या खुदा ! जुर्म क्या था ?"

"ओह, कत्ल !"

मिस, अपने मन को सुस्थिर करने के लिए मैंने अपने कछुवे को कच्ची मछली का एक निवाला दिया। फिर, नये सिरे से कान लगाकर मैंने सुना कि इस्सा जिस दिन जेल से छूटा, मेरा बॉस उससे बाहर फाटक पर ही मिला और इससे पहले कि तुम जैक रॉबिन्सन का उच्चारण कर सको, उसने इस्सा को अपनी छोटी-सी, लेकिन खूब चल रही कैमरा की दुकान में नौकरी देने का ऑफर किया। तब से मेरे बॉस ने और भी बहुत-से ऐसे अनाथ लोगों की मदद की है (जिनमें एक मैं भी हूँ), उसके बाद भी करता आया है जब वह न्यूयार्क फोटो ऐम्पोरियम, इन्कार्पोरेटेड का मैनेजर बन गया। लेकिन अब भूख से पीड़ित वियतनामी बालकों के जंगली झुण्डों के बारे में वह बहुत चिन्ता करने लगा है।

"जल्द ही उनकी जेलें बच्चों की हत्या करनेवालों और भूखे चोरों से भर जायेंगी, ठीक उसी तरह जैसे यहाँ हुआ था। अफसोस ! कितनी गड़बड़ हालत हो गयी है। हॉप !" मेरा बॉस चिल्लाया और उछलकर उठ खड़ा हुआ और अपने नित्य नियम के मुताबिक कसरत करने लगा। एक, दो, तीन। इन सब मुसीबतों का सामना करने के लिए सेहत ठीक रखनी चाहिए। गुड बाई !" वह चिल्लाया और तेजी से चला गया।

वेल, मेरा इतवार इस तरह गुजरा, मिस ! काफी खुशगवार ढंग से बीत गया, क्योंकि कच्ची मछली का निवाला अपने दाँतों के बीच दबाकर

वह कछुआ अपनी चाल से बढ़ता हुआ मेरे पास आया और मेरी चप्पल से अपनी गर्दन रगड़ने लगा। मेहरबानी करके अपने मन को सान्त्वना देने के लिए कोई जानवर तलाश कर लो। एक कीड़ा भी, एकाकी व्यक्ति को सान्त्वना दे सकता है।

मैं हूँ तुम्हारा<br>
आज्ञाकारी<br>
निशीना शिन्ज़ो

□

नागासाकी<br>
मार्च---

दान,

तुमने कहा है कि मैं तुम्हें सिर्फ 'दान' कहकर पुकारूँ और मैं थैंक-यू की भावना में डूबा हुआ सातवें स्वर्ग में पहुँच गया हूँ। थैंक-यू। (लेकिन मुझे सिलसिलेवार बात करनी चाहिए, जैसा कि बिजनेस पत्र-व्यवहार की पाठ्य-पुस्तक में नसीहत की गयी है। अब मैंने एक सैकेण्ड-हैण्ड पुस्तक खरीद ली है, जिसका नाम है '**पत्र-लेखन सहायक**', इसलिए अब भविष्य में मैं तुम्हें बिजनेस-शैली के पत्र जहाँ तक मुमकिन है, कम ही लिखा करूँगा।)

3 तारीख के खत का हवाला देते हुए, यह बताना जरूरी है कि मैं अपने इस निश्चय पर **कायम नहीं** रह सका कि किसी से मिलूंगा-जुलूंगा नहीं और खुद अपने तक ही सीमित रहूँगा, जैसाकि जिन्दगी-भर करता रहा हूँ। क्योंकि मेरे अकेलेपन को तोड़कर इस्सा आ धमका।

"साके की बोतल है, भले आदमी ?"

मैं हक्का-बक्का रह गया। दोस्त इस्सा कम-से-कम दस साल बुढ़ा गया था।

"शायद नहीं," मुझे उत्तर देना पड़ा।

"तो, जाकर साके की बोतल **ले आओ**।"

ओह, तो इसका मतलब **यह** होगा कि मुझे पड़ोस की बार में जाकर अपनी शक्ल दिखानी पड़ेगी। कितनी परेशानी की बात थी ! लेकिन इस्सा के चेहरे को एक बार गौर से देखते ही मैं भागा-भागा बाहर गया।

"साके की एक बोतल देना !" मैंने बारमैन से कहा।

"**यह आदमी** कहाँ से आ टपका ? चाँद से ?" मेरे जले हुए चेहरे के दागों को घूरते हुए एक शराबी जैण्टलमैन ने व्यंग्य किया।

इस रोमाण्टिक बार में जाने की मैं हमेशा से तमन्ना करता रहा हूँ,

जहाँ की लाल्टेनें नीली हैं और जहाँ समीसन संगीत बजता है। अब मेरी एक ही तमन्ना थी कि किस तरह यहाँ से बाहर निकल जाऊँ! लेकिन हजरत बारमैन ने मेरी बोतल को कागज में लपेटने में कई युग लगा दिये। मेरा मतलब है कि मुझे लगा कि जैसे कई युग लगा दिये थे।

"मैं साके की बोतल ले आया, इस्सा," मैंने पुकारकर कहा।

लेकिन इस्सा कहाँ था? अपनी वहशत भरी आँखें लिये रात के अँधेरे में कहाँ गायब हो गया था? एक सरसराहट सुनायी दी और मैं लपककर अपने डार्क-रूम में गया। वहाँ मैंने बोतल खोलकर इस्सा को दी। वहाँ खड़ा वह किसी फिल्म को टकटकी बाँधे देख रहा था, जिसे वह अपनी यात्रा से लेकर आया था। वह उस फिल्म को सिन्क में डेवेलप कर रहा था।

मैंने भी नजर झुकाकर उस फिल्म की ओर देखा और जल्दी से अपने मुँह के आगे हाथ रख लिया। ओह, ओह! मैंने अपनी चीख को गले में ही दबाकर और नजदीक से उस फिल्म को देखने की कोशिश की। वह तस्वीरें खूबसूरत जवान लड़कियों की थीं, जिनकी छातियों और पेटों पर नापाम बम के जख्म रिस-रिसकर सड़ने लगे थे।

"हाँ, जनाब! यही तो है! यही तो वियतनाम है! शराब पीकर बेहोश हो जाओ, भले आदमी! पीकर बेहोश हो जाओ, मैं कहता हूँ! मेरे कैमरामैन ने पीकर बेहोश होने से इन्कार कर दिया, इसलिए वह पागल हो गया। वह और बहुत सारे लोगों की तरह, जिनमें अमरीकी सैनिक भी हैं, पागल हो गया है, और मुझे मजबूर होकर उसे टोकियो में अपने घरवालों के पास छोड़ आना पड़ा। वे लोग दिन-रात उसकी देखभाल और निगरानी कर रहे हैं। वह अपनी विक्षिप्त हालत में उसी तरह अपना अंग-भंग करने की कोशिश करता है, जिस तरह अंग-भंग किये हुए लोग उसने वियतनाम में देखे थे। जरा इस फोटो को देखो।"

मैंने वैसा ही किया।

"मेहरबानी करके साके की बोतल मुझे भी दो," मैं जल्दी से फुसफुसाया।

तो, दान, काफी रात गये जब हमने तस्वीरों को डेवेलप कर लिया और साथ ही साके की बोतल को भी खत्म कर लिया तो मैंने पूछा:

"मिस दान थान्ह कैसी है?"

"उसने कहा है कि तुम उसे सिर्फ दान कहकर पुकारा करो और यह कि तुम उसे खत लिखना जारी रखो। वह तुम्हें पसन्द करती है और तुम्हारे खतों की वजह से वह अब उतना अकेलापन नहीं महसूस करती। 'शिन्ज़ो के और मेरे जलने के दाग एक जैसे हैं। हम दोनों जुड़वाँ बच्चे हैं।

अ-समान जुड़वाँ बच्चे,' उसने मुझसे अपनी स्कूली अंग्रेजी में कहा।"

"और उसकी—सेहत कैसी है?"

इस्सा ने सिन्क के पानी में तैरता हुआ एक और नेगेटिव दिखाया।

"यह तो दान नहीं है?" मैं चिल्लाया।

"नहीं। लेकिन यह सत्रह साल की एक और लड़की है, नापाम बम का तोहफा पानेवाली। आज के दिन तक वे इस तरह के लाखों शहीद वियतनाम में पैदा कर चुके हैं जिनके चेहरे जलकर भयंकर हो गये हैं। भले आदमी, अपना मुँह मत फेरो। फोटो की ओर देखो, मैन। हे! लड़खड़ाओ नहीं। यह लो! साके की बोतल में अभी एक घूंट बाकी है।"

दान, मैं उस फोटो को खड़ा देखता रहा। यही वक्त था जब मैंने ऐसी तस्वीरों से अपनी नजर कभी न हटाने की कसम खायी। इस्सा ने कहा, और मैंने उसे कभी इस अन्दाज में बोलते हुए नहीं सुना था :

"भाई, आज रात को मैं तुम्हें अकेला छोड़कर नहीं जाऊँगा। तुम्हारी चटाई पर मैं भी सो जाऊँगा।"

इस्सा ने मुझे भाई कहकर पुकारा। मुझे? गुडनाइट दान। गुडनाइट, मेरी जुड़वाँ।

तुम्हारा, शिन्ज़ो

नागासाकी
मार्च—

दान,

एन्टी-हिस्टेमाइन की गोलियों के बारे में मैंने हाल के एक खत में लिखा था। मेरा तुमसे आग्रह है कि इस्सा तुम्हें इस दवा के जो पैकेट दे आया है, उन्हें दूसरे जख्मी लोगों में न बाँट देना। हरेक को सबसे पहले खुद अपना ख्याल करना चाहिए! बिना बाँटे हुए भी जिन्दा रह जाना काफी मुश्किल है, लेकिन अगर तुम अपना आखिरी बटन या एण्टी-हिस्टेमाइन की आखिरी गोली भी दूसरों से बाँटकर जिन्दा रहना चाहो, तो समझ लो कि तुम तो खत्म हो जाओगी। और तुम्हें तो अपने जख्म जरूर ही ठीक कर लेने हैं, दान! आखिर क्यों? क्योंकि इस कागज पर जिस शहर का नाम लिखा है उसमें ऐसे लोगों की एक बड़ी तादाद है जो जलने-झुलसने के बाद दागों से पैदा अपनी भयानक कुरूपता के कारण कोई नौकरी नहीं पा सकते, इसलिए उन्हें झोंपड़ियों में सूअरों की तरह रहना पड़ता है, और वे क्या खाकर जिन्दा रहते हैं—खैर, मैं तुमको यह सब नहीं बताऊँगा कि उस नर-संहार के बाईस बरस बाद भी वे लोग क्या खाकर जिन्दा चले आ

रहे हैं।

आज मैं बीजकों के तैयार करने में अपना ध्यान नहीं लगा पाया। मैं अपने हाथों में सर पकड़े बैठा रहा और मेरे साथी क्लर्क आपस में चटखारे ले-लेकर मजाक करते रहे। उनका ख्याल था कि मैं एम. मिचीको दूपाँ के गम में डूबा हुआ था, क्योंकि उसे आजकल हमारा चीफ क्लर्क रोज़ पिंक ड्रैगन रेस्त्राँ में खाना खिलाने के लिए ले जाता है। अजब बात है कि उनके व्यंग्यों का मुझ पर कोई असर नहीं हुआ। कल रात मुझे कुछ हो गया, जब मैं तुम्हारे देश में होनेवाली बर्बादी के फोटो देख रहा था।

"निशीना-सान !"

दान, मैं उछलकर खड़ा हो गया। हमारा बॉस, हाटा-सान, जो पिछले इतवार को मेरे साथ उस बूढ़े कछुवे को देखता रहा था, मुझे बुला रहा था। मैंने झुककर आदाब किया।

"मैं तुम्हें एक मौका और दे रहा हूँ, निशीना-सान," उसने चिल्लाते हुए कहा, जबकि सब लोग कान लगाकर सुनने लगे थे। "मेरे सीनियर क्लर्क ने अभी बताया है कि तुम अक्सर गैर-हाजिर रहते हो। माना कि तुम्हारी सेहत ठीक नहीं है, लेकिन मैं यह बर्दाश्त नहीं कर सकता कि तुम अपने हाथों में सर पकड़कर बैठे आराम करते रहो।"

यह सब बातें, जैसाकि बाद में मेरी समझ में आया, वह मेरे साथी कर्मचारियों को सुनाने-भर के लिए कह रहा था। लेकिन फिर उसने आवाज धीमी करके, ताकि वे लोग न सुन सकें, कहा :

"मुझे तुम्हारी स्थिति का पता है, मेरे बच्चे ! आह, ऐटमबम ने तुम लोगों का अभी तक पिण्ड नहीं छोड़ा ! तुम अपाहिज लोग हो। तुम्हें इस अपाहिज अवस्था में इसलिए जिन्दा रखा गया ताकि उन लोगों को, तुम्हें एक मिसाल की तरह पेश करके बताया जा सके कि उनका भी यही हश्र होगा अगर वे समर्पण से इन्कार करते रहेंगे। हा ! तुम सब ऐटमबम के शिकार लोग तो सिर्फ प्रयोग के लिए इस्तेमाल किये जानेवाले चूहों की तरह हो, इससे ज्यादा कुछ नहीं," उसने कहा। "नये तजुर्बों के लिए नये चूहों की जरूरत है, अब चूंकि ऐटम-बम के अपाहिज पुराने पड़ गये हैं। नापाम एक नया अस्त्र है, जिसका इस्तेमाल आसान है। उनका विश्वास है कि वे सारे एशियावासियों को डरा सकते हैं और उन पर अपना आर्थिक कब्जा जमा सकते हैं। इसीलिए वियतनाम की जंग छेड़ी गयी है।"

इसके बाद हाटा-सान फिर सुस्थिर हो गया। उसने चारों ओर नजर घुमाकर देखा। अपनी डरी हुई नन्हीं आँखें झपकाते हुए वह मुझसे फिर जोर से बोला, गुस्से का अभिनय करते हुए, ताकि अपने कान साधे बैठे

दूसरे क्लर्क भी सुन सकें :

"निशीना-सान, हमें इस दफ्तर में आला दरजे की कार्य-कुशलता चाहिए। आखिर यह एक अमरीकी फर्म की शाखा है। अपने काम में यहाँ कोई सुस्ती या टालमटोल बर्दाश्त नहीं की जा सकती। वहाँ अमरीका में एक चिकना समाज है, हर चीज जैसे तेल पर फिसलती हुई चलती है। यही वजह है कि अमरीका इस वक्त पश्चिमी जगत की एक महान डिमॉक्रेसी है, जिसकी ओर हम सब इज्जत की नजरों से देखते हैं—और जिसे हम **प्यार** करते हैं !" मेरा बॉस चिल्लाया और एक बार फिर उसकी उद्विग्न आँखें सुन रहे क्लर्कों पर घूम गयीं। "अमरीका एक शानदार ईसाई देश है," वह चिल्लाया। "अच्छा फिर बात करूँगा।"

उस ठिगने आदमी ने अपने कमरे में दाखिल होकर दरवाजा बन्द कर लिया। उसके जाते ही क्लर्कों ने आँखों में एक-दूसरे से बातें कीं। मेरा ख्याल है कि उसकी बातों पर किसी ने विश्वास नहीं किया और वे सब फुटबाल के खिलाड़ियों की तरह अपने सर जोड़कर बॉस के खिलाफ साजिशें करेंगे। दान, ये लोग नरम दिल हाटा-सान को पसन्द नहीं करते, जिसने मेरे जैसे लोगों को नौकरी दी है, जिससे दफ्तर की प्रतिष्ठा घटती है। (वे लोग ऊपर के अधिकारियों तक उसकी शिकायत पहुँचाने के लिए कुछ ठोस सबूत जमा करना चाहते थे।)

मैं फौरन अपने बीजक तैयार करने में जुट गया और मैंने निश्चित किया कि रोज देर रात तक काम किया करूँगा, ताकि मेरा बॉस खुश हो सके। उसको मैं अपनी दाहिनी बाँह तक काटकर दे सकता हूँ, क्योंकि वह शहीद किये गये सभी लोगों के प्रति गहरी हमदर्दी महसूस करता है—यहाँ के भी और तुम्हारे देश के लोगों के प्रति भी—तुम्हारे वियतनाम के प्रति भी जिसे मैं अपना प्यार भेजता हूँ।

तुम्हारा विश्वासपात्र
निशीना शिन्ज़ो

□

नागासाकी
मार्च —

दान,

"अरे तुम !" मैं चिल्लाया था, कल।

"और कौन ?" आइसक्रीम की दुकान के मेरे अँधेरे कोने में अपनी घास की चप्पलें पहने बेधड़क दाखिल होते हुए एम. ने तपाक से उत्तर दिया और मेरे पास आकर तातामी (चटाई) पर बैठ गयी, जिस पर मैं एक

आइसक्रीम के प्याले के सामने घुटनों के बल झुका बैठा था।

"यही मँगाऊँ ?" मैंने पूछा।

"नहीं, कोई शरबत मँगाओ। तुम्हारे चावलों की वजह से मेरा वजन बढ़ रहा है। अरे हाँ, जरा बताओ तो कि इवारा-सान को आजकल क्या हो गया है ? उसकी वजह से ही तो मैंने तुम्हें ढूँढ़ते हुए आज इस माँद में आ पकड़ा है। खुदा की लानत पड़े उस पर, मैं अब कभी उससे नहीं मिलूँगी। क्या वह सोचता है कि मैं एक गीशा लड़की हूँ, या और कुछ ? मेरा मतलब है कि वह मेरे साथ जैसा सलूक करता है, उससे तो यही लगता है।"

"मोहतरम, गीशा लड़कियाँ तो बहुत ज्यादा सम्मानित, सभ्य और सुसंस्कृत लड़कियाँ होती हैं।"

मैंने ठण्डे स्वर में जवाब दिया और मन-ही-मन कामना की कि एम. की जाँघें करीब-करीब नितम्बों तक खुली न होतीं, जिसकी वजह से शरबत लानेवाले वेटर की आँखें अपने कोटरों से निकलकर बाहर आ गयी थीं।

"जो कि मैं नहीं हूँ, क्या ? तुम्हारा साथी क्लर्क मुझसे ऐसी-ऐसी माँगें करता है, जैसे मैं कोई···अ···अ···"

"पैम-पैम हो ?" मैंने सुझाया।

"वह क्या होती है ? खुदा के लिए बताओ।"

"यह एक शब्द है जो दूसरे विश्व युद्ध में ईजाद हुआ था। उन दिनों भूख की मारी जापानी लड़कियाँ दूध के पाउडर के लिए कुछ भी करने को राजी रहती थीं। अमरीकी सैनिकों और उनके अफसरों ने अधिकृत जापान को एक विशाल वेश्यालय बना दिया था, जिस तरह आजकल वियतनाम को बना रखा है। देखो न, इस्सा लौट आया है। और उसने मुझे वियतनाम में होनेवाली घटनाएँ सुनायी हैं," मैंने बताना शुरू किया। लेकिन एम. ने बीच में ही बात काट दी, जो लगता है, पश्चिमी महिलाओं की आम आदत होती है।

"तो मुजाहिद वापस आ गया, सच ? उसने यकीनन मुझको तो कोई खबर नहीं दी," वह चिल्लायी और फिर कहा, "खैर, खुदा के लिए अपनी बात जारी रखो ! तो तुम्हारी पैम-पैम लड़कियों का क्या हश्र हुआ ?"

"उनके बच्चे हुए ! अब मिले-जुले खून के ये सब बच्चे जवान हो गये हैं। उनसे अमरीकी मिलना-जुलना पसन्द नहीं करते और न जापानी ही। यही वजह है कि उनके बीच आत्महत्या का रेट इतना ज्यादा है कि सुनकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। इसके अलावा इन अमरीकी सैनिकों के अब जवान बच्चों के बीच अपराधों का रेट भी रोंगटे खड़े करनेवाला है, और भी उनके रेट रोंगटे खड़े करनेवाले हैं। बीस साल के बाद वियतनाम में भी ऐसा ही

होगा, शायद कुछ ज्यादा ही मात्रा में, क्योंकि वियतनाम में मुफलिसी और भूख कहीं ज्यादा है, जितनी यहाँ उस वक्त भी नहीं थी और वहाँ हजारों वियतनामी किशोर लड़कियाँ आज अनाथ और लावारिस हैं," मैंने एम. को बताया जिसकी खूबसूरत आँखों में गहरी वेदना झलक आयी थी।

"वियतनामी पैम-पैम, है न ? मेरे जैसी ? ओह, मैं काफी ऐरे-गैरे लोगों के साथ सोती रही हूँ, इससे इन्कार नहीं करती। इसमें बुराई भी क्या है ? बहरहाल, एक लड़की करे भी तो क्या करे ? इस्सा जैसे मुजाहिदों के पास तो हम जैसी लड़कियों के लिए वक्त ही नहीं है और तुम जैसे मीठे और कोमल स्वभाव के लोग···"

"हाँ-हाँ, मेरे जैसे लोग कैसे हैं, मेहरबानी करके बताओ न ?" मैंने पूछा। मुझे डर था कि वह मेरे मुँह के भद्दे दागों की ओर इशारा करेगी, जो उसने फौरन ही किया।

"वेल, एक बार मेरे साइको-ऐनेलिस्ट (मनो-विश्लेषक डाक्टर) ने ताकीद की थी कि मैं अपनी अपराध-भावना से मुक्ति पाने के लिए—अभागे लोगों को उपकरण न बनाऊँ," एम. ने तपाक से कहा। इतनी देर में उसने मेरी सारी आइस-क्रीम भी खा ली थी और अपना शरबत भी पी लिया था।

साइको-ऐनेलिस्ट ? मैं जल्दी से उसके पास से दूर सरक गया।

"तो तुम—कभी पागल भी रही हो ?" मैंने एम. से पूछा। इस पर वह पाँव रगड़ती हुई उठकर खड़ी हो गयी। "नहीं, लेकिन अगर तुमसे और बातें करती रही तो जरूर पागल हो जाऊँगी। क्या तुम **कुछ भी नहीं** जानते ? मेरे देश में सब औरतें अपना मनोविश्लेषण करवाती हैं, खुदा के लिए," वह तपाक से बोली। लेकिन फौरन ही उसे अपने इस बमकने पर अफसोस हुआ और जिस वेदना-भरी दृष्टि का मैंने ऊपर जिक्र किया है, वह उसकी आँखों में फिर झलकने लगी।

"मैं एक कुतिया बन गयी हूँ, ठीक कहती हूँ न ? ओह, शिन्जो, मैं दुखी हूँ—अपने अन्दर दुखी हूँ, जैसी कि मेरे मनहूस देश की ज्यादातर औरतें हैं," एम. चिल्लायी और मेरे मन में यह हसरत पैदा हुई कि काश, मांस के इस दुखी ढेर को मैं अपनी बाँहों में लेकर दिलासा दे सकता। मेरा दुर्भाग्य कि वह अपने रूखे अन्दाज में भागती हुई बाहर निकल गयी। ओह, क्या वह **कभी** भी यह जान पाती है कि वह क्या कर रही है ? इसी बीच मेरा दोस्त, आइसक्रीम वेटर, जिसका परिवार भी उस विध्वंस में नष्ट हो गया था, मेरे लिए एक आइसक्रीम और ले आया, अपनी ओर से मुफ्त। और इस सूचना के बाद मैं इस पत्र को बन्द करके अपने दस्तखत कर

रहा हूँ,

तुम्हारा, शिन्ज़ो

पुनश्च :

इस गप-शप के लिए माफ करना, लेकिन इस्सा ने कहा कि मैं हल्की-फुल्की बातों से तुम्हारा मनोरंजन किया करूँ, ताकि तुम्हारी पीड़ा कुछ कम हो सके। (जिन पर खुद नहीं बीत रही होती वे इस शब्द 'पीड़ा' का कितने हल्के ढंग से इस्तेमाल करते हैं, इस्सा समेत!)

□

नागासाकी
मार्च—

प्यारी दान,

अगर तुम्हारी दवाइयाँ खत्म होने लगी हों तो मेहरबानी करके फलों का रस ज्यादा पीना। अपनी सेहत को फिर से पाने की कोशिश करो, वरना तुम्हारी आत्मा मेरी आत्मा की ही तरह कुण्ठित हो जायेगी। मिसाल के लिए आज जब मैंने इस्सा के लिए वियतनाम की फिल्मों के निगेटिव डेवेलप किये तो मुझे हजार मौतें झेलनी पड़ीं (यह अलंकृत भाषा है) देखो न, उसके दफ्तर के लिफ्ट में, जिसके लिए हर वक्त भीड़ लगी रहती है, लोग मेरी ओर घूर-घूरकर देखने लगे। ओह, मैं जानता हूँ कि मुझे इस बात की परवाह नहीं करनी चाहिए! मेरे दिमाग के अन्दर भी जलने-झुलसने के दाग छाये हुए हैं, इसलिए उसको भी मेरे मुँह के दागों की तरह संवेदनहीन हो जाना चाहिए। लेकिन वह ऐसा नहीं है। अगर कोई मेरी ओर आँख फाड़कर देखता है तो मेरा दिमाग ठोकर खाये हुए कुत्ते की तरह किकियाने लगता है।

"इस्सा, यह बूढ़ा आदमी कौन है जिसकी आँखों पर पट्टी बँधी है, मुँह में कपड़ा ठुँसा हुआ है और जिस पर शनाख्त की पर्ची टँकी हुई है?" मैंने अपने दोस्त से, उसके लाये हुए फोटों में से, जिन्हें मैंने डेवेलप किया था, एक की ओर इशारा करते हुए पूछा। हम दोनों इस्सा के मॉडर्न दफ्तर में उस चटाई पर घुटनों के बल झुके तस्वीरों को देख रहे थे, जिस पर वह वक्त की कमी और ऐशो-आराम की जिन्दगी बसर करने की अनिच्छा के कारण रात को नींद पूरी करने के लिए सो जाता है।

"यह दान के जिले का एक बुड्ढा है—शायद उसके बूढ़े दादा जैसा आदमी," इस्सा ने तपाक से कहा और फिर समझाया कि मेरे दादा भी तो एक किसान थे, लेकिन मेरे बाप एक इंजीनियर थे। "मैं इस शब्द 'थे' पर जोर देना चाहता हूँ," उसने कहा, "क्योंकि दान का पूरा का पूरा परिवार

इस युद्ध में मारा गया है। इस दुनिया में बस अकेले तुम्हीं उनके हो।" और मेरा दिल बल्लियों उछलने लग गया कि इस दुनिया में अकेली तुम्हीं तो मेरी हो! "क्या यह—मर गया?"

मैंने धीमे स्वर में फोटो के उस आदरणीय बूढ़े की ओर इशारा किया, जो इस तरह नंगा किया हुआ था जैसे पंख उतारकर बत्तख को बाजार में बेचने के लिए ले जाया जा रहा हो।

"वेल, जिन्दा रहने के लिए साँस का चलना भी तो निहायत जरूरी चीज है," इस्सा ने उस लापरवाह स्वर में उत्तर दिया जो बेहद गुस्से की हालत में वह अपना लेता था। "यातनाएँ देकर पूछताछ करने के केन्द्रों तक ले जाते वक्त वे लोग अक्सर रास्ते में अपने कैदियों के मुँह में कपड़ा ठूँस देते हैं," इस्सा ने बताया।

उसने मेरी ओर कनखियों से देखकर यह जानना चाहा कि मैं अपनी आदत के मुताबिक क्या उस फोटो से भी मुँह मोड़कर किसी दूसरी ओर देख रहा था। लेकिन मैं फोटो की ओर ही देख रहा था। मैंने कसम खायी है (मेरे पिछले पत्र को देखना) कि मैं मानव-पीड़ा से कभी आँखें नहीं चुराऊँगा। इसलिए मैं इस आदरणीय दादा की ओर देखता रहा और उससे अपने दादा की तुलना करता रहा, जिसे भी **इन लोगों** ने ही मारा था।

"सुनो इस्सा, तुम एक ऐसा अल्बम क्यों नहीं छापते जिसमें एक पृष्ठ पर वियतनाम के शहीदों की तस्वीरें हों और उसके सामनेवाले पृष्ठ पर जापानी शहीदों की तस्वीरें हों, जो यह दिखायें कि उन्नीस सौ पैंतालीस और उन्नीस सौ अड़सठ में आम लोगों की हत्या करने के लिए एक जैसे ही तरीकों का इस्तेमाल किया गया है? समझ गये न? दोनों बार जलने-झुलसने से लोगों की मौतें हुईं। मेरा सुझाव ठीक है न? एक वियतनामी-जापानी अल्बम?"

"बहुत बढ़िया! अल्बम बहुत शानदार रहेगी। और शायद एक फिल्म भी," इस्सा चिल्लाया और उछलकर खड़ा हो गया। "हम दोनों साथ मिलकर उसे बनायेंगे, मैन, क्यों कैसा रहेगा?"

इस्सा ने जब "साथ मिलकर" कहा तो मेरे अन्दर कोई बहुत बड़ी चीज घटित हो गयी। मुर्दा शिन्ज़ो में से एक जिन्दा शिन्ज़ो निकल पड़ा। उस क्षण मैं एक ऐसा इन्सान बन गया जिसके पास अपना एक लक्ष्य होता है।

"तो फिर तुम मुझे फिल्म-कैमरा से तस्वीर खींचना सिखा देना," मैंने मिन्नत की, क्योंकि मुझे तो सिर्फ निकन 35 मिलीमीटर और ऐसे ही अचल तस्वीरें खींचनेवाले कैमरों का इस्तेमाल आता था।

"अभी फौरन !" इस्सा ने वादा किया। "तुम बड़े प्रतिभावान फोटोग्राफर हो। फिल्म बनाने की कला तुम चुटकी बजाते सीख जाओगे।"

खैर, हम घण्टों तक काम करते रहे। रात के वक्त मैंने इस्सा से पूछा कि प्रतिभा क्या चीज होती है और उसने तपाक से यह कहा, "प्रतिभा एक उन्माद होती है—एक तरह का उन्माद।" इसके बाद वह अपनी चटाई पर जैसे गिर पड़ा और देखते न देखते खर्राटे भरने लगा। फिर वह जैसे फौरन ही जग गया। "कल सुबह दफ्तर से पहले, पौ फटते ही मुझे लेने आ जाना," वह चिल्लाया। "हम लोग पिछली गलियों में जायेंगे, जहाँ ऐटम बम के मारे प्रेत रहते हैं और उनकी फिल्म शूट करेंगे। हमारा जापान-वियतनाम फिल्म रोंगटे खड़े कर देनेवाला होगा," इस्सा ने फिर नींद में डूबने से पहले कहा। उस शब्द 'हमारा' की गूँज कान में भरे हुए मैं लपककर सड़क पर आ गया। ताज्जुब की बात है कि आज मेरा मुँह बायीं ओर को मुड़ा हुआ नहीं था, आदत के मुताबिक, और मेरी चाल भी आज केंकड़े जैसी नहीं थी। रास्ते में जिस किसी पैदल आते हुए आदमी ने मेरे मुँह के दागों की ओर घूरने की कोशिश की, उसकी ओर मैंने भी घूरकर देखा। एक अधेड़ उमर की औरत ने मेरी ओर मुस्कराकर देखा और एक सड़क की भीड़-भाड़ में एक इन्सान के साथ हुए इस पहले सुखद सम्पर्क के बाद मेरे कदमों में जिन्दादिली आ गयी। हाँ !

इस सूचना के बाद मैं यह पत्र बन्द करता हूँ और तुम्हारा सादर धन्यवाद करता हूँ कि तुम्हें मेरी जरूरत है, जैसा कि इस्सा ने बताया है।

तुम्हारा ही,
शिन्ज़ो

☐

नागासाकी
मार्च—

दान,

वियतनाम से इस्सा जो डॉक्यूमेन्टरी फिल्म लेकर आया है, उनमें से एक का शीर्षक है 'मत कहना "किसी ने मुझको नहीं बताया'" उसने ये फिल्में कल रात एक छोटे-से विद्यार्थी-केन्द्र में दिखायी थीं। अगर मैंने ये फिल्में एक हफ्ता पहले देखी होतीं तो मैं पसीने में तर हो जाता, काँपने लगता और आँसू बहाता हुआ भागकर अपने घर में आ छिपता। अब चूंकि मैं युद्ध-विरोधी लड़ाई में शामिल हूं, इसलिए मैं जमकर बैठा रहा।

ओह दान, उन्होंने तुम्हारे देश के साथ कैसे-कैसे अत्याचार किये हैं ! मुझे उस फिल्म के बारे में बताने दो। वेल, पहले दृश्य में लोगों के फटे

कानों की एक माला दिखायी गयी थी जो दक्षिणी वियतनाम के फौजी अड्डे में सजावट की चीज की तरह लटकी थी और उसके नीचे शीर्षक दिया गया था : "उन सभी देशभक्त लड़ाकों का यह हश्र किया जाता है जो विदेशी हमलावरों के खिलाफ सर उठाकर खड़े होते हैं।" दूसरा दृश्य, ध्वस्त और जलते हुए गाँवों का था और शीर्षक था : "वे वियतनाम पर दस लाख टन बम गिरा चुके हैं, इतने टन बम तो दूसरे महायुद्ध में उन्होंने नात्सियों पर सारे योरप और अफ्रीका में भी नहीं गिराये थे।"

तीसरा दृश्य, जिसमें बमबार हवाई जहाजों का एक दस्ता दिखाया गया था, वियतनाम में कहीं इन्सानों पर किसी-न-किसी शक्ल में मौत बरसा रहा था। शीर्षक था : "हिटलर और मुसोलिनी ने स्पेन को मौत की प्रयोग-शाला बनाया था। अमरीकी 'बाज़' अब वियतनामी लोगों को अपने प्रयोग के चूहों की तरह इस्तेमाल कर रहे हैं और आज तक दस लाख से ज्यादा लोगों की हत्या कर चुके हैं।"

फड़ाक ! इसी क्षण विद्यार्थी-केन्द्र के बिजली के तारों ने ऐसी ही आवाज की और मैंने सोचा कि हाय, फिल्म-प्रदर्शन बन्द हो जायेगा। एक औरत ऊँचे स्वर में चिल्लायी, "मैं इसे ठीक कर दूंगी। मैं आयी !" यह एम. की गगन-भेदी आवाज थी। अपने टार्च से, जो मैं हमेशा साथ रखता हूँ (यह जानते हुए कि मुझे पिछवाड़े की अँधेरी गलियों में से गुजरना ज्यादा पसन्द है) मैंने उसको भारी कदमों से फ्यूज-बक्स की ओर जाते देखा। यह हिप्पी लड़की आखिर इस युद्ध-विरोधी मीटिंग में क्या कर रही है ? मैंने अपने आपसे सवाल किया। एक और आश्चर्य सामने कौंधा और गायब हो गया। टार्च की रोशनी में किसकी आँखों से मेरी आँखें चार हुईं—कयास कर सकती हो—मेरे बॉस की !

ओह, हाटा-सान ने तेजी से अपनी नजरें फेर लीं और मैंने भी ! मैं जानता था कि इस तरह की सक्रिय प्रोटेस्ट मीटिंगों में देखे जाने से वह खुश नहीं था। (सवाल है : जापान में, साथ ही और भी देशों में क्या काफी लोग ऐसे भी हैं जो मेरी ही तरह वियतनाम के बारे में इतने गुस्से से सोचते हैं, लेकिन अपनी नौकरियों से हाथ धोने के डर से कोई सक्रिय कदम नहीं उठा सकते ?) मुझे उम्मीद है कि किसी जासूस ने हाटा-सान को नहीं देखा होगा।

फिल्म चलती रही और अन्त में परदे पर एक उदास भैंसा सामने आया जिसने दर्शकों को बताया कि उसके जैसी अस्सी हजार भैंसें— गरीब वियतनामी किसानों की एकमात्र दौलत—नापाम बमों से जलकर राख हो चुके हैं। इसके बाद ही शो खत्म हो गया और हर आदमी अपनी आँखें

पोंछता हुआ वहाँ से जल्दी से उठकर चल पड़ा । मैं नहीं, क्योंकि मैं पीछे के कमरे में इस्सा के पास चला गया था ।

"मेरा नया फोटोग्राफर" इस्सा ने लोगों से मेरा परिचय कराया और मैंने खुशी और आश्चर्य से उत्साह-भरे स्वर में 'हाँ' कहा । अजब बात है कि अपनी सारी जिन्दगी में पहली बार कल मेरा एक सच्चे इन्सान की तरह स्वागत किया गया ।

इसके बाद वे लोग इस्सा के फिल्म के बारे में बातें करते रहे और इस्सा ने स्वीकार किया कि उस फिल्म की फोटोग्राफी को और भी ज्यादा कलात्मक होना चाहिए था । उसका कैमरामैन शायद हमेशा अपनी योग्यता के मुताबिक काम नहीं कर पाया था । "लेकिन अब मेरे पास एक नया कैमरामैन है," इस्सा ने कहा और मेरी बाँह में बाँह डालकर चल पड़ा । मेरी इच्छा हुई कि मैं एक टाँग पर कूदता-फाँदता आगे-आगे चलूँ जैसा कि मैंने उस दिन किया था "जिस दिन मेरी मौत हुई थी ।" ओह दान, हम दोनों को जिन्दा रहना चाहिए ! तुम अभी सिर्फ सत्रह साल की हो, एक स्कूल की लड़की-भर हो । मैं भी ज्यादा उमर का नहीं हूँ । क्या हम एशिया-वासियों का कोई अधिकार नहीं, सिवाय मरने के अधिकार के ?

तुम्हारा ही
शिन्ज़ो

नागासाकी
अप्रैल—

मेरी दान,

चाँदनी रात में आज तुम्हारी तबियत कैसी है ? आज सबेरे पौ फटते ही हम लोग जब फिल्म शूट करने की जगह पर जा रहे थे, नगर के उस हिस्से में जहाँ ऐटम-बम के प्रेत बसते हैं, तब हमने तुम्हारे बारे में बहुत-सी बातें कीं । फिल्म के सामान का बोझ लादे इस्सा आगे बढ़ता जा रहा था और मुझे बताता जा रहा था कि तुम्हारा आदरणीय परिवार उसी गाँव में कई सदियों से खेती करता आया था, लेकिन वह गाँव अब जमीन से मिट चुका था—उफ ! पेड़ों की पत्तियों से ढँकी मेरी सड़क की तरह । आह, हम सचमुच जुड़वाँ बच्चे हैं । इस्सा ने यह भी बताया कि तुम एक विद्यार्थी थीं और तुमने आग की लपटों से बीजगणित की एक नन्हीं-सी किताब की, जो तुम्हें बहुत पसन्द थी, रक्षा की थी । दान, हम तुम्हारे नापाम के जख्मों को ठीक कर देंगे और तब तुम फिर विद्यार्थी बन सकोगी ।

"गुड-डे," किसी ने एक बोरी पर उकड़ूँ बैठते हुए कहा ।

ऐटम-बम से जले-झुलसे इस उकड़ूँ बैठनेवाले आदमी की इस्सा फिल्म खींचना चाहता था, लेकिन अब वह हिचकिचा रहा था। तथ्य यह है कि इस्सा को इस बात से बड़ा संकोच होता है कि ऐटमी सर्वनाश से वह बच गया था (शारीरिक रूप में)। कारण ? वह शहर के बाहर की एक बस्ती में रहता था। इस तरह सर्वनाश से बाल-बाल बच गये बहुत-से लोगों के मन में अपने कत्ल हुए पूर्वजों के प्रति एक गहरी अपराध-भावना का अहसास होता रहता है, हालाँकि निश्चय ही इसमें उनका कोई कसूर नहीं है कि वे आज भी जिन्दा हैं, गो कि अन्दर से मरे हुए हैं।

"क्या मैं तुम्हारी फिल्म खींच सकता हूँ, प्लीज़ ?" मैंने बोरी पर बैठे उस आदमी से पूछा। जब मैंने उसको इस फिल्म का उद्देश्य समझाया तो उसने तपाक से कहा, "हाँ, प्लीज़ !" जब सर्वनाश से जिन्दा बचे हुए दूसरे लोग अपने खरगोशों के दरबों जैसे घरों से रेंगते हुए कुएँ से भरने के लिए घड़े उठाये हुए बाहर निकले तो इस्सा ने सुझाव दिया, "हम अपनी इस फिल्म का नाम रखेंगे—**नर्क का एक खामोश दिन**।" उसने मुझसे कहा कि मैं झुलसे हुए अपने इन साथियों से आग्रह करूँ कि वे रोज की तरह अपने कामों में लगे रहें; मिसाल के लिए, झाड़ू लगाने, सामान ढोने, चावल पकाने आदि में। मैं इस्सा का 16-मिलीमीटर का कैमरा लिये हर जगह और हर काम में उनका पीछा करता रहा।

आह, दान, उस वक्त मेरे दिल पर उन लोगों के खिलाफ, जिन्होंने इन लोगों के चेहरे और इनकी जिन्दगियाँ तबाह की थीं, कितनी जबर्दस्त नफरत उबलने लगी थी। मेरी समझ में आ गया कि इस्सा की बात का अर्थ क्या था जब उसने कहा था कि प्रतिभा एक किस्म का उन्माद होती है। मैं गुस्से से काँपने लगा था। वेल, मेरा ख्याल है कि जब मैं उन चेहरों के विशाल दागों की, जो चाँद की ऊबड़-खाबड़ घाटियों की तरह लगते थे, फिल्म खींच रहा था, उस वक्त मैं एकदम पीला पड़ गया था। जब मैं तस्वीरें ले चुका तो उस पहले ऐटम प्रेत ने जिससे हमने बात की थी, कहा, "तुम बहुत घबरा गये हो, जाने से पहले मेरे खोखे में चावल का गरम-गरम शोरबा पीयो।" "हाँ, शुक्रिया," मैंने जवाब दिया। शोरबा में ज्यादातर पानी ही था, लेकिन गरम था। मैं उसे दो घूँट में ही पी गया।

"देखो ! उस परदे के पीछे क्या है ?" इस्सा ने उस ओर से एक क्षीण-सी आवाज सुनकर पूछा, और हमारे आदरणीय मेजबान अबे-सान ने अपनी आँखें बन्द कर लीं। फिर उसने अपनी आँखें खोलकर कहा :

ये हल्की-सी कराहें मेरी बेटी की हैं। बदकिस्मती से उसकी शक्ल पूरी तरह विकृत हो गयी है। जैसा कि तुम्हें मालम है, बहुत-सी औरतों के गर्भ

में बच्चे थे, जब उन पर ऐटम-बम गिरा था, और उसके बाद उन्होंने विकृत बच्चों को जन्म दिया था। हमारी बेटी बाईस साल से उस पर्दे के पीछे बैठी रही है, क्योंकि उसकी शक्ल देखने के काबिल नहीं है।

अबे-सान ने यह सारी बात बहुत धीमे स्वर में फुसफुसाकर कही। इस पर हट्टे-कट्टे इस्सा ने अपने दोनों हाथों में अपना मुँह छिपा लिया और वह बड़ी देर तक निश्चल खड़ा रहा।

"गुड-बाई अबे-सान," आखिरकार हमने कहा और जब हम सिर झुकाकर उससे विदा ले रहे थे। मैंने बड़ी तीव्रता से महसूस किया कि मैं उस बूढ़े आदमी के बहुत नजदीक हूँ। आखिर मैं अब तक अपने इन साथियों, ऐटम-बम से जले-झुलसे लोगों से दूर-दूर क्यों भागता रहा था ? उत्तर ! मैंने यह निश्चय नहीं किया था कि मैं उन लोगों से लड़ूँगा, जिन्होंने हमें तबाह किया था, इसलिए इन लोगों के दु:ख-दर्द से दूर-दूर रहता था।

हमने फिर झुककर विदा ली। "फिर आना !" हमारे मेजबान ने चिल्लाकर कहा, "मैं जरूर आऊँगा," मैंने जल्दी से जवाब दिया।

खैर, दान, दफ्तर में वह दिन तो खैरियत से गुजर गया, लेकिन शाम को जैसे ही मैं अपने घर लौटा कि बगल की बार का मालिक लपकता हुआ आया।

"जरूरी फोन आया है !" वह चिल्लाया।

"मेरे लिए ?" मैंने सवाल किया, क्योंकि मुझे कभी कोई फोन नहीं करता।

थोड़ी ही देर में फोन के चोगे में मुझे इस्सा की आवाज सुनायी दी, जो एक चीख की तरह तेज थी।

"मैन ! आज की फिल्म का कुछ हिस्सा मैंने डेवेलप करवाया था। लाजवाब और शानदार है ! वाऊ ! तुम्हारे अन्दर प्रतिभा है, मैन ! गुड-बाई।"

तो, दान, मैंने अपनी रात अपने चेरी के पेड़ के नीचे गुजारी जिसकी टहनियों में, लगता था, सितारे टँगे हुए थे। मैंने आहिस्ते-से उससे कहा, अपने पेड़ से, कि "मैं बहुत खुश हूँ।"

दान, मैं बहुत खुश हूँ,
शिन्जो

नागासाकी
अप्रैल—

दान,

पन्द्रह तारीख की सुबह को जैसे ही मैं अपने दफ्तर में दाखिल हुआ, मेरे साथी क्लर्क खुशी से अपनी मेजें थपथपाते हुए गाने लगे, "सा-यो-ना-रा ! सा-यो-ना-रा, नि-शी-ना-सान !" मेरी समझ में नहीं आया कि उनका मतलब क्या था, इसलिए मैंने जल्दी से बॉस के दफ्तर की ओर देखा, क्योंकि मुझे डर था कि वह इस बेहूदे शोर को सुन लेगा।

"अपनी रक्षा की उम्मीद मत करो ! हाटा-सान भी न्यूयॉर्क फोटो एम्पोरियम के उन कर्मचारियों की कोई मदद नहीं कर सकता जो युद्ध-विरोधी मीटिंगों में हिस्सा लेते हैं," सीनियर क्लर्क ने हिकारत के स्वर में कहा। फिर उठकर मेरी मेज की ओर बड़े दर्प से बढ़ते हुए उसने मेरी ओर उँगली उठाकर कहा, "तुम बर्खास्त कर दिये गये, शान्तिदूत ! पहले अपनी मेज पर रखा बर्खास्तगी का खत पढ़ो," उसने आदेश दिया और मैंने तुरन्त उसका पालन किया।

"मेरे खिलाफ किसने चुगली खायी ?" मैं गुस्से से तमतमाकर चिल्लाया।

"देखो तो, अब कौन गुस्से से फूलकर कुप्पा हो रहा है।" हमारे सीनियर क्लर्क ने मुझ पर भद्दा-सा व्यंग्य किया। "तुम्हारी पैम-पैम ने शराब के नशे में सारे दाने बिखेर दिये और मैंने यह सूचना फौरन इससे ताल्लुक रखनेवाले लोगों तक पहुँचा दी। मेरी ही वजह से जासूसी विभाग को तुम्हारे बारे में अब सब कुछ मालूम हो गया है," उसने डींग मारी, और मैंने देखा कि यह मनहूस आदमी एक नया सूट, नयी टाई और स्वेड के नये जूते पहने हुए था। मैं फौरन सब कुछ भाँप गया। "मैंने तुम्हारी पैम-पैम को भी दुत्कार दिया है," उस घृणित आदमी ने फिर डींग मारी।

"**उसने** दुत्कार दिया है **तुमको**," मैंने तपाक से कहा और मेज से अपनी चीजें इकट्ठी करने लगा, खास तौर पर उस प्यारे पत्थर को मैंने सँभालकर उठा लिया जो ऐटमी-सर्वनाश के खण्डहरों में मुझे मिला था और जिसे मैं पेपरवेट की तरह इस्तेमाल करता हूँ। "एम. मिचीको दूपाँ एक **नेक और शरीफ** औरत है, सायोनारा," मैंने कहा और वहाँ से चल दिया— किस तरफ ? ओह, इस्सा के दफ्तर की तरफ, क्योंकि अब मेरे पास एक कौड़ी भी नहीं है।

लेकिन वहाँ उसके टाइपराइटर में मेरे लिए एक छोटा-सा पर्चा लगा था, जिसमें इस्सा ने सूचना दी थी कि वह किसी बहुत जरूरी मिशन पर

हवाई जहाज से वियतनाम जा रहा है और एक हफ्ते तक बाहर रहेगा। मैं हताश हो गया। अब क्या करूँ ? खैर, सबसे पहले मैंने चूहेदानी जैसा इस्सा का दफ्तर साफ किया और उसकी पेन्सिलें छीलकर तेज कीं (मुझे पेन्सिलें बहुत पसन्द हैं, खास तौर पर फेबर नं. 2 वाली)। फिर मैं अगले दिन का इन्तजार करने लगा, जब मैं नौकरी की तलाश में खाक छानना शुरू करूँगा—यह खाक छानना बेकार होगा, इसमें शक नहीं, मेरे जले हुए चेहरे के कारण।

मैं भूखा था, इसलिए मैं अपनी उँगलियाँ चूसता रहा, यह याद करके कि बेकारी के दिनों में पहले भी उँगलियाँ चूसने के दौर आये थे। फिर मैंने इस भोजन के बाद छककर पानी पीया। अब जल्द ही मैं इस्सा की चटाई पर तनकर लेट जाऊँगा और तुम्हारी चटाई के बारे में सोचूँगा, जिसके क़रीब हमारा खुशकिस्मत इस्सा शायद इस क्षण घुटनों के बल बैठा होगा।

इस बात पर यह खत बन्द करता हूँ।

तुम्हारा ही, शिन्ज़ो

पुनश्च,

एम. के चरित्र पर से कलंक का धब्बा साफ करने की इजाजत दो। उसे मैंने गलत समझा था। उस दिन मैंने इस्सा से पूछा था कि यह कैसे हुआ कि मुफलिस नजर आनेवाली यह एम. जो शराब पीती है, ऐरे-गैरे मर्दों के साथ बेवकूफ बनतीं फिरती है, हिप्पी-बकवास बोलती है, उस दिन हमारी इस युद्ध-विरोधी गम्भीर मीटिंग में शामिल हुई थी ?

"एम. न तो मुफलिस है, न अगम्भीर और ओछी है," इस्सा ने कहा और फिर बताया : "एम. मिचीको दूपाँ एक खानाबदोश जैसे कपड़े पहनती है क्योंकि वह ग्रीनविच विलेज के एक बाशिन्दे का पार्ट अदा कर रही है। वह ढेर की ढेर शराब पीती है, मानता हूँ। वह काफी ऐंरे-गैरे लोगों के साथ सोती फिरती है, यह भी मान लेता हूँ और वह हिप्पी-बकवास बोलती रहती है क्योंकि समाज से अपने आपको बहिष्कृत कर लेनेवाली वह एक असभ्य लड़की है। वे सब-के-सब एक ही स्टाइल (शैली) का अनुकरण करते हैं क्योंकि वे अपने आपको 'अभिव्यक्त' करना चाहते हैं, इस आशा में कि इससे उन्हें व्यक्तित्व प्राप्त हो जायगा, जो उनके अन्दर नहीं है। बहरहाल, इनमें से एम. जैसे बहुत-से बच्चों के माँ-बाप काफी दौलतमन्द हैं। अगर ऐसा न होता तो वे सब सारी दुनिया में आवारागर्दी करते हुए कैसे घूम सकते हैं, कैसे नशीली दवाएँ और शराबें पी सकते हैं और अपने चेहरों पर गन्दे बाल बिखेरकर रह सकते हैं, जिसकी वजह से उनके साथ सोने का भी मजा किरकिरा हो जाता है ?" इस्सा इतना कहकर रुका और

मुस्कराने लगा। "एम. को तो यह दिखावा **करना ही पड़ेगा,** नहीं तो वह ऊब से मर जायेगी," वह चिल्लाया। "वैसे वह बड़ी नेक और अच्छी लड़की है।"

☐

नागासाकी
अप्रैल—

ओह, दान!

मेहरबानी करके याद रखना कि पिछला पत्र लिखे मुझे बहुत थोड़ा वक्त ही बीता है। लेकिन मैं इतने में ही पीड़ा के एक लम्बे युग से गुजर चुका हूँ। इस्सा ने मुझे वह बुरी खबर बता दी है। एक अस्पताल पर बमबारी करना! वह भी जान-बूझकर करना, पहले से तै की गयी योजना के मुताबिक करना, जैसा कि निस्सन्देह उन्होंने किया है! कोई चार पैरोंवाला कुत्ता भी ऐसी क्रूर बात नहीं करेगा, सिर्फ **आदमी** ही कर सकता है। इस्सा का कहना है कि अगर वियतनामी दोस्तों ने मदद न की होती तो वह तुम्हारी हिफाजत के लिए यह नयी जगह न तलाश कर पाता। उसने बताया कि तुम अपने बाल फैलाये चटाई पर लेटी इतनी खूबसूरत लग रही थीं कि उसने अपने एक्स-एक्स टाइप के पैन्क्रोमैटिक फिल्म से तुम्हारी फोटो खींच ली थी, लेकिन वहाँ पर रोशनी बड़ी खराब थी। तस्वीर साफ नहीं आयी। फोटो के अन्दर मैं चटाई पर लेटी हुई तुम्हारी आकृति और तुम्हारे पास रखी हुई किताब को देख सकता हूँ। (क्या यह बीजगणितवाली वही पुस्तक है जो तुम्हें इतनी पसन्द है?) इस शरणार्थी-घर में कितनी ज्यादा भीड़-भाड़ है, जहाँ बमबारी से तबाह अस्पताल के जिन्दा बचे हुए तुम सब जख्मियों को ले जाया गया है! इस्सा ने बताया कि तुम्हारे नापाम से जले हुए जिन जख्मों में मवाद पड़ गया है, वे ठीक नहीं हो रहे। यह बहुत बुरी खबर है।

वेल, आधी रात को जब लम्बे सफर की थकान से चूर इस्सा चटाई पर लेटते ही सो गया तो मैं भागकर सड़क पर आ गया। मेरे कदम मुझे शहर के उस हिस्से में ले गये जहाँ इस्सा और मैंने फिल्म शूट की थी, और मैं सकरी गलियों में चक्कर काटता फिरा जहाँ लकड़ी के खोखों में ऐटमी सर्वनाश में जले-झुलसे बेरोजगार लोग रहते हैं। मैं उनकी आहों-कराहों को सुन रहा था और तुम्हारे और तुम्हारी बेचैन रातों के बारे में सोच रहा था। और मैंने कसम खायी कि मैं तब तक बोलना, फिल्म बनाना और लड़ना बन्द नहीं करूँगा, जब तक वे तुम्हारे देश पर बमबारी बन्द करने के लिए मजबूर नहीं हो जाते, ताकि शरणार्थी-घर में भरे हुए नापाम

पीड़ित जैसे और रोगी हर रोज न पैदा कर सकें। आह, दान, मैं दुनिया के तमाम बादशाहों और करोड़पतियों को तुम्हारे जख्मों के बारे में लिखूँगा। "**म-द-द-क-रो** बादशाहो ! **म-द-द-क-रो** करोड़पतियो !"

पौ फटने के वक्त मैं फिर इस्सा के दफ्तर की तरफ चल पड़ा और संयोग से, मैं अपने घर के पास से गुजरा। हा ! मेरा पेड़ अपनी जगह पर खड़ा था ! सुबह की गुलाबी हवा के झोंकों में उसकी लम्बी टहनियाँ हिल रही थीं। ये टहनियाँ कैसी लग रही थीं ? हाँ, फोटो में **तुम्हारे** बालों की लटों की तरह, जो चटाई पर फैली हुई थीं। मैं उस वक्त खुशी से चीखने लगा। तो मेरा प्यारा चेरी का पेड़ और तुम दोनों किसी तरीके से एक ही चीज हो। अपने चेरी के पेड़ से मोहब्बत करके दरअसल मैं इस बीच लगातार **तुमसे** मोहब्बत करता आया था, दान ! मैंने आहिस्ते-से कहा : मैं तुमसे मोहब्बत करता हूँ। मैं तुमसे मोहब्बत करता हूँ। हाँ, अब मैंने यह निश्चय किया है : कि मैं तुम्हारे पास जाऊँगा चाहे मुझे समुन्दर **तैरकर** ही वियतनाम तक क्यों न जाना पड़े।

शिन्ज़ो

□

नागासाकी
अप्रैल—

दान,

धुन का पक्का आदमी बुलडोजर की तरह होता है, वह अपने मार्ग में किसी रोड़े-पत्थर की परवाह नहीं करता। यहाँ तक कि रुपये-पैसे की बाधा की भी परवाह नहीं करता और अपने काम में डूब जाता है।

"मैं तुम्हें मुस्तकिल तौर पर अपने कैमरामैन की जगह तैनात कर रहा हूँ," इस्सा ने मुझसे कहा। "मैं तुम्हें माहवारी तनखाह दूँगा, लेकिन कोई राजमी तनखाह नहीं, और तुम मेरे दफ्तर में ही सो सकते हो। इस तरह हम ऐटम बम से जले हुए लोगों के फोटो तैयार करने में रात को भी वैसे ही काम कर सकेंगे जैसे दिन में।" इस बात के जवाब में मैंने यह कहा :

"हाँ, इस्सा। हमें दिन-रात काम करना चाहिए। उन्होंने अब दक्खिन अमरीका में भी नापाम बमों का इस्तेमाल शुरू कर दिया है। इस काम में वे दक्खिनी अमरीका के ही हवाबाजों से विद्रोहियों के छापामार दस्तों पर नापाम बम गिरवाते हैं। जल्द ही दक्खिनी अमरीका के लड़के और लड़कियाँ—दान की तरह—जलन के जख्मों से तड़पेंगे—कराहेंगे। इस नयी ख़ूँरेजी की खबर पढ़कर मैं रात-भर सो नहीं सका। हमें ऐटम-बम से जले लोगों की फिल्म तैयार करने में बहुत जल्दी करनी चाहिए।"

"मंजूर, लेकिन कम-से-कम खर्च में, मैन !" इस्सा ने जवाब दिया। "अपने पास पूँजी बिल्कुल नहीं है।"

मैंने पूछा, "तो यह कम-से-कम खर्च भी कहाँ से जुटायेंगे ?"

इस्सा अपने बाल खींचता हुआ चिन्ता में डूब गया। मैं सहसा चिल्लाया, "एम. ! उसका बाप शराब का व्यापारी था। उसने बोर्दियो से बड़ी दौलत कमाई थी। उसके बाप की विधवा काफी पैसेवाली है। इसलिए मैं एम. से बोर्दियो की दौलत निकलवाऊँगा। मैं जा रहा हूँ !" मैं चिल्लाया, जिस पर इस्सा ने हँसते हुए कहा, "अरे, तुम तो एकदम बदल गये हो, मैन !"

मैं भी हँस दिया, लेकिन उसी वक्त मेरे पेट में ऐसा बल पड़ा कि मैं दर्द से तड़प उठा "नहीं, मैं तुम्हारे कैमरामैन की नौकरी उससे नहीं छीन सकता, चाहे मैं उससे अच्छा ही फोटोग्राफर क्यों न होऊँ, जैसा कि तुम्हारा कहना है," मैं बोला। इस पर इस्सा ने मुझे सूचना दी, "शान्ति से काम लो, आदमी ! मेरा कैमरामैन बिल्कुल टूट गया है, अफसोस की बात है। हमारी पिछली यात्रा के वक्त बढ़ती हुई बमबारी से हताहत लोगों की संख्या इतनी बढ़ गयी थी कि उन्हें देखकर उसको इतना गहरा सदमा पहुँचा कि उसका दिमाग विक्षिप्त हो गया। उसे यन्त्रचालित हिंसा और नरसंहार देखने की शिक्षा नहीं मिली थी," इस्सा ने बताया।

एम. ने कहा, "अन्दर आ जाओ," जब मैंने उसके होटल के कमरे के दरवाजे पर दस्तक दी। वह खिड़की के पास नंगी बैठी थी और इस्तेमाल की हुई ब्रेजियर को रद्दी की टोकरी में डाल रही थी। हाँ ! वह सच्ची हिप्पी थी, वह मोटी लड़की, मिचीको दूपाँ ! जब उसने देखा कि उसके सामने कौन था तो उसका चौड़ा मुँह खुला का खुला रह गया। मुझे लगा कि वह रोने ही वाली थी।

"ईसा की कसम, मैं जानती हूँ कि मेरी ही गलती से तुम्हें नौकरी से निकाला गया है। मुझे ख्याल नहीं था कि जब मैं उस युद्ध-विरोधी मीटिंग के बारे में लोगों से चर्चा कर रही थी, तो कोई राज बता रही थी," एम. ने कहा और अचानक उसने अपने मुँह पर एक जोर का थप्पड़ मारा। "ले यह थप्पड़, मनहूस, शराबी मुँह !" वह चिल्लायी। फिर उसने अनचेते में ही एक हरी तौलिया अपने नंगे बदन से लपेट ली। "ओह, मैंने तुम्हारे साथ जो किया है, उसका प्रायश्चित्त कभी नहीं कर सकूँगी, शिन्ज़ा।"

"तुम जरूर कर सकती हो," मैंने तपाक से कहा, यह सोचकर कि इस वक्त मेरी गोट ऊपर थी। "इस्सा के ऐटम से जले लोगोंवाली फिल्म को बनाने में पैसे से मदद करो। क्या तुम हम लोगों को कुछ येन दे सकती हो, एम. ?"

फौरन वह मोटी-तगड़ी, करीब-करीब नगी लड़की साके की खाली बोतलों के ढेर के नीचे कुछ तलाशने में व्यस्त हो गयी। उसने ढूँढकर एक चैक-बुक निकाली और एक चैक पर उसने बड़े जोश से अपना दस्तखत कर दिया।

"थोड़े-से येन ? बकवास ! मुझे साल-भर के लिए जो खर्च मिलता है, यह उसकी आधी रकम है। लो इसे रख लो ! इस्सा के लिए, झुक-झुककर कृतज्ञता जाहिर करना बन्द करो। मैं जब चाहूँ, कोई-न-कोई नौकरी कर सकती हूँ, मेरा ख्याल है," उसने कहा और अचानक मोटी-गदरायी एम. मेरी बाँहों में आ गयी थी और एक बच्ची की तरह रो रही थी। फिर उसने मुझे पीछे हटाकर कहा कि मैं भागकर जाऊं और साके की कुछ बोतलें खरीद लाऊँ ताकि हम लोग जश्न मना सकें।

"किसका जश्न ?" मैंने पूछा।

"क्या वह **मेरा** अपना काम नहीं है, ईसा की कसम। जाओ, भागकर जाओ ! फौरन दफा हो जाओ !" एम. चिल्लायी, और अचानक वह मुझे बेहद अच्छी लगने लगी। आठ साल की उम्र के बाद आज मैं पहली बार गुनगुनाया और साके की बोतल खरीदने के लिए एक टाँग पर फुदकता हुआ भागा।

और अब दान, दान मैं तुमसे मिलने के लिए आ रहा हूँ। हाँ, सच, मैं वियतनाम आ रहा हूँ—वियतनाम को, जिसे मैं अपना प्यार भेजता हूँ।

शिन्ज़ो

## दो

वियतनाम
अप्रैल—

प्यारी एम.,

अब मैंने काले रंग की सूती पतलून पहन ली है और पहिए की तरह एक गोल हैट लगा लिया है। इस्सा ने भी एक काला पाजामा पहना है ताकि कोई यह न समझे कि हम लोग वियतनामी नहीं हैं। लेकिन दान ने

मुझे देखते ही 'पहचान' लिया ! (इस्सा मुझे सीधे उसकी बारक में ले गया जहाँ जख्मियों की बड़ी भीड़ थी और सड़े हुए घावों की बू आ रही थी।) चेरी के शगूफों के गुच्छे की तरह उसने अपना हाथ बढ़ाया। तब से हम लगातार एक-दूसरे का हाथ पकड़े रहते हैं।

आह, यह कुर्बान की गयी लड़की, जितना मैं सोचता था उससे कहीं ज्यादा बीमार है। उसके जले हुए अंग ऐंठते रहते हैं, जिस तरह मेरे अंग ऐंठा करते थे, जब मैं अपनी चीखें रोकने की कोशिश करता था। बहरहाल, इस कोशिश में उसका सारा बदन काँपने लगता है, और उसके चेहरे से पसीना टपकने लगता है। आज मैंने उससे कहा : चीखो। उसने ऐसा ही किया।

एम., तुमने मुझसे हवाई जहाज में बैठने से पहले कहा था : "मुझे लिखना कि वियतनाम कैसा लगता है।" माफ करना, मैं तुम्हारे आदेश का पालन नहीं कर सकता। मेरे लिए तो वियतनाम यह टूटी-फूटी बारक है, जिसे छोड़कर मैं शायद ही कभी बाहर जाता हूँ और जिसमें कटे हुए अंगों-वाले शरीर भरे हुए हैं, और जहाँ हर वक्त मौत की याचना करनेवाली आवाज़ें उठती रहती हैं। लेकिन दान और मैं एक खामोश द्वीप पर रहते हैं—हमारी मोहब्बत का द्वीप। अभी से हमारी कुछ छोटी-छोटी 'आदतें' बन गयी हैं, जैसे हम एक शादीशुदा जोड़ा हों। एक वक्त हम दोनों गपशप करते हैं, दूसरे वक्त ऊँघते हुए आराम करते हैं। तीसरे पहर जब सूरज की तिरछी किरणें दान की चटाई से हट जाती हैं, मैं उसकी चटाई खींचकर फिर धूप में कर देता हूँ, क्योंकि मेरी ही तरह दान को भी धूप बेहद पसन्द है। हमारी अपनी एक भाषा भी है (स्कूली अंग्रेजी) और दान को यह बहुत अच्छा लगता है, जब मैं उससे नागासाकी में अपने दोनों के भावी घर की बात कहता हूँ। पेड़ों की पाँत से ढँकी किसी पिछली गली में स्थित हमारा बाँसों से बना घर मेरी बचपन की गली जैसा होगा, जिसे ऐटम बम ने मिटा दिया था। उस घर का एक चित्र बनाकर मैंने दीवार पर टाँग दिया है और नापाम बम से जली मेरी यह महबूबा चटाई पर लेटी उसकी ओर टकटकी बाँधकर देखती रहती है और उसकी हर आँख में जैसे एक-एक दिल धड़कता रहता है।

आज रात को उसने, दान ने, दर्द का दौरा पड़ने पर, अपने फटे हुए जाकेट के बटन खोल दिये। एक नन्हा-सा बच्चा रेंगकर उसकी चटाई पर आ गया और उसने अपनी भूखी उँगलियों से दान का एक स्तन पकड़ लिया। हालाँकि दान के कुँआरे स्तन से दूध तो नहीं ही निकल सकता था, लेकिन बच्चा उसके शरीर की गरमाहट के स्पर्श से ही सो गया। और

उसके नन्हें सिर के ऊपर हमारी आँखें मिलीं और उन्होंने आपस में कहा, हमारा बच्चा। यह पहला मौका था, जब मैंने दान के होंठों पर सच्ची मुस्कान खेलते हुए देखी। लेकिन तभी उसकी आँखों से आँसू की धारें फूट पड़ीं और उसके स्तन पर से ढलकने लगीं और वह प्यासा बच्चा उन्हें पीने लग गया। आँसू ही वियतनाम की कुर्बान की हुई असंख्य दानों के स्तनों का दूध है।

खैर, इसके बाद दान की आँख लग गयी। मोहब्बत के द्वीप में बसे हुए अपने इस नन्हें परिवार की मैं रखवाली करता वहाँ खड़ा रहा। मुस्तैदी से मैं दोनों के शरीर पर से मक्खियाँ उड़ाता रहा। लेकिन जल्द ही बच्चे के मुंह ने दान का स्तन छोड़ दिया, और मैंने उसको गौर से देखा और मैंने बरबस अपनी उंगलियों में एक चीत्कार दबा ली। अन्त में उस बच्चे को मैं वहाँ से उठा ले गया। एम., मैं उसे बाद में दफनाने के लिए अपनी खुली बारक के परले कोने में ले गया। और उस वक्त जब मैं हम दोनों के इस बच्चे की लाश को गोद में उठाये जा रहा था, जिसकी जली हुई राख जैसी खाल मेरे हाथों और बाँहों से चिपक गयी थी, मैं एक बाप बन गया था। यकायक मैंने उस वक्त महसूस किया कि एक बाप की क्या भावना होती है। सो अब मैं अपनी आत्मा में एक बाप बन गया हूँ।

नागासाकी अब मुझे बहुत दूर नहीं लगता। मेरा जला हुआ शहर और दान का जला हुआ देश दोनों जुड़वाँ भाई हैं। गरीब जुड़वाँ भाइयों की तरह वे गले लगकर मातम करते हैं, जिस तरह दान और मैं मातम करते हैं—गले लगकर। अब मैं यह पत्र समाप्त करता हूँ और अपना दस्तखत करता हूँ।

भवदीय तुम्हारा,<br>निशीना शिन्जो

वियतनाम<br>मई—

प्यारी एम.,

तुम्हारा कोई नया समाचार है? खैर, यहाँ एक अमरीकी सैनिक का दिल टूटकर टुकड़े-टुकड़े हो गया। क्योंकि यहाँ जो हो रहा है, वह सब देखने के बाद उसने भी बौद्ध भिक्षुओं की तरह अपने आपको आग लगाकर भस्म कर लेने की कोशिश की थी। वे लोग जल्दी से उस चीखते हुए लड़के को उठाकर किसी सैनिक अस्पताल में ले गये, जिसकी दीवारें, मुझे बताया गया, साउण्ड-प्रूफ हैं। आह, सचमुच मुझे अमरीकी सैनिकों पर

तरस आता है ।

"क्या तुम थोड़ा सा कुचला हुआ केला खा सकती हो ?" मैंने कल अपनी दान से पूछा था, एम. । "नहीं," मेरी कोमल टहनी ने बच्चों की तरह सिर हिलाकर जवाब दिया । "तो शायद थोड़ा फलों का रस पी सकोगी ?"

मैंने मिन्नत की । उसने हामी भरी और मैं एक रसदार पाउ-पाउ फल की तलाश में फौरन भागा ।

सड़कों पर चुस्त-चैतन्य लड़के, लड़कियाँ और जवान-बूढ़े भरे हुए थे, जो जगह-जगह ऐसे गड्ढे खोद रहे थे, जिनमें बमबार हवाई जहाज के आसमान में नजर आते ही कूदा जा सकता है । मेरी फोटोग्राफर की आँख ने फौरन उनके चेहरों को मन के पट पर अंकित कर लिया, जो लगता था कि जिन्दगी और मौत दोनों के लिए तैयार थे । बदकिस्मती से उस बाजार में कोई अच्छा रसदार फल नहीं था, सिर्फ खामोश लोग आसमान की ओर ताक रहे थे । चूँकि इस मोहल्ले पर दुश्मन ने कब्जा कर लिया है, इसलिए अब तीन से ज्यादा आदमियों को एक जगह पर जमा होने की इजाजत नहीं है, क्योंकि दुश्मन को डर है कि वे उसके खिलाफ बोलेंगे—आखिर वियतनामी आपस में और किसके खिलाफ बोलेंगे, सिर्फ उनके ही न, जो उनका संहार कर रहे हैं ? लेकिन मैंने जैसे ही एक औरत से हरा रस भरा नींबू खरीदा, जो मेरा जला हुआ चेहरा देखने के बाद ही उसे बेचने के लिए राजी हुई थी, यहाँ का बाजार एक जापानी काबूकी थियेटर में तब्दील हो गया । हा ! भड़कीले कपड़े पहने हुए यह कौन-सा ऐक्टर था, जो उछलकर स्टेज पर चढ़ आया था ?

"तुम कौन-सी भाषा बोलते हो ? थोड़ी-सी फ्रैन्च, थोड़ी-सी अंग्रेजी ?" एक वियतनामी विद्यार्थी ने पूछा । "थोड़ी-थोड़ी अंग्रेजी," मैंने लापरवाही से जवाब दिया, क्योंकि बिली हो की तरह मैंने भी उस वक्त फोटो खींचने शुरू कर दिये थे । ओह, जरा कल्पना तो करो ! भड़कीली पोशाकवाला वह ऐक्टर एक बनमानुष था ! और उसकी लाल और पीली पोशाक पर युद्ध-विरोधी नारे लिखे हुए थे ।

"मेहरबानी करके हमारी हिफाजत **मत** कीजिए ! मेहरबानी करके हमारी भलाई की खातिर ये सब काम मत कीजिए ! मेहरबानी करके हम पर आसमान से तोहफे मत बरसाइए ! मेहरबानी करके वापस अपने घर जाइए !" ये नारे उस पर लिखे थे ।

सबने तालियाँ बजायी । एम., ऐन उसी वक्त उस बन्दर की तेज आँखों ने मेरे हाथ में दान का हरा नींबू देख लिया । मेरे हाथ से नींबू

छीनकर वह छत पर उछलकर चढ़ गया, जबकि पुलिसवालों ने युद्ध के खिलाफ प्रचार करने के जुर्म में उस पर गोलियाँ बरसानी शुरू कर दीं। इसके जवाब में उसने दान के चूसे हुए नींबू का छिलका पुलिसवालों को फेंककर मारा और खीसें निकालकर वहाँ से गायब हो गया। बाजार में जमा सारे वियतनामी उसकी इस हरकत पर जोर-जोर से कहकहे लगाने लगे।

"मुझे बताने दीजिए" मेरे विद्यार्थी ने कहा। "अपने जंगलों से बन-मानुष पकड़कर हम उन्हें पोशाक पहना के युद्ध-विरोधी प्रोपेगैण्डा फैलाने के लिए शहरों में ले आते हैं, क्योंकि हमें युद्ध-विरोधी प्रचार करने की मनाही है। बड़ी शानदार और कारगर सूझ है, या यह सूझ शानदार और कारगर नहीं है ?"

"बहुत शानदार और कारगर है !" मैंने कहा।

विद्यार्थी ने अपनी जेब से निकालकर मुझे एक नींबू दिया। फिर मेरे जले मुंह के दागों को सहानुभूति भरी निगाहों से देखते हुए उसने धीमे से पूछा : "आप कहाँ से आये हैं ?"

"नागासाकी से," मैंने विद्यार्थी को बताया।

उसने तपाक से मेरा आलिंगन किया और मैं यह महसूस करता हुआ कि मैं दान के देशवासियों से प्यार करता हूँ, भागकर बारक में लौट आया। दान ने नींबू का रस पी लिया। उसके बाद वह मेरी हथेलियों में अपना सिर रखकर सो गयी।

अब गुडनाइट, एम.
निशीना शिन्ज़ो

वियतनाम
मई—

प्यारी एम.,

क्या तुमने इस बीच कुछ और मन्दिरों के फोटो खींचे हैं, उन्हें उल्टा करके ? या कपड़े टाँगने की चिमटियों में सार्डाइन मछलियों को लटकाकर, ताकि वे पॉप-कला का नमूना बन जायें, जैसा कि तुमने मुझे बताया था ? यहाँ पर पॉप-कला बिल्कुल अवास्तविक चीज लगती है, बहुत-बहुत दूर की चीज।

लेकिन वियतनाम की दुनिया बहुत वास्तविक है। वह हर किस्म की बाधाओं के बावजूद जिन्दा रहने की कोशिश कर रही है। यहाँ लोग एक क्षण भी आराम नहीं करते, सिर्फ दुश्मन के खिलाफ लड़ते हैं और अपना साहस बटोरते रहते हैं। बहरहाल, कल क्या हुआ था, उस पर ही जरा

एक नजर डालकर देख लो।

बूम ! एक वियतनामी घड़ियाल बजा, और मैंने उस इन्जीनियर से, जो दान के करीब ही अपनी चटाई पर जख्मी लेटा था और जो टूटी-फूटी अंग्रेजी बोल लेता है, पूछा : "क्या और बममार हवाई जहाज आ गये ?"

"नहीं। और ऐक्टर आ गये हैं," उसने कहा। "ऐक्टरों का एक दल कहीं करीब ही आ पहुँचा है। शानदार बात है, है न ? ये जाँ-बाज ऐक्टर आज शाम को अपना खेल दिखायेंगे, हालाँकि इस पर पाबन्दी लगी हुई है।"

उस इन्जीनियर ने असमर्थता प्रकट की कि खेल देखने के लिए दान को उठाकर बारक से बाहर ले जाने में वह मेरी मदद नहीं कर सकता। लेकिन, सौभाग्य से उसी वक्त इस्सा आ गया।

"भले आदमी, दान को उठाकर बाहर ले जाने में मदद करो ताकि वह **जादूगरों का नाच** देख सके ! आजादी के ऐक्टरों ने सामने के कुंज में अपना स्टेज खड़ा किया है, ताकि दुश्मन उन्हें देख न सकें," इस्सा बोला। उसने एक सिरे पर दान की चटाई पकड़कर मुझे दूसरा सिरा पकड़ने का इशारा किया। "पकड़ लिया ?" उसने पूछा।

"हाँ, पकड़ लिया !" मैंने जवाब दिया और मन-ही-मन कहा : "हमेशा के लिए।"

हम उसे बाँस के कुंज में उठाकर ले गये। फिर इन्जीनियर और नन्हें-नन्हें बच्चों को भी उठाकर ले गये। नापाम बमों से जो बहुत ज्यादा जल गये थे, उनको ले जाना सम्भव नहीं हुआ, क्योंकि हाथ लगते ही उनकी खाल उतर आती है, और वे लोग सचमुच मर रहे हैं। जो दर्शक इतने ज्यादा घायल नहीं थे, वे जोर-जोर से हँसकर शाबाशियाँ देने लगे, जब ऐक्टरों ने "हो-हे-हो !" गाते हुए और कल्पित दुश्मनों के खिलाफ घूँसे तान-तानकर नगाड़े-का-नृत्य पेश किया।

इसके बाद, एम., इन जाँ-बाज ऐक्टरों ने तार के परम्परागत वियतनामी वाद्यों पर संगीत की धुनें बजायीं। इन्जीनियर ने बताया कि ये लोग क्लासीकल वियतनामी संगीत की धुनों को सुरक्षित रखने की कोशिश करते हैं और फ्रुग-स्विंग-पॉप संगीत को प्रोत्साहन नहीं देते, क्योंकि वह सिर्फ असभ्य लोगों के ही लायक है। उसने कहा कि उनके गाने देश के युगों से चलते आनेवाले संघर्ष के उतार-चढ़ावों का वर्णन करते हैं।

"कठिनाइयों के बावजूद, बहुत से **चढ़ाव** भी रहे हैं," उसने हँसते हुए कहा, हालाँकि वह फ्रेग्मेण्टेशन बम से अपने दोनों हाथ खो चुका है—यह आतंक फैलानेवाला एक ऐसा अस्त्र है जो वे लोग आम शहरियों पर गिराते

हैं। "लेट जाओ !" उसी वक्त एक ऐक्टर चिल्लाया और इसके पहले कि तुम राबिन्सन कह पातीं, उन्होंने मिट्टी के तेल के अपने तमाम लैम्प बुझा दिये।

"अपने पेट के बल सीधे लेट जाओ," इन्जीनियर ने अनुवाद किया।

ओह, हुआ क्या था, एम. ? एक चीखता हुआ बममार हवाई जहाज हमारे ऊपर से गुजरा था और हम सब जमीन पर लेटे हुए थे, इस डर से कि वह कहीं गलती से या सिर्फ मजाक में तमाशा देखने के लिए ही कोई बम न गिरा दे। सौभाग्य से, जहाज उड़ता हुआ वहाँ से चला गया।

"हो-हो !" विजयोल्लास से ऐक्टर फिर गाने लगे। वे हँस रहे थे और थिरक रहे थे। हम लोगों ने तालियाँ बजाकर "और ! और !" की माँग की।

लेकिन दान थक गयी थी। इतनी उत्तेजना वह बर्दाश्त नहीं कर सकती थी। आह, एम., मेरी महबूबा बहुत जल्दी थक जाती है ! वैसे उसके घाव पहले से अच्छे दीखते हैं, इसलिए मेरी समझ में नहीं आता कि वह इतनी कमजोर क्यों है। वक्त और मेरा प्यार उसे चंगा कर देगा। जब हमें आखिरकार उसकी चटाई पर एकान्त मिला और जब कम्बल की जगह हमने रात को ओढ़ लिया, तब मैं बहुत खुश था। दान पहले उन ऐक्टरों के आशीर्वाद से जितनी खुश थी, अब वह उतनी ही दुखी और बेचैन हो रही थी।

आखिरकार मैंने दृढ़ स्वर में कहा, "दान, चाहे जो कुछ भी हो, जीतेंगे वियतनाम के लोग ही। वे हार चुके हैं—जो भी हो !"

"हाँ," उसने उत्तर दिया। फिर उसने अपनी स्कूली अंग्रेजी में ये शब्द और कहे : "तुम अब एक वियतनामी हो, शिन्ज़ो। हो न, शिन्ज़ो ?"

"**मैं हूँ** !" मैं इतने जोर से चिल्लाया कि शायद सोये हुए कुछ लोग जरूर भाग गये होंगे। "आज सारी दुनिया वियतनामी है," मैंने दोहराया।

यह बात सच है, एम.। जापान में, **सभी** देशों में अपने सीने में दिल रखनेवाले लोग अपने को वियतनामी महसूस करते हैं।

दान ने सन्तोष की एक हल्की-सी आह भरी। लेकिन जब वह मेरी बाँहों में सो गयी, उस वक्त मेरा दिल करुणा और आशंका से टूट रहा था।

तुम्हारा सच्चा हितैषी,
निशीना शिन्ज़ो

वियतनाम
मई—

प्यारी एम.,

हम लोग बहुत दूर हैं, लेकिन मैं तुम्हारे बारे में सोचता रहता हूँ और कामना करता हूँ कि खुशी तुम्हें दौड़कर मिले। आखिर वह तुम्हें क्यों न मिले ? तुम एक उदार दिल की लड़की हो, जिसका मतलब है कि तुम नेक और भली इन्सान हो। लोग उनसे ही प्यार करते हैं जो भले होते हैं। (हालाँकि वे नहीं जानते कि प्यार का मूल कारण यह होता है।) और अगर किसी से प्यार किया जाता है तो वह सुखी महसूस करता है। तुम्हारे हिप्पी दोस्त इस बात का मजाक उड़ा सकते हैं। उन्हें मजाक उड़ाने दो ! मानव-सत्य एल. एस. डी. के नशे से पैदा किये गये मनो-भ्रमों से कहीं ज्यादा बेहतर होते हैं।

तो, कल रात मैंने सोचा कि मैं भी मनोभ्रम की हालत में पहुँच गया था। तीन किशोर बालक जो एण्टी-पर्सोनल बमबारी के शिकार हुए थे, हमारी बारक में उठाकर लाये गये, साथ में दो अधेड़ उम्र के जख्मी भी थे, जो जोर-जोर से चीख रहे थे। छठा घायल एक बौद्ध भिक्षु था, जिसे दान की बगल में एक चटाई पर लिटा दिया गया। क्या यह मुर्दा लाश है ? मैंने अपने आपसे पूछा। नहीं, क्योंकि काली पोशाकवाला यह धार्मिक व्यक्ति कुछ कहने लगा और जब दान ने अपनी भाषा में जवाब दिया तो वह ब्ल्यू स्ट्रीक में बोलने लगा। (ब्ल्यू क्यों ? मिलने पर तुम मुझे इस शब्द-प्रयोग का मतलब जरूर समझाना।)

"वह क्या कहता है ?" मैंने दान से पूछा जब मुझे लगा कि वह बौद्ध भिक्षु ऊँघकर चुप हो गया था।

"उसके अन्दर गोलियाँ भरी हुई हैं," दान ने उत्तर दिया।

हम रोज की तरह अपनी स्कूली अंग्रेजी में बातें कर रहे थे, इसलिए मुझे ताज्जुब हुआ, जब बौद्ध महाशय ने सुसंस्कृत भाषा में, जो उसने शायद किसी विदेशी स्कूल में सीखी होगी, हमारी बात काटकर कहा।

"गोलियाँ नहीं, पैलेट्स। क्या आपने 'क्लस्टर-बमों' का नाम नहीं सुना ? आपका क्या नाम है जनाब ?"

"मान्यवर, मेरा नाम निशीना शिन्जो है। नागासाकी का रहनेवाला हूँ। शायद आपका मतलब 'लेजी-डॉग' बम से है ?"

"सी. बी. यू. किस्म के सभी बमों से है," जानकार महाशय ने जवाब दिया। "लेजी-डॉग बम के बाद 'पाइन-एपल' किस्म का आतंक फैलानेवाला बम आया, फिर उसके बाद 'ग्वावा' किस्म का। ग्वावा उस बम का नाम

है, जो अपने गर्भ में फौलाद की आठ सौ पैलेट्स लेकर चलता है, जनाब।"

नापाम बम से जख्मी बच्चों में से एक की चीख ने बौद्ध-भिक्षु की बात में विघ्न डाल दिया।

"अन्ततः यह आप आजकल के अरबों डालरवाले विज्ञान की अन्तिम परिणति देख सकते हैं," उसने एक क्षण तक अपनी आँखें ढाँपने के बाद कहा, "वैज्ञानिक लोग आरामदेह प्रयोगशालाओं में बैठकर नर-संहार के इन भयानक अस्त्रों की ईजाद करते हैं और शाम को अपनी सुखी पत्नियों और ठाठ से पाले-पोसे बच्चों के पास लौट जाते हैं। जबकि **हमारे** बच्चे···।" बौद्ध भिक्षु ने चीखते हुए बच्चे की ओर इशारा किया, जिसके बदन में पैलेट्स उसी तरह भरी हुई थीं, जिस तरह तकिये के गिलाफ में चावल के दाने भरे जाते हैं। "विज्ञान और वैज्ञानिकों का हर जगह नैतिक पतन हमारे इस युग की सबसे दुखदायी हकीकत है," उसने मुझे बताया। फिर वह चुप हो गया। "ओ--ऊ" वह आहिस्ता-से कराहा।

"दर्द हो रहा है ? थोड़ा-सा फल का रस लेंगे, आदरणीय संन्यासी ?" मैंने पूछा।

"नहीं, मेरे ऊपर उसे नष्ट करना बेकार होगा। मेरा खयाल है कि मैं अब जल्द ही मर जाऊँगा। अगर किसी तरह जिन्दा बचा रहा तो अपने ऊपर मिट्टी का तेल उँडेलकर दियासलाई लगा लूँगा। इस तरह के प्रतिवाद हमारे लोगों को अपनी लड़ाई जारी रखने का साहस प्रदान करते हैं," बौद्ध-भिक्षु ने बताया।

यकायक मैंने उसकी आँखों में भयंकर यन्त्रणा का चित्र देखा। वह दान के सिरहाने दीवार पर टँगी उस तस्वीर को टकटकी बाँधकर देख रहा था, जिसमें मैंने हम दोनों के एक सुखी जापानी घर का खाका खींचा था।

"जब तक हमारी धरती पर न्याय और शान्ति कायम नहीं हो जाती, तब तक किसी को अपने-अपने घरों और अपने-अपने सुख के सपने नहीं देखने चाहिए," बौद्ध-भिक्षु ने गम्भीर स्वर में कहा। "उस न्याय और शान्ति की व्यवस्था के लिए हम सबको तब तक लड़ना चाहिए। ओ-ऊँ," वह फिर कराहा, और भी धीमे-धीमे से, और उसने अपनी आँखें मूँद लीं।

खैर, मेरी यह आदत है कि जब मैं नहीं चाहता कि लोग मेरी भावना को भाँप सकें, मैं अपनी आँखें मूँद लेता हूँ। मैंने सावधानी से अपनी निगाह बौद्ध भिक्षु से हटाकर दान के चेहरे पर टिका दी। वह उस मसखरे तोते की तरफ ताक रही थी, जिसे मैंने अपनी तस्वीर में जोड़ दिया था (दान के पास, जब वह गाँव में अपने आदरणीय दादा के घर में एक नन्ही-मुन्नी दान थी, तब उसके पास पिन नाम का एक हरा तोता था, और वह तब से ऐसे

पक्षी की तमन्ना करती रही है ।) लेकिन इस वक्त दान के माथे पर चिन्ता की रेखाएँ उभर आयी थीं। क्या मेरी महबूबा ने बौद्ध-भिक्षु को मुझसे कहते हुए सुन लिया था कि हमें अलग अपने एक सुखी घर की कल्पना भी नहीं करनी चाहिए, जब तक कि हर व्यक्ति को शान्तिपूर्ण घर नहीं मिल सकता ? शायद अब दान मेरे साथ जापान नहीं जायेगी।

"दान।" मैं भयभीत स्वर में चिल्लाया। "क्या हुआ ?" उसने पूछा। "नहीं, कुछ नहीं," मैं बुदबुदाया, लेकिन मैं उसे चूमने लग गया—उसके हाथ को और उसके नन्हें कानों को। अन्त में उसके होंठों को, जिन्होंने जवाब में मेरे होंठों को चूमा। मैं फिर सुखी महसूस करने लगा। क्या यह गलत बात थी, एम. ? मेरा सुखी महसूस करना, मेरा मतलब है, पीड़ा और दर्द की इस बारक में ? लेकिन मैंने जिन्दगी में बहुत कम सुख पाया है।

इस बीच काली रात उतर आयी थी। मैंने दान को अपनी बाँहों में ले लिया।

नेन नेन कोरी री
नेन कोरो रॉन
नेन कोरो रॉन

मैं दान को यह जापानी लोरी गाकर सुनाने लगा और जल्द ही 'नेन' (नींद) मेरी महबूबा को आ गयी। एम., मैं उससे मोहब्बत करता हूँ ! हाँ, मैं उससे मोहब्बत करता हूँ। इसी वक्त छत के एक सूराख में से एक प्याला चाँदनी नीचे आकर आदरणीय बौद्ध-भिक्षु पर बिखर गयी। हाँ ! वह पद्मासन की मुद्रा में पल्थी मारे और सामने हाथ पर हाथ रखे बैठा था, और उसका जख्मी चेहरा 'मुस्कराते बुद्ध' की छवि बना हुआ था। शानदार आदमी है ! ऊपर से मखमल, अन्दर से इस्पात। मैं उसको भी प्यार करने लगा।

अच्छा, खुश रहो
शिन्ज़ो

☐

वियतनाम
मई—

प्यारी एम.,

मैं जो कुछ लिख रहा हूँ, उसे क्या तुम पढ़ सकती हो, एम. ? मैं तुमसे यह बात क्यों पूछ रहा हूँ ? क्योंकि यह खत मैं तुमको एक गुफा में बैठकर लिख रहा हूँ, जो उतनी ही अँधेरी है, जितने अँधेरे नागासाकी के वे गढ़े थे,

जहाँ उस पहली कहर के बाद बैठकर मैंने एक अध-भुना चूहा खाया था। और अब फिर मुझे कहर के उसी हौलनाक आलम में से गुजरना पड़ा है। क्योंकि शायद अब वे मुझे मारने के लिए फिर लौटकर आये थे।

उ-ड़ा-न

क्या मैं कोई दुःस्वप्न देख रहा हूँ। चार रातें पहले मैंने उनींदी हालत में अपने आपसे पूछा था। मैं अपनी चटाई से उछलकर खड़ा हो गया और अँधेरे में घूर-घूरकर देखने लगा। मैं कुछ नहीं देख सका, किसी को नहीं। एकाएक मैं फिर आठ साल का बालक बन गया, जो रहमदिल ईसा मसीह के गिरजाघर के सामने नागासाकी में सड़क पर पड़ा आँखें फाड़-फाड़कर अपने आदरणीय माँ-बाप की तलाश कर रहा था, जिन्हें ऐटम बम की आग अपनी लपटों में उड़ा ले गयी थी।

“दान ! इस्सा ! तुम लोग कहाँ हो ?” मैं चिल्लाया, उसी तरह जैसे उस दिन चिल्लाया था, “ममी-पापा, तुम लोग कहाँ हो ?” और फिर मैंने अपने आपको पागल की तरह लगातार चिल्लाते हुए सुना, “दान ! इस्सा ! दान-इम्मा, तुम लोग कहाँ हो ?”

मैं दो कदम ही आगे बढ़ा था कि काली पोशाक में लिपटी एक लाश पर औंधे मुँह गिर पड़ा। बौद्ध-भिक्षु ! हाँ, यह वही शानदार आदमी तो था, और डर से काँपते हुए मुझे अहसास हुआ कि उस धड़ाके ने वह चाहे कुछ भी हो—इस आदमी को ही नहीं मार डाला है, बल्कि उसके इस्पात जैसे कठोर संकल्प, उसकी उच्च-शिक्षा, उसके चमकते हुए सपने को भी मार डाला है। उसकी काली पोशाक आग से जल रही थी। तो हमारे बौद्ध-भिक्षु को अपने ऊपर मिट्टी का तेल उँडेलने की जरूरत नहीं पड़ी ! यह काम उन्होंने कर दिया था, आग के गोले बरसाकर जलानेवालों ने। कपड़ों में लगी आग की लपटों ने उसके चेहरे को रोशन कर दिया था, और क्या तुम विश्वास कर सकोगी ? उसके चेहरे में अब भी ‘मुस्कराते बुद्ध’ की छबि अंकित थी।

“दान—दान !” मैं फिर चिल्लाया।

मेरी खौफजदा आँखें अपनी चटाई की ओर गयीं और उन लपटों की रोशनी में, जो बौद्ध-भिक्षु को भस्म कर रही थीं, मुझे दान के दुर्बल शरीर की रूपरेखा नजर आने लगी। दान के माथे पर खून का एक गोल धब्बा बन गया था। ओह, उसे क्या चीज आकर लगी थी ? मैंने सोचा। खपरैल का टुकड़ा ? हाँ, खपरैल का टुकड़ा ही होगा। बारक की सारी छत जैसे कहीं गायब हो गयी थी और जब मैंने आँखें उठाकर ऊपर देखा तो मुझे आसमान के तारे साफ नजर आ रहे थे।

ओह, एम., मैं झुककर दान की छाती टटोलने लगा। दान का दिल कहाँ पर था ? क्या उसकी धड़कन बन्द हो गयी थी ? नहीं, धड़कन अभी मौजूद थी। मैं जोर-जोर से रोने लगा, और मैंने उस वक्त महसूस किया कि दान के लिए मेरा प्यार कितना-कितना बड़ा हो गया था।

पानी, मैंने अपने आपसे कहा। पानी कहाँ मिलेगा ? एक तरह से सारी बारक नष्ट हो गयी थी, लेकिन दान का और मेरा मिट्टी का घड़ा अपनी जगह साबुत पड़ा था। इसलिए मैंने उस घड़े में से पानी लेकर दान के जख्म पर छिड़का और उसने होश में आकर आँखें खोल दीं। उसने मेरी ओर प्यार की उस नजर से देखा, जिसमें कृतज्ञता नहीं होती। इस निगाह में एक मर्द के लिए औरत का प्यार था। और हम दोनों एक-दूसरे से लिपट गये।

अब मैं तुम्हें एक अजब बात बताने जा रहा हूँ, एम.। संहार की उस रात को मैं और दान पहली बार पति और पत्नी बने थे। चारों ओर से मरे हुए और मरते हुए लोगों के बीच घिरकर हमारे दिलों में जिन्दगी की एक तीव्र लालसा पैदा हुई। शायद हम नयी सृष्टि करना चाहते थे, ताकि हमारी मानव जाति खत्म न हो जाये। एम., क्या तुम मेरी बात को समझ सकती हो ? कोई परवाह नहीं। कोई परवाह नहीं कि बाहर की दुनिया समझती है या नहीं, कम-से-कम हम अभिशप्त और मौत के शिकंजे में फँसे लोग अपने कामों को बखूबी समझते हैं। और जब घायल लोगों की चीखों और कराहों के बीच हम एक-दूसरे से प्यार कर रहे थे, दान ने और मैंने जिन्दगी को पहली बार समझा। इस क्षण शायद एक नन्हा-सा शिशु दान के फूल जैसे शरीर में रूप ले रहा होगा। हम दोनों का अपना बच्चा, आखिरकार !

वह रात जब ढल रही थी, मैं खण्डहरों में ठोकरें खाता हुआ, रास्ता ढूँढ़ता फिर रहा था। गिरे हुए पत्थर और लकड़ी की शहतीरें बहुत-सी लाशों को अपने नीचे दबाये पड़ी थीं। मलबे के ढेर में से कहीं खून से लथ-पथ एक बाँह निकल रही थी, कहीं पैर कटी हुई एक टाँग निकल रही थी। उस वक्त, एम., मुझे पहली बार नफरत का असली मतलब समझ में आया। जब मैं इन नौजवानों और निस्सहाय बूढ़ों के बीच खड़ा था, जिन सबकी एक साथ हत्या की गयी थी, वह भी इस उद्देश्य से कि एशियाई लोगों में आतंक फैलाया जा सके, मैंने मन-ही-मन कसम खायी कि मैं एक क्षण के लिए भी नफरत करना बन्द नहीं करूँगा, न कभी बदला लेने की योजनाएँ बनाने से चैन लूँगा। बौद्ध-भिक्षु ने मुझे बताया था कि दुश्मन के हवाबाजों को यह हुक्म मिला हुआ है कि चुन-चुनकर अस्पतालों और स्कूलों पर बम

गिरायें, क्योंकि इससे मुकाबला करने का वियतनामियों का संकल्प तोड़ा जा सकता है। वे लोग कितनी बड़ी गलती कर रहे हैं ! आह, एम., उन्होंने दुनिया-भर में अपने खिलाफ नफरत का इतना बड़ा जखीरा जमा कर लिया है कि उनके बच्चे और उनसे भी अगली पीढ़ी उसकी आग में जलकर खाक हो जायेगी। उस आग की जलन के घाव भी उतने ही घातक होंगे, जितने नापाम और एटम बम से जलने के घाव हमारे लिए घातक साबित हुए हैं।

सादर,
शिन्ज़ो

वियतनाम
मई—

प्यारी एम.,

मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं कभी एक गुफा के अन्दर अपना घर बनाऊँगा। लेकिन तब क्या मैं सात साल की उम्र में कभी इस सम्भावना पर विश्वास करता कि एक साल के अन्दर ही मैं खण्डहरों के बीच रहने लगूंगा और कूड़ा-कचरा खाऊँगा ? बहरहाल, मेरे बचपन के खण्डहर एक बीती याद बन चुके हैं। लेकिन यह वियतनाम की गुफा एक नयी अनुभूति है।

खैर, यह तो सभी जानते हैं कि गुफा कैसी होती है, और यह गुफा भी ठीक वैसी ही है—एक सीलन-भरा अँधेरा सूराख, घबरायी हुई चमगादड़ों से भरा हुआ। मैंने जब दान और पाँच और जिन्दा बचे हुए लोगों को उठाकर इस गुफा तक लाने में इस्सा की मदद की थी, तब मेरा ख्याल था कि हम लोग यहाँ सिर्फ एक दिन ही टिकेंगे। लेकिन यहाँ अब एक हफ्ता गुजर गया है ! जिन्दा बचे लोगों में से एक तो यहाँ की हालत से पागल होकर भाग गया और जो दो लड़के उसको बचाने के लिए गये थे, वे अब तक लौटकर नहीं आये। क्या खूंखार जानवरों ने उन्हें खा लिया है ? या उन्हें पकड़ लिया है, उन्हें यातनाएँ दी हैं और उनसे पूछताछ की है—दूसरे किस्म के खूंखार जानवरों ने ? बाकी के दो बूढ़े घायलों ने अब खाना-पीना बन्द कर दिया है। बुखार उन्हें जला रहा है। मैं छत से चूनेवाले पानी को जमा करके उन्हें नहलाता हूँ और मैं उन्हें बहुत प्यार करता हूँ। मेरी दान भी करीब-करीब कुछ नहीं खाती। रात के वक्त इस्सा खाने के लिए जो टुकड़े जमा करके लाता है, वह उसके गले के नीचे नहीं उतरते।

हाँ, मुझे बड़े दुख से यह बात कहनी पड़ रही है कि दान बहुत बीमार

है । यहाँ तक पहुँचने के कठिन सफर ने उसके शरीर को बीमार कर दिया और उस दिन की वहशियाना बमबारी ने उसकी आत्मा को बीमार कर दिया । अभी एक महीने पहले ही उन्होंने अस्पताल को बमबारी से नष्ट कर दिया था, जिसमें वह शुरू में भरती की गयी थी । उस अस्पताल की छत पर तो रेड-क्रॉस भी पेण्ट किया हुआ था । और अब फिर ! खैर, हमारी इस गुफा के हक में एक बात तो कही ही जा सकती है । इसके ऊपर रेड-क्रॉस का चिह्न पेण्ट किया हुआ नहीं है, जो उनके बमबारों को दावत दे सके । अस्पताल, कोढ़ियों के सेनेटोरियम, मनोरोग के अस्पताल जैसी करुण जगहें उनके बमों के "सबसे पहले निशाने हैं" । एक गुफा पर वे अपने बम बेकार जाया नहीं करेंगे ।

एम., मैं अपनी पत्नी का दिल कैसे बहलाऊँ, जिसके गर्भ में एक नन्हा-सा शिशु है, शायद ? पुरानी बारक में मैं नागासाकीवाले अपने घर के चित्र में नयी-नयी चीजें जोड़ सकता था । दान को यह बात बहुत अच्छी लगती थी । मैंने उसके बगीचे में एक मेज जोड़ दी थी, जिस पर बैठकर वह अपने बीजगणित का अध्ययन करेगी, और उसके तोते, पिन को एक विचित्र-सी पूँछ लगा दी थी । उस विचित्र पूँछ को देखकर दान मुस्करायी थी और अगर मैं कोई और ऊटपटाँग चीज बना देता तो मैं उसको हँसा भी सकता था । मैंने जब उनके भैंसे को परिवार के साथ मेज पर बैठकर खाना खाते दिखाया, तो दान हँसते-हँसते लोट-पोट हो गयी थी । ओह, कभी वह बड़ी हँसमुख दान रही होगी ।

लेकिन यहाँ मेरे पास न कागज के टुकड़े हैं, न रंगीन पेन्सिलें हैं, जिनसे अपने भावी जीवन की तस्वीरें बना सकूँ । लेकिन आज सुबह मुझे एक अच्छी बात सूझी । दिन में एक बूढ़े घायल की नस फट जाने से मृत्यु हो गयी, दुर्भाग्य ! मैंने उसके खून के ढेर में एक लकड़ी डुबो-डुबोकर मोटी-मोटी रेखाओं में गुफा की दीवार पर तस्वीर बनानी शुरू कर दी । गुफा की छत के एक छेद में से मेरी तस्वीर पर रोशनी पड़ रही थी । लेकिन शान्तिपूर्ण चेरी के पेड़ का चित्र, जिसके नीचे दान और हमारा शिशु खेल रहा था, मैं पूरा नहीं कर सका । यकायक मेरे अन्दर की सारी नफरत उफनकर मेरी उँगलियों में दौड़ गयी और उसने मुझे भविष्य के एक सुखी जीवन की झूठी तस्वीर बनाने से रोक दिया ।

इसलिए मैंने कुर्बानी के उस खून में अपनी लकड़ी फिर डुबोयी और एक जलते हुए शहर की तस्वीर बनायी । शायद वह नागासाकी की तस्वीर है, या एक वियतनामी शहर की या दुनिया के किसी भी देश के शहर की तस्वीर है, जो एक दिन उनकी नफरत का शिकार बनेगा । उस जलते हुए

शहर के ऊपर मैंने उन आदमियों की भी तस्वीर बनायी जो ऐटम बम गिरा रहे थे, आग लगानेवाले बम गिरा रहे थे, विस्फोटक बम गिरा रहे थे, एण्टी पर्सोनल बम गिरा रहे थे। हाँ, मैंने भविष्य का चित्र बनाया था, क्योंकि उन्होंने अपने दुश्मनों को, वे चाहे कहीं भी क्यों न रहते हों, बमों से मटिया-मेट कर देने की कसम खा रखी है—इसका मतलब है कि ऐसे हर आदमी, हर सैनिक या नागरिक को मौत की गोद में सुलाने का निश्चय कर लिया है जो शान्ति और बेहतर जिन्दगी की माँग करता है।

एम., तुम्हारा क्या ख्याल है कि हमारी भावी पीढ़ियाँ मेरे गुफा-चित्रों का क्या मतलब लगायेंगी? योरप की मशहूर गुफाओं में आदिम इन्सानों के बनाये चित्र अभी तक मौजूद हैं, जिनमें उन जंगली जानवरों को दिखाया गया है, जो उस वक्त इन्सान के सबसे खतरनाक दुश्मन थे। इन्सान के रक्त में बनाये गये मेरे चित्रों को देखकर, सौ साल या हजार साल बाद लोग यह जानकर हैरान रह जायेंगे कि हमारे जमाने में इन्सान का सबसे बड़ा दुश्मन था——इन्सान! हाँ, खुद इन्सान ही! ओह, मुझे एक रहमदिल चीते की इस वक्त कितनी जरूरत महसूस हो रही है!

आतंकपूर्वक, सादर
शिन्ज़ो

□

वियतनाम
मई—

प्यारी एम.,

आज रात को तुम्हें अपने होटल के कमरे में कैसा लग रहा है, जहाँ हम इतने अच्छे दोस्त बन गये थे? मुझे अब अहसास हो रहा है कि तुमने उस दिन किस चीज का जश्न मनाया था जब हमने साथ मिलकर साके के जाम पिये थे। तुम्हारी महान उदारता ने उस दिन तुम्हें एक नया इन्सान बना दिया था और हमने उस नये इन्सान की सेहत के जाम पिये थे। एम., मुझे तुम बहुत अच्छी लगती हो।

"भले आदमी!" इस्सा ने कल रात गुफा में जल्दी-जल्दी दाखिल होते ही कहा। उसके दिल में जैसे जोश की आग लगी हुई थी। "हम लोग कल सवेरे युद्ध के मोर्चे पर जा रहे हैं। मैं कल पौ फटते ही तुम्हें लेने आ जाऊँगा, अपने फिल्म बनाने के सामान के साथ," उसने कहा, जबकि मैं घबराकर एक कदम पीछे हट गया था। दान की ओर एक अर्थ-भरी नजर फेंककर मेरी आँखों ने इस्सा को जैसे तार से यह **एस-ओ-एस** भेजा: "मैं अपनी बीमार पत्नी को अकेला छोड़कर नहीं जा सकता।" लेकिन इस्सा का

निश्चय-भरा चेहरा कठोर हो गया।

"तुम्हें चलना चाहिए ! वे लोग अपनी बमबारी और बढ़ा रहे हैं। अपनी फिल्म पूरा करने से पहले तुम्हें और मुझे किसी सूरत में भी मरना नहीं चाहिए। हमारा कोई महत्त्व नहीं है, भले आदमी। लेकिन फिल्म का महत्त्व है ! हम लोग छः बजे सुबह चल पड़ेंगे। ठीक है ?"

"हाँ, ठीक है।"

अब इस्सा दान की चटाई के सहारे घुटनों के बल बैठ गया। उसने दान की ओर देखा, उसकी आँखों में आँसू छलक आये। ओह, एम., यह इस्सा—अन्दर से उसका दिल बड़ा कोमल है।

"मैं तुम्हारे लिए एक पाऊ-पाऊ फल लाया हूँ," उसने दान से कहा। "तुम्हारे लिए मैंने उसका रस निकाला है," वह फुसफुसाया और उसने दान को रस पिलाने की कोशिश की, जो वह अपने टीन के मग में भरकर लाया था।

बदकिस्मती कि मेरी महबूबा वह रस पी ही नहीं सकी। दान अब कोई भी चीज नहीं निगल पाती ! बहरहाल, मेरे लिए इस्सा, जो पके चावल का लड्डू लाया था, वह मैंने एक मरभुखे की तरह फौरन खा लिया। चावल के लड्डू के ऊपर से नजर उठाकर मैंने उसकी ओर देखा—वह, 'आदमी का आदमी संहार कर रहा है' वाले मेरे 'गुफा चित्रों' को एकटक देख रहा था।

"क्या हम उन लोगों को दुनिया का यह हश्र करने देंगे ?" इस्सा ने उन गुफा-चित्रों की ओर इशारा करके कहा।

"तुम कहना क्या चाहते हो ?"

"वेल, दुनिया के लोगों को आग से भस्म करनेवालों को रोक देना है ! और उन्हें रोकने का यही वक्त है। इसी जगह, वियतनाम में। हमें उनको रोकने में इन लोगों की मदद करनी चाहिए, मैन। तुम्हें अपनी जिन्दगी की सबसे बड़ी कुर्बानी देनी पड़ेगी।"

"छोड़कर जाने की, अपनी···?" मैंने कहना शुरू किया।

इस्सा ने सिर हिलाकर हामी भरी और वह दान की चटाई पर कुछ देर तक माथा टेककर बैठा रहा। फिर वह उछलकर खड़ा हो गया। उसने बुखार में काँपती हुई मेरी महबूबा को ऐसी करुणा भरी दृष्टि से देखा कि मेरा कलेजा बरफ की तरह जम गया। इस्सा ने नापाम बम से जले हुए सैकड़ों लोगों को देखा था और वह समझ गया था कि दान कभी ठीक नहीं हो सकेगी, कि वह अब कभी अपनी चटाई से नहीं उठेगी। उसकी आँखों में इस नतीजे को पढ़कर मेरी इन बाईस सालों में दोबारा मौत हो

गयी। आह, एम., नागासाकी का रहमदिल ईसा मसीह गलत था : इन्सान **जरूर** जानते हैं कि वे क्या कर रहे हैं ! मैं यह बात बखूबी समझ गया हूँ ।

"इस्सा प्लीज़, इस वक्त तुम यहाँ से चले जाओ," मैंने अपने दोस्त से कहा। "पौ फटने से पहले ही मैं तुम्हारे साथ जाने को तैयार हो जाऊँगा," मैंने जापानी भाषा में कहा और इस्सा पीछे को मुड़कर एक बार भी देखे बगैर हमारी गुफा से तेजी से बाहर निकल गया। वह कागज की तरह सफेद पड़ गया था, एम.।

इन शब्दों के बाद अपने दस्तखत करके इस पत्र को समाप्त करता हूँ।

तुम्हारा स्नेहाभिलाषी,

शिन्ज़ो

पुनश्च—

अगर सम्भव हुआ तो सूरज निकलने पर जाने से पहले तुम्हें गुड-बाई का एक संक्षिप्त पत्र लिखूंगा।

☐

वियतनाम

मई—

गुडबाई एम.,

यह रहा फिलहाल के लिए गुडबाईवाला खत, जिसका मैंने वायदा किया था। सुबह और इस्सा करीब दस मिनट में यहाँ आ जायेंगे, इसलिए इस भद्दी घसीट के लिए माफ कर देना, जिसे मैं खुद बहुत नापसन्द करता हूँ।

खैर, इस्सा जब रात को चला गया, तब मैं दान की चटाई के किनारे घुटनों के बल झुककर बैठ गया और घण्टों तक उसी तरह बैठा रहा, सोच में डूबा हुआ। दान की आँखें बन्द थीं, और वह सो रही थी या उनींदी हालत में थी। अचानक उसने अपनी आँखें खोल दीं, जो बुखार की गरमी से काली मखमल की तरह लग रही थीं। भौंचक्की नजर से मेरी ओर देखते हुए वह मुस्करा दी।

"मैं पिन का सपना देख रही थी," वह बोली। "वह अपने पेड़ पर उल्टा लटका सीटियाँ मार रहा था।"

मैंने उसकी भौंह चूमी, जिसमें हमेशा काव्यमय बिम्ब खेलते रहते थे, और मैं कृतज्ञ महसूस करने लगा कि उसके सरसाम के सपने सुखपूर्ण थे। मेरी पत्नी इतना ज्यादा बीमार थी कि लम्बी-लम्बी बरौनियोंवाली अपनी आँखों को देर तक खुला नहीं रख सकती थी, फिर भी वह शान्त चित्त नजर आ रही थी। शायद बचपन के अपने तोते की याद ने उसको धान के खेतों

में स्थित अपने आदरणीय दादा-दादी के गाँव में पहुँचा दिया था। हा ! मेरे निर्णय का यही तो शुभ अवसर था। काले वियतनामी जाकेट के अस्तर में से मैंने एक टिश्यू पेपर निकाला, जिसमें वह कीमती चीज लिपटी हुई थी। जब वह गोल चीज दान के पाऊ-पाऊ फल के रसवाले गिलास में गिरी तो छप् की आवाज नहीं हुई, न कोई लहर ही उठी।

"पीओ, दान, मेरी दान।"

दान ने अपना गोल और खूबसूरत सर हिलाकर इन्कार किया। निगलने में उसे तकलीफ होती थी।

मैंने आग्रह किया : "मेरी खातिर, दान," उसी तरह जैसे कोई बीमार बच्चे को दवा खाने के लिए प्यार से उकसाता है।

फिर उसकी आँखों ने मुझे इतना प्यार भेजा, जितना प्यार मुझे जिन्दगी में कभी नहीं मिला था। अब मैं इस प्यार को हमेशा अपने पास सुरक्षित रखूँगा।

फिर उसने वह रस पी लिया। मैं चुपचाप अपनी पत्नी की बगल में लेट गया, उसका हाथ अपने हाथ में पकड़कर। पहले तो दान ने मेरी उँगलियों का जवाब मेरा हाथ दबाकर दिया, लेकिन यकायक उसके शरीर में जोर की ऐंठन शुरू हो गयी। मेरी गोली अपना काम कर रही थी—मोहब्बत का काम। हाँ ! उस दुनिया में जहाँ इन्सान ही इन्सान को जलाकर खाक करते हैं, जैसा उन्होंने नागासाकी में हम लोगों को जलाकर किया था और जैसा कि वे अब वियतनाम में कर रहे हैं, एक जहर ही तो सबसे दयावान् चीज है। ओह, नेकदिल गोली, जहर की गोली, तुम सचमुच मेरी दोस्त हो ! यह सोचते-सोचते मैं अपनी महबूबा के बाल सहला रहा था।

"क्या तुम—सो गयीं, दान ?अभी से ?तो मैं बेहद खुश हूँ। अब कोई तुम पर आग के बम नहीं बरसा सकता। कोई तुम्हें घायल नहीं कर सकता, अब तुम्हारा अंग-भंग नहीं कर सकता। आखिरकार अब तुम सुरक्षित हो, इतनी ज्यादा सुरक्षित कि उतना आज दुनिया में कोई भी जिन्दा आदमी नहीं है। दान···दान···"

○○○

# राजकमल प्रकाशन

'राजकमल' की स्थापना 1947 के पूर्वार्ध में हुई थी। छत्तीस वर्षों की इस लम्बी अवधि में राजकमल ने एक जीवन्त प्रकाशन संस्थान की छवि अर्जित की है।

हिन्दी के प्रायः सभी प्रतिष्ठित लेखकों की अधिसंख्य रचनाएँ प्रकाशित करने के साथ-साथ 'राजकमल' ने नयी प्रतिभाओं को भी पाठकों तक पहुँचाने के दायित्व का निर्वाह सफलतापूर्वक किया है।

'राजकमल' के प्रकाशनों पर अब तक ग्यारह साहित्य अकादमी पुरस्कार, दो भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार और चार सोवियतलैण्ड नेहरू पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं। इसके अतिरिक्त, राज्य सरकारों तथा अन्य संस्थाओं द्वारा लगभग तीन दर्जन पुस्तकें पुरस्कृत हो चुकी हैं।

प्रकाशन के क्षेत्र में राजकमल का एक विशिष्ट योगदान है वर्चस्वी लेखकों की ग्रन्थावलियों का प्रकाशन। 1979 में 'सुमित्रानन्दन पन्त ग्रन्थावली' (7 खण्ड) के प्रकाशन के साथ यह कार्य शुरू हुआ, और उसके बाद क्रमशः 'मुक्तिबोध रचनावली' (6 खण्ड), 'हजारीप्रसाद द्विवेदी ग्रन्थावली' (11 खण्ड), 'निराला रचनावली' (8 खण्ड) और 'बच्चन रचनावली' (9 खण्ड) का प्रकाशन हो चुका है। इस समय और भी कई महत्वपूर्ण ग्रन्थावलियाँ प्रकाशनाधीन हैं।

'राजकमल' ने 1951 में साहित्यिक समीक्षा की त्रैमासिकी 'आलोचना' का प्रकाशन शुरू किया, जो अब तक अविच्छिन्न रूप से प्रकाशित हो रही है। समय-समय पर इसे हिन्दी के मूर्धन्य विद्वानों का सम्पादन-सहयोग मिला, और पिछले लगभग डेढ़ दशक से कृती समालोचक डा. नामवर सिंह के सम्पादन में यह पत्रिका हिन्दी आलोचना के नये मानदण्ड स्थापित कर रही है।

श्रेष्ठ साहित्यिक पुस्तकें बहुत कम मूल्य पर दूर-दराज गाँवों-कस्बों में फैले पाठकों तक पहुँचाने के लिए 'राजकमल' ने 1974 में 'आलोचना पुस्तक परिवार' का गठन किया, जिसके हजारों सदस्यों ने इस आम धारणा को गलत सिद्ध किया है कि हिन्दी में खरीदकर पुस्तकें पढ़नेवाले गम्भीर पाठक नहीं हैं।

राजकमल पेपरबैक्स

'राजकमल पेपरबैक्स' की प्रकाशन-प्रेरणा हमारा यह अनुभव है कि हिन्दी में कमी स्तरीय पाठकों की उतनी नहीं, जितनी कि उनकी आर्थिक क्षमता के दायरे में आनेवाली स्तरीय पुस्तकों की है। 'राजकमल पेपरबैक्स' के माध्यम से इसी कमी को दूर करने की कोशिश की गयी है।

'राजकमल पेपरबैक्स' का उद्देश्य स्वस्थ साहित्य को बृहत्तर पाठक-समुदाय तक पहुंचाना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए 'राजकमल पेपरबैक्स' में पुस्तकों का मूल्य उनके सजिल्द संस्करणों की अपेक्षा 60 से 65 प्रतिशत कम रखा गया है। 'राजकमल पेपरबैक्स' में हिन्दी की उत्कृष्ट और बहुचर्चित कृतियों के साथ-साथ अन्य भारतीय और विदेशी भाषाओं की भी विशिष्ट कृतियाँ प्रकाशित होंगी।

'राजकमल पेपरबैक्स' की पाठ्य-सामग्री ही नहीं, उनका रूपाकार भी कलात्मक और मनभावन रखा गया है। इन पुस्तकों के आवरण पर सुविख्यात चित्रकारों की कलाकृतियाँ दी जा रही हैं, और यह केवल हिन्दी में नहीं, बल्कि सम्पूर्ण भारतीय प्रकाशन में एक नयी पहल है। 'राजकमल' की यह पहल सृजनात्मक कलाओं की मूलभूत एकता को प्रदर्शित करने और उनके परस्पर सहयोग को बढ़ावा देनेवाली

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि 'राजकमल पेपरबैक्स' में प्रकाशित पुस्तकों का पाठ प्रामाणिक और शुद्ध हो। साथ ही, इन पुस्तकों की पाठ्य-सामग्री अपने मूल रूप में, अविकल, होगी, उसे किसी भी प्रकार संक्षिप्त नहीं किया जायेगा।

# राजकमल पेपरबैक्स

## पहले सैट में प्रकाशित पुस्तक

**रागदरबारी** / श्रीलाल शुक्ल / 18.00
**वे दिन** / निर्मल वर्मा / 11.00
**मित्रो मरजानी** / कृष्णा सोबती / 6.00
**कुरु-कुरु स्वाहा** / मनोहर श्याम जोशी / 13.00
**सुहाग के नूपुर** / अमृतलाल नागर / 12.00
**बसन्ती** / भीष्म साहनी / 10.00
**दूसरी परम्परा की खोज** / नामवरसिंह / 10.00
**अजनबी** / आल्बेयर कामू / 6.00
**प्रतिनिधि कहानियाँ** / भगवतीचरण वर्मा / 10·00
**प्रतिनिधि व्यंग्य** / हरिशंकर परसाई / 10.00
**प्रतिनिधि कविताएँ** / अमृता प्रीतम / 10.00

## दूसरे सैट में प्रकाशित पुस्तकें

**अनामदास का पोथा** / हजारीप्रसाद द्विवेदी / 12.00
**आधा गांव** / राही मासूम रज़ा / 17.00
**लोग** / गिरिराज किशोर / 11.00
**पगला घोड़ा एवम् इन्द्रजित** / बादल सरकार / 10.00
**प्रतिनिधि कहानियाँ** / फणीश्वरनाथ रेणु / 10.00
**प्रतिनिधि कविताएँ** / सर्वेश्वरदयाल सक्सेना / 10.00
**प्रतिनिधि कविताएँ** / फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ / 10.00

## तीसरे सैट में प्रकाशित पुस्तकें

**रेखा** / भगवतीचरण वर्मा / 15.00
**तमस** / भीष्म साहनी / 15.00
**एक चिथड़ा सुख** / निर्मल वर्मा / 10.00
**शह और मात** / राजेन्द्र यादव / 13.00
**रुकोगी नहीं राधिका** / उषा प्रियंवदा / 6.00
**प्रतिनिधि कहानियाँ** / ज्ञानरंजन / 10.00

## चौथे सैट में प्रकाशित पुस्तकें

**मैला आंचल** / फणीश्वरनाथ रेणु / 17.00
**डार से बिछुड़ी** / कृष्णा सोबती / 6.00
**नंगा शहर** / भीमसेन  गी / 6.00
**अध-चांदनी रात** / गुरदयाल सिंह / 10.00
**बहू : अक्स पहेली** / त्रिपुरारी शर्मा / 10.00
**प्रतिनिधि कविताएँ**/ मुक्तिबोध / 10.00

## पाँचवाँ सैट

**अँधेरे बन्द कमरे** / मोहन राकेश / 18.00
**आधा पुल** / जगदीशचन्द्र / 12.00
**अठारह सूरज के पौधे** / रमेश बक्षी / 6.00
**हिरोशिमा के फूल : वियतनाम को प्यार** / एदिता मॉरिस
(अनु. मोहन राकेश, शिवदानसिंह चौहान) 11.00
**मीनाबाजार** / सआदत हसन मण्टो / 6.00
**प्रतिनिधि कहानियाँ** / अमरकान्त / 10.00

राजकमल पेपरबैक्स

# एदिता मोरिस

# हिरोशिमा के फूल
# वियतनाम को प्यार



इस पुस्तक में, अपने रचनात्मक युद्ध-विरोध के लिए विश्वविख्यात अमेरिकी लेखिका एदिता मोरिस के दो महत्त्वपूर्ण उपन्यास दिये गये हैं। पहला, 'हिरोशिमा के फूल' और दूसरा 'वियतनाम को प्यार'। विश्व की 24 भाषाओं में अनूदित 'हिरोशिमा के फूल' का हिन्दी अनुवाद सुप्रसिद्ध हिन्दी कथाकार मोहन राकेश ने तथा 'वियतनाम को प्यार' का अनुवाद सुपरिचित साहित्यकार शिवदानसिंह चौहान और श्रीमती विजय चौहान ने किया है। इनमें से पहला उपन्यास दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान हिरोशिमा पर गिराये गये परमाणु बम से उत्पन्न परिस्थितियों की मर्मस्पर्शी दास्तान है। अपनी भयावह स्मृतियों तथा भरे-अनभरे जख्मों को ढो रही प्यार और ममता की कितनी ही प्रतिमूर्तियाँ इसमें मौजूद हैं; खासकर यूका और ओहात्सु नामक दो बहनें, जिनके माध्यम से युद्ध-जर्जर एक समूची पीढ़ी हमारी संवेदना का अविस्मरणीय अंग बन जाती है। दूसरा उपन्यास 'वियतनाम को प्यार' अमेरिकी नापाम बमों से झुलसे वियतनामियों की वेदना और संकल्प का जीवन्त दस्तावेज है। पत्र-शैली में लिखी गयी यह एक ऐसी प्रेमकथा है, जिसमें गहन मानवीय भावनाओं का आलोड़न है और जिसकी अपूर्णता हमारे मन को देर तक सालती रहती है।

आवरण चित्र : एफ. एन. सूज़ा

राज़कमल प्रकाशन नयी दिल्ली पटना